

अमेरिकी सभ्यता

.



1963

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

AMERICI SABHAYATA
(Hindi Version of America As A Civilization)
by
Max Lerner
Translated by
R. P. N. Sinha
Rs. 10.00

©1963 ATMA RANI & SONS DELHI-6

प्रकाशक
रामनाथ पुरी संचालक
आरमाराम एण्ड सन्स
बननीरी रोड दिल्ली-6
रामपुर
हीन छात्र मई दिल्ली
बीड़ा रास्ता जयपुर
मई हीन रोड जयपुर
बेयमपुर रोड मेरठ
विजयविद्यालय छात्र बन्नीय
महानगर, सज्जन-0

मूल्य इस रूप
प्रथम संस्करण 1963

पृष्ठ
एकरीट प्रेम
4 बन्नीयान रोड
दिल्ली-6

प्रस्तावना

आज अमेरिका के लोग स्वयं अपने और अपनी सम्पत्ता के सम्बन्ध में प्रकाश डालने लगे हैं और संसार के सम्मुख दोनों का स्वरूप उद्घाटित कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में एक परीक्षा-ग्रन्थ है।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक में न तो अमेरिकी सम्पत्ता के इतिहास का वर्णन किया है और न ही अमेरिकी प्रदेशों, राज्यों और नगरों के धार्मिक जीवन का वर्णन किया है। इन दोनों विषयों पर अनेक विद्वानों और पत्रकारों ने विस्तार से प्रकाश डाला है। न तो मैंने यहाँ बोपारोपण किया है और न ही समा साधना। न तो मैंने "अमेरिकी जीवन-पद्धति" की प्रशंसा की है और न ही उस पर कक्ष्या के चाँसु बहाये हैं। अतः, यह कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिससे 'अमेरिका किधर? अमेरिका किधर?' यह कहते हुए बिनाप की भविष्यवाणी की गई हो। संक्षेप में मैं यह कहना चाहूँगा कि जो लोग इस पुस्तक से किन्हीं ऐतिहासिक वर्णनात्मक वास्तवीय या दैवीय तथ्यों के उद्घाटन की आशा लगाए बैठे हैं उन्हें सम्यक् आनखीन करनी चाहिए।

मैंने तो अपने ही तरीके से मने ही यह किटना बिचित्र हो—समकालीन अमेरिकी सम्पत्ता के नयने और धार्मिक धर्म का हृदयकर्म करने और इसका आन की दुनिया से सम्बन्ध बनाने का प्रयत्न किया है।

अपने सम्बन्ध में दो शब्द कहना अनुचित न होगा। आप कोई पुस्तक इस कारण नहीं लिखते कि आपने किन्हीं विशेष उद्देश्यों का उन्मूलन किया है। आपके पुस्तक लिखने का मुख्य कारण यह होता है कि आप उसे लिखे बिना रह नहीं सकते। मैंने मृत में जो कुछ भी लिखा हो सोचा है या अनुभव किया है वह सब अमेरिकी अनुभव की प्रकृति और धर्म के विद्वान विषय पर केन्द्रित है। जब कभी मैंने अमेरिकी सरकार पर, सहायता पर, विदेश नीति पर, नैतिकता पर—किसी लिखने का प्रयास किया है, मुझे ऐसा लगा है कि इसे दूसरों से प्रत्यक्ष करने से इसका कुछ धर्म ही जो गया है। मकिन इतने व्यापक विषय पर कलम डालना बहुत ही बड़ा और शर्करापूर्ण कार्य था। अतः सन् 1948 में मैंने अपनी मिश्रक पर विषय प्राप्त की और पुस्तक को सर्वप्रथम

रूप में प्रारम्भ किया। इस पुस्तक के लिखने में इस बर्ये से भी अधिक समय लगा है।

कोई भी अमेरिकी संभवतः हमारे युग का कोई अमेरिकी अमेरिकी सम्प्रदाय को पूर्वघातनीय धराधनित भाव से देखने का दावा नहीं कर सकता। "पूर्वघातनीय वृत्ति" (कोबर) और साम्प्रदायिक धारणा की धारणा" (बैनेडिक्ट) उसी समय हम में पैदा होती है, जब हम अपनी संस्कृति से सम्बन्ध पूर्वक प्रस्तुत संस्कृति में मूल्यों की परख करते हैं। अमेरिका का सम्प्रदान करता हुए कोई भी अमेरिकी धनासक्त नहीं रह सकता और मुझे इस बारे में भी समझ है कि कोई यूरोपियन या एशियाई धनासक्त रह सकता है। मार्के ऐकन के शब्दों में अमेरिकी सम्प्रदाय का धनासक्त भाव से सम्बन्धित करने वाला विद्यार्थी कोई निर्जीव ही होगा क्योंकि वह सर्वथा प्रभावशून्य होगा। अपने उद्देश्य की निधि के लिए धारण अधिक-से-अधिक सही कर सकते हैं कि धारण अपने विषय से एक निश्चित भावनात्मक दूरी रखें। जब धारण अपने ही लोगों और सम्प्रदाय की बर्बाद कर रहे हैं तब तो वह दूरी रखना और भी सुविध्य हो जाता है। अमेरिका के सम्बन्ध में धारण की धारणा और भ्रम बीच में आ पड़ते हैं और धारण के विस्मयन पर कुछ और ही रंग पड़ जाता है।

वह तो सर्वथा स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय कला और विरह-कान्ति के समय अमेरिका के सम्बन्ध में प्रकाशित किसी भी पुस्तक की व्याख्या धारण की कथन कथ से भरी दुनिया के धारण ही होती है और अनिवार्यतः यह भ्रम प्रकाश पाएगा कि क्या वह पुस्तक अमेरिका के 'धारण' में है या 'विषय' में यह विषय का एक धारणमय विषय प्रस्तुत करती है या दोषारोपण का निरन्तर-भर विषय।

मैंने इन लोगों की धारणों से बचने का प्रयास किया है—एक अमेरिकी के लिए धारण-लोच का धारण और धारण-गुण का धारण। मुझे अपने देश और अपनी संस्कृति दोनों से प्रेम है और मैं अमेरिकी जीवन के सम्बन्धकारणमय पक्ष पर सुझाव बहाने की कोशिश नहीं करता तो न तो यह कथन और संस्कृति की सेवा होती और न ही प्रभावशून्य की। इसी प्रकार मैंने यूरोप और अमेरिका में बहुत भ्रमण किया है और जापान और बीजिंग का अध्ययन किया है—और धारण नहीं अमेरिकी-विरोधी दोषारोपण करने में मैं कुछ बचा है ऐसा भ्रम या धारण के प्रभाव के कारण नहीं हुआ। लेकिन अमेरिका के बहु धारणधर्कों की भी यह कोई सेवा नहीं होती और मैं उसी गुण के लिए अमेरिकी सम्प्रदाय का एक विरह विषय प्रस्तुत कर दूँ। अमेरिका के बारे में विरह-विचार ही बनना ही रहेगा और धारण के साथ किसी प्रकार का कोई राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रहा हुआ है।

किसी भी मापदण्ड से देखें अमेरिका तकनीकी ज्ञान सांस्कृतिक तथा धार्मिक, सैनिक और राजनैतिक शक्ति की दृष्टि से विश्व की एक महान् शक्ति है, इसका एक मात्र प्रतिद्वन्द्वी केवल रूस है। किसी भी मानव-समाज में इतनी अधिक शक्ति का पाया जाता इस बात का प्रमाण है कि उसका इतिहास परिस्थितियाँ भौतिक जीवन मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ, संस्कारमय नमूने सामूहिक संक्रमण और आन्दोलक शक्ति—ये सब गुण एक अद्भुत मिश्रण में उस समाज में विद्यमान हैं। जब इस प्रकार का अद्भुत मिश्रण विश्वकल्पना को अभिव्यक्त कर लेता है और मनुष्यों की मानवतामय शक्तियों को प्रेम या घृणा के लिए चुम्बकित कर लेता है तब एक अभिस्मरणीय सम्मता का जन्म होता है।

इसने व्यापक विषय पर इसम जनाते हुए स्वाधीनताओं को घुस जाना और शक्ति के अधीन हो जाना बहुत घासान है। मैंने हमेशा यह याद रखने की कोशिश की है कि राजनीतिक जहोड़हूँ और धार्मिक कार्यक्रमों का रंग फीका पड़ जाता है। प्रायः घसबाराँ में बिजली-बोर्लों की चर्चा है, कम समय उन्हें बहकाव समझते हैं और पार्टी-नेताओं के नाम इतिहास की किताबों में चुंबन पड़ जाते हैं। अमेरिका केवल परिवर्तनों और आक्रामकताओं का नाम ही नहीं है यह स्थिरता भी है।

यही कारण है कि मैंने अमेरिकियों के सम्बन्ध में बहुत सवाल रखे हैं जो हर व्यक्ति किसी महान् सम्मता के लोगों के बारे में पूछता जाहेगा। उनकी परम्पराएँ क्या हैं, उनका भौतिक जीवन क्या है और उनकी परिस्थितियाँ क्या हैं? वे किस प्रकार अपनी धार्मिकता प्रकट करते हैं, अपना शासन जमाते हैं और शक्ति तथा स्वतन्त्रता की अनिवार्य समस्याओं का समाधान करते हैं? वे किस प्रकार राष्ट्रीय और क्षेत्रीय-समूहों में विभक्त हैं? जनसंख्या घनत्व के सणों में वे कैसे लपटते हैं? जम्म से लेकर मूल्य के विभिन्न रूपों में उनकी जीवन-भारा कैसे होती है? किस प्रकार वे प्रेम करते हैं, विवाह करते हैं, अपने बच्चों का वासन-मोषण करते और उन्हें शिक्षित करते हैं? वे किस प्रकार काम करते हैं, खेलते हैं और कसा और साहित्य के माध्यम से अपनी सृजनतामय शक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं? वे कौन-से संयोजक और संगठक विद्यमान हैं जो उनकी सम्मता को जोड़ हुए हैं? वे कौन-से देवताओं की पूजा करते हैं, कौन-से विवाह उन्हें बन्धन में बद्धे हुए हैं या उन्हें शक्ति प्रदान करते हैं, उनकी पारनाएँ किस प्रकार की हैं, कौन-से विवाह उन्हें अनुप्राणित करते हैं, किस प्रकार क सांस्कृतिक धावधों में वे संवरण करते हैं, किस प्रकार क स्वप्नों से वे आन्वेषित होते हैं, कौन-सी नीरानिक कथाएँ उनमें प्रचलित हैं, उनकी प्रेरक माननाएँ कौन-सी हैं, कौन-से रूप उनका माग धवरण किये हैं, अपने प्रवर्तनों

में वे किस प्रकार की शक्तियों का प्रयोग करते हैं चीन-से तनाव और विभाप
 उन्हें पुष्कल किये हैं किस प्रकार की सामाजिक भावना उन्हें एकता के सूत्र में
 पिरोये है ।

संक्षेप में, चीन-सी चीन है जो अमेरिका को व्यक्तिगत इच्छाओं, भावनाओं
 और सामूहिक शक्ति से सम्पन्न 'स्वाधियों और सेवकों का समूह नहीं बनाती
 बल्कि एक सम्पत्ता बनाती है ।

१

—एन० एन०

अनुक्रम

	1—137
1 जनता और देश	1
1 क्या कोई अमेरिकी स्टार भी है ?	11
2. धातुजन के अनुभव	20
3 जनता नहीं	31
4 प्राकृतिक संसाधन अमेरिकी घरती	41
5. मानवीय साधन धातुजी का विश्व	52
6. जनकल्याण के साधन	70
7 किसानों की स्थिति	80
8. छोटे नगरों की प्रवृत्ति	86
9 बड़े नगरों के प्रकाश और उनकी छायाएँ	103
10 उपनगरों की क्रांति	113
11 क्षेत्र जनता और स्वाम के बीच एकत्वता	138—185
2 अमेरिका में वर्ग और प्रतिष्ठा	138
1 वर्ग मुक्त समाज	143
2. सत्ता का स्रोत	154
3. नये मध्यम वर्ग	160
4. अमेरिकन श्रमिक वर्ग का स्वरूप	103
5. अल्पसंख्यकों की स्थिति	170
6. अमेरिका में नीचो	175
7 सामाजिक मर्यादा	182
8. लोकतन्त्री वर्ग-संघर्ष	186—223
3 अमेरिका का जीवन शक्ति	186
1 संस्कृति और व्यक्तित्व	190
2. अमेरिका में कौटुम्बिक जीवन	106
3. माता-पिता और बच्चे	201
4. सब वर्ग बड़े होने लगते हैं	

5. कोर्टशिप प्रेम और विवाह	206
6. अमेरिकन समाज में स्त्रियों की स्थिति	213
7. प्रौढ़ावस्था और बुढ़ावस्था की समस्याएँ	230
4. अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र	224—255
1. समाज का आधार	224
2. संस्थाओं की भूमिका	237
3. धीक-सलीका और व्यवहार	230
4. अमेरिकन चरित्र	235
5. समाज की विविधताएँ	237
6. आधार और नीतिज्ञता	241
7. अमेरिकन समाज में संघर्ष	245
8. जीवन का ध्येय और धान्य की खोज	249
5. कलाएँ और पापुनर संस्कृति	256—350
1. अमेरिका में पापुनर संस्कृति	256
2. मेलक और पाठक	268
3. नाटक पुराण-कथाएँ और भाषा	279
4. बर्चक और धीकिया केमकूर	290
5. लिनेमा का स्वप्न और अस्वप्न	296
6. रेडियो और टेलीविजन घर में ही संसार	300
7. अमेरिकी इतिहास के रूप में जीवन	323
8. नकल डिजाइन और कला	331
9. लोकतन्त्रीय संस्कृति में कलाकार और श्रोता	342

जनता और देश

२ क्या कोई अमेरिकी स्टॉक (Stock=बंश) भी है ?

जीतोणा कटिबंध में घूमन कासा प्रत्येक यात्री वहाँ के फँस हुए विस्तृत जंगल की बात नहीं मूल सकता। अमेरिका का जंगल एक ऐसा ही एथनिक (Ethnic=जाति) जंगल (अनेक जाति के लोगों का घपना जातीय पर्यावरण) है। इस कटिबंध के ऐसे समुद्र प्रदेश में प्रत्येक प्रकार की एथनिक (जातीयता) विद्यमान है। यहाँ प्रत्येक वस्तु बड़ी तेजी में बढ़ती है और वीथ ही दूसरी अन्य वस्तुओं से घुममिल जाती है। एथनिक दृष्टि से अमेरिका न सभी कुछ सम्मिल है।

अमेरिका की जातीय विविधता का निरीक्षण करना चाहें तो सबसे अधिक सुविधाजनक स्थान है—ग्रुपाक का अन्तर्भूमि (Subway) या सानफ्रांसिस्को का कोई बाजार अथवा सैनिक-कम्प। हर स्थान एक ऐसी घारा है जहाँ अमेरिका की मानवीय सामग्री का स्रोत उमका पड़ता है। सवार के जातीय मानचित्र में बिरला ही कोई ऐसा देश होया जिसका प्रतिनिधित्व अमेरिका में न पाया जाए। यूरोप की प्रत्येक जाति यूरोपीय और एशियाई रस के अनेक स्टॉक (बंस) इजरायल के लोग तथा मध्यपूर्व के धरती कीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया के लोग फिलिपाइन इन्डो-मालेसिया तथा भारत के दूरतम प्रदेशों के लोग लाइबेरिया और नाइजीरिया के मोरॉकोस्ट तथा माइबरी कोस्ट के नाफिरलैंड और बिटवाट्सवैंड के दलित और अन्य अमेरिका के कैरेबियन के प्रत्येक द्वीप के ब्रिटिश और फ्रांसीसी कनाडा के चीनमैन्च तथा आइसलैंड के लोग यहाँ पाये।

मैंने अपने इस लेख में रैस (Race=जाति) शब्द की अपेक्षा स्टॉक (Stock=बंश) शब्द का तथा रैसियल (Racial) के स्थान पर एथनिक (Ethnic) शब्द का प्रयोग किया है। इसका स्पष्टीकरण करने के लिए मैं केवल यह बताना चाहता हूँ कि दोनों शब्दों पर रैस शब्द के अतिश्रेष्ठ भाग्य का बल एक ही माय है। उस शब्द से मरा शास्त्र मूल बंश राष्ट्रीयता भाषा वन प्रदेश और उपप्रदेश से उद्भूत प्रजातों का सम्मिश्रण (संघट्टि) है, जो न केवल समान कुल में उत्पन्न होने के कारण बल्कि एक ही भूमि पर, एक ही प्राकार के मौसम और एक ही समुदाय में दीर्घकाल तक रहने के कारण

जीवमोक्षान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्थायी प्रकार बन गया है। इस एथनिक स्टॉकों (जातीय वर्गों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमेरिकी है। किसी के विषय में यह कहना 'यह अमेरिकी स्टॉक (वंश) का है' यह घाघर प्रकट करता है कि वह स्वेच्छा है एम्मोसेक्सन बंध का है समकाल प्रोटेस्टेंट हो और इसके बाप-दादा कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए होते किन्तु बिबेकी जिज्ञासुओं का इससे संतोष नहीं होता। अनेक संस्थाओं में यह देखा गया है कि बिबेता आदि के लोगों ने एक ओर तो पराजित भूमि के मूल निवासियों से और दूसरी ओर उन महापुरुषों से अपने आपको पृथक् (अलग) रखने का प्रयत्न किया है जो अस्ति और यह हृषिकाना आहते थे। अमेरिका में कई कारणों से ऐसा करना कठिन था। मूल निवासी एक ही संस्था में बहुत ही कम से और साथ ही उन्हें भूमि घर-घर और जीविका से इतनी मुश्किल से बर्चित किया गया कि इन द्वारा से उनकी कोई उपलब्धी लेय नहीं। यदि 'अमेरिकी बंध' (American Stock) का धर्म उन लोगों के बराबर लगाएँ, जो गुरुत्वाही विचार पर दृढ़ हैं तो अधिकतर अमेरिकी धर्म इस बलानुक्रम को बाद कर पवित्र न होये क्योंकि इससे एक घपघम की भावना निहित है। अमेरिका की वास्तविक विजय कोई ऐनिक विजय नहीं जिससे कि कोई पक्षपक्ष यह वह सके कि मेरी भर्त्ता में इनके बिबेताओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय थी जयस और वीरान पर पहाड़ आटी और नदी पर, नये-नये सिम्ब विज्ञान और सामाजिक मस्त्रानों पर, जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक हिमोद ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा दम ब्रिटिश द्वीपों से आया था फिर भी अमेरिका को सर्वप्रथम बसाने का योग्य केवल किसी भी एक दल को प्राप्त नहीं यहाँ तक कि गणतन्त्र की पहली दशावधियों में भी वहाँ अनेक स्टॉक विद्यमान थे जिन्होंने इन नये 'अमेरिकी मानव' का निर्माण किया और धर्म में गणतन्त्रीय विचारधारा के साम्य बन का पल संकरण और बंधों का विधायन हुआ जिसने मूलबंधीय विमुक्तता अन्वेषक का कार्य निपटारा में परिणत हो गया।

निर्णायक प्रविष्टि की प्रविधि के रूप में अमेरिकी राज्य पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न निम्नी एक विधायन के लिए धर्म नवको उससे बर्चित रखने की एक गुणवत्तिय भुक्ति है। संघाटन अधिक घण्टावधि तथा मज्जातीय लोगों के विषय में आरंभ हमका कुछ ही घण्टा हो पर अमेरिका में यह घण्टीम है। तो भी कुछ ऐसे लोग हैं जो रजिम्स (Rajism = प्रजातिवाद) में तो पीछे हटते हैं परन्तु आधाम के दीपक को एक मद्दतपूर्व प्रथे-न बिना मानते हैं। मेरे एक मित्र ने मुझ लिखा है 'क्या वे यूरोपीय जो वहाँ अधिक समय से रहे हैं उन लोगों में अधिक अमेरिकी नहीं हैं जो आरंभ में आकर बसे हैं? उदाहरणार्थ क्या

एक सोवेल या क्लबेस्ट चीनी बोबी के बेटे से अधिक अमेरिकी नहीं हो सकते ? यदि समान को व्यापार मानें तो सबसे अधिक अमेरिकी अमेरिकी इतिहास विस्मय के बंधन और प्रारम्भिक हथियारों के बंधन ही होये जो बीजनीय नहीं है । 'यूरोपी सोग अधिक अमेरिकी हैं'—के विचार के पीछे उनके मन में के सुबोय का लक्ष्य नहीं है बल्कि उनका यूरोपीय (पश्चिमी यूरोपीय मूल्य सामग्रीय या स्थायी नहीं) होना है । बात यह है कि अमेरिका के प्रारम्भिक इतिहास पर अंग्रेज स्काट फांसीसी इत्यादि और बर्षों का बड़ा प्रभाव है । यह साबित साधन और स्वाभाविक भी है कि सोवेल और क्लबेस्ट कभी अधिक अमेरिकी हैं, अनिश्चित बोझे दिनों से बसे चीनी या यदि भारतीय या हूमी परिवार के किसी व्यक्ति से । इसका कारण यह है कि भारत से ही पश्चिमी यूरोपीय अमेरिका में कर्तव्यता से । उन्होंने ही वहाँ बसने का नियम बनाये हैं और प्रवेश का मुख्य तत्व किया है । वे अधिक आनन्द से हैं । हाँ दूसरों को वे आनन्द से नहीं देने देते ।

अपनी बात और स्पष्ट करने के लिए यह कह सकते हैं कि अमेरिकी राज्य के धर्म के तीन स्तर हैं । पहला दीर्घकालिक अमेरिकी इतिहास में परिवार और स्टाक का सम्बन्ध दूसरा ज्ञान के अन्तर्गत अधिकार और सहस्रियों के बारे में समान और असमान शब्द तथा तीसरा अमेरिकी जीवन के प्रति बचनबद्धता की भावना । केवल पहले स्तर पर ही स्टाक का प्रत्य उठता है बाहे किन्तु वे तुके रूप से ही । दूसरे स्तर पर किसी सोवेल या क्लबेस्ट और किसी चीनी बोबी के बेटे में क्या भेद हो सकता है ? तीसरे स्तर पर समस्या व्यक्तियों की है, स्टाक की नहीं । नए स्टाकों के अमेरिकी भी अमेरिकी जीवन के प्रति उठने ही समर्पित हो सकते हैं बिना पुराने । इनमें बहुतों ने तो अमेरिकी अनुभव का और भी बनी बनाया है ।

किर भी संसार के सबसे बड़े पब्लिक लोकसभ में प्रतिष्ठा की दर्जबन्दी तो है ही जिसका कुछ आधार स्टाक भी है । काले घरे, पीले और लाल पार (रस) के पात्र हैं जबकि गीरे प्रास्टेंट पश्चिमी यूरोपियन धर्म पर हैं । बीच में भी रेखाएँ हैं जिनका निर्माण कुछ तो उपनिवेशी पीढ़ी (Colonial descent) के आधार पर हुआ है और कुछ प्रारम्भिक अंग्रेजी बस्ती से औद्योगिक निकटता के आधार पर । यदि अमेरिका में बसने वालों का कामकाज के आधार पर विभाजन करें तो हम पाएँगे कि पब्लिक दर्जबन्दी में प्रतिष्ठा भी उसी रूप से बढ़ती जाती है । इनकी सभ्यता इस क्रम से आई थी—अंग्रेज, डच जर्मन स्काट आइरिश फ्रांसीसी स्कैटलैण्डियाई, आइरिश मूल्यसामग्रीय यहूदी बासकनी स्लाव मैक्सिकी और दक्षिण अमेरिकी क्लिपपाइनी मध्यपूर्वी और पूर्वीय । तो अमेरिका में इनकी प्रतिष्ठा भी मोटे तौर पर इसी क्रम से है । ही भारतीय

जीवनबोधिज्ञान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्थायी प्रकार बन गया है।

इन एथनिक स्टाफों (जातीय बंधों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमेरिकी है। किसी के विषय में यह कहना "यह अमेरिकी स्टाक (बंद) था है" यह धारणा प्रकट करता है कि यह श्रेष्ठ है एंग्लोसैक्सन बंध का है संभवतः प्रोटेस्टेंट हो और इसके बाप-बादा कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए होंगे किन्तु बिबेकी जिज्ञानियों का इससे सम्बन्ध नहीं होता। अनेक सम्प्रदायों में यह देखा गया है कि विवेका जाति के लोगों ने एक छोटी सी पश्चिमी भूमि के मूल-निवासियों से और दूसरी ओर उन महायन्त्रों से अपने आपको पृथक् (उत्पृष्ट) रखने का प्रयत्न किया है जो शक्ति और सशस्त्र हथियारा बाहुत थे। अमेरिका में कई कारणों से ऐसा करना कठिन था। सून निवासी एक छोटी समस्या में बहुत ही कम से छोटी सावधानी उन्हें भूमि घर-घर और जीविका से इतनी नृसंज्ञा से वंचित किया गया कि इस कृत्य से उनकी कोई उपसम्पत्ति देव न रही। यदि 'अमेरिकी बंध' (American Stock) का अर्थ उन लोगों के बंधन बनावे जो मुख्यतः ही शिवा पर टूट पड़े तो अधिकतर अमेरिकी भाषा इस संज्ञानुबन्ध को साह करवावित न होवे क्योंकि इसमें एक अपराध की भावना निहित है। अमेरिका की वास्तविक विजय कोई ऐनिक विजय न थी जिससे कि कोई पर्याप्त यह कह सके कि मेरी जसों में हमने विवेकाओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय थी जयस और मीमान पर पहाड़ बाढी और नदी बर, नवे-नय विजय विज्ञान और सामाजिक संस्थानों पर, जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक द्विजान ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा दल ब्रिटिश लोगों से आया था फिर भी अमेरिका का सर्वप्रथम बसाने का व्यव केवल किसी भी एक दल का प्राप्त नहीं। वहाँ तक कि गणतंत्र की पहली दशाब्दियों में भी वहाँ अनेक स्टाफ विद्यमान थे जिन्होंने इस नये अमेरिकी भाषण का निर्वास किया और अन्त में गणतन्त्रीय विचारधारा के साम्य बन का कम संकरण और बंधों का विभाग दिया जिससे मुसलमानी विमुक्तता सम्भव का कार्य निपटारा में परिणत हो गया।

निर्धोषात्मक प्रतिष्ठा की प्रतिधि के रूप में अमेरिकी राष्ट्र पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न किन्हीं एक विश्वयुग के लिए अल्प सचको उत्तरे वंचित रखने की एक नृसंज्ञा भुजि है। अपेक्षाकृत अधिक अन्तर्गत तथा सजातीय लोगों के विषय में जाते हमारा कुछ ही धर्म हो पर अमेरिका में यह धर्महीन है। तो भी कुछ लेने लायक है जो रैडिक्ल (Radical-प्रवादिता) में तो पीछे हटते हैं परन्तु धारणा के दीर्घकाल को एक मूलभूत अर्थक विज्ञान मानते हैं। ये एक विश्व के मुख्य विज्ञान है "जो के पुरानी या यही अधिक समय में बसे हैं उन लोगों से अधिक अमेरिकी नहीं है जो बाउ में आकर बसे हैं। उदाहरणार्थ क्या

एक लोबेल या कब्बेस्ट चीनी बोबी के बेटे से अधिक अमेरिकी नहीं हो सकते ?" यदि समय को धाधार मानें तो सबसे अधिक अमेरिकी अमेरिकी इण्डियन, विस्वात्म के बंधन और प्रारम्भिक हस्तियों के बंधन ही होने जो बोधनीय नहीं है। 'यूरोपी भाग अधिक अमेरिकी है'—क विचार के पीछे उनके बसने के सुखीय काम का लक्ष्य नहीं है बल्कि उनका यूरोपीय (पश्चिमी यूरोपीय भूमध्य सागरीय या स्लावी नहीं) होगा है। बात यह है कि अमेरिका के प्रारम्भिक इतिहास पर अग्रज स्काट कोसीसी झुग्गाट और डर्बो का बड़ा प्रभाव है। यह धोबना घासान और स्वाभाविक भी है कि लोबेल और कब्बेस्ट कहीं अधिक अमेरिकी है। बनिस्वत बोबे विनों से बसे चीनी या धावि भारतीय या हम्पी परिवार क किसी व्यक्ति से। इसका कारण यह है कि भारत से ही पश्चिमी यूरोपीय अमेरिका में कर्त्तापत्ता य। उन्होंने ही बहाँ बसने के नियम बताये हैं और प्रवेश का मुख्य तय किया है। वे अधिक आनन्द से हैं। हाँ, दूसरों को वे आनन्द से नहीं रखते बते।

अपनी बात और स्पष्ट करने के लिए कह सकते हैं कि 'अमेरिकी' शब्द के अर्थ के तीन स्तर हैं। पहला बीचकालिक अमेरिकी इतिहास में परिवार और स्टाक का सम्बन्ध दूसरा कानून के अन्तर्गत अधिकार और सहुलियतों के बारे में समान और असमान दावे तथा तीसरा अमेरिकी जीवन के प्रति बचनबद्धता की भावना। केवल पहले स्तर पर ही स्टाक का प्रश्न उठता है बाहे दिवने बेतुके कम से ही। दूसरे स्तर पर किसी लोबेल या कब्बेस्ट और किसी चीनी बोबी के बेटे में क्या भेद हो सकता है ? तीसरे स्तर पर समस्या व्यक्तियों की है, स्टाक की नहीं। नए स्टाकों के अमेरिकी या अमेरिकी जीवन के प्रति उठने ही समर्पित हो सकते हैं जिसने पुराने। इनमें बहुतों ने तो अमेरिकी अनुभव को और भी बनी बनाया है।

किर भी संसार के सबसे बड़े ऐकनिक लोकतन्त्र में प्रतिष्ठा की दर्जाबन्दी तो है ही जिसका कुछ धाधार स्टाक भी है। काले भूरे पीले और लाल पाद (रंग) के पास है जबकि गोरे प्राटस्टेंट पश्चिमी यूरोपियन शीर्ष पर है। बीच में भी रेखाएँ हैं जिसका निर्माण कुछ तो उपनिवेशी पीढ़ी (Colonial descent) के धाधार पर हुआ है और कुछ प्रारम्भिक रॉडजी बस्ती से भौगोलिक निष्कटता के धाधार पर। यदि अमेरिका में बसने वालों का कालक्रम के धाधार पर विभाजन करें तो हम पाएँगे कि एथनिक वर्गबन्दी में प्रतिष्ठा भी उसी क्रम से घटती जाती है। इनकी सङ्ग्रह इस क्रम से आई थी—अंग्रेज, डच जर्मन स्लाव आइरिश कोसीसी स्कडनेवियार्ड, आइरिश भूमध्यसागरीय यहूदी बालकनी स्लाव मेक्सिकी और बलिया अमेरिकी फिलिपाइनी मध्यपूर्वी और पूर्वीय। जो अमेरिका में इनकी प्रतिष्ठा भी मोटे तौर पर इसी क्रम से है। हाँ, भारतीय

जीवमताविज्ञान और संस्कृति का अपेक्षाकृत एक स्वामी प्रकार बन गया है।

इन एथनिक स्टाफों (जातीय बंधों) में से क्या कोई एक दूसरों की अपेक्षा अधिक अमरिगी है। किसी के विषय में यह कहना 'यह अमेरिकी स्टाक (बंध) का है' यह धारणा प्रकट करता है कि यह स्वेच्छा है एंग्लोसैक्सन बंस का है संघर्ष-प्रोटेस्टेंट ॥ और इसके साथ-साथ कई पीढ़ी पहले अमेरिका में आकर बस गए होंगे किन्तु बिबेकी विज्ञानियों का इससे सन्तोष नहीं होता। अनेक सम्मताओं में यह देखा गया है कि बिबेता भाषा के लोगों ने एक घोर तो पराजित भूमि के सुख-निवासियों से और दूसरी ओर उन नवजायकों से अपने आपको पृथक् (अलग) रखने का प्रयत्न किया है जो सन्ति और यह इधियाता बाह्य ॥ अमेरिका में कई नगरों से ऐसा करना बंठित था। मूल निवासी एक तो मरना न बहुत ही कम से और साथ ही उन्हें भूमि बर-बार और जीविका से इतनी मृदंगता से संबंध दिया गया कि इस कृत्य से उनकी कोई उपलब्धी यह न रही। वरि 'अमेरिकी बंध' (American Stock) का धर्म उन लोगों के बंसज सचाएँ, का सुगन्ध ही विचार पर दृढ़ पड़े तो अधिकतर अमेरिकी मान इस बंधानुक्रम की माद न बंठित न होवे क्योंकि इसमें एक अपराध की भावना निहित है। अमेरिका की वास्तविक विजय कोई ऐनिक विजय न थी जिससे कि कोई परापूर्वक यह कह सके कि मेरी जगहों में इसके विजेताओं का रक्त प्रवाहित है। यह विजय भी जमन और मैदान पर पहाड़ घाटी और नदी पर, नये-नये सिन्धु विज्ञान और सामाजिक संस्थानों पर जिसमें प्रवासियों की प्रत्येक हिनार ने भाग लिया। यद्यपि प्रवासियों का सबसे बड़ा पल ब्रिटिश द्वीपों से आया था फिर भी अमेरिका का सर्वप्रथम बसाने का अर्थ केवल किसी भी एक रक्त का बाध नहीं यहाँ तक कि गलतफहमी की बहसी समाप्ति में भी बहूँ अनेक स्टाक विद्यमान थे जिन्होंने इन नये 'अमेरिकी मानव' का निर्माण किया और अन्त में बगलगीब विचारवादा के साम्य बन का पल संकरन और बंधों का मिथान द्वारा जिससे मूलभूतीय विमुक्तता अन्वेषक का कार्य विरसा में परिणत हो गया।

निर्णायक प्रमाण ॥ प्रविधि के रूप में 'अमेरिकी' शब्द पर पूर्वाधिकार का प्रयत्न किसी एक सिन्धुपुत्र के लिए भाग्य सबको उससे संबंध रखने की एक सुपरिचित पुनि है। अपेक्षाकृत अधिक अमरिगी तथा नवजातीय लोगों के विषय में यदि हमका कुछ ही धर्म हो पर अमेरिका में यह धर्महीन है। तो भी कुछ ठेके लोग हैं जो रैगन (Racism-प्रमादिवार) से तो पीछे हटते हैं परन्तु आचार्य के दोषधाम की एक मठस्थल प्रथम बिद्द मानते हैं। मेरे एक मित्र ने मुझ निगा है 'क्या वे युरोपीय जो यहाँ अधिक गमय में गये हैं उन लोगों ने अधिक अमरिगी नहीं है या बाज में आकर बैठे हैं? ज्यादातरपार्थ गया

हैं वे धर्म घोर मकान छोड़ लेते हैं। विश्वविद्यालयों की शिक्षा लेते हैं और देशों में कुशलता प्राप्त करते हैं तथा छोटे बड़कर सम्पन्न के सदस्य बन जाते हैं। उपाधियाँ प्राप्त रह जाती हैं—बोप जागों चीनी किके निगल, नास्को निक स्निफ पासक हुकी बोहुक चिक जैप गेटवैक ग्रीजर-बग और प्राति होय तथा नस्म के चिह्न स्वल्प।

कभी-कभी इस प्रचलित रूप की भावप्रकृति से अधिक क्षति पुति ने बस में होकर सोय पूछ बैठने हैं कि क्या हम एक स्टाक स बूखे में मेव कर सकते हैं या प्रचुर घोर घासपर्व में डालने वाले देशों में केवल बैसविजता ही तो नहीं है?

ठीक है कि स्टाकों में मेव बो-रूक नहीं हैं। एक ही स्टाक में मेव हैं। उदाहरणाय पक्षियों में बेहरे, कब अस्थियों के डंकि लोपकी क डीच और स्वभाव में कड़ी अधिक मेव हैं बसिस्वत एक मधुरी घोर इटालियन या घासिरि या पुर्तगाली या घामी में। यह भी सच है कि एथनिक मधमेव क कारण उनमें कोई बड़प्पन या छाटापन की भावना नहीं होती जैसा कुछ नस्मबारी बतलाते हैं। यद्यपि अमेरिका में कोई अति-मानव नहीं है पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो एंग्लोमैक्सन मोरे ईबनाओं का एक सम्प्रदाय बनाने के लिए व्याकुल हैं। यद्यपि अमेरिका में कोई उपमानव नहीं है पर कुछ मोरे ऐसे बकर हैं जो किसी रिजता के भय से अपनी गोरी बमड़ी से बिपक रूना चाहते हैं और इस बात की उत्कट कामना करते हैं कि हस्वियों या प्लुटोरिकी या मैक्सिकी या चीनी सानों को उपमानव करार दे दें। कोई भी अमेरिकी ऐसा नहीं है जो किसी ऐसे मानव परिवार का हो जो अन्य परिवारों से अलग है या कुछ ऐसे भी नहीं है जो बन्दर या देवों के मजकीक हों। ऐसी बात भी नहीं है कि कुछ अमेरिकी मेहनतकमों के लिए घोर कुछ उन पर प्रभुत्व के लिए पैदा हुए हों। एथनिक दृष्टि से कोई ऐसा वन भी नहीं है जो विभुज हो (रूस के हट्टाईटी जैसे कुछ बल्प जन्म हैं जो वस्त्रि उफाटा में बसे हैं घोर अन्तर्बिषाही हैं)। अमेरिकी इतिहास के उस बिन्दु पर पहुँच गए हैं जिसमें प्रत्येक वर्ग के रंग म कनोबेस बूमरे बर्णों का कुछ न कुछ सीका अस्वभाव चुका है।

फिर भी अमेरिका में एथनिक स्टाक नहीं है या उनमें मेव नहीं है यह मानना भी निरी मूखता होगी। अमेरिका में जो घाये हैं वे अणसाहृत स्थिर अथनिक वर्गों के रहे हैं। अपने साथ वे घरीर के आधुनिक मधमेव और घासों साथ हैं जो उन्हें बूमरों से अलग करती हैं। उन्हें यही निज प्रकार के सामाजिक

1 The epithets do often stick—"Wop Dago Sheeny 'Kike 'Nigger 'Norsko 'Mick 'Spick 'Polack 'Hunkle 'Bobunk 'Chink Jap 'Wetback Greaser

होय का सामना करना पड़ा उसमें वे बाध्य होकर कमोबेश विविक्त एथनिक समुदायों में एकत्र हो गए हैं। इसलिए उनमें से बहुतों ने अपना पार्थक्य बना रखा है। या यों कहें कि यह पार्थक्य उनमें जन्म गया है। दूसरे ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अपने को इससे मुक्त रखा है। उन्होंने संकराण भी किया है। अगर हम यह मान लें कि किसी एथनिक स्टाक का सदस्य होने में कोई सीमा नहीं है तो अमेरिका में स्टाक के सम्पूर्ण अर्थ पर हम यथार्थ की दृष्टि से बिना किसी आशंका के बंधीमुक्त होकर विचार कर सकते हैं।

तब यह है कि अमेरिका व्यक्तियों के विनाशकारी हथियार होने से कुछ अधिक है। अमेरिका स्टाकों का एक जमीन है जिसमें वे प्रत्येक पहले-पहल जाने से लेकर अन्तिम आश्रय तक अपनी अहमियत बनाय है। अमेरिका की प्राथमिक राष्ट्रीय समृद्धि इस बात में है कि यह सभी विषयों का मेल है। अमेरिका की सांस्कृतिक समृद्धि इस बारे में है कि इसमें परम्पराओं और स्वभावों का मेल है। जब तक कि स्टाक अपनी अहमियत न सार्ने उनके मेल की बात चर्चेहीन है। जब तक कि वे सब इच्छाओं को स्थापित न सार्ने, अमेरिका की सतत प्रवाहमान जीवन धारा में बहकर उनकी शक्ति बल न जाए, किसी अमेरिकी स्टाक की बात बढाना चर्चेहीन है।

अर्थ है कि एथनिक स्टाकों की यह असीम संकरता अमेरिकी जीवन के जो गुण हैं उसके लिए लाभकर है या हानिकर। यह है कि असीम संकरता के विरुद्ध कुछ बाधित तर्क दिये जा सकते हैं। इस मेल में जो वे वर्ग सारीरिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों में प्रमाण पड़ जायें जिनकी अन्तर्गत अधिक हैं। अधिक जन्मदर जीवन-शक्ति का परिचायक हो सकती है। पर यहाँ प्रश्न तो इन व्यक्तियों और संस्कृतियों के गुण का है जिनका संकराण हो रहा है। पर कुछ अमेरिका के तर्क दुहरा है और वे परस्पर विरोधी हैं। एक तर्क है कि अधिक ताजे प्रवासी मोहगारी हैं। वे अपने से बाहर विवाह नहीं करते। इसलिए उन्हें छोड़ ही देना चाहिए। दूसरा तर्क यह है कि देश भर में उनकी बाढ़ जा जायेगी। वे सर्वत्र छा जायेंगे। वे अपनी संख्या अपनी प्रजनन शक्ति और अंतर्विवाह द्वारा सारे देशी स्टाक (native stock) को ही नष्ट कर देंगे। इस प्रकार बहुत एक तर्क का आधार है कि वे मिलते नहीं हैं वहीं दूसरे का आधार है कि वे मूल मिलते हैं। मुख्य तो संदेह है कि इन प्रक्रिया में तर्क उठना नहीं है तृतीय आशंका—ईर्ष्या अथवा घबराहट और भय की भावना—जो 'गुप्त अमेरिका' बन न सार्ने हुई है।

यदि इन आशंकाओं को ध्यान कर दें तो सारीरिक दृष्टि से अमेरिकी स्टाक की एकतामय कल्पना का अर्थ तो यह है कि सीमाहीन संकराण में अमेरिका होना हो जायेगा। प्रतिष्ठित लेखक भी इनसे भयभीत हैं। यह है कि जीवन

घोर सांस्कृतिक दृष्टि से ह्यूडी एशियाई, स्लाव यहुदी और मूलभूत सागरीय लोग विद्युत् प्लेनोसैस्मों को भ्रष्ट कर देंगे। यदि इस लोगसेपन का कोई प्रय है तो यही कि यह यह मानकर चलता है कि कोई विद्युत् (किन्तु पस्थित्वहीन) स्टाक है जो संकरण के कारण क्षीण और भ्रष्ट हो रहा है। लोगसेपन का मय ध्वनवी रक्त का मय है और यह मय तब तब तब को है जिसका यह विश्वास है कि उनका धार्मिक और सामाजिक प्राधान्य कुछ बाहरी लोगों के कारण खतरे में पड़ गया है। इसीलिए ऐसे लोग मस्ती हथमावरों को अपना काम समझते हैं।

राष्ट्रों के राज्यों में यह मय पुनर्गठन की सीमा तक पहुँच चुका है। जहाँ शासक बने न अपनी 'घोरी प्रभुता' की रक्षा के निमित्त मिश्र-जन (miscegenation) के विरुद्ध कानून भी बना डाले हैं। मिसिसिपी और जॉर्जिया जैसे राज्यों में कानून के द्वारा ऐसा कोई भी विवाह धर्माग्य (felonious) और अपराध करार दिया गया है जिसमें एक पक्ष क्वेच है और दूसरे में अफ्रीकी वेस्टइंडियन भारतीय या मयोल रक्त का पता चल जाए। इन मिश्र-जन कानूनों का एक बड़ा पहलू भी है। यदि हम यह मानें कि मिश्र-जन से अमेरिका में लोगसेपन फैल जाएगा तो सत्य तो यह है कि जिस राज्यों में ऐसे कानून हैं उनमें ह्यूडी बिमके विरुद्ध मुख्य रूप से यह कानून बना है मुस्लिम से सारी जनसंख्या के एक प्रतिशत होने।

यह इस बात का प्रयत्न नहीं है कि संकरण से इन्कार किया जा रहा है। बल्कि लोगसेपन का तो प्रयत्न ही नहीं जट्टा क्योंकि तुच्छता की कोई कमी नहीं है। जहाँ संकरण होगा वहाँ प्रत्येक एथनिक-ग्रुप संकरण में दूसरे को 'भ्रष्ट' करेगा। पर इसमें प्रत्येक एक दूसरे से कुछ धारणाएँ भी करता है और उस धनवान बनाता है। तब तो यह है कि संकरण अपने में न तो चपटा है न कुछ ही। इसका मुख्य प्रभाव यह है कि यह ऐसा क दोनों किमार्गों पर धानु अधिक स्वभाव में कुछ एक पैदा करता है। दूसरे राज्यों में जेन (Jews) के प्रभुत्व विनिमय के फलस्वरूप जो कुछ पारेपित होता है उसका गुण मोमल है। किन्तु इससे हमें उच्च बरातन पर अधिक प्रतिभाएँ भी मिलती हैं। संभाव्य का पैदा दोनों घोर विस्मृत होता है। जैसा मैंने कहा है कि सब कुछ उन व्यक्तियों और संस्कृतियों पर निर्भर है जिसका भेल होता है। अमेरिका का एथनिक पुण की विशेषता यह है कि यहाँ इतने विभास धावार पर स्टाकों और परम्पराओं का भेल हुआ है जितना इतिहास में कभी नहीं हुआ। संस्कृति क कुछ इतिहासकारों का यह कहना है कि बारी स्टाक के बीच मय का परिणाम सांस्कृतिक ध्वनति में होता है। किन्तु इटली के नगर राज्यों स्पान हार्नेण्ड ब्रिटेन और बस भारत तथा अमेरिका का प्रकाशरण या यही जटमाता है कि मस्तिष्क का सबसे धोखेबी मुप सब धाता है जब यह संकरण अपने चरम पर जाता है। इसलिए

स्क्रिप्स थ्यूपाक सिफायो सेंटमुई की बाँस-राजनीति (boss politics) पकते पकड़ प्रवासी के सम्पर्क में परिवर्तन के ही कमलकण्ठ पीठा हुई थी। ये प्रवासी काम की तलाश और कामकाज का सामना करने के लिए निजी मददगार चाहते थे। प्रवासियों के देश के घर-मठों का प्रभाव कम कम प्रकट हो चुका था।

प्रवासी की पहली पीढ़ी चाहे वह फार्मों पर रही हो या बड़े शहरों में मजदूराना के प्रवेश द्वार पर ही थी। यही से बहुसंख्यक में अपनी संस्कृति भाषा की महार, व्यवहार और निजत्व मेज रही थी। उसका बेटा दूसरी पीढ़ी का प्रवासी ही वह व्यक्ति था जिसे उपमहासागर उपहास के लिए चिन्तित करते थे जो माता को नमन करता था या 'बेटी अमेरिकियों' (Native Americans) को उनके ही खेल में मात दे रहा था। यह धूलबर्ष (Budd Schulberg) के *What Makes Sammy Run?* का सामी और जेरोम वेल्डमन (Jerome Weidman) के *I Can Get It for You Wholesale* का हैरी बोजन भी बही था।

तीसरी पीढ़ी का प्रवासी दो विरोधी शक्तों में पड़ गया था। एक ओर तो उस पर उन लोगों का दबाव बढ़ रहा था जिनके पूर्वज राष्ट्र के पूर्वज मान लिये गए थे। इससे उसमें भी स्वाभिमान और कल्पनात्मक भाव रहा था। इस प्रकार वह अपने प्रवासी अनुभव से दूर हट रहा था। दूसरी ओर मार्क्स हेन्रिक ने बतनाया कि "जो बेटा जूझता चाहता है वोला उसे मार करता है" और तीसरी पीढ़ी का प्रवासी अब अपने पूर्वजों के लिए लड़ता था या उससे वह छिपे या दूर हो जाये जो उसे स्वीकार करती थी। ये दोनों प्रवृत्तियाँ प्रवासी के दोनों ओर परवर्ती में मिलती थीं। वह मिला बिस्वास है कि हेन्रिक की बात में और अधिक सत्य है।

प्रथम महायुद्ध के बाद प्रवास के सम्बन्ध में अमेरिकी दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ। कमलकण्ठ 1921 और 1924 के कानून पास हुए जिनमें मूल के आधार पर प्रवास के नियमों में भेद किया गया। यह तो यह है कि कानून के लिए मान्यता प्राप्त पिछली पिछली के मूल के पूर्व गए प्रवास की विपदा महार के ही कारण ही गया था। अज्ञानकारी वर्ग का विश्वास है कि जैसे मूल के लोगों और कर्मकाशी सिद्धांत मुझे हैं वैसे ही एथनिक अवस्था में भी होता है। संघर्षों के बीच अमेरिकी—गू ईंग्लैंड के बाँसी या मध्य-पश्चिम के स्वायत्त-प्रतिष्ठ वाली—सोचने लगे कि उनका पुराना प्रभाव अब अल्पसंख्यक प्रवासियों के कारण समाप्त हो रहा है।
 इनके चिन्तन और भावना की को 'बो' के रूप में भी अल्प-संख्यकों में भी कुछ के लिए उचित है।

धियों के लिए फैल गया। मजदूरों की मुरजित सेना—जो व्यापारियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे भीखोपीकरण में सहायता मिलती थी—बहुत से मजदूर नेताओं को मय का कारण प्रतीत होने लगी क्योंकि जब सभी मजदूर के लिए प्रतियोगिता का ज्वर उत्पन्न हो गया था। 'प्रगतिपुत्र' के कुछ बुद्धिवादी जो देशी परम्परा को भागे बढ़ाने के लिए उत्सुक थे अब प्रवासियों के विरोधी हो गए। दूसरे यूरोप के उन सिद्धांतों के प्रभाव में वे जो एक मस्स की दूसरी से बड़ा या छोटा भावते हैं। अब उनका रुढ़ि के सिद्धांतों को 'वैज्ञानिक समर्थन' मिल गया।

याफियों वाणिज्यालयों मजदूर सब बातों प्रगतिशील बुद्धिजीवियों नस्ली सिद्धान्तवादियों जनसंख्या की बुद्धिवालों और पेघावर जाति द्वेषियों ने सम्मिलित होकर 'प्रवासियों' के बंधनों को भी बिपवास विज्ञान में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली कि अब प्रवासियों का मानमन बरतना है और इसे बड़ाई से रोकना चाहिए। उन्होंने अपराध जाति और पूर्वी धृष्टता का भय दिखाकर जगह मजका दिया। उन्होंने याफिया और ब्लैकहूड हेमार्केट के घराबन्दता बाधियों और यहूदी सोमनेबाजों के उवाहरण दिए जो अन्तर्राष्ट्रीय साहकार बन चुके थे। उन्होंने भयभीत धर्मरिक्तियों को बरत दिया कि उनका पूर्वजों का देश अमेरिका इन नव प्रवासियों के कारण उनका न रह जाएगा। वे सस्ती मजदूरी पर काम करते हैं (इस प्रकार मजदूरी के मानक को गिराते हैं) छठलाक पुस्तकें पढ़ते हैं, मूमरों की भांति खूँटे और जूहों की तरह बन्धे पैदा करते हैं। घाति-भाति।

निरखर ही प्रवासी समुमय में एक नया परिवर्तन हुआ। जिसे प्रतिधि और प्रातिवेय दोनों न अनुभव किया। 1880 व 1890 के बीच लिखते हुए जम्स हाइन न देखा कि जिस बौद्धिक और नैतिक बातावरण में प्रवासी यूरोप से भाकर बसते हैं उनमें उनके पचाने की शक्ति कहीं अधिक है बनिस्वत उनके नस्ली दुर्गों के परिवर्तन के। उसने एक प्रकार से अमेरिकी बातावरण के बरत पाने की शक्ति की सराहना ही की थी। उसने प्रवासियों का बचाव ही किया जो अमेरिकी ईशम को प्रष्ट करन वाले सर्व के समान माने जाते थे। फिर भी जब वह भिन्न ही रहा था उन्नी काल में अमेरिकी जीवन में परिवर्तन भा रहा था। पहले प्रवासी होने का अर्थ था—एक होने वाले समुमय का भाग होना। वे अन्तर्बाहू और बेटीक न थे। न उनको अपनी सांस्कृतिक उत्पत्ति पर ही सज्जा घाती थी। किन्तु मूहयुद्ध के बाद अमेरिका ऐसा देश हो गया जहाँ अमत्कार हो रहे थे जहाँ बुखने का मतलब अमत्कार करने में प्रवेष्ट था। अब प्रवासी होने का अर्थ कोई प्रयोग न था। अब उसके प्रति सन्देह की आवश्यकता थी कि कहीं कोई अन्धी बीज मुनाकर पैदा न हों थे। अब अन्ध-धुम्क

कोई भी स्टाफ सम्बन्धित

कोई भी स्ट्राक अमेरिका में घातक नहीं रहता जो वह था। नये भौतिक वातावरण और अन्तर्मिश्रण (intermingling) के फलस्वरूप वह अपनी मुख्य भाषा (type = क्रिस्म) से दूर हटता जाता है। कोई भी स्ट्राक जब वह प्रयास कर लिए चल पड़ता है तो वह अपने भूतकालिक वातावरण से अलग होकर एक नए वातावरण में पहुँच जाता है। अमेरिका में लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास एक वन से दूसरे में परिवर्तन के कारण वातावरण की तथा बदलते रहने की प्रक्रिया बालू रहती है। परिणाम में वह परिवर्तन बिना अधिक हो सकता है इसका ज्ञान डॉक्टर बोघस ने 1912 में अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'अजेंड इन बीविसी फॉर ऑफ डिसेम्बलिंग ऑफ इन्विजनैबल' में दिया था। सामान्यता विश्वास यह है कि खोपड़ी की माप एक ऐसी मस्ती विशेषता है जो कभी नहीं बदलती। बोघस ने निष्कर्ष निकाला कि प्रवासी यूरोपीय और इटली नामों के लोगों की मापकीय क्षति से दूर वातावरण का है। यह ध्यान-वान जीवन-स्तर, जनसांख्यिक या किसी अन्य प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण के कारण है, नहीं कहा जा सकता। बोघस का विषय वा भौतिक कारण जिसके बारे में प्रमाण की जाती है कि वह परिवर्तन के प्रति अधिक अवरोधनीय है। जो बात मापकी के सम्बन्ध में सही है वह मानसिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों पर और भी जोर से लागू होती है। और जो बात वातावरण और जीवन-स्तर के परिवर्तन के प्रभाव के कारण हो सकती है वह जीविक-विषय के परिणाम के बारे में भी लागू है।

मुझे आश्चर्य यह होता है कि हमारे देश में अभी तक भी लोग सोचते हैं कि

मुक्त प्रारम्भ यह बताकर हुआ कि थारनरुड थायनबी (Arnold Tynbee) ने इन्हीं पाँच हिस्सों (इतिहास का अध्ययन) विश्व १९२०-२१ में बोधस के कार्य को समग्र रूप से समझा है। थायनबी का तर्क है कि बोधस भी अपने बिरोंबियों की ही मति नरभी विचारधारा का है। बोधस ने सिखा है कि उसका अध्ययन तात्वेनिक है क्योंकि 'यह बतलाता है कि किसी मरल की वे विशेषताएँ या उनके पुराने कर से स्थायी होती हैं ना पानाकरण में बढ़ी नहीं रह पाती। और हम बाध्य होकर इन निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब धारी के ये विचार गुण भी परिपक्व होते हैं तो प्रवासी का पुरा धारी और समझी मानविक बनाएट भी बदल सकती है'। थायनबी के समुसार इससे स्पष्ट है कि बोधस मानता है कि 'मरल के सभी गिदालों का मूल पथ है धारीरिक और मानविक विधापनाओं के परस्पर सम्बन्ध।' त्रिगु इनमें बोधस के 'मरल' तकती है बाहर गट पर ध्यान नहीं दिया गया है त्रिगुम बाताकरण के बनाव में बाह्य मानविक और धारीरिक सदाएँ दोनों की जोमाता पर जो

नया है। नस्सबादी बिचारभारा का मुख्य तर्क यह है कि ऐसी कोई कोमसता नहीं है। ठेकी या मीची भाति क अपने निश्चित ससाण होते है। बोमस न कहा कि ऐसा कोई एकदम कठोर नियम नहीं है। (यद्यपि ऐसी कोमसता भी बहु सीमित ही मानता है)। नस्सबादी धाधार की दर्जाबन्दी पर खोर देते हैं वे कोमसता से कतई इन्कार करते हैं।

पाम ऐंजिल मे अपनी 'अमेरिका याद करता है' (America Remembers) नामक कविता में कोमसता का वर्णन किया है। कविता का पंक्तिष्ट अनुवाद प्रस्तुत है—

जीवितो के प्राचीन ससुण झल गये
बाले हुए सूर्य की छाया में साफ दबा में
जो केन्द्रों में मंदिरा की मीठि बुझी, सँबले मुल
पीले हुए, मुख की शम्बियाँ टड मरीं, घस घरीं, बाख
कडे हो गये टोके रग कीडे पड गये, खौर शरित खला
हरने रॉर खौले कमजोरधार खौले
पड़ी लो ठसुठ खौर प्रत्येक ऊ
को नसों में एक कमानी थी किस्ने उठे डकेस दिया
जिन्दगी की एक देखीन सनक में।

रक्त भिज गये

पामल की भाति (कीन जानता है
कैसा ककनकी बहु किलक यण्णा बाण्णा
इन रक्तों की प्रसन्न वेदना से
एक नये निरव मशादीप का निर्माण करने के लिए
एक नयी मानस भाति का।)

यदि ऐसी परिस्थिति हा कि ठेकी से परिचलन हों तो प्रदन यह है कि अमेरिकी स्टॉक में किउनी कोमसता बा सक्ती है। स्पष्ट है कि अमेरिका में एवमिक स्टॉक (यदि अमेरिकी-भारा की किसी संघर में पहुँकर एकदम प्रलग न हो जाए) अपनी पुरानी भाति (own type) से दूर हो रहा है। किन्तु क्या ये अपनी भाति से एक नई सवाल में प्रलग हो रहा है जहाँ न्यूनाधिक मात्रा में यह स्थिर होगा? या क्या परिचलन की प्रक्रिया जानूँ धीरे बढ़िगीत है जिससे घबका मिथल हाकर एक नई एवमिक भाति का निर्माण होगा जो एक हीसे हीसे बीसे [की भाति होयी जो वर्तमान भातियों (existing type) को—जो रूप तो पार्येयी पर बदले रूप में—बदल से लिए होगा।

जो सम्भव है वह इनमें से किसी की भाति सुस्पष्ट नहीं है। हम नहीं जानत कि अमेरिका में एवमिक यक्षिप्य क्या होगा क्योंकि जगनिकी (genetics)

बड़ी तेजी से अपनी अन्तर्गुटि धीरे-धीरे बूटिकोण बदल रही है। अखिल मानव धातवी दृष्टि में भविष्यवाणी की है कि "मात्र के धीमत् अमेरिकी जो ईंट की तरह धस्तिरोषियों वाले हैं नहीं रहे जाएंगे। यदि यह भी जाएँ तो एक संस्थागत पुन्य प्रतिनिधि के रूप में ही। भविष्य के अमेरिकी 'पुन्य' होने परीर से अधिक बुद्धि-यत्ने बुद्धिपूर्वक अधिक सम्बन्धों की कल्पना बचाने वाले। धीरे-धीरे? मात्र से सीधे स्तनों धीरे-धीरे निरन्तर बानी।" धीरे-धीरे में भी अन्तःकरण लगाए हैं वर कुछ इससे अधिक नहीं है। किन्तु इन सबका अनुमान है कि एक नई ऐनिक इकाई का निर्माण हो रहा है जिसमें सभी विभिन्न पीढ़ियों का विविधता भरा सार जाग होना किन्तु उस इकाई में स्वभाव धीरे-धीरे रचना धीरे-धीरे का भी कोई प्रधान टप्पा होगा।

इसका अर्थ यह नहीं कि पुराने स्टाक बचल जाएँ धीरे-धीरे अमेरिका ऐनिक दृष्टि से एक हो जाएगा। अमेरिका की जैसी निम्न जनसंख्या है उसमें दोन दोन (two variables) संख्या में बहुत अधिक है धीरे-धीरे भविष्य में किन्तिनाओं में अमेरिकी स्टाक का सन्तान है वे भी अनेक हैं। इतिहास में यह प्रथम महान् उदाहरण है जहाँ ऐनिक प्रचुरता विवाह की स्वतन्त्रता के साथ मिलकर एक ऐसे ऐनिक भविष्य का निर्माण कर रही है जिसकी इन कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं।

यदि हम फिर प्रश्न करें कि क्या कोई अमेरिकी स्टाक भी है? तो जगत् होता कि हाँ एक नहीं बहुत है जिसमें सभी एक राष्ट्र में एकत्र नहीं हुए। इनमें कोई भी एक-दूसरे में अधिक अमेरिकी नहीं है। (वाह कोई ऐसा दम भर ले) कि प्रायः स्टाक अपने मूल स्थान से विभक्त हैं प्रत्येक अमेरिकी बातावरण में आकर बदला है क्योंकि वे अमेरिकी महादीप में साब रहते हैं धीरे-धीरे प्रायः में विवाह सम्पन्न करते हैं। अमेरिका प्राचीन विज्ञान धीरे-धीरे मनोविज्ञान की एक बड़ी प्रयोगशाला है जिसके प्रयोगों का एक ऐसा परिणाम निकल सकता है कि जिसका स्वप्न में भी हमें उपास न हो। सभी स्टाकों में ज्ञान-अज्ञान में अपनी भाँति में विभक्त हुआ है। स्पष्ट नहीं मूल रूप में धीरे-धीरे बहुत धीरे-धीरे, वर निर्विवाद रूप में नई भाँतियों का निर्माण हो रहा है जो सभी सामने नहीं आई है।

जब वे सामने आएँगी तो वे अमेरिका की रचना होंगी अमेरिका उनकी रचना न होगा। फिर भी जब हम अमेरिका के मानव पदार्थ में निरन्तर पुनर्निष्ठ भाग का ईगर् है तो क्या इन बातों में कोई सम्बन्ध रह जाता है कि अमेरिकी भविष्य का निश्चय करने वाले हममें नहीं है? सेटलरशिप (Settler Expropriation) में निगा का केवल एक विषय है जिसके बारे में कुछ निश्चय है। यह विषय बीच की धाँचा में निहित है।" जो कुछ हम अमेरिकी स्टाक के बारे में जानते

हैं उसके आधार पर इसका एक ही अर्थ है कि बिजय बीज की कठोरता की नहीं उसकी कोमलता की है।

2. आश्रय के अनुभव

घटाधियों से यूरोप के आने वाले आश्रयकों के मुख्य अमेरिका की शक्ति और पैसा बढ़ाते रहे हैं। हम लोगों के आने के साथ ब्रिटिश द्वीप समूह से पश्चिमी यूरोप और स्कैंडिनेविया से मध्यसागरीय देशों स्थाय रहस्य तक रहे हैं। सन् 1790 में अमेरिका की जनसंख्या 40 लाख से भी कम थी। इनमें 7-8 लाख हमरी के और मोरी आबादी में 82 प्रतिशत अंग्रेज थे। आगे 40 वर्षों में 1830 तक प्रवासियों का प्रवाह मन्द था। 1830-40 के दशक में 'घटसाधिक प्रवासियों' की गति दीप्त हुई—यहूँ आयरिश धार्मिक फिर अर्मेन किसान और कारीगर, फिर भूमि के मूल स्कैंडिनेवियन बने। 1880-90 के दशक के पूर्वार्ध में एक बड़ी 'नई नहर आई'। नई, दो धर्मों में—एक तो वे पश्चिमी और उत्तरी यूरोप के न होकर पूर्वी और दक्षिणी यूरोप के थे और दूसरे, कि वे भूमि पर नहीं बल्कि बड़े सहरों में और खानों और मिलों और कारखानों में काम करने लगे थे।

कुछ संख्याएँ ऐसी हैं जो नाटकीय कथा कहती हैं। 1880 से 1914 के बीच लगभग ॥ करोड़ व्यक्तियों ने यूरोप छोड़ा—इनमें 55 करोड़ संयुक्त राज्य अमेरिका में आये। 1800 से 1930 तक के बेड़े की वर्षों में 4 करोड़ नए लोग संयुक्त राज्य अमेरिका आए। इनमें 55 प्रतिशत यूरोप से 11 प्रतिशत अमेरिकी गणराज्य के अन्य देशों से आये। एशिया से 3 और विश्व के अन्य देशों से आने वालों का प्रतिशत 2 ही था। 1904-14 के दशक में यह आगमन घटती दरम सीमा पर था जब एक करोड़ व्यक्ति आये। 1907 में जो आगमन के लिए दरम बर्य था 12-8 लाख से अधिक व्यक्ति आये।

जब कि व्यापार, कुछ और प्रवास के विप्लव ने विश्व को घरी दिया और पुराने विश्व में 'अबसर की रेखा' पतनी और नये विश्व में मोटी होती गई करोड़ों व्यक्ति बलमार्गों से बहते हुए अमेरिका आये। ऐसा मानूम पड़ता था जैसे अमेरिका न बलने की लोगों को खस हो गई है। इस क्रम में सहायता की जहाजी कम्युनिजों ने जिनके दसाज भूम भूमकर नये सितारे के बीज का बसान करते और प्रवासियों की भर्ती करते थे। यातायात के व्यय कम होते आने से भी इसमें मदद मिली। ये पीकारे (attempts) न होते तो भी लोग देश छोड़ते ही। अमेरिका के नाम में यह चुम्बक था जो लोगों की जादू की शक्ति से बंध रहा था।

मुख्य रूप से वे किसान थे जो आयरलैंड अर्धनी स्कैंडिनेविया के देशों से

इटली स्व धीरे धीरे तथा वास्तविक रूपों से आ रहे थे। और भी दूसरे लोग थे जो नगरों से आ रहे थे—बेकार कारीगर बिगड़े बुकानवार, राज नीतिक निर्वासित बुद्धिजीवी जिन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का प्रयत्न नहीं मिला। और जो "सैटिंग फार्म" (उपहास में उन्हें ऐसा ही कहते थे) की स्थापना करना चाहते थे। किन्तु जो परिवार धीरे धीरे अधिकृत भूमि पर स्थापित थे जिन्हें बड़ी भूमि सब पालन करने में प्रसन्न थी। सेत छोटे थे। गाँव का समाज ऐसा था जो परम्पराओं के कारण कृषि प्रणाली से लाभ न उठा पा रहा था। जल के बोझ से सभी तरीके अपनी सीमा पर। सब प्रकार के जलवायु के हानि के कारण मर कर दिया। जमीन के छोटे-से टुकड़े पर प्रतिवर्ष सब दया और किसान बेरहस कर दिया गया तो अपने गाँव का छोटा या बड़ा जल प्रसन्न हो गया। माकली और पादरियों की परम्परा से बँधे उस किसान के लिए जिसके जीवन में बाधा की कोई किम्बदन्त न थी और उसके बच्चों का भविष्य धर्मकारण या स्वाभाविक वा कि वह एक ऐसे देश की प्रतिभा के सम्मुख नतमस्तक हो बड़ी जमीन थी और वह सब सब भूमि सकता था वह एक उसका अनुकूल काम न मिल जाए, वही उनकी सतति के लिए प्रसीध सम्मानार्थ थी। वे क्रूर (Do Or Deo) न बहुत बड़े मिला था "अमार यूरोप में रह जाते हैं सम्भवतः और सही सब के सोन प्रवासी हो जाते हैं।"

युरोप के जलवायु और नई जगह पर अपने के बीच प्रतीक्षा और जल के काफी कठिने अनुभव होते थे। यूरोपीय तरीके के बन्दरगाहों के विचारधारा में वह रात रात जाकर जल मायना या फिर किसी समाज की माकली उपकी दाता का प्रत्यक्ष होता था और जल में जहाज बसता था। जहाजों के जाने के समये जिनमें से जाते थे—बड़े जल प्रवाह। जहाज जाने जाने में स्थान से अधिक जानी उनमें रुक बैठे थे। वे समरे भी प्रायः ठह भीड़ से भरे बड़े बीमारियाँ के घर और बड़ा में भरे रहते थे। प्रवासी की दृष्टि से जमीन पट्टी और जल में उनमें बाई विषय प्रकट नहीं होता था। जाने-मने की तवी और जानी की तराही के कारण शान्तियों को प्रायः धीरे धीरे जहाजी बुकार हो होता ही था, एक बुगरी ऐसी बीमारी भी हो जाती थी जिसमें खून की तराजी में तराई भर में बचोवरे पड़ जाते थे। "मे स्त्री" कहते थे। जहाज बड़े-बड़े बड़े जहाजों पर जहाजों से एक एक प्रवासी की शान्ति इन भरे जहाजों के देगवर बचोवरे हो जाती था। वह पबदा जाता था। जल तराज्य काम माना था कि वह जल में नके। जमीन भी जिसका नाम जमीन भी जमीन पर जाते जिनमें पड़े नाम करना वह और नाम की स्थिति स्थिति ही गणन वरी न हो इसलिए यह जाने ही देश के मानस्य मानस्य मन्त्रियों के

शोषण का शिकार हो जाता था। कभी-कभी तो प्रवासी जिस बड़े शहर में उतरता वहीं बस जाता था। अपने ही देशवासियों की 'मीटों' (ghetto) की भीड़ में। कभी वह धीर भीतर बसा जाता। कमीन का कोई टुकड़ा से भेता या किराये के घाघरी के रूप में सागिर हो जाता। यहाँ भी प्रायः वह अपने ऐथनिक स्टाक के लोगों के साथ ही रहता। दोनों रूपों में उसकी भावस्थकता होती कि कैसे वह अपने भ्रम धीर कौशल से रूप्य पैदा करे। भ्रम के बाद यहाँ तक वह मामूली कार्ब पर बसर कर सब-कुछ बचाता था ताकि किसी स्टोर या रेस्तराँ या घम में कोई छुछरा छोटा-मोटा रोखवार करके सम्भुल गया जीवन आरम्भ कर सके।

यहाँ तक सम्भवतः अपने सेप जीवन भर इन प्रवासियों में बहुत-से गैरों की भाँति (पास्कर इण्डलिन ने बड़े मार्गिक ईन से 'रिड अपस्टेड' में इनका विश्रम किया है) रहता था। और वह उस संस्कृति से हो गया था जिसे छोड़ दिया था और वह इस संस्कृति से भी था जहाँ वह पाया था क्योंकि प्रती सम्पूर्ण रूप में वह उसका नहीं हो पाया था। घम में वह अपनी कँ लिए भी पैर था। गाँव-समाज की पुणनी व्यवस्था में चाहें उसे कष्ट प्रचय या बर उसमें स्वावित्त तो था। उसमें प्रत्येक वह तो जानता था कि उसे क्या करना चाहिए। विश्रम अमेरिकी नगरों के तीर-तरीकों धीर तबी से बढ़ते फर्मों से वह बढा जाता था। वह ऐसी शक्तियों की बकड़ में था चुका था जिन पर उसका कोई बल नहीं था। उसे अपनी मेहनत को बाजार में डालने में बदलना था ताकि वह सब-कुछ प्राप्त कर सके जो जीवन में उसके लिए आवश्यक था।

वीटिय फिशान बय या बहुवी परम्परा के ऐसे हुए परिवार में तनाव पैदा हो चुका था और नये समाज में धब के दूटने जनी थीं। प्रायः वह बुरी तरह दूटता था पर जो इससे बच रहते थे उन्होंने पाया कि एक गैर सवार का बिल चुनकर मुकाबला करने के लिए उनमें लगाव के रूपन धीर मजबूत हो गए हैं। सबसे कुछ की बात तो यह थी कि बेचार प्रवासी अपने बच्चों के लिए भी पैर होता था रहा था। ये बच्चे एक नये ताल के बल पाछानी से नये रास्ते अपनाते जा रहे थे। ये जीवन के नए उद्देश्य को स्वीकार कर रहे थे और नये बातावरण में बल-मिल जाने के लिए उत्सुक थे। ये बच्चे भी धब उससे दूर धीर गैर होते जा रहे थे। शायद अपने धीर अपने नये शक्तियों के बीच के फायल को समाप्त करने के लिए ये भी अपने माँ-बाप को 'अमेरिकी' दृष्टि से देखते थे और उन्हें बाहरी धीर प्रजननी समझते थे। सरपने का बेरा पूरा हो चुका था।

इसलिए प्रवासी का अनुभव सदासी धीर कुछ से घरा था। किन्तु इसे केवल इसी रूप में देखना भूल होयो। इसमें उच्चता और उच्चता भी था। करोड़ों प्रवासी नए देश को अपना बल समर्पित कर प्रचलता धीर पराज्य

की भावना लेकर मरे। किन्तु कई करोड़ इस धर्म-परीक्षा में बच भी रहे। वे अपने आई-बम्पुओं में प्रमाण प्राप्त कर सक। वे जिम्मा रहे और उन्होंने देखा कि अमेरिका से उन्होंने जो धापा भी भी बह पुरी हुई। उनके बच्चों के जीवन में यह धापा दुपुने रूप में पुरी हुई। वे केबेकर ने अपने साथी प्रवासियों के बारे में लिखा है 'जा भी होता उसमें उनका पुनर्जन्म होता, नये कानून, यहन सहन की गई प्रणाली एक नई सामाजिक व्यवस्था यहाँ वे मानव बन गए, यूरोप में वे बेकार पीछे थे जिनके लिए राह थीर ताड़नी देने वाली कुहार की धाव समझा थी जो न मिली। वहाँ वे सुरक्षित गए। धरीवी मूख धीर बुद्ध के उनकी कटाई कर हो थी। पर जब दूसरे पीढ़ी की तरह जब उनका स्वानाम्बरण हो गया उन्होंने उन्हें एक ही थी धीर जब वे कुल-कुल रहे हैं।' सम्यह है कि 18वीं सताब्दी के अन्त में लिने इन काव्यमय वर्णन को एक सताब्दी बाद कोई प्रमाण मानता कि नहीं किन्तु इसका एक धर्म है जिसे वे ही समझ सकते थे जो प्रवास की इस सारी प्रक्रिया से होकर निकले थे धीर उन लोगों के बेटों और पोतों के लिए भी जो धाव उनके स्वानाम्बरण से घामन्द से रहे हैं इसका कोई धर्म है यद्यपि उन्हें ऐसी कोई धर्म-परीक्षा नहीं देनी पड़ी है।

किर भी इस धर्म-परीक्षा में कुछ ऐसी बात व्यवस्था की जिसने प्रवासी और उसके गए देश को समुद्धि थी। बाई उसने अपने पुरान नाव में अपने को असफल मान लिया हो बीराई पर वह बिबल भी हुआ हो धीर प्रत्येक हार के पश्चात् वह अपने कोष पर ही सम्यह करने लग गया हो किन्तु एक बीड़ को कोई जगह छीन नहीं सकता वह है उसका प्रत्यक्ष अनुभव। जो भी सिद्धि उसे मिली वह उसके बाहुबल से। पढ़ने के अमेरिकी जनों को जो अनुभव हुआ था वह उनसे भिन्न था। जिन कठिनाइयों का सामना उन लोगों ने किया था वे बंबनी समाज के कारण थीं। इस गए अनुभव में बंबनी एकान्त की एक दुःख-पूर्ण महार्षी थी जिनकी अमेरिकी जीवन का परवर्णकता थी। दुःख की चरम सीमा पर भी हममें समीपता का एक सफल था जिसने प्रत्यक्ष दृष्टि में एक गए अमेरिकी अनुभव की सृष्टि थी। अमेरिकी मन में बहुत कुछ ऐसा था जो स्थायी धीर कन्ट्रिब्यूट हो रहा था। प्रवासियों के अनुभव में इससे टकराव भी धीर एक ऐसी गर्मी पैदा कर दी जिसने उस बर्तनी कटोरता को घसा दिया। निष्ठन व उ बयों से जब प्रवास के लिए द्वार प्राय बन्द कर दिया गया है कम प्रवासी आए हैं जब पुनर्जन्म की प्रक्रिया का जमाना भी बन्द है।

प्रवासियों ने अन्त में अमेरिकी धार्मिक जगत् में अपनी स्थान बना लिया। जा भी गई ताहर धाई उनमें अपने से ऊपर की तरह को जाने बड़ा दिया। किन्तु अमेरिकी धर्म-व्यवस्था की थी इस प्रवास ने प्रभावित किया। प्रीयोबी-करण के लिए आवश्यक धार्मिक-राशि उसे मिली। अमेरिका के प्राकृतिक

साधनों की समृद्धि के बारे में जो भी कहा जाए पर सबसे समृद्धिवादी साधन तो मानव-शक्ति का था। यदि वे प्रवासी न होते तो अमेरिका में इतनी तेजी से न रेलें बनतीं न कोयला निकलता न इस्पात की भट्टियाँ चमकीं और न फल-फागुलाने। एक बात और है वह वह कि यद्यपि सही है कि अधिकांश प्रवासी प्रमुखतः कमचारी थे पर वे अमरतोड़ परिश्रम कर सकते थे। साथ ही उनमें बहुत-से कुशल कमचारी भी थे जो यूरोप की औद्योगिक प्रगति से परिचित थे। इसलिए 'यह महान् देशांतरण' केवल जनता का ही नहीं बल्कि प्रतिभा की एक और सांस्कृतिक परम्पराओं का भी था। प्रवास में कृत्रिम से उपमोक्षता और निर्माता भी बढ़। नई मशीनों ने उत्पादन की लागत और दाम घटा दिए फिर भी मिला बहुत करेड़ों प्रवासियों ने मुनाफे में कमी न होने की ओर लौटकर फिर उन्हीं जगहों में लग रहा था। प्रवासियों के पास बचते समय रखा ही गया था। अब उनका जीवन-स्तर उठता ही गया। अतः घर की बाजार बाण्ड की भाँति नहीं व्यापारिता की भाँति बढ़ती गई।

प्रवासी को बढ़ते जीवन-स्तर की एक प्रकार की प्रेरणाया थी जिसे उसने अमेरिकी जीवन को दिया और उससे कुछ लिया भी। उसकी दृष्टि उस आदमी की-सी थी जिसे बस्ती होती है। उसे अपने परिश्रम का फल पाने और उसे दिखाने की भी बस्ती थी। 'आत्म-निर्मित मनुष्य' की कथाएँ जो अमेरिकी कल्पना में बस गई हैं। वे इस प्रवासी लड़कों की ही कथाएँ थी जो बीमड़ों से महलों में पहुँच गए। उनके व्यापार की प्रणाली पहले के अमेरिकियों से भिन्न न थी। पर चूँकि उन्हें फल प्राप्ति की इतनी बस्ती थी कि कहानी कैस गई कि व्यापार में वे विद्यमानहीन हैं। फलस्वरूप 'आदरवाले' (माली बेटी) व्यापारी और 'प्रवासी व्यापारी' के बीच एक दरार थी। निश्चय ही प्रवासी व्यापारी में दुस्कार की एक तेजी थी। उसकी दृष्टि उस छोटे से लड़के की थी जो हमबार्ड की दुकान में रत्नी मिठाई को तब तक ललचाई-सी निगाह से देखता है जब तक कि उसकी जेब में पैसे न हों। नया प्रवासी विज्ञान और यांत्रिक आविष्कार के करिबों सम्पत्ति सम्पत्ति और शक्ति की असाहता को देखकर अस्मित था। वह सम्भावनाओं से भरा था साथ ही उसने प्रथम तपट को फिर से बिना दिया था।

जब सम्भावनाएँ विचलित हो जाती थीं आकाश धूल में मिल जाती तो उसका औपचारिक मजदूर या अन्य श्रमिकारी आन्दोलनों में अनिवार्यता पाता जिसका प्रारम्भ कठिण एवम् अधिक बटारों के विच्छेद होता। आगे चलकर यहो निरोही दलों में संघटित हो जाता या तीसरे पार्टी का आन्दोलन बन जाता। किन्तु प्रवासियों का राजनीतिक प्रभाव जिसका मशीनी राजनीति पर पड़ा पतना ही मध्य-पश्चिम की मतभेद की राजनीति पर भी। बोस्टन फिनाइ

लिखा ग्युपाई विभागो सेंटनूर्ड की बॉस राजनीति (boss politics) धकेले पर प्रभावी के सम्पन्न में परिवर्तन के ही अन्तस्वरूप पैदा हुई थी। ये प्रभावी काम की सलाह और कानून का सामना करने के लिए मित्री अवसर चाहते थे। प्रभावियों के हर के हर मतों का प्रभाव तब तक प्रकट हो चुका था।

प्रभावी की पहली पीढ़ी बाह्य बहु धर्मों पर रही हो या बड़े शहरों में गए समाज के प्रवेश द्वार पर ही थी। यही से बहु गमाज में अपनी संस्कृति भाषा की सहाय, अकेलेपन और निजत्व भोज रही थी। उसका बेटा दूसरी पीढ़ी का प्रभावी ही बहु स्वयं का जिसे उपन्यासकार उपहास के लिए चित्रित करते थे जो या तो नष्ट करता था या 'इसी अमेरिकियों' (Native Americans) को उनके ही खेल में मान दे रहा था। बड बुर्बर्ग (Budd Schulberg) के *What Makes Sammy Run?* का साथी और जेरोम बीडमैन (Jerome Weidman) के *I Can Get It for You Wholesale* का हीरो बीजन भी रही था।

तीसरी पीढ़ी का प्रभावी दो विरोधी मतों में पड़ गया था। एक पार तो उस पर उन लोगों का दबाव बढ़ रहा था जिनके पूर्वज राष्ट्र के पूर्वज मान लिये गए थे। इससे उत्तम भी स्मायिल और कन्फिडेंस था रहा था। इस प्रकार बहु अपने प्रभावी अनुभव से दूर हट रहा था। दूसरी ओर मार्कस हेन्जेन ने बताया कि "जो बेटा नूनना जाइता है पोता उसे याद करता है" और तीसरी पीढ़ी का प्रभावी सब अपने पूर्वजों के लिए सज्जित न था उसमें बहु दास्य था गई थी जो उसे स्वीकार करती थी। ये दोनों शक्तियाँ प्रभावी के बाह्य और परपार्श्वों में मिलती थीं। पर देय विस्वास है कि हेन्जेन की बात में और अधिक शक्ति है।

प्रथम महायुद्ध के बाद प्रवाह के सम्बन्ध में अमेरिकी दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ। कन्सर्वेशन 1921 और 1924 के कानून पास हुए जिनमें नक्स के आधार पर प्रवास के नियमों में शेर बिना गया। सब तो यह है कि कानून के लिए धारणाएँ पिछली सलाहों के अन्त के पूर्व गए प्रवास की विद्यालय सहाय से ही प्रारम्भ हो गया था। प्रभावशाली बर्ग का विश्वास है कि जैसे सूर्य के चारों ओर आदमा और सितारे घूमते हैं वैसे ही एथनिक समूहों में भी होता है। संघर्ष के राज्य अमेरिकी—ग्यु इंग्लैण्ड के साथी या मध्य-पश्चिम के स्थानान्तरित लोगों—जाते थे कि उनका पुराना प्रवास नए धारणाओं प्रभावियों के कारण समान हो रहा है। पारिवर्षिक मोहक में जब चैप्ट-ग्रनों में भी कुछ इनमें चित्रित और भाषा की दृष्टि से बिमलन थे। बर्माण के गोरे दण्डों को 'बोरो' का बेटा के रूप में सुरक्षा देने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्हें हथियों के रूप का भी उनके चारों ओर था। पर उनका यह भय अभी दिनेशियों

शियों के लिए फैल गया। मजदूरों की सुरक्षित सेवा—जो व्यापारियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे धोखेपीकरण में सहायता मिलती थी—बहुत से मजदूर नेताओं का समय का कारण प्रतीत होने लगी क्योंकि अब सस्ते मजदूर के लिए प्रतियोगिता का अंतरा उत्पन्न हो गया था। 'प्रगतिपुत्र' के कुछ बुद्धिवासी जो देशी परम्परा को प्राग बढ़ाने के लिए उत्सुक थे अब प्रवासियों के विरोधी हो गए। दूसरे यूरोप के उन सिद्धान्तों के प्रभाव में वे जो एक नस्ल का दूसरी से बड़ा या छोटा मानते हैं। अब उनका धुंध के सिद्धान्तों को 'बैज्ञानिक' समर्पण मिल गया।

यात्रियों शक्तिशाली मजदूर संघ वालों प्रगतिशील बुद्धिजीवियों नस्ली सिद्धान्तधारियों जनसंख्या की बुद्धिवालों और पेसावर जाति द्वेषियों ने सम्मिलित होकर प्रवासियों के बंधनों को भी विवास दिसान में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली कि अब प्रवासियों का आचमन अंतरजाति है और इसे कड़ाई से रोकना चाहिए। उन्होंने अपराध आश्रित और पूर्वी धूर्तता का समय दिखाकर उन्हें भ्रष्टा दिया। उन्होंने साफिया और ब्लैकहैंड हेमार्केट के घराबकता बावियों और मजूरी कोमबेबासों के उदाहरण दिये जो अन्तराष्ट्रीय साहूकार बन चुके थे। उन्होंने भयभीत अमेरिकियों को बता दिया कि उनका पूर्वजों का देश अमेरिका इन नव प्रवासियों के कारण उनका न रह जाएगा। वे सस्ती मजदूरी पर काम करते हैं (इस प्रकार मजदूरी के मानक को गिराते हैं) अंतरजाति पुस्तकें पढ़ते हैं मूषरों की सौति रखते और जूहों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। प्रादि-प्रादि।

निदबध ही प्रवासी अनुभव में एक नया परिवर्तन हुआ। जिसे घटिया और आतिथेय दोनों ने अनुभव किया। 1880 व 1890 के बीच लिखते हुए अल्फ्रेड वाइस ने देखा कि जिस बोझिल और नैतिक बातावरण में प्रवासी यूरोप से पाकर बसते हैं उनमें उनके पचाने की शक्ति कहीं घटिक है बनिस्वत उनके नस्ली गुणों के परिवर्तन के। उसने एक प्रकार से अमेरिकी बातावरण के बरस सने की शक्ति की सराहना ही की थी। उसने प्रवासियों का बचाव ही किया जो अमेरिकी-ईडन को अष्ट करने वाले सर्प के समान माने जाते थे। फिर भी अब वह सिस ही रहा वा उसी काल में अमेरिकी जीवन में परिवर्तन आ रहा था। पहले प्रवासी होने का धर्म था—एक होने वाले अनुभव का भाग होना। वे अनबाहे और बेठीक न थे। न उनकी अपनी सांस्कृतिक उत्पत्ति पर ही परजा प्राती थी। किन्तु मूहपुत्र के बाद अमेरिका ऐसा देश हो गया जहाँ अमत्कार हो रहे थे जहाँ पुष्टने का मतलब अमत्कार करने में प्रवेष्ट था। अब प्रवासी होने का धर्म कोई प्रयोग न था। अब उसके प्रति सन्देह की भावना थी कि कहीं कोई अच्छी चीज भुनाकर पैसा न छूठ से। अब प्रवेष्ट-पुस्तक

के रूप में उसको नीड़ से भरे घड़े चरों में बकेल दिया जाता था। घोर से घड़े बाम करने को बाध्य थे जिसके लिए उनको पैसा भी कम मिलता था जब उनको यह अनुमति करना था कि वे बाहरी हैं।

घब देवी पूछने लगे थे कि फाटक तोड़ने बामों की इतनी हिम्मत कि वे हमसे मिलें हैं। "यदि धनपाइन भूमध्य सागरीय घोर सेमेटिक मस्स के कुछ करोड़ व्यक्ति हमारे बीच घुस जाएँ" उपन्यासकार जेम्स राबर्ट्स ने लिखा "तो हमारी नत्त दोगली होकर बैसी ही बेकार हो जाएगी जैसे मध्य अमेरिका घोर दलित पूर्वी यूरोप के निष्पक्ष दोगले हैं।" ऐसे बहुत-से दोगले बने या रहे थे। वे घजनवियों की तरह दियते थे। वे चारों घोर स्थिते हुए थे। बाबाम थे। वे एक ऐसे यूरोप से या रहे थे जहाँ नास्तिकारी पक्षधरों का बोलबाला था। वे अमेरिका के घजनवियों को घमुरावित बना रहे थे। पुच्छभूमि में सर्वबा मरकर (पर बड़ा सुभावना) भय नित का भी था कि वे काले विदेही हमारे घुड़ अमेरिकी रक्त को विगाह देंगे।

इस प्रकार प्रवास के दूसरे घोर से पहल की उधार भावना को घिस दिया। यहुदी जायनित का घामोक कि अमेरिका बड़ भट्टी है जिसमें सभी देशों की बाधुर पट्टी है घोर 'महान् रसावनी' उन्हें अपनी लपट से घमाकर एक कर देता है। अमेरिका में जसाह पूर्व स्वागत था या रहा था पर यह जटिलता घतरमाक की क्योंकि इसमें यह भाव छिपा था कि सभी प्रवासी तनाचों को घोर अधिक अमेरिकी तरकों के द्वारा पचा लिया जाए घोर फिर य सब एक हो जाएँ। प्रबल बिरबुद्ध में यह भय जया कि मित्त तला को एक घोर घुड़ करने बाला अमेरिकी तरब निछड़ रहा है 'कम्मुनिज्म का हीबा' जो घुड़ के बार घाया उडे बिदेघनों क बिकट बना दिया गया। द्वितीय बिरबुद्ध क बाद तो यह घोर भी तीव्र हो उठा। कुछ अमेरिकियों ने इसमें बाबायक भावनाओं की घमिष्यक्ति की। इनसे बहुत-से लोग बौद्धिक घोर भावनारमक विकृतिघों के निकार हो गए। सन् 1921 के प्रवासी कानून में हिस्से का जो सूच था उसे एक बीती मिानरी ने बनाया जिसने पूर्वी प्रवासियों के घागमन पर जो प्रतिबन्ध थे उन्हें इनसे सामान्य प्रतिकर्षों में मिला देने का एक रास्ता बूझ निकाला था। 1924 के कानून में जो माकक बय था जिसके आधार पर प्रवासियों की कुल संख्या में प्रत्येक देश का हिस्सा निश्चित होता था, घोर पीछे बकेल दिया गया ताकि भूमध्य सागरीय घोर पूर्वी यूरोप के प्रवासियों की संख्या कम हो जाए। यूरोपीय लोगों के लिए उद्य लोकतन्त्र की याह पागा कठिन था जिसमें मोटे तौर पर 3,000 घांसीमी घोर 4,000 इटालियन प्रतिबन्ध लिये जा उधत थे जब कि जर्मनों घोर संघेजों के लिए यह संख्या कमघ 25,000 घोर 63,000 थी। प्रबाम पर प्रतिबन्ध लगाने में श्रेष्ठ भाव किया गया जामबुद्धर घोर

के व्यापार पर। सन् 1952 के मैककारन-वाल्टर कानून (McCarran-Walter-law) से आज तक उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इम्मा लामरम का 'सोने का दरवाजा' (Golden Door) कवीय-कवीय बम्ब ही है। 1900 में सारी अमेरिकी आबादी के 13 प्रतिशत विदेशों में पैदा थे जब कि 1950 के केवल 7 प्रतिशत 1960 में यह प्रतिशत और भी नगण्य हो जाएगा। इस नीति की दिक्कत यह थी कि चूंकि यूरोपियों (जो भी अमेरिका का धर्म है) पर लादू न थी। इसलिए यूरोपियों का भागमम उन्हें बर्बाद करना पड़ा। स्मरणीय है कि ये उनके आदर्श एथनिक नीति से भिन्न हैं। इस प्रवास की नीति का उद्देश्य था प्रतिवर्ष लगभग 250 000 प्रवासियों को स्थायी रूप से प्रवेश करना। यह और भी सर्वसंगत ढंग से हो सकता था। होता यह चाहिए था कि संस्था निर्दिष्ट करने के बदलाव जिस कम से उनकी सभी भावी या कौशल का जो भी आवश्यक निर्दिष्ट किया जाता उन्हें से तेज प्रवास के नियम ठीका करने और उनका प्रथम काम के लिए आज भी संघर्ष हो रहा है पर साथे दिस से। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी को विश्वास नहीं रह गया है कि यह कम जल्दबाजी जा सकता है, क्योंकि (बुद्धिवादी जैसे जो सोचें) नक्सल और चुनाव क्षेत्रों में विदेशी-विरोधी तत्व अब भी प्रबल हैं।

जब द्वार बन्द नहीं हुआ था तब भी प्रवासी इस संकीर्ण दृष्टिकोण का प्रभाव अनुभव करने लगे थे। अमेरिका का चुनाव इतना पैर था कि वे अमेरिका में बसने के लिए आवश्यकता से अधिक उत्सुक थे। उनमें सब कुछ गहरा हो चुका था स्वतंत्रता से प्रेम 'शिव के निर्माण' (make good) की भावना अपमान की बेइतमी और योग्य होने की उत्सुकता। प्रवासी परिवार का डींचा बिना चुका था। परम्पराओं का गर्व जो वे अपने साथ लाये थे भी खंचन हो उठा था।

प्रवासी वे अपने नए दो पीढ़ियों के बीच फँसा था। एक था उस पर बोले गए आर्थिक और सामाजिक भेदभाव का बाहरी पीढ़ी दूसरा आन्तरिक 'पीढ़ी' था जो उस समाज का परिणाम था जो उसे इस भेद-भाव का सामना करने के लिए तैयार कर रहा था। अब उसे नई संस्कृति का विस्मा भीषण करने की तरह उसकी नकल करना था इस प्रकार वह अपनी पारिवारिक और मूल्य परम्पराओं से हटकर कर रहा था या फिर वह अपनी पुरानी संस्कृति की दोल में घुस रहा था। एथनिक परम्परा की दुहरी प्रशिक्षण काम कर रही थी—उत्सुक समन्वयवाद और जुधाक एथनिक समतावाद की। दोनों रूपों में यह विरोध और नैरियत की भावना के विरुद्ध थी। डिफ्यूट प्रवासियों की सकलता की जो कहानियाँ हैं वे इसे बहुत सख्त नहीं करती बल्कि इसकी पुष्टि करती हैं। 'नौकर से जनपद' बनने की सफलता की प्रतिक्रिया

आहागयाँ उन प्रवासियों की हैं जिन्होंने एक संस्कृति से दूसरी में प्रवेश के सम्भव काल को इतना कष्टपूर्व पाया कि दोनों संस्कृतियों को छोड़ने के लिए उन्हें एकदम से इतना संघर्ष करना पड़ा कि जिसमें उनका व्यक्तिगत निरुत्तर गया।
 रूप है कि अमेरिकी विचारधारा में प्रवासियों के सम्बन्ध में 'मेस्टिन पॉट' (परिवर्तन की स्थिति) का और छोटा रहा। धार्मिक विचारधारा अमेरिकी मेसकों और विचारकों में कम ही ऐसे हैं जो इस प्रकार के हैं जो अमेरिकी संस्कृति को इस रूप में देखते हैं कि उसमें वह शामिल है जो विभिन्न संस्कृतियों की विभिन्न भाषों को समेटकर दुर्गम मानव वस्तु को एकदम प्रसारित करने में मदद देती है। यह प्रवासियों के धारण की वारा एकदम पतनी पड़ चुकी है (1040 से औसतन 100,000 से अधिक प्रवासी प्रतिवर्ष नहीं आये)। और यह तो प्रत्यक्ष यह है कि इनकी सीखरी या उसके बाद की पीढ़ियाँ कैसे अपना जीवन बिताएँगी। नए प्रवासियों में जो विचारधारा बिजली हुई है वह है 'सांस्कृतिक बहुवाद' की जिसमें प्रत्येक एथनिक वर्ग अपनी परम्पराओं की पूजा तो करता है पर न संस्कृति की बड़ी चारा से अपने को विविक्त नहीं करते। यह विचारधारा ईसाईयत को ही छोड़ कर अन्य सभी धर्मों को समझाई थी।

नवामनुकों या कहें सारे अमेरिकी जनता की समस्या है कि कैसे विभिन्न संस्कृतियों को धार्मिक प्रभावजन्य में जोड़ दें। एक दूसरे को जाने-बाने की तरह बुन दें जिस प्रक्रिया के बिना अमेरिकी समाज—जैसा हम आज उसे समझते हैं—कभी बनता ही नहीं। प्रत्यक्ष यह नहीं है कि पुरानी परम्पराओं की बदलना है कि नहीं क्योंकि परिवर्तन—समिश्रण के साथ—अवश्यमायी है। वास्तविक समस्या यह है कि परिवर्तन की गति नहीं इतनी तेज न हो कि सब-कुछ मिट ही जाए और वहीं हममें बाप-दाहों का जड़ से ही न उखाड़ना पड़ जाए क्योंकि तब तो संक्रमण काल में बैठें और बीतों के लिए कोई आधार ही न रहे बाएँ। भेद विभक्तिकार मूल्य और कार्य की गति का है। वह भेद समीकरण का है। समीकरण एकतरफा होता है। उसमें जो कुछ बच रहा है उनका कोई मूल्य नहीं होता। इसलिए वह मरना ही जाता है। एकीकरण कुछ प्रक्रिया है जिसमें नई सेतना पुरानी परम्परा को विस्तार देती है और पुरानी परम्परा नई सांस्कृतिक उपज को भावनात्मक गहराई और जड़ प्रदान करती है।

3 जनता जनी

अमेरिकी जर्नला स यात्री रहे हैं। महासागर पार कर के अपने स्वयं के देश में बसने के लिए आए। नावों में फिर रटीमरी से उन्होंने अमेरिका की नदियों के जल को पार किया। नदियों को छोड़ने के लिए उन्होंने नहरें बनाईं।

भूमि के भी न बहुत नाबिक थे। उन्होंने 'वास का समुद्र' पार किया। सुन्दर छोटे-छोटे जहाज बनाये जो संसार भर के समुद्रों में भूमे और जिन्होंने अमेरिका को एक महान् व्यापारी देश बनाया। संक्री पर साहे के पहियों पर वे बोहे फिर रबर के पहियों से घाटो-मोबाइल के राजपन पर। अन्त में समुद्र और भूमि के बाद वे आकाश की यात्रा करने लगे हैं। अब आकाश उनकी विजय की कामना का जेज है।

पश्चिम की ओर दैसास्तरस पर स्टीफेन डेनेट ने एक अणुन वर बीरतापूर्ण कविता लिखी है जिसकी पहली पंक्ति है 'अमेरिकी सदा धावे चमते है। अमेरिकी साहित्य में जो विषय सबसे अधिक बलिष्ठ है वह है भूमि पर, नदियों में वा समुद्र में बेचैन होकर बढ़ना। ऐतिहासिक रचनाओं में प्रसिद्ध है सीमा पर टर्नर की रचना पार्कमैन की 'ओरेगान ट्रेस' और भी छोटे मोटे क्लासिक जैसे मोरिस का 'मेडिटेशन हिस्ट्री ऑफ़ मायबूसेट्स' बेब की 'जि डेंट जेन्स' और वे बोटा की 'एम्बस डि बाइड मिगुरी' मेस बिले की 'मोबी डिक' और उसकी वसिणी समुद्री की कमाती कबाएँ कमी न लिखी वा सक्ती यदि उसे सामुद्रिक और प्युटिन सम्पत्ता न मिलती जिसमें सत्य और असत्य की चीज के लिए समुद्र-यात्रा का वातावरण बड़ी स्वाभाविकता से उपस्थित किया जा सका। मार्क ट्वेन की 'साइकल मॉन डि मिंसिपिपी' में अमेरिका की सबसे बड़ी नदी की बिकसता और नक्ति का चित्रण है। मार्क ट्वेन के समय पश्चिमी जीवन का विधान यह राजपन टिब्बी बल की मांति छाये पाभियों जहाजों के नापाक कप्तानों सम्बादू जाकर पिच-पिच करने वाली बुबाड़ियों स्टीमरों की दीड फूटले बॉक्सरों सीखी जाया और खेजी की कहानियों से भरा हुआ था। इस संसार में नीत्य का राज्य वा। किसी युवा क लिए जिसके मन में अमेरिका की भावना और साहित्यक चित्रण की एकड़ हो यह संसार अनुभवों की पूरी पाठसाखा हो थी। मार्क ट्वेन के महान् उपन्यास 'हुबबबेरी स्किन', का बल कभी अलसापी हो कभी रीड मिंसिपिपी की वाय पर ही हुआ था। 'अमेरिकी नक्तियों' पर पूरी पुस्तक माया ही था यह जिसमें ऐतिहासिक बटनाओं की भीड़ है। इन पुस्तकों से पता चलता है कि अमेरिका के जनमानस उसके सारे इतिहास से कैसे जुड़े हुए हैं। कुछ वर्षों से अब ये नक्तियाँ अपना पुराना महत्व लो चुकी हैं।

हमारे अपने समय के फास्करनर के उपन्यासों और स्टीम बैंक के, 'अप्स ऑफ़ राब', जैसे कुछ अणुवाधालक उपन्यासों को छोड़कर अब अपने घास-वास का प्राकृतिक वातावरण मेककों को संकेत के रूप में विषय-बयन के प्रति आक-षित नहीं कर रहा है। अब अमेरिकी साहित्य में अमेरिकी जीवन की हिता की अभिव्यक्ति भौतिक वातावरण के प्रभाव के माध्यम से नहीं बल्कि मनुष्य के

अमेरिकी सम्प्रदा

मगरिकी सम्पत्त

बगसी मुखी स होती है। यह अभिव्यक्ति सब महासागर धीर मदियों की यात्राओं और 'महास की गलेद त्रिम' की गाज मे नहीं बलिह हरमारे की जागुसी खोज म होती है। हत्या में मरने वाला छिकार भी भयबाह है। जसम मपराध को हवाई कसपा है। रदी समस्याधा के मुलभाने की बात सो यहाँ कोई समस्या मुलभनी ही नहीं।

मगरिकी निवाशों में जिस प्रकृति का विचार है बचने गति धीर दूसरा स्थापन करने का विचार है।

मनुष्यावियों के लिए धीर दूसरा स्थापन करने का विचार है।

अमेरिकी निवासियों में जिस प्रकृति का विषय हुआ है उसके दो रूप हैं एक अनुपायियों व और दिया है और दूसरा पर आधुनिकों और परम्परावाधियों में। अमेरिका को समझने के लिए आवश्यक है कि हम समझें कि ये दोनों एक बस्तु के दो रूप हैं। अमेरिकी इसमिए नहीं समझते कि उनमें कोई प्राकृतिक बर्तनी है या जमीन की कमी है (जिस कारण सामाजिकीय घुमते हैं) बल्कि दूसरा को जोड़ में घुमते हैं। जब घुमने-फिरने का उद्देश्य सिद्ध हो जाता है या अमेरिकी देशांतरण के तीन प्रकार रहे हैं—महाद्वीप वार से देशांतरण नहीं सीमाओं को और देशांतरण और तीसरा प्राकृतिक हेर-फेर जिस हम देशांतरण का पुनर्स्थापन कह सकते हैं वह मुख्यतया नगरों और जनसंख्या के वृद्धि है।

मान जो बनठा वा देवान्तरण होता है वह सरकारों द्वारा बहुत से निरिपक्ष मोर्चे और कम से होजा है। इस कार्य में परिषदी सीमा को मजिद देवान्तरण मुनिपोलिम न था। सम्भवतः इतिहास में यह अन्तिम स्वतंत्र विज्ञान देवान्तरण था। किन्तु यदि हम ध्यान से यह अन्तिम स्वतंत्र जड़ हक से हुई एक जोन से दूसरे में जैसे बहुत ही इनका मक्का बना लिया गया हो। एक सहर आई फिर दूसरी फिर तीसरी और यह कम बनठा रहा। पहले राज करन बाने गए, फिर समूह के व्यापारी फिर पहाड़ी लोग पम्पासा बान तानिक और अन्य में विज्ञान बीज पर और कृषि-यन्त्रों के साथ बहाँ गए। पूर्व से बड़े संसारों और राज्यों की पहाड़ी बुद्धता को बारकर अन्य में प्रमाण उत्तर पूर्व और बनिफोनिवा के पने भवनों में बनने की प्रक्रिया के बाद के कारण में हिना लाम और चीन चीनो थे। थोरेगाँव (रास्ते) की कठिनाइयाँ समूह के व्यापार को हविदाये के लिए मध्य अन्य में बनिफोनिवा में गोल्डराइन इगर्म गादे का मे फ्रिटिसन प्रकृति (Faustian spirit) के दशन होन हैं। गोल्डराइन में बनिमित होने बाब लामों में सम्भवतः एक की भी मफलता न मिली होगी किन्तु इन इन अवस्थायताओं को तो भूल चुके हैं वे कम बड़े-बड़े पुस्तकारों को ही माना जाता है। शू रंगवीट न 'याकिया की वृष्ट' (Yakoo exodus) में गारे राज और देश से बहुत में उत्तम प्रतिभा वाले युवक सम्मिलित थे। जब मिशुक

भूमि का भित्ति बंद हो गया तो भी जनसंख्या का पुनर्संयोजन जारी रहा।

सभी मार्ग को घूमिल ज्ञात गन्तव्य को से जा रहे थे, घाटा क रामगार्ग थ। उत्कासीन घाटाबाधिता और भाग को घर पर मन्सी मार्गने की प्रवृत्ति ने मिसकर उन ऊबड़-खाबड़ सड़कों और कटिहार घुमाओं पाड़ियों में जुटने वाले धोड़ों और सामान लापने वाले खम्परों को घाबर्स का जामा पहना दिया है। रेनों के बनने से यातायात जमत् में जो जामित हुई उसने भी उम टोमी बासों की बिम्होंने रेनों की पटरियों बिछाई और इधिनियरों की जो उन बैर्याकार इकनों को फाँकते थे अनेक कहानियों का निर्माण किया है। कुछ कहानियाँ रेनों के नबाबों जैसे बाँबर विष्ट, फिस्के और हिल क भारे में भी है।

यातायात जमत् में जो गई जामित मोटर के घाने से हुई है उसने अमरिकी संस्कृति को पहियों पर बैठा दिया है। अनुमान किया गया था कि 1968 में 7.5 करोड़ माटरों और ट्रक अमेरिका में थीं। इनक मासिकों कि संख्या 7 करोड़ थी। इस प्रकार प्रत्येक परिवार के पास कम-से-कम एक मोटर थी। घब मोटर उद्योग 80 लाख कारें प्रति वर्ष बना रहा है। अमेरिका में सभी प्रकार की सड़कों की सम्मिलित लम्बाई लगभग 40 लाख मील है। प्रति 7 अमेरिकीमा में से एक घाब किसी-न-किसी प्रकार से मोटर-उद्योग से सम्बद्ध है। 1968 तक अमेरिका में 10 करोड़ कारें हो जाएंगी। इनसे सड़कों पर कितनी भीड़ हो जाएगी इसकी कल्पना की जा सकती है।

अमेरिका की मोर टेक्नीक ने यह सम्भव किया है लड़का इतना बड़ा हो कि उसे माटर बसाने का साइडेंस मिल सके इसन बहुत पहल ही वह ज़ूम पर हाब सापने सयता है और यह अनुभव करने लगता है कि उसे लीध ही प्रच्छा जालक बनता है। कार बसाने के मापने में अमरिकी लड़की लड़कों के बराबर हो होती है। पन्दी बस्तिमों में रहने वाले मजदूर परिवार काटकर हम्पी भी ग्राम अपनी कारों क मासिक होते हैं। ये कारें उनके घरों से साफ-सुधरी होती है। सप्ताहान्त में अमेरिका की सड़कों पर जिस रूप में रास्ता रुका रहता है उसे देखकर तो यही पता चलता है कि अमेरिकी जितना समय घरों में बिताते है उससे कम अपनी मोटर में वहीं। अमेरिकी संग्राम के लिए कार लीक और घायम की चीज नहीं आवश्यक चीज है। कारें उनकी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करती हैं जो पर्याप्त आवास धिदा या स्वास्थ्य से अधिक महत्वपूर्ण है। कारों से ही यह पहचान होती है कि घायक जीवन-स्तर इतना है कि महीं कि घाय को जल का उपस्थ स्वीकार किया जा सके। कार पूरा घर है जो पहियों पर ढीढ़ता है। इसमें सप्ताहान्त में जूधने बाजार करने मिसने-जुमने रोबगार और (घुमा-मुचली) ग्रेम करने जाते हैं।

कार प्रार्थ पहियों पर पूरा घर घाब बैठा दीकता है पचास राज पहल

न थी। तब यह निम्नलिखित प्रादुर्भावपूर्ण विभिन्न संघीय करन वाली घोर घबि
 पसनीय सुवाची थी। पर आज तो इन्जीनियरी विद्या का यह महान् प्रारम्भ
 है। मगर इस जैसे चाहें मांड सकते हैं। बाकी तेज नाम से धांधली से बसा
 सकते हैं और यह इससे विभिन्न रंगों की होती है कि उनमें किसी की पसन्द
 छूटती नहीं। कभी-कभी तो लोग घपपी पत्नी या बच्चा के कपड़ों के रंग पर
 भी कारें रखते हैं। बाप किरतों में भी कार ले सकते हैं। पर चीज ही इसके
 'मॉन्स' पुराने पड़ जाते हैं और मोब इन्हें निरुत्साहक कोई नई या पुरानी
 मज्जी कार ले लेते हैं। एक वास्ति ॥ चुकी है—कारों के निर्माण में ऐसी
 प्रविधि की खोज में कि रंग जल-से-जल मूलों पत्थर के कंकड़ छूट कर सड़के
 बनवाने में इन्जिन पावर से कार की डिजाइन में विद्यालय कम्पाउन्स में और वृक्षों
 के जोड़न में ठह जाकर अमेरिकी कार इतनी जल्दी मज्ज पर इस रूप में जाती
 है। इससे सड़क गरी है तड़को पर रास्ता बच जाता है। नीतिनिष्ठों से बसाते
 वालों और म्यूरोटिक बालकों के हाथों से कार मज्जकर मृत्तु का उत्तरदायक
 साम्य भी बन चुकी है—जिसमें अमेरिका की बाधाओं से इसीसे एक व्यक्ति
 मरता है। माटर बाइया के किसिम स्टेचम पाकिंग स्थान चौपट सड़कों पर
 जल्दी मरम्मत के लिए बने स्टैंड या जनपथ पर, दूसरे कर्म्य ईलाकार मोड
 डान वाली दुर्कें माटर बस पार्किंग बाजार, नुबबार से अनिबार तक सुधारियों
 के कारण बस रास्त आदि अमेरिकी सड़क को घबराते करते हैं। मोटरों
 के कारण सड़कों की हर समय मरम्मत आवश्यक हो जाती है। सारे देश में
 मज्जत और कीड़ी सड़क का नाम है। कुछ सड़कें निजी सारों के पैके से भी
 बनी हैं कुछ गैर और राज्य के धन से। कार बनी निर्बल सभी के लिए धाम
 एक है। मोटरों ने गैसबिराधी कान्ति पैदा की है। सामानों का बातामात और
 ईतिव मकर देत स्टेचमों की कम्पनियों की ट्रेनों से स्वतन्त्र हो चुका है। कस
 बारगाना के स्थान और घरों के मूल्य बरत गए हैं। जब ऐसे नये घाटा नगर
 बन गये हैं वहाँ इन माटरों पर परिवार मबरे घर से निकल जाता है और घाम
 का घाने घर बायन या जाता है। मोटरों के कारण ही कम्पनियों और मज्जतों
 के परिवारों के समुची निजार्थों पर या पड़ाइों में छुट्टी बिताना और मछली
 मारना या बच करना एक घाम होक हो गया है।

नए वायु-मय में निजारा प्रभाव जब अनुभव होना लगा है—अमेरिका जानिठा
 का और भी तीव्र कर दिया है। डेढ़-मडे हवाई मज्जे जिनमें दैव्यावार पक्षियों
 की मीन जहाज उड़ने पांड और जान है यह बताते हैं कि चीज ही यह समय
 या रहा है जब पूरी का कर्द बसे गरी यह जानना। माटर बाइयों की ही
 छरद पर घाघाघ में हवाई मारों पर भी बातामात होने सके हैं। किन्तु हवाई
 जहाज निजी सुवाची के रूप में बार का स्थान से ले गयेगा। यह बार का प्रयोग

कम दुखदाई प्रचलन बना सकता है। बायु-युग ने जब यह सम्भव प्रचलन बना दिया है कि दूर के स्थानों में मानिक और उनका मित्री सचिव दोनों छुटियाँ बिता सकते हैं।

1950-60 के दशक के मध्य में 6 करोड़ अमेरिकी किसी न किसी रूप में बायिक छुटियाँ बिताने घर से बाहर निकले थे। इनमें बहुत-से 'महाहीन' के साथे बहुत से विद्वान के साथे रास्ते गए। कुछ उत्तर-पूर्व कुछ उत्तर-पश्चिम की नदियों में कुछ कनाडा में मछली का शिकार करने कुछ पसोरिया या कैलिफोर्निया में मूष का प्रानन्द लेने कुछ अन्य स्वास्थ के स्थानों में कुछ मेक्सिको या दक्षिणी अमेरिका का प्रानन्द लेने बहुत-से यूरोप में उसकी परम्पराओं और बैच के चलन करने कुछ अपने राजधानी पर देहात का दलन करने गए। पर्यटन अमेरिका का एक बड़ा व्यवसाय हो गया है। इसमें करीब 2 अरब सत्र होता है। हर मजदूर साल में एक बार सवेतन छुट्टी पाता है। वह हवाई जहाज में रेल में, नाव मोटर कार्रवाई बस से घर से बाहर निकल जाता है। ज्यादा मुकाबल सम्भी छुट्टियों का इसलिए सम्भी यात्राओं का है। बायु की सम्भाई में हाल में हुए परिवर्तन के कारण और आत्म-रोष की लोच के लिए आज विद्वान के सभी देशों की राजधानियाँ मध्यम के और प्रचलन प्रमणिकियों से भर गई है। इनके सड़के सयाने हो चुके हैं और अब ये काम से फुरसत पाकर सम्भ-कोष यात्रियों की निवेष्टिकाएँ और सभी बैंक से बैठ होकर बूमते हैं ताकि नई चीजें देखें और सुनने और अनुभव करने की उत्तमी न मिलने वाली मूल को छात्र मिले। ऐसा मानस पड़ता है कि मछलीनी संस्कृति ने अमेरिकी कम के मस्तिष्क पर यह प्रभाव डाला है कि वह सदा जनता रहे, बाह्य अपने काम से उत्पन्न या उत्पन्न के कारण या अपनी स्वतन्त्रता की मजिब्यक्ति के लिए ही। अब तो इनके साथे अमेरिका को महान् दशान्तरण भी हुस्का मानस पड़ता है।

पर्यटन की जालिदा से अधिक बढ़कर है अमेरिकियों की एक पेसे से दूसरे में और एक घर से दूसरे में गतिमानता। पेसे या साप्ताहिक-स्तर में परिवर्तन के कारण एक ही नगर में निवास-स्थान बदलते रहते हैं। बड़े नगरों में एक ही राज्य में कम और छोटे नगर से बड़े नगरों की ओर और घट्टर के बीच से छोटा नगरों को निवास परिवर्तन बढ़ता जा रहा है। 1937 में सरकार की ओर से इसका अध्ययन किया गया था। परिणाम यह मिला कि बीट्रोपट-जैसे प्रौद्योगिक केन्द्र में बड़ी बराबर मजदूर घाते रहते हैं पीछे बर्थों में पीछे व्यक्तियों में भार प्रपन पुणने निवासों को काड़ गए। स्थान-परिवर्तन के इस जहाहरण में कुछ प्रति हो सकती है पर फिर भी अनुमान यह है कि 1940 से 1955 के दशक में प्रत्येक पीछे अमेरिकियों में एक में किसी एक वर्ष में प्रवास बदला था। बड़

बाहरी में यह अनुमान और अधिक हो सकता है।

एक घटना की सबसे गंभीर बात यह है जिसमें स्थान परिवर्तन एक राज्य से दूसरे राज्य में होता है। मुद्रा-क्रांति में या परिवर्तनों की सीपहाट के समयों में मुख्य-उद्योग के क्षेत्रों में मजदूर बिखरे हैं। इसके साथ ही मुद्रा के बीच और बाह्य में नियमित ढंग से हमारी वित्त के राज्यों से उत्तर-पूर्व में पश्चिम के बड़े नगरों जैसे कि वाशिंगटन, न्यूयार्क, पिट्सबर्ग, बीट्टीमॉन्ट, सेंट लुई और कैंसास नगर में गए। इसका प्रतिरिक्त उद्योगों के साथ अमेरिकी जनसंख्या का दक्षिणी दक्षिण-पश्चिम और प्रचलित तट निवास कर फ्लोरिडा, टेक्सास, कैलिफोर्निया और गैरगव और वाशिंगटन की ओर स्थान हुआ। 1910 से 1920 के दशक तक दशक में कैलिफोर्निया की आबादी 60 प्रतिशत, और गैरगव की 40 प्रतिशत और वाशिंगटन की 30 प्रतिशत बढ़ी।

अमेरिका में जनसंख्या का गन्तव्य पश्चिम की ओर गया। फिर कुछ दक्षिण की ओर। 1920 में यह दक्षिणी-पूर्व में था। आटोमोबाइल जहाजमाह और उद्योग के उद्योगों की बहुत-बहुत भी पश्चिम और दक्षिणी में गईं। फलस्वरूप अपने राज्य की (जहाँ जन्म हुआ हो) छोड़कर दूसरे राज्य में बसने वाले अमेरिकियों की संख्या जल्दी से बढ़ने लगी। संवत् 1920 संख्या 23 प्रतिशत है। पश्चिमी समुद्र तट के किनारे पर जहाँ आबादी में वृद्धि का प्रतिशत सबसे अधिक रहा है—वर्तमान तीन व्यक्तियों में से दो से अधिक व्यक्ति इस राज्य से बाहर गए हुए हैं।

यह क्या है जो इस प्रत्यक्ष प्रवास का प्रत्याह्वय देता है। ओद्योगिक मजदूरों का उद्योग के स्थानों में जाने हैं—जहाँ उद्योग खुल जाया या जहाँ के अधिक मजदूरों का मर्क। पार्कों में मजदूर उनके पास अपनी कोई भूमि नहीं या पानी-नी भूमि थी। यह भी भू-कटाव में लगी गई, जमनों के बीच में एक स्थान से दूसरे स्थान की जात हैं। उनमें से बिरत ही किसी एक स्थान पर बसत हैं। इस प्रकार एक स्थायी रूप से अस्थायी मजदूरत्व का निर्माण हो जाता है। पूरा का पूरा उद्योग उलट गया। कारण था तो बहुत-बहुत का बीर गलत हो गया था किन्ती अल्प आबादी के निकट जाता गया या जहाँ जाता गया जहाँ मजदूर मजदूर मिल गये। इस प्रक्रिया के परिणाम हैं जूतों के नगर में अमेरिकी मेडर्स पर और भी बिप्राय की गृहित करते हैं। ये ऐसे सभते हैं जहाँ निर्माता नहीं की दावत में अल्प-संख्या रखा है।

कुछ बातचीतता इसमें भी है कि अमेरिका में प्रत्यक्ष प्रवास मजदूर और प्रगति का प्रभाव है। इसका कारण भूमि की मूल या आबादी की तीव्र गति। प्रारम्भ में विदेशों में अमेरिका जाने के प्रवास के पीछे यह भावना थी। प्रायः प्राय घटना स्थान छोड़कर इसलिए जात हैं कि उन्हें रोजगार और लाभ के

जनता और देश

काम और मजदूरी के असमान्य व शिक्षा के और खूब-सहन के अन्ध अंधार मिमत् है। शारीरिक शक्ति की एक अप्रत्यक्ष प्रेरणा और भी है और वह अमेरिका की सामाजिक शक्ति है—यहाँ बच्चों की कोई टिकाऊ रेखा नहीं और न विद्यालय परम्पराओं का मूल ही है। इस भी आदमी के पैर कहाँ टिकते नहीं। यही बात है डॉर बिल न अपने अमेरिकी इतने बेमब के बीच भी इतने बने क्यों रहते हैं? अन्धकार में बतसायी है। अमेरिकी तक तक बेबन रहता है जब तक उसे ऐसी कोई जगह काम परावरण और सामाजिक असमान्य नहीं मिल जाती जिसमें वह जीवन बिताता चाहता है।

स्नान और पेले की शोख में वह अपने को ठीक उतने निकट स पा सता है जितना पाना सम्भव है। यह उसका जीवन न प्रयाग का काल होता है। एश्वर्य की छाव में व साहस के कार्य और स्नान परिवर्तन अमेरिकी शिक्षा प्रणाली का कहीं अधिक सन्ने अंश से प्रतिनिधित्व करत है अनिश्चित स्कूल और कामेजों के। अमेरिकी स्नातकों के बारे में एक सत्य यह भी है कि सर्वोत्तम जीवन की प्रशिक्षा उन्हें जालेज छोड़ने के बाद के बचक में मिलती है जब वे देश में भूमत हुए काम की तलाश करत हैं। एक काम के बाद दूसरा करत है फिर तीसरा काम। उनका यह अनुभव पढ़ने में 18वीं सदी के रंजीत उपन्यास का मान्य दबा है। 1930 की जनगणना से पता चला कि 18-34 की उम्र के वर्ग में 1947 से 50 के बीच 28 प्रतिशत ने किसी-न-किसी रूप में अपना मकान बदला। 45 से ऊपर की उम्र के रूप में यह संख्या 10 प्रतिशत की। सबसे बसत के कारण नहीं बल्कि अन्य कारणों से भी यह सम्भव हुआ। बड़े-बड़े निगम अब वेग के पास अपनी शाखाओं और कार्यालयों में सबके कार्याधिकारियों को भेजत हैं। समय-समय पर इनकी बबली भी करते हैं अनुभव की प्राप्ति के लिए या उन्नत पदों पर। इस प्रकार 'अमेरिकी आनाबवालों' का एक नया बग उभार हा रहा है।

इसका यह अर्थ नहीं कि जो अमेरिकी भूमत हैं वह सब-कुछ पा ही सत हैं जिसकी वे शोख करते हैं। यदि गहराई से देखें तो उनमें बहुत-स इस काम में असफल रहत हैं। किन्तु जमाना एक रास्ता है जो पकड़ जान के मय का भवन करता है। अमेरिकी जिस भावना से सबसे अधिक बसत होता है वह है 'फैम जान की'—वहीं ऐसा न हो कि पर्यावरण के बदलन में वह फँस जाए जिसमें सब-कुछ गतिहीन है। यूरोप और सुदूर पूर के बहुत-स राज्यों में शताब्दियों से मनुष्य के माध्य में यही बवा है। किन्तु एक अमेरिकी के लिए यह उन सभी बातों का लोडन है जो उसका जीवन के सम्बन्ध में अनुभव किया है। फॉस निय

जाने का बोध ही अन्तिम विरहकार है। इसलिए वह बलता रहता है। बलने में समझी सामाजिक सम्भावना की भावना—एक विश्वास कि 'कुछ-न-कुछ होया' यथार्थ सिद्धा रहती है और तब तक सब कुछ मर न होया जब तक कि कुछ न कुछ होता रहेगा।

यह धारणा और इसकी संविनी साहस की भावनास्था ही वह कड़ी है जो हमें बलवादी है कि साम्प्रतिक प्रवास का अमेरिकी चरित्र पर क्या सम्पात होता है। ये इस बात का अनुमान करती है कि लोक-अस्पना ने हर सीमा और विशेषकर सुदूर परिचय को इसकी क्याविषय क्यों की है? अपना विम किट कासन और दूसरे इतिहास स्कॉट बररस कस्टर, कामस्टाक मोर बल 'सिमरर किम्प' और बिस्वी ओर किट जैसे 'सलजम' भी ऐसे चरित्र हैं जो टाइप बन गए हैं। इनकी परम्परा सिनेमा और कहानियों में अपने अन्त पर पहुँच चुकी है। फिर भी वे ऐसे नीत के योग हैं जो धाम भावसे बन रहा है। इनमें मनस्वरय की एक गहरी चकम है। उनमें की भीषित इसी की एक अभिव्यक्ति है।

अमेरिकियों के लिए साम्प्रतिक प्रवास कितना आवश्यक है इसका ज्ञान द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ जब आबादी के पुनर्वास की एक विद्यात महर साया अमेरिकियों को परिचय की ओर बढ़ा न गई। यह साम्प्रतिक मिश्रण पनियोबिठ और पनियोबिठ था। पुरान उद्योग एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाये गए। नए युद्ध उद्योग धुने। इत प्रकार युद्ध के आबादी के पुनर्स्थापन के लिए, एक समाने का नाम किया। इसका ज्ञान विशेषकर युद्धों पर प्रतिक्रिया हुआ। उनमें से बहुत-से चरित्रों तट पर प्रसिद्धि हुए वे या वहाँ से प्रयाप्त सागर के युद्ध-क्षेत्र में भेजे गए थे। उन्होंने वे जहाँ देखी या वहाँ कभी न देखी की। इनका प्राकृतिक और सामाजिक लैडर्सिप जिनका था। उन्होंने उसे बलन किया। युद्ध की समाप्ति पर वे अपनी पत्नियों को भी वहाँ भे गए और उन्होंने वहाँ नाम भी रूढ़ किया। एक दशक में ही अमेरिका की जनसंख्या में 40 प्रतिशत की वृद्धि हो गई। कैलिफोर्निया में यह वृद्धि 50 प्रतिशत से भी अधिक रही। इनमें पवित्रता प्राप्त के मैदान जाने राश्यों से जाये जहाँ कटाव और अत्यधिक पार्श्व के कारण धूमि मर रही थी और 'अवसर' प्रायः समाप्ति पर था। इनमें बहुत हम्पी युद्ध भी थे। उन्होंने सानफ्रांसिस्को लीटल और पोर्टलैंड की आबादी को तब बढ़ाया सामान्यतया अनुदार नम क्षेत्र में के एक नवी विचार बारा मान। जिससे इन क्षेत्र का सामाजिक लैडर्सिप बलन गया।

किन्तु इन सभी प्रवासों में पुनर्स्थापन का नीत अभी बन रहा है यह सुस्पष्ट है। सामाजिक प्रवास के दिनों में जो वर्ष 160 एकड़ जमीन (विशेष ही रंगों और गट्टेबापी का हिस्सा कान्कर) बरानी थी अब वही वर्ष उद्योग का गुनना बरता है। युद्ध के युद्ध युद्ध चरित्र की ओर हमलिए नहीं गए कि

उन्हें परिचय जाना था बल्कि वे इसलिए गए कि वहाँ पावर और नये वाजारों की सुविधाओं के कारण खुशने जाने उद्योग से गए वहाँ उन्हें अधिक प्रबल मिल सकते थे। सीमा के कुपि-जीबी समाज में आदर्शिकरण का एक परिणाम यह हुआ कि अमेरिकी सामाजिक विचारणा के लिए औद्योगिक संस्थाई का सामना करना और कठिन हो गया। अब यह है कि अधिकांश अमेरिकी चाहते हैं कि सामाजिक प्रबल की गति और उद्योगों तथा जन-विद्युत की ऊर्जा का उपयोग करने के लिए पावर कर्जों की गति दोनों साथ-साथ क्रम मिलकर बनें। 'आज अमेरिकी क्यों धूमता-फिरता है' बात का लुत्ताता जाने के लिए एक ऐसे सिद्धान्त को इकट्ठा पड़ेगा जिसमें यह ध्यान रखा गया हो कि काम के प्रबल प्रीद्योगिक-स्थापन जैसे न जाने का संकल्प बढ़ने के क्षेत्र सांस्कृतिक विचार और एक घर की संकट कामना जिसमें बसा जा सके और स्वान का ज्ञान हो इन सब में आपस में क्या सम्बन्ध है।

एक ऐसी संस्कृति में जो सब-कुछ बढ़भूल से उछाड़ रही है स्वान का ज्ञान कठिन है—पर है यह भावस्थक। एक बड़े देश में इस बात का खतरा पड़ा है कि कहीं आप इस जाने का-सा अनुभव न करने लगे। गए देश में खतरा होता है कि कहीं आप बेगम न रह जाएँ। स्वान का ज्ञान एक रास्ता है जो बतलाता है कि आप जम चुके हैं। जो घन चरित या प्रतिष्ठा में विघेयत्व प्राप्त नहीं करते उनके लिए स्वान से लगाव घपना निश्चय रखने के लिए एक मार्ग है।

स्वान का ज्ञान होने (निर्माण) के ज्ञान का एक रूप है। कभी-कभी भूमि से लगाव—सामाजिक दर्जेबंदी में एक स्पष्ट स्वान से सम्बन्ध होकर—एक सबसे बड़ा भावस्थक मूल्य बन जाता है जो कोई समाज दे सकता है। मध्य युग के यूरोप में यह सत्य था। अमेरिका में गृहयुद्ध से पूर्व बसिष में भी यह सत्य था। किन्तु यूरोप के सामन्ती समाज के विघटन ने यह दिखसा दिया कि होने का भाव अधिक संतोषप्रद होता है अनिश्चित स्वान के ज्ञान के यदि इसके साथ और कुछ न हो। अमेरिका बसा प्राक्पूर्वीवादी यूरोपीय समाज के सलझने से। इस सलझने ने नई बड़ पकड़ने की अभिभाषा को जन्म दिया। किन्तु कुछ एकड़ जमीन या काम ही तो नई बड़ नहीं हैं। उन्हें वह भी देना था जो प्रबल के गए सामाजिक जलवायु में जीवन के प्रति कामना की जा सकती है। अमेरिका के प्रसंग में सभी मूल्य इस तुष्टि की खोज से जुड़ हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी स्वान का ज्ञान भी गत्यात्मक है।

इसमें बहुत कुछ अगत्यात्मक भी है। जब दो अमेरिकी आपस में मिलते हैं और बर्हें पता चलता है कि वे एक ही स्वान से घाये हैं तो उनकी घाँजे बमक उठती हैं। जब किसी अमेरिकी को यह पता चलता है कि आप उस स्वान को नहीं जानते वही से उसका परिवार घाया है तो वह एक कमी का घबके का-सा

अनुमत्त करता है। इसका अर्थ यही नहीं है कि आप पत्र बिना से मा उसका होने
 इन्कार करते हैं बल्कि आप उन सम्पूर्ण निजी अनुमत्तों से भी इन्कार करते हैं
 जो हमने लिखे हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी सुदूर रूप में विविध अनुमत्त
 करता है। इन स्थानीय अनुमत्तों से अज्ञान प्रकट करने का अर्थ है आप उसके
 व्यक्तिगत के एक भाग से उस नंगा कर रहे हैं। किसी व्यापारिक समाज में
 खतरा इस बात का रहता है कि इसमें आपे जाकर उन सभी वस्तुओं के टुकड़े
 टुकड़े हो जाते हैं जो स्थान का मान्य व्यक्तिगत को देता है। जब आप एक स्थान
 में जा आपका परिचित होता है ऐसे स्थान को बताते हैं जहाँ आपकी रास्ता
 बनाता है तो उस स्थान की स्मृतियाँ आप से लिपट जाती हैं। इस प्रकार बाँकी
 प्रवास के तुरन्त बाद 'यू इन्वीन् सोसायटिया' 'न्यूयार्क' मध्य-पश्चिम और
 केनिडीनिया तक फैली हुई थी। मानववैज्ञानिक और शिक्षा के परिवर्तन और
 सम्पूर्ण सम्बन्ध के स्थान पर निर्बैयक्तिक सम्बन्ध के स्थापन के साथ जो व्यपत्ता
 स्थानों के नाम और उनकी स्मृतियों से जुड़ी होती है उनकी ध्वनी में बढ़ी
 गति होती है। यही कारण है कि सामान्य बुरे ने धायेबले में 'न्यूयार्क' जाते
 हुए, काम और स्मृति के जाने से स्थान के भाव को भी अपने 'लुक होमवर्ड
 एजल' में बुला का एक पत्थर एक बत्ता एक न जिना द्वार—इसमें उनमें
 पानी उद्वेग और जो जान की भावना का बिगड़ दिया है।

मृत की यह भावना स्थान की भावना के रूप में गाँव की स्मृतियों तक ही
 सीमित नहीं है। 1500 से 1800 के शहरों के निर्माण के महान् काम में सीमा
 के काम और गाँव के साथ मनुष्य स्नेह में शहर और कस्बे में भी हिस्सा
 लेता था। इसने व्यक्तिगत के प्रतिरूप का रूप धारण किया और जो स्मृति में
 बिपक्ष गया—शहर की मुख्य सड़कों का विस्तार आवास-शान पीटी टाउन
 (जहाँ इसी और विदेशी लोग गंदी बस्तियों में रहते हैं) स्कूल, मालखर, सिनेमा
 घर, राज-मनोविनाश वेग, राजक जित जिनमें व्यक्ति की तीव्रता थी। कुछ
 द्वार किन्तु के 'मलिकिष्ठ ऐम्बरसम्प' जैसे उपन्यासों में हम इसी प्रकार के
 पत्रद्वारा स्नेह के वर्णन होते हैं। इन कृतियों में हम रहे। बड़े। बहुत बार के
 जान तक हम व मा' व। उपन्यास या कहानियों में या मातृव्यापूण आत्म
 चरित्रों या चित्रचरित्रों में इसका चित्रण हुआ है। अमेरिकी इनमें बड़े सामान्य
 का अनुमत्त करते हैं।

एक बात है। अमेरिकिया के स्थान के भाव व पत्रावृत्तों भक्ति जैसे ही
 है जैसे माने हुए रहते हैं जगती को एक रस्ती। इसकी धुमरी रस्ती है तीव्र
 बाँधी हुई दवाई का एक धंग होने का सामाजिक घर। तकनिश या सेंटपाल
 नेम्मान गिनी या तामामिन्को मेन या धीम्यन से जाने का अर्थ है एक अर्थकर
 स्वीकृति का मान। अमेरिकियों के बारे में आचार-व्यवहार सम्बन्धी उपन्यास

या कोई ब्राह्मे सुबाख़ मिला जाय तो अपनी टीसी का वह सच्चा उपयोग हो नहीं सकता यदि उसमें 'टीनस' नाम का एक चरित्र न हो जो मोन स्टार स्टेट के बीच का गान बड़े आवाज़ से करता है। अपने स्थान जाहे जैसा ही क्यों न रहा हो उससे समानता बुझने की एक बड़ी कसल उत्पन्न मानव में होती है। अपने व्यक्तिगत को छोड़ा सठाने और सुरक्षा की मानना को मजबूत बनाने के लिए वह उसका बड़ा-बड़ाकर वर्णन करता ही है।

4 प्राकृतिक संसाधन अमेरिकी बरती

अमेरिकी बरती पर जो सबसे पहली निष्ठा ये लोग लाए, वह स्वाम के प्रति प्रेम था। बसने जाने वाले अपने ऐसे देशों से आए, जहाँ वे अपने परिचित आकाश, भूमि और पहाड़ों को हृदय से चाहते रहे थे। अमेरिका का भूविषय नया था ऊँच-ऊँचा और घोर दुर्गम। सारा महाद्वीप ही जंगल था बड़े-बड़े मैदान थे—माना प्रकार के बीच-बन्तुओं और जनसंख्याओं की स्मृति से भरे हुए। इनकी ओर उन सभी प्रारम्भिक बसने वालों का ध्यान गया जो छोटी दृष्टि लेकर आए थे।

प्राकृतिक किनारे पर स्थित बालू के टीलों से प्रारम्भ होकर बगल-बगल पर काफ़ी भीतर तक चला गया विमान बन प्रदेश या फिर बड़े मैदान से और बड़ी पास के ग्रेटी मैदान ओहियो और मिसिसिपी तथा मिसौरी नदियों के पार राकीड की उपत्यकाओं तक चले गए थे। फिर छोटी पास पास चारपाह रेनिस्तान और पहाड़ थे जो प्रशान्त तट की उपजाऊ बाटियों तक चल गए थे उत्तर में समुद्र के किनारे विमान बन प्रदेश की एक मूलना और है। पूरब में एप्पलैचियन रेंज से लेकर पश्चिम में सीरा तक पहाड़ इस उप्रदेश को यम-यम भीरते हैं। स्वाम-स्वान पर पहाड़ी बरें हैं जिनसे होकर ऊँच-ऊँच करती नदियाँ बहती हैं। इसमें सभी प्रकार की जलवायु मिलती है—उत्तर में बड़ी स्त्रियों के प्रदेश में कूहरे की जलवायु, सुदूर उत्तर-पश्चिम में समुद्र पकड़ने वाले पश्चिम पश्चिम में ऊँच समतल मैदान मुठियाला का बाड़ियों वाला प्रदेश तथा जलारिभा में बंगसों के बीच खुले मैदान और दलदल। जब बसने वाला यहाँ आए तो उस समय यह जनसंख्याओं और प्राणियों से भरा था उनमें से जैवों के कुछ बालू हिरन बंगनी कवुतर और बतस बड़ियास और बड़ी-बड़ी मछलियाँ घनी बेटों की भद्रियाँ दलदली पास सूई-सी मोकदार पास तथा प्रांति प्रांति के पासों के मैदान। पेड़ों में थे—फर और ग़रु, मापस और मोब नारियस प्रादि तथा अमेरिकी पेड़ों में सबसे प्रसिद्ध छेजे पाइन (धनीवार)।

द्वीप के सुपरे भूप्रदेश से पाकर बसने वालों के लिए यह भूस्थ कोई बड़ा सुप्रबल न था। इसमें भय का भाव मरा था। किन्तु यह सबसे उपयुक्त स्टेज

सम्पत्ति और वास्तविक सम्पत्ति में स्पष्ट भेद करना कठिन है। अमेरिका का भ्राम्य है कि उसे वास्तविक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में विभिन्न रूपों में और प्रचुर गुणों वाली मिली है। मिट्टी अनन्त, जल और वन-जीवन ही नहीं विभिन्न अनिष्ट घातिन ईंधन (कोयला तेल प्राकृतिक गैस) जल विद्युत ऊर्जा, दुर्लभ खनिज धातु की भी सम्पत्ति समृद्ध है।

तात्कालिक रिजर्व या सम्भाव्य सभी दृष्टि से विश्व में प्राकृति संसाधनों की दृष्टि से अमेरिका विश्व में पथरी है। इस का सम्बन्ध उसके बाघ या काफ़ी पीछे है। 1950 में एक अनुमान के अनुसार विश्व की समुद्र जलसन्निध का 30 प्रतिशत सारी विद्युत शक्ति का 43 प्रतिशत उसके पास था। वह लगभग 430 बिलियन किलोवाट बिजली पैदा करता था जब कि पश्चिमी यूरोप 11 प्रतिशत और पूरे विश्व का 8 प्रतिशत बिजली पैदा करता था। विश्व के वैद्युतनिबन्ध उत्पादन का 60 प्रतिशत वह इस्तेमाल करता था। 1934 में अमेरिका में प्रति व्यक्ति 455 किलोवाट बिजली का खर्च था। 1954 में यह खर्च 3000 किलोवाट हो गया। 8 टन कोयले से बिजली मशीनी ऊर्जा निकालती जलना प्रति व्यक्ति खर्च था। यह विश्व के प्रति व्यक्ति औसत का 8 गुना था। एशिया में जापान को छोड़कर, प्रति व्यक्ति औसत का 160 गुना जापान का 8 गुना और यूरोप का तिगुना था।

अमेरिका के फ़ॉसिल ईंधन रिजर्व का विश्व भर का ऊबड़-काबड़ है। 1938 के एक सर्वे के अनुसार अमेरिका के पास सभी खनिजों के कोयले का 3200 बिलियन टन का रिजर्व था। सारे विश्व का रिजर्व 7300 बिलियन टन कुल था। उसके पास सवार भर के राल के रिजर्व का भाग था। कुछ लोगों ने बड़ी मात्रा में कहा है कि उसका रिजर्व दो से तीन हजार साल तक बस जाएगा। किन्तु इस अनुमान में एक त्रुटि यह है कि इसमें यह ध्यान नहीं रखा गया है कि कुल रिजर्व में 10 प्रतिशत ही वास्तविक दृष्टि से उपयोग्य है। दूसरी बात यह है कि मात्र उपयोग का जो स्तर है वह भविष्य में न रहेगा। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ेगी और जीवन का स्तर ऊँचा उठेगा और ज्यों-ज्यों फ़ॉसिल का परिमाण और किस्म बढ़ेगी पूर्ति कम होगी और मात्र अधिक। अमेरिका प्रति वर्ष 3 बिलियन बैरल तेल का उत्पादन करता है और 7 बिलियन बैरल का इस्तेमाल करता है। उसके सम्पूर्ण रिजर्व का अनुमान करीब 55 बिलियन बैरल है जो सारे विश्व के रिजर्व का 10वाँ भाग है। यदि यू.पी.सी. बेसा तेल के गए कुलों की खोज नहीं करते तो अमेरिकी तेल का रिजर्व 1980 के आगे नहीं चलेगा। 1950 के अनुमान के आधार पर उसके पास 180 बिलियन बरफ़ूट प्राकृतिक गैस का रिजर्व है। जिस दर से उसका इस्तेमाल हो रहा है। यह रिजर्व उसका करीब 50 गुना है। किन्तु 1980 तक गैस का वितरण हुआ हो

जाएगा रिजर्व के स्वामी के पास ही रसायन और इन ईंधन प्राकृतिक गैस से बन रहे हैं। अमेरिका जिक रंगा वाफ्साइट टिन टंग्स्टेन और मोसमिनिम की भी खानें हैं। पर इसके रिजर्व बड़ी घटपट भाषा में हैं। उसके पास चूना और एस्बुमिनियम मिट्टी भी है।

अमेरिका में खनिज और ऊर्जा के उपयोग में परिवर्तन आ रहा है। अमेरिका के खनिज की खपत के बारे में लिखते हुए हैरिजन ब्राउन ने लिखा है कि अमेरिका में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष 1200 पीपल स्टीम उद्गारण नमी से मुज्दा है। इसमें 8 टन प्रति व्यक्ति स्टीम का उपयोग होता है। यह दोनों परिमाण बढ़ जा रहे हैं। सोहा एस्बुमिनियम ताँबा गंधक आदि के रिजर्व खुराक जा रहे हैं। सम्भावना यह है कि आगे सामान्य बट्टानों से भी वे बाधुएँ निकालनी पड़ेंगी। इस कार्य में परमाणु ऊर्जा का प्रयोग किया जाएगा। ऊर्जा के माधन—कोयला पेट्रोलियम प्राकृतिक गैस भी इनके सीमित हैं। इनका स्थान परमाणु और सूर्य की प्रकृतिवाँ लेंगी। इनका दोहन करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर यूरेनियम सेनाइट से निकाला जा सकता है जो यहाँ पर्याप्त संख्या में है। ब्राउन का कथन है कि “अभिव्य के उद्योगों के लिए समुद्र का पानी हवा साधारण बट्टानों चूना फ्लैश्ट की बट्टानों और सूर्य की किरणों का इस्तेमाल होगा।” इस प्रकार यदि एक क्षण में अमेरिका ‘कंबास’ हो रहा है और उस दूसरे का मुहताज बनना पड़ा रहा है तो उसके काम के लिए समय के अन्य स्रोत भी काम में रहे हैं जो टेक्निकल क्षेत्र में इसकी आवश्यकता की पूर्ति पण्टी तरह कर सकेंगे।

जहाँ तक मिट्टी और उठते होने वाली उपज का प्रश्न है अमेरिका की निधि विद्या है। 10 बिलियन मुमि में से 4 करोड़ एकड़ मुमि में बेटी होती है। बाकी बाकी 1 करोड़ एकड़ बराबाह है। तिहाई से कम प्रकृति सबसेम 0 करोड़ एकड़ में अंगत है। यद्यपि प्रकृतिगत अंश बट गए हैं। पर प्रगाँव तट, केमिथोनिमा बाँधनटन और लासकर थोरेनन में घनी काफ़ी बन है। बायोला में 1 फुट ऊँचे घाँव लेत हैं। टीकमास से लेकर मिनेसोटा तक के विद्यान मैदान में मेहूँ पैदा होता है। दक्षिण और प्रचान्त भाग में कई और सम्बाक न गेठ हैं। मनुष्यता के इतिहास में मूल गन्ध से लग करती रही है। अमेरिका में इन समस्या पर प्रायः विजय प्राप्त कर ली गई है। दूसरी ऐसी जगहें भी हैं जहाँ परती की इससे पण्टा रखाणी होती है और घन-अपान गेनी के माध्यम से अधिक उपज भी होती है पर विद्यान और मस्तीन के द्वारा अमेरिकी अपनी जमीन की उपज बढ़ा रहे हैं। अमेरिका प्रायः विश्व के घनेट क्षेत्रों का घनराता है। जहाँ सामग्री सामान परती की टेक्नीक के ज्ञान के प्रभाव और जन की जमी के कारण मुख्य भूमि का पूरा उपयोग नहीं हो पाता।

राष्ट्रतन्त्र की स्थापना के 100 साल बाद तक यह विश्वास था कि प्रकृति के साधनों की रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह धनस्त कात तक प्रसून्न रहेगी। अपने प्राकृतिक साधनों पर जितना पर्य अमेरिका को होगा उतना शायद ही किसी और को हो। सम्मता का इतिहास तो यही बतलाता है कि जब हमलों ने इस बारे में कुछ भी नहीं सोचा तो अमेरिकी भसा जैसे सोच सकते हैं। अमेरिका में भी प्राकृतिक साधनों की भुट हुई है। पूछा जा सकता है कि ये सुटेरे कौन थे ?

इसका उत्तर जमीन की भूख सालाच और जलवाजी में मिलेगा। बहुत-से प्रवासी यूरोप के उस क्षेत्र से आए जहाँ जमीन की तगिता थी। वेत छोटे थे। उत्तपधिकार के नियम कड़े थे। जंगल काटकर जब पहली जसस बोई गई तो उससे जो उपज हुई उसकी कस्फना स्वप्न में भी न थी। प्रवासी वेड़ गिराते और जंगलों को काटकर वेत बनाते जा रहे थे। बुरी तरह जल-विगत भूमि का पीछे छोड़कर वे आगे बढ़ते जा रहे थे। पश्चिम की अख्ती भूमि की ओर। इसमें अधिकांश भूमि पर जसस चक्र के माध्यम से तथा उपयुक्त काज घास के प्रयोग से अमेरिकी किसानों ने भूमि और उष्णकोटि की उपज को सुरक्षित रखा है। पर सबसे वह नहीं किया है। उन्होंने जमीन का सारा उष्ण बीच लिया और उसे छोड़ दिया। बहुत घनाज और बई की एक फसली बेटी न जमीन को नष्ट कर दिया। मनी जमीन घापी घापी से सरसित पड़ी रही। अधिर्वा पण्डी मिट्टी उखा ले गई। बाई मिट्टी बहा ले गई। अनुमान यह है कि ऊपरी मिट्टी के 9 इंच में से 3 इंच गृह-गृह के बाद नष्ट हो चुके हैं।

नेहूँ और अन्य घनाज के सेतों के बारे में बात जो हुई बही चरागाहों के बारे में भी हुई। महाचरागाह भूमि के सुभते ही मसार भर की घाँसें नग गईं। यूरोप में तो लोगों ने अमेरिकी गहरिये को ही अमेरिका का प्रतीक मान लिया। किन्तु गृहगृह के बाद जानवरों की जो संख्या बड़ी तो गिराव प्रारम्भ हो गया। पश्चिम की भूमि में जीपावों की चराई की अति हो गई। जब तक उनकी चराई की सनता बहने से घापी ही है। हवा और पानी से भूमि का कटना भी प्रारम्भ हो गया। अधिर्वा घाई। मुझे वेड़ और रेगिस्तान बढ़ने लगे। दक्षिण पश्चिम में बाटियों के तल बटाव से भहग गए। उनमें हमारों ऐरॉयॉस (arroyos) बन गईं। फसस्वक्ष पश्चिम के चरागाहों में घाज घाबादी की बुडि सबसे कम है और जोजभाग उसे छोड़ रहे हैं।

इस प्रक्रिया में सम्भवतः सबसे करण चरण जंगलों का विनाश था। अमेरिका में बीड़े-मकोड़ों जवली घाज और सबसे अधिक वेरहम कटाई के कारण हमारों मरुड़ी का 80 प्रतिशत समाप्त हो चुका है। अमेरिकी पौराणिक साहित्य का एक काया भाग और बौल कुनिमान जैसे नायकों का सम्बन्ध मरुड़हानों के

कैम्पों और उनके जीवन से है। किन्तु बोड़े ही दिनों में यह सारा रोमांस समाप्त हो गया। जंगलों के इन बड़े-बड़े ठेकेदारों ने भूमि को बूझों से हीन कर दिया। एक स्थान से सारे वृक्ष काटकर के दूसरे में पहुँच जाते थे। इसमें इन्होंने तो लुब-लुनाके कम्पाय पर जंगलों के कट जाने से भूमि की क्षति समाप्त हो गई। फिर बाढ़ और सूखे पड़ने लगे। कस्बेवरूप छोटे किसान रेबिस्तान के साथ-साथ इपर-उपर मटकने लगे। पॉल बुनियाम की बसन्ती परम्परा में 'मोस्टोस' और स्टीनबेक के जोड़ जैसे चरित्र जाते हैं। 1918 में अमेरिकी एक पेड़ लगाते तो छह काटते। यह कट्टाई धीरे-धीरे की क्षति से सीमा के जंगलों तक पहुँच गई। जिम्मेदार कम्पनियाँ अब वहाँ को फल के रूप में देखती हैं। किन्तु अब भी ऐसी कम्पनियाँ हैं जो 'काटी और धावों' के सिद्धान्त में ही विश्वास करती हैं वे कम्पनियाँ पेड़ों का सखाया तो कर देती हैं पर उनकी अबह नए पेड़ नहीं लगाती। वनवासियों के स्थिति की और भी बुरी बना दिया है। वे राष्ट्रीय वनों की इधियाले के चक्कर में जाते ही नहीं बराते पेड़ों पर भी हाथ ठाक करते हैं।

इस प्रकार जमीन और मुनाफे की भूख और 'लाइव केबरे' के सिद्धान्त को ऐसी कवह लगाने के कारण अब उसका कोई रुक नहीं है अमेरिकी भूमि के प्रति बाहर की भावना प्रायः समाप्त है। कम व्यक्ति ही इस बात की ओर ध्यान देते हैं कि भूमि का उपयोग सांस्कृतिक ही नहीं बल्कि धार्मिक है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई राष्ट्रीय व्यक्ति अमेरिकियों की भूमि और उसके साधनों को नष्ट भष्ट करने के लिए प्रेरित कर रही है। मार्क ट्वेन ने अपनी पुस्तक 'मिस्टर एक्स' में उत्तर बृहस्पति काल में सार्वजनिक भूमि वैधानिक भूख और वास्तविक सम्पत्ता के धर्म के जाने-बाने में बड़े बूढ़े लोग से इस समस्या का चित्रण किया है। विचरार्थ उपन्यासों में विभिन्न 'भूमि की लीना-भपटो' (land rush) की घटनाओं पर बहुल्यपूर्ण और तिरंगे चम चित्रों के कारण एक अनुभवकर समय पर वहाँ पहुँच गया। यह स्पष्ट है कि हम सारे व्यापार में धनन मुनाफा ही रैन कम्पनियों के उठाया। धन्यवाद यह एतया सद्दे में कम गया। यही मर्देबाजी जो पैहू की धनन के चमी तो उसे फ़क मोरिस ने अपने प्रसिद्ध उपन्यासों 'हि बिट एन्ड हि प्रोबोवत की कथावस्तु बनाय। इसमें भूमि की उपज सटोरियों और रैन यानियों के हाथों में निजीने बने उत्पादकों और उपभोक्ताओं के मध्य का जैसा चित्रण हुआ है वह वास्तविकता से अधिक दूर नहीं है।

ऐनों वाली जमीन जो अमेरिका की ओर सम्पत्ता की क्षति प्रगट करती है ना भी इतिहास है कि सोनी-हड़पों और सब सेल विकास से। विचार की धार्मिक व्यवस्था में एक निदान है 'पहड़ने का सिद्धान्त'। यही

सिद्धान्त दोनों पर भी लागू किया गया। तब उसका जो पहले निकाले। फल स्वल्प प्रत्येक तेल नामा उठनी गहराई से तेल निकालता जिसकी गहराई तक वह पहुँच सकता था। जमीन के नीचे तेल का जो तासाब था वह तो बंटा न था। इसलिये प्रत्येक तेल वाला यह कोसिध करता कि वह अपने कुएँ को इतना गहरे से गहरा कर दे कि उस सम्मिश्रित तासाब का सब तेल निकाल सके। तेल की इस डाकाबजी का मुकाबला करने के लिए पड़ीसी तेलबाले 'पापसेट' कुएँ बनाते। इसका फल होता बेरहम बर्बादी और प्रतिद्वन्द्विता में प्रति-उत्पादन जबकि प्रारम्भिक बयों में १० प्रतिशत तेल ही निम्न था। अन्त में सरकार के हस्तक्षेप से सस्ते निर्यन्त्रण में तेल मासिकों के बीच एक राशान-व्यवस्था बान्धु हुई। किन्तु यह व्यवस्था बान्धु होने तक तो काफ़ी बर्बादी हो चुकी थी।

अमेरिकी भूमि के प्राकृतिक इतिहास का एक मुख्य मुनाफ़े के लिए हास्यास्पद कारण बाद में पाया। 'वास्तविक सम्पदा' को 'बाद में बिकसित की जायेगी' की मूल पैदा हुई। इसका एक प्रतीक है फ्लोरिडा की जमीन की छोना-झमटी जो वर्तमान सतासी के बीसे में आई। यहाँ जमीन का उपयोग उपज के लिए नहीं बल्कि सट्टेबाजी में किया गया। वह सट्टेबाजी भी सम्पदा की सीमा तक पहुँचकर हास्यास्पद बन गई। छोना झमटी अब समाप्त हुई तो इसमें सम्मिश्रित सभी व्यक्तियों ने पाया कि उनके स्वप्नों का कानबी साधनात्मक मुप्त हो चुका है। 'वास्तविक-सम्पदा' के विकास की स्मृति में केवल कुछ सड़कों के निदान और बोर्ड उस विभाजन में लगे हैं। बाकीसे और पचासे में अब छोना झमटी कुछ सीमित रही तो कुछ स्थानों पर बैसब उत्पन्न थी।

सोने की भूमि की कहानी भी इसी प्रकार प्रतीकपूर्ण है। जब कैलिफ़ोर्निया का सोना निकला तो वह 'गोल्डरश' जमीन में बड़ा साधन निकाल लेने का मादकीय संकेत था। वह सोना बाजार में गया और साठ और मूलजन के पिरा मित्र का आधार बना। किसी भी अर्थ-व्यवस्था ने इतना काम नहीं किया। अमेरिकी पूँजी और अनुकूल अमेरिकी व्यापार ने मुख्यक की नीति संसार क सब सोने को भी अपनी ओर खींच लिया।

अमेरिकी साधनों के उपयोग का जैसा बिना हमारे सम्मुख प्रकट होता है वास्तविक बिना ससंश्रुत नहीं अधिक निम्न है। भूत के भूट और शोषण के प्रकरण में धातु के सरक्षण और ऊर्जा के भित्त नष्ट लोगों की देखी से होने वाली खोजों को भी जोड़ना पड़ेगा। अमेरिकी यदि साधनों के उस सीमा तक उपयोग में लगे हैं जहाँ उन्हें पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता तो वे नष्ट साधनों की खोज में भी दस हैं। संरक्षणवादी इस सतासी के प्रारम्भ से पूर्व अमेरिकियों को खपों से होने वाली जलवाजी, बरबादी और निर्यन्त्रता के दुष्प्रभावों से अवगत न कर सके। उन्हें अपने इस कार्य में पिपेओर कम्बेस्ट

घोर विफोर्ड विप्लव तथा बाद में पांच ब्रह्मन्० मोरिस और कैफमिन स्कवेस्ट से पर्याप्त सहायता मिली। हाल ही में संरक्षण प्रामोसन एक नए चरण में बढ़ा है। अब नारा है—साधनों की सुरक्षित ही नहीं रखना है बल्कि उसकी भाविका का भी अनुमति करना है। संरक्षण की समस्याओं का सामना करने के लिए वेबें बनाई जा रही हैं सीटिया पर खेती जाती है पट्टियों में पत्तों से समीचीन जाती है। सिचार्ड, फ्लेम-बन तथा जंगलों की पट्टियों की भी व्यवस्था की जा रही है। इन सबके पर एक पुरे बाटर सेंड को एक इकाई मानकर बहुर धात्री जमा भी की जा रही है।

किन्तु असावधानी और सामान्य का पुनः धमी समुल मष्ट नहीं हुआ है। अमेरिका के प्राकृतिक साधनों के सम्बन्ध में प्रचलन बात यह है कि अधिकतर धन्य सन्धियों से निम्न यहाँ इनका स्वाभिस्य प्रायः निजी व्यक्तियों के हाथ में ही इनका उपयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि धात्र के अमेरिका ने उत्तराह्वयुक्त नाम के अनुभवों का मुता किया है और वहाँ नए सोरे के बपों के बहुत-से कार्यों को विमानों में सग गया है। इन विस्वास के प्रान्त में कि अमेरिका ने अपने साधनों के उपयोग का पुर प्राप्त कर लिया है और निजी स्वामी पुनरार के पात्र हैं क्योंकि वे साधनी का सर्वोत्तम उपयोग जनता के हित में कर रहे हैं कावेस और विमान-अवरोधों ने उन्हें उद्योगप्राप्तक सुविधाएँ दीं। सामान्य मूल यह बना कि नवीय स्वाभिस्य के साधन राश्यों या उत्पादकों के मंत्रों का हस्तान्तरित कर दिए जाएँ। इस प्रकार समुद्र सेल-सेल विद्येयकर सुविधाना स्वामान और कैमिफोनिया के सेल-सेल और मार्बनिक धन के बहुत से चरबाह उम्मा का दे दिये गए, बिन्तुने उन्हें निजी क्षेत्रों में उपयोग के लिए हस्तान्तरित कर दिया। सेल की लागत के हस्तान्तरण में बढ़ी महती राजनीतिक लड़ाई हुई सुधीय कोर्ट के फैसलों को अवगत कर कावेस ने अनुमति बनाया। किन्तु दीर्घ वर बहुत बड़ी सम्पत्ति की और बढ़ों के बड़े स्वार्थ में। इसलिए नवीय के बारे में क्या मन्त्रेह हो सकता था? चरबाहों का नियन्त्रण चरबाहों के सभा के हाथ में गया जो 'निजी गिरह' ही थे—इन्होंने प्रारम्भ में राजनीतिक नेताओं को अपनी ओर करने की कोशिश की। अब वे इससे सरल न हुए तो उन्होंने ऐसा प्रयत्न किया कि उनकी कुछ बात ही न पाई। अन्तिम-विषय के शत्रु में प्रचलन सार्वजनिक सत्तावधान में विज्ञान बाध बने जिससे निजी और सुविधायक उद्योगप्राप्तों को विजयी भी गई। हूबर कमीशन की रिपोर्टों के प्रभाव के कारण टी० बी० ए० जैसी महान् सचनताएँ भी इस पाठ की धार पुनराव से पुरात घटती नहीं मानी गई।

अतः ही एक ऐसा तत्त्व है जिससे धन्य सभी सत्ता की अनेक अमेरिकी नावियों को अपने पर्यावरण और साधनी के सम्बन्ध में एकात्मक दृष्टिकोण

प्रपनाने की बाध्य किया है। जीम बुन्से ने लिखा है "प्रत्येक मानव उद्योग बोड़ी मानवता, बोड़ी जमीन और बोड़े-से जल का सम्मिश्रण है। यद्यपि जल की बात ठीक है पर इन सबमें जल सबसे दुर्लभ सिद्ध हुआ है। कुत्तों कटान और बाढ़ से मिलकर यह एक अभिभाग्य जल-यधि बन जाता है। बरसात का पानी-यधि उसे रोकने के लिए पेड़ या हरिपात न हो तो बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। जंगल की मिट्टी ठेक धारा में बह जाती है। फिर वही रेत बमकर नदी की धारा का रोकवो है और मई बाढ़ आने में मदद करती है। बाढ़ नियन्त्रण के कार्यक्रम संघीय धन से होते हैं और सिंचाई और पुनर्बोध के कार्य कर्मों के साथ साथ चलते हैं। सबसे ऊपर पानी के प्रभाव की समस्या है। पानी की उतहू क मिरवे और उद्योगों के लिए पानी की माँग बढ़ने के कारण बहुत से क्षेत्र जैसे बसिली केमिकोनिमा टैक्सास वेनहैंडिस बसिन पश्चिमी की रियासतें न्यूजर्सी और न्यूयार्क पानी के प्रकाश के सतरे में रहते हैं। एक कानूनी समस्या—किसे कितना पानी मिलना चाहिए की भी है। इसके कारण एक प्रकार का पानी का साम्राज्य ही खड़ा हो गया है। बिमिस आदिमों में कभी कभी राज्यों में बड़ी नदियों क बाबरछड के नियन्त्रण को लेकर सम्भी-सम्भी सझाझा होती हैं। सभी अधिक-स-अधिक पानी हड़पने की कोशिश करते हैं।

अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पानी की इन सारी समस्याओं का एक ही उत्तर है कि हम पानी के सम्बन्ध में एक इकाई के दृष्टिकोण से विचार करें। एक नदी बाटी की एक इकाई मानकर वहाँ की भूमि जनता कृषि, जल विद्युत शक्ति और उद्योग का सामाजिक और इन्जीनियरी हक निकालें। अमेरिका की एक नदी और उसका जलपात्र दूसरे से भिन्न है। प्रत्येक का अपना प्रत्येक रूप है जिसका उसी रूप में अध्ययन होना चाहिए। जल-साधन नीति धायोप ने 10 नदियों के जलपात्रों का इसी रूप में अध्ययन भी किया था। इनमें कोलम्बिया बेसिन, मिसूरी और टेनसी के बसिन केमिकोनिमा का बीच का बेसिन रिपोरडा और कोलोराडा कनेक्टिकट और पोनीमाक मनबामा कूटा और मोहिपो-बेसिन सम्मिलित हैं।

विजली के युग में प्राकृतिक पर्यावरण और औद्योगिक धर्म्यता के बीच परस्पर सम्बन्ध है। दूसरे रूप में कहें तो यह सम्बन्ध अमेरिका महाद्वीप के प्राकृतिक और सामाजिक सैक स्फु (भूचित्र) क बीच है। अमेरिकियों ने इस कल्पना को टी० बी० ए० के रूप में साकार किया है। भारत और अल्पपूर्व में इसका नाम नदी बाटी योजनाओं में हो रहा है। टी० बी० ए० की मुख्य बात है बहु-उद्देशीय बाँध—य बाँध नियन्त्रण, सिंचाई, जमीन की पुनर्बोध और जल विद्युत के उत्पादन के लिए बनते हैं। पार्थक्य की बात नहीं कि टी० बी० ए० के दूसरे क्षेत्र में विस्तार के विचार का विजली कम्पनियों और उनके समर्थक

विचारकों में जबरदस्त विरोध किया। किन्तु बहुउद्देशीय बाँधों और एक नदी की द्वाड़ के दृष्टिकोण में इसका जोर है कि उसका सामना करना कठिन होना। बिजली-शक्ति के युग का सबसे अधिक-साम्राज्यों से अधिक असमान विद्य होना। औद्योगिक विकास में नए उद्योग जैसे उद्भयन रसायन हस्ती वातुर्ण, अर्थात् एलेक्ट्रानिक परमाणु ऊर्जा ऐसे उद्योग हैं जिनकी पर्याप्त बिद्युत-शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। अमेरिका की समस्या है कि इन उद्योगों की आवश्यकताएँ कैसे पूरी करें। इसमें अर्थात् राजनीति या स्वामित्व के निजी और सार्वजनिक रूप को लेकर विवाद का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। चाहे मोरिस बाँध हो या प्यारला या पांड कुसी या हेस का कैम्पन इनका पूरा विकास और विस्तार होना ही है। इन्हें हम कैसेना तक सीमित रखकर छोड़ नहीं सकते।

इनको छोड़ देने का अर्थ है प्रकृति के उसकी हस्ताक्षर का जाल बनाना। अमेरिका में जो सबसे अनुदार बर्ष है वह है किसानों और छोटे व्यापारियों का। बहु-उद्देशीय बाँधों से जो बिद्युत-शक्ति उत्पन्न होती उसके नए बाहक तो वे ही लोग हैं। इसलिए इन योजनाओं के लिये हमें इनके लिए तो कोई राजनीतिक रुढ़ नहीं है। टी० बी० ए० क्षेत्र में या प्रचलित उत्तरी पश्चिमी इलाके में मस्ती बिजली मिलने का अर्थ है जर्मों में शक्ति। उन्हें डैमरटर मिलेगा प्लेनियर मिलेगा और मिलेगा टेम्पिब्रान का डैम। छोटे व्यापारियों की पैसा टेनेस्सी पाटी में हुपा बाहक मिलेगा। टी० बी० ए० के क्षेत्र की आवश्यकता अपने हाँके और बाह के विकास में सम्पूर्ण स्थापित कर क्षेत्र और क्षेत्रीय आयोजना को एक नया प्रश्न बिना है।

आवश्यकता इन बातों की है कि भूत के साधनों को सुरक्षित रखने से अधिक हम अरिष्य की शक्ति की शक्ति पर दिया जाए। ज्यों-ज्यों औद्योगिक-कला बन्नती है साधन भी बदलते रहते हैं। प्राकृतिक साधनों के बारे में अमेरिकी अर्थशास्त्र की दिशाओं में काम करता है। उन्होंने उनके प्रति असावधानी को और उन्हें नष्ट किया। सम्भवतः उन्हें विश्वास था कि काला बीबा (रेबेन्स) सब देगा। अब उन्हें पता चला कि जिस सीमा तक उन्होंने प्राकृतिक साधनों को तहान-तहान कर दिया है तो वे असावधान अग्रणी हुए और उन्होंने बर्बाद से गर्वण का आश्चर्य बताया। फिर भी वे मुक्त-अविष्यवादी हैं। वे महामय्यवा पर ही नहीं रहते बल्कि अरिष्य में उनकी बड़ा आवश्यकताएँ और साधन होने लगने भी मुझी तैयार करते हैं। इनके प्रतिरिक्त के प्रचुरतावादी भी हैं। धरे पर तोपों के लिए यह अनुकूल भी है। यदि वह-रहनेर उन पर अचरित और असावधान मन का दौरा जाता है। वह उन्होंने कभी भी बग्न स्थान या समान साधन के निष्ठाओं को गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया है। प्रकृति के बिना जस्ट

बाकी घीर सिफार की सनकी प्रकृति क मूस में नी घाघाबाव ही बा । बिनमें बति का निबाव है, जो अपने को घीर अपने माय्य को घाघा बरसते रहने की प्राधा बनाये रखते हैं उन्हें अपने पर्यावरण के बिगाड़ने या बदलने की क्या बिन्ता ?

घाघी सताम्बी पूर्व हेनरी एडम्स ने कहा बा कि 'नया अमेरिकी कोषम की प्रगतिष्ठ धक्ति रसायन सक्ति बिद्युत्-शक्ति घीर बिकीर्णित ऊर्जा घीर उन घनेक साक्तों का बुर होना को घनी घाघाव है' । उसने बबिष्यबाभी की बी कि 'बहु मूठकाल के किरी बी प्राणी की तुलना में वेधता होया । यद्यपि नए सभाज क प्रति एडम्स निराशाबादी बा पर उसने 'तीव्रवति के सिद्धान्त' ने बबिष्य के ऊर्जा-बिकास की बबिष्य बाणी कर बी बी । 1800 ई० में अमेरिका में सक्की का ईबन ही प्रबाव बा । उसके मुकाबले में पिछले 150 वर्षों में अमेरिका ने फरसित ईबन घीर बलशक्ति के माय्य से ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में प्रति बक्ति 60 घनी उन्नति की है । यह उन्नति घनी बाबू है । 1952 में पैसी कमीशन की निवुक्ति हुई बी । कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा बा कि ब्रयम बिस्वमुद्र से अब तक बनिज ईबन घीर अन्य बूछरी घातुघों की बितमी सपठ अमेरिका में हुई बा बिस्व के इतिहास में अब तक की हुई सारी सपठ से कहीं अधिक है । किन्तु बैज्ञानिकों ने बबूत-से कृत्रिम संघाम प्लास्टिक घीर एलेक्ट्रोनिक बी खोज निकाले हैं घीर उन्हे परमाणु ऊर्जा की शान्तिपूष बाबिठा नी बेख नी है । साधनों का एक ऐला नी क्षेत्र है जो कमबोर है । अमेरिका को अब बी टिन संबिभा, मैनीब बिक बाससाइट, टिटैनियम-बैसी कई महत्वपूर्ण कच्ची घातुघों के लिए बुरगे पर निर्भर रहना पड़ता है । पर बहु कमबोरी यदि कोई घीर बिदबमुद्र होगा तभी बाएगी । किन्तु बहु घुड स्वयं टेक्नोसाजी बाघामात घीर उद्योग के सारे कमबोर बाबे को तोड़ डालेगा । बूछरी कमबोरी है भाबादी के बिस्तार की बा बाग्नबिक है । किन्तु यह भेघता बिस्व के अन्य घनी भाबादी बाबे घीर अन्य बिकसित बेजों पर अधिक लागू है अमेरिका पर कम ।

अमेरिका के बाघ बितने साधन हैं बहु उसके बर्तमान घीर बबिष्य के लिए पर्याप्त हैं । घर्त यह है कि सनका उपयोग पूरा-पूरा किया जाए घीर उन्हें सामाजिक कसबना के साध सपक्ष्य में किया जाए । सतरा एक बात के मूस जाने का है कि बाहे घीघोनिक सभाव हो या कृपि बिघास बिद्युत्-शक्ति या ब्रयम की सफाई के बुर में बनुप्य घीर उसके पर्यावरण के बीष की पासीब ब टूठी है तो बहु बनुप्य को ही हानि पहुँचाठी है । इसलिए अंतिम बिचारणीय बिषय साधनों के बय घीर संबय का नहीं है । बहु मीनिक दृष्टिकोष का है । बाहे जमीन की बूख रही हो या पग को घूष बिसके कारण अंतिवरदन घाने

बड़ा वह जहाँ कहीं गया उसने लूटा और साधनों का नाश किया। उसे हमेशा कत्ती थी क्योंकि उसे साम्राज्य के सपने जो या रहे थे। उसके पीछे-पीछे घायल सटटेबाज नगर बसाने वाले और साम्राज्य लड़ा करने वाले। इनके साथ वैज्ञानिक थे जिनका काम था जब प्राचीन साधन थक जाएँ तो उनके स्थान पर दूसरे कृत्रिम मयोज्य खोजना। यद्यपि अमेरिकी मस्तिष्क पर प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव था पर प्रत्यक्ष धनस्वा में कभी एक बात की थी और वह थी प्रकृति के प्रति घादर की भावना की।

प्रकृतिवादिया का एक सिद्धान्त है 'जलीय चक्र' का। इस सिद्धान्त के अनुसार बरसात का जल भूमि में इकट्ठा होता जाता है। वह नदियों और समुद्र में बहकर जाता है। वायुमंडल में पहुँच जाता है। फिर बरसात के पानी के रूप में मनुष्य को उपलब्ध हो जाता है। प्रकृतिवादी एक दूसरे सिद्धान्त की भी बात करते हैं और वह है 'वायु चक्र' का जिसके अनुसार इसी प्रकार चलसृष्टि जीव बनता है बढ़ता है और मनुष्य का काम जाता है। फिर उसका कूड़ा-कचरा और रासायनिक उत्पन्न मिट्टी में मिला जाता है और फिर एक बार वायुमंडल का एक चक्र बन जाता है। किन्तु इन बातों को प्रपचीपरिधि में समेटना हीसरा सिद्धान्त भी है और वह है प्रकृति और मनुष्य का संतुलन। इस सिद्धान्त के अनुसार बातावरण मनुष्य का पालन एक छत पर करता है कि वह इस महान् सम्मता का उपयोग हथियार के रूप में नहीं करेगा बल्कि उसे संजोकर रखेगा। जब अमेरिकी मिट्टी के प्रति घादर भाव समाप्त कर देगा तो वह साधनों से अधिक कुछ और जो देगा। फिर उसके स्वयं का कोई धर्म नहीं रह जाएगा और न उसमें यह समता ही रह जाएगी कि वह ऐसी महान् सम्मता को बिम्बा रख सके।

5 मानवीय साधन आबादी का बिज

जब तातामी के पचासे के मध्य में अमेरिका के एक भिरे से दूसरे भिरे की यात्रा करने वाले पर्यवेक्षक को संख्याघात बड़े प्रभावित हुए थे। एक ही अमेरिका में मोटर-वाहिया लबाटेसीविजन सटा की संख्या और दूसरी अमेरिका में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या। एक बात महत्व की है और वह यह कि भौतिकतावादी अमेरिका का उत्कृष्टतर जीवन-स्तर चुनना चाहिए न कि बड़े परिवार। पर अमेरिका ने दोना का चुना है। मजदूर बात है कि अमेरिकी 'बच्चों की बूम' का भी उगी रूप में बर्षा करते हैं जिस रूप में वे मछालों की या मूरनियम बूम का बर्षा करत हैं। फिर भी इन बर्षा की बूम के पीछे एक घायी प्राद घायी घुमी मानवीय जाति भी है जिसने अमेरिकी जनसंख्या के भावी रत के सम्बन्ध में घनेक रबीडन बिचारों और घाशाघी को पसंद दिया है।

इसकी सजीवता के परिचायक भी हैं या सम्मता के इतिहास के बिद्याभिरों के लिए बड़े काम के हैं। संस्था जन्मदर मृत्युदर जनवृद्धि घोरत भानु, परिवार का विस्तार बय का विवरण ऐसे और शिक्षा का बीजा घाटीरिब और मानसिक स्वास्थ्य भोजन आवास, और जनकल्याण सभी दृष्टिमा से अमेरिका की जनसंख्या का अध्ययन बड़ा महत्वपूर्ण है। इन सबम जन्मदर मृत्युदर और जनवृद्धि और अधिक महत्व के हैं। इतिहास लेखकों के लिए सदा से एक हीमा रहा है 'स्विर समाज या 'स्विर राज्य' का।

इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बहुत-से अमेरिकी भी ऐसा मानते हैं। उन्होंने यहाँ कोई ऐसा चिह्न देखा कि जन्मदर भीमी पड़ रही है तो वे तत्काल बैचन हा उठते हैं। पश्चिम की कुछ जातियों को भीति से भी अनुभव करते हैं कि वृद्धि की दर में कमी बुरी बात है। वृद्धि घण्टी बात है। किन्तु इसमें एक स्वीकृति कि सम्मता भी एक घटीर की भीति है निहित है। जब इसकी जनसंख्या का घातृरिक स्रोत सूखने लगता है तो राष्ट्रीय शक्ति का भी अय होता है। इतिहास में ऐसी भी जातियों के उदाहरण हैं जो अपना प्रतिरूप पैदा न कर सकी क्योंकि या तो उनकी जन्मदर कम थी या मृत्युदर अधिक। तीसे और बानीसे में बिद्वानों में एक बात नी बड़ी जर्नी थी और वह यह कि प्रत्येक सम्मता के इतिहास में 'जनसंख्या का एक चक्र' हाता है। अमेरिका में जब इस सिद्धान्त को लागूकर यह भविष्यवाणी की गई कि 1950-75 में अमेरिका की जनसंख्या सम होनी तो इससे अमेरिका में बड़ी चिन्ता व्यापी। किन्तु 1950 और 1955 के आँकड़ों ने इस भविष्यवाणी को झुठला दिया। जनवृद्धि की रेखा तेजी से ऊपर की गई और अमेरिका में लोगों ने राहत की साँस ली। ठीक हो या सतत व लीस बड़े प्रसन्न हुए जो अमेरिका की घातृरिक शक्ति के बड़े भक्त हैं। यहाँ जनसंख्या के चक्र की अमेरिका की जीवन-शक्ति का पता देना चाहिए या बहाँ वह प्रकट हुआ कि जीवन वय का जनसंख्या चक्र के नियमन में बड़ा हाथ है।

पहले क भाष्यकारों की भविष्यवाणियाँ कुछ अधिक ठोस सिद्ध हुई हैं। 1780 के आस-पास बेजाभिन कैकलिन ने एक सूचना पुस्तिका प्रकाशित की लिए लिखी थी जिसका दीर्घक था "उन लोगों के लिए सूचनाएँ या अमेरिका जाएँ। उसने लिखा था 'अमेरिका में स्वास्थ्यकर हुआ और जसबापु, घाघ पराचों की प्रचुरता भीम विवाह को प्रारसाहन, लेती से मुखर-बसर की निश्चितता है। जनस्वरूप जन्म के कारण आबादी तेजी से बढ़ती है। आगामुधों के कारण यह वृद्धि और तेज हो रही है।' इतिहास ने कैकलिन की बाणी को सत्य सिद्ध न कर दिया। आबादी में वृद्धि घटवास के कारण ही नहीं बल्कि जस्ट विवाह, लती के लिए गई अधिक शक्ति की आवश्यकता के कारण भी हुई। तए

प्रभासी नर-नापी अधिवासीत उसी बय-बय के ये जो संवत्ति उत्पन्न करने में समर्थ है।

60 वर्ष परचात् निपटते हुए ऐलेक्सिस डी टॉकिविले ने धीरे महत्त्वपूर्ण प्रविष्टिवासी की। अमेरिका में जनतन्त्र नामक पुस्तिक के प्रथम खण्ड के प्रथम में उल्लेख किया है कि "एक समय था जहाँ अब अमेरिका में 10 करोड़ व्यक्ति होते। वे सब एक ही व्यवस्था में रहे एक ही मूल की संवत्ति होने उनकी उत्पत्ति का मूल एक होगा। वे एक ही सम्प्रदाय के प्रहरी और एक धर्म के अनुयायी होंगे। इनकी आदतें और व्यवहार एक होंगे। इनके मत एक होंगे, मत प्रचार के साधन एक होंगे और सेवा सब कुछ अनिवार्य है, निश्चित है तो केवल इतना ही और यह विषय के लिए नहीं बात है जिसके धर्म में इतना कुछ भार है जहाँ कल्पना की भी वास्तविक पहुँच नहीं।" 1920 की जनगणना के आँकड़ों ने दिखाया दिया कि डी टॉकिविले की उक्ति किन्तु सही थी। 1937 में वह संख्या 17 करोड़ पहुँच गई और वह अब भी बढ़ाच पर है।

1920-40 के बीच इस प्रति के धीमी पड़ने के पुष्ट प्रमाणों के अब उत्पत्ति की दर में स्पष्ट पड़ाव था। बीसे और तीसे अमेरिका के लिए बड़े मानक वर्ष थे। बीस के धीरे के सहसा बाव आर्थिक शक्तिहीनता ने अमेरिकी विश्वास में एक मानक स्थिति पैदा कर दी थी। धर्म व्यवस्था का ज्ञान ही नहीं बढ़ा था उस पर प्रभाव भी किया गया। कमसंख्या परिवार का विस्तार सहसा सिकुड़ गया। बेमिस रोग के एक अध्ययन से पता चला कि 1910 से पिछले आर्थिक धाव जाने और कम धाव बात लोगों में उत्पत्ति अनुपात का फर्क कम हो रहा है। यह फर्क तीसे के मंती के काल में सबसे कम था। इस प्रकार कम धाव के वर्षों में भी आबादी के प्रति विवेकवारी दृष्टिकोण का प्रचार हो रहा था। पैसा कि एक लेखक ने लिखा है कि "अन्वयन की सामग्री और बच्चों की प्रतिश्रुति व बचपन द्वारा से प्रेरित हो रहे थे।" 1923 से 1945 तक इस बात पर ध्यान सहमति थी कि यह कम धीमी बना रहेगा। 1945 तक जब धन धन के अन्वयन यही थे कि 1920 में आबादी 10.3 करोड़ होती। सभी मसल यही बतला रहे थे कि अमेरिकी जन-संख्या की वृद्धि में "ह्रास का प्रारम्भ" हो गया है।

आदर्श की बात हुई कि 1910 के बाद उत्पत्ति की दर गड़ी। 1945 में यह वृद्धि इतनी मुश्किल थी कि अनुमान में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। 1933 में जब मंदी चरमसीमा पर थी अन्वयन भी बन्नी के चरम पर थी। 1933 में अन्वयन 16.0 प्रति सहस्र थी 1910 में यह संख्या 17.0 हो गई और 1945 में 2.8 पर पहुँच गई। 1933 में 23 लाख बच्चे पैदा हुए। यह संख्या 1945 में 32 लाख हो गई। 1945 और 1933 में तो 40 लाख से भी अधिक

बच्चे प्रति बय पैसा हुए। अमेरिका की जनसंख्या 1940 में 15 करोड़ थी। 15 बयों में इस संख्या में 8-5 करोड़ की बढ़ि हो गई। इसमें प्रवासियों से कोई विशेष सहायता नहीं मिली।

यै इस घटना पर विचार और देता है क्योंकि यह किसी भीरित सम्पदा को मशीन के रूप में देखने के दृष्टिकोण पर अच्छी टीका है। वैज्ञानिकों ने कहा कि अमेरिका में मृत्यु की दर में बढाव सीमा पर पहुँच चुका है। पत्रवास का दरवाजा बन्द है। जन्मदर में कमी भी एक चुकी है। यद्यपि सामग्री का प्रत्यक्ष हम बड़े विश्वास के साथ कर सकते हैं पर मनुष्य किस मार्ग से जाएगा हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। वैज्ञानिकों का यह कथन ठीक है कि जब मौसम देहात से शहर में घाते हैं तो उनकी जन्मदर में गिराव होता है। जब नारी घर से बाहर निकलती है और बच्चों के पैसा करने और उन्हें पासने के प्रतिरिक्त दूसरे काम भी करने लगती है तो जन्मदर घीर मिलती है। जब जीवन का स्तर ऊपर चढता है तो बच्चों की भीड़ भाड़ पसन्द नहीं आती। किन्तु बढनामों ने वैज्ञानिक को उसत सिद्ध कर दिया क्योंकि उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण बात की ओर ध्यान नहीं दिया। जोसेफ एस० डेबीज (इसने इस नई प्रकृति का वर्णन भीरों से पहले कर लिया था।) के एक लेख पर टीका करते हुए 1964 में डैक डम्ब्यु नोटस्टीन ने अपने सापियों के उसत भान्नामों को बिनाया था। उसने कहा था "एक सतासी से अधिक के काल में जन्मदर के गिरने पर जकरत से अधिक ध्यान दिया गया। इस सम्भावना पर सबसे कम ध्यान दिया गया कि परिवार का मलन जो अब तक स्मिर या अप्रत्याशित तेजी से बदल भी सकता है।"

इसका सार यह निकला कि अमेरिकी जीवन का उद्देश्य और उसका दृष्टिकोण अब भी अस्थिर है। यह उसता ही अस्थिर है जितना जनता के प्रवास का प्रवाह। जनसंख्या में वृद्धि जन्म और मृत्यु के दर के सम्बन्ध पर निर्भर है। अमेरिका में बच्चों की मृत्युदर में पर्याप्त कमी हुई है। किन्तु कुछ समय तक जन्म की दर में ही कमी हो गई थी। युद्ध के काल में इस कमी के पसटने का एक कारण हो सकता है जो समय में भी घाता है। युद्ध काल में सदकियाँ इसके पूर्व कि उनके पति युद्ध के मोर्चे पर जाएँ जल्दी बच्चे पैसा कर उन्हें पासने में अधिक हताशित थी। यदि पति युद्ध में न जात तो यह वृद्धि घीर भी होती। दर में वृद्धि की प्रकृति युद्ध के पश्चात् भी जनी रही। यह सत्य है कि 1930-40 के बीच परिवारों के मलन में पर्याप्त परिवर्तन हुए किन्तु इस परिवर्तन से भी अधिक मौसिक परिवर्तन हुआ उन मृत्यों और उस मूर्ति के बारे में जो अमेरिकी घर-मारी अपने सम्बन्ध में बना रहे थे।

मैंने कहा है कि इस घटी के बीसे की समृद्धि के मुकाबिले सीसे की घाघिक

मिराबल स अमेरिकियों में विश्वास का संकट पैदा हो गया था। इस संकट का मुआबिसा किया गया 'यू डीस' के बर्षों में। इसके बाद सबको मोकरी दी गई और एक नई प्रवृत्ति का बर्षा हुआ 1940 में। मृत्युदर में कमी का सम्बन्ध विज्ञान से है किन्तु जन्मदर में वृद्धि और यह भी जब धर्म-विरोध के सभी साधन प्राप्त सबको उपसर्ग से जीवन के प्रति विश्वास के कारण हुई। बच्चे पैदा करने का घप है अविध्य को बँबक रखना। धार्मिक बुद्धि-परक समाजों में बच्चे तब तक पैदा नहीं करने जब तक अविध्य में पूर्ण विश्वास न हो। रोज़ पार और घायली पुनः प्राप्ति और उप नगरो में बसने से पर्याप्त कुरसूल मिलने के कारण मुदा अमेरिकियों में बच्चों के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाया वह उनको छोड़कर और सभी को धारण्य में डालने वाला था। बच्चों के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण पुराने डग का हो गया जब कि लोग उनसे धार्मिक होने की धारा कर रहे थे। जहाँ तक बुबली पालियों का सम्बन्ध है वे उस पीढ़ी की हैं जो पहले बच्चे पैदा करना चाहती हैं फिर उनके कामन-यामन में से कुरसूल पाकर हमारे काम करना चाहती हैं या घपनी प्रतिभा का उपयोग तब करना चाहती हैं जब बच्चे ममान हो जाएँ। उच्च मध्यवर्ग और धर्म वालों तथा कलाकारों और बुद्धिजीवियों में जगदर के घटने का खतरा बहुत मार्को का था क्योंकि हमारे वर्ग वाले सामान्यतया इनका ही अनुकरण करते हैं। इन महत्त्वपूर्ण वर्गों में 1940 में उत्पत्ति दर में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

मैंने कहा कि है कि अमेरिकी अपना सम्बन्ध में बर्दाश्त में परिवर्तन कर रहे हैं। इसका एक भाग का कुछ मुराव मिलेगा कि क्यों अमेरिकी इतनी तेजी से या इनने पीरे बच्चे पैदा करते हैं। यही बात दूसरे तरीके से कहें तो यह कह सकते हैं कि जब एक मुकद अमेरिकी कहता है कि नवपूजावस्था में घायली करने में बड़ा मका है या निस्संतान रहने से घब्रता है कि बच्चे पैदा किए जाएँ (घात्र अमेरिका में निस्संतानता का बीच मोर नेम की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसने बच्चों के सम्बन्ध में अमेरिकियों के भावों का क्या जगत है) या जब वह कह सकता है कि एक बच्चा पैदा करने से घब्रता है तो पैदा किए जाएँ, तो बच्चे से घब्रता है कि तीस पैदा किये जाएँ। या जब वह किसी सनसर में मकाम बनाना है और मान्य गर्ववस्था है या परिवार बढ़ाता है तो उसका क्या सार्वभ्य होता है? उसमें ऊँची घाय के स्तर वालों और ऊँची धिरा वालों के लिए भी जगते मका है क्योंकि वे भी जीवन में उनसे नती धार्मिक आनन्द की शोध में रहते हैं। ये मूर्खियाँ महत्त्व के प्रायेक भाग से रेगाओं के मिलने से बनती हैं। इसलिए अनुमान किया जा सकता है कि अविध्य की धारा और मिराबल के जलपाय के निष्काग में इनका क्या हाल होगा। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि वर्तमान ऊँची और रखवायित नगरवालों धादि के निर्माण से क्या

होगा ? और इसी प्रकार मित्य बर्बनाम चमकाय और जीवन-स्तर उत्पत्ति-र की बुद्धि पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

अमेरिका में जनबुद्धि और उसके रूप ने मित्य मृत्युदर का महत्व अत्यन्त बितना ही है । मृत्युदर के विवरण में कठिनाई कुछ कम अवश्य है । 1850 से 1930 की शताब्दी में अमेरिका की जनसंख्या 8 गुनी से अधिक बढ़ गई । इसमें कुछ तो 1920-30 के बीच प्रवास के कारण बुद्धि हुई पर मुख्य रूप से मृत्युदर में कमी की वजह से आबादी बढ़ी विशेषकर 1900 के पश्चात् । मृत्युदर में कमी का कारण या दवाबाक की सुविधा का सुधारना या अच्छा जीवन बचक आवास जीवन-स्तर में उत्पत्ति और जन-स्वास्थ्य । अमेरिका में ही नहीं अन्यत्र भी आबादी-बुद्धि में मृत्यु दर में कमी का बहुत बड़ा हाथ रहा है । 1900 में मृत्यु की दर 17.2 प्रति सहस्र । 1920 में यह 12 और 1950 में 9.6 हो गई । बाल-मृत्युदर भी पर्याप्त रूप में घट गई । फलस्वरूप प्रजनन की दर में घटिका संख्या पहुँचने लगी । इससे भी आबादी में बुद्धि की आबिठा बढ़ गई । प्रसूति काल में मृत्यु की दर में काफी कमी हुई गई । 1920 में यह संख्या प्रति हजार 6.47 थी जो 1951 में 7.8 हो गई । 1927 में बच्चे के बच के वर्ष में प्रति सहस्र बच्चों में 0.5 मर गए थे । 1951 में 29 बच्चे ही मरे । इसी प्रकार 45 से नीचे के लोगों में भी मृत्यु की दर पर्याप्त घटी । 60 के ऊपर वालों में भी मृत्यु दर घटी है । अब यदि यह कमी और होने को है तो यह 45 से 60 के बीच में होगी ।

अमेरिकी आबादी के घटन और वितरण के बिना ये हानि में जो परिवर्तन हुए हैं उनका वर्णन करना अभी शेष है । दवाबाक की सुविधाएँ बढ़ जाने और मृत्युदर के घट जाने से अमेरिकी आबादी के दोनों किनारों के बचपन का चित्र बदला है । पैदा होने पर बच्चे के जीने के अवसर अब अधिक हैं । (0.5 प्रतिशत बच्चे कम-से-कम 15 वर्ष की आयु तक अवश्य पहुँचते हैं) इसी प्रकार 0.3 पार हो जाने पर जीवन कुछ और लीज से जाने की संभावनाएँ भी बढ़ गई हैं । 1940 से 60 के एक दशक में ही आबादी में 15 प्रतिशत बुद्धि के मुकाबले 10 के नीचे के बच्चों की 40 प्रतिशत बुद्धि हुई । 1930 में अमेरिका में 0.5 से अधिक सत्र के लोगों की संख्या 2.6 करोड़ थी—एक दशक में 30 प्रतिशत की बुद्धि । 0.5 से अधिक वालों की संख्या 1950 में 30 लाख (सम्पूर्ण जनसंख्या का 4 प्रतिशत) से 1952 में 1.3 करोड़ (8 प्रतिशत से अधिक) पहुँच गई । सम्भावना यह है कि एक ही पीढ़ी में यह संख्या 10 प्रतिशत हो जाएगी । पिछले 60 वर्षों में अब कि अमेरिका की आबादी दुगुनी हुई 0.5 से अधिक उम्र वालों की संख्या चौगुनी से अधिक बढ़ गई ।

बच्चों के संरक्षण और सामान्य आयु में बुद्धि का अमेरिका पर प्रसूति-मूर्हो

में भीड़ घोर शिक्षा की सुविधाओं में वृद्धि से घोर भागे प्रभाव पड़ा है। इससे अमेरिका एक साथ ही बच्चों और बूढ़ों का देश हो गया है। इससे अमेरिका की विचार-सरणी में भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। पिछले 60 वर्षों में (1850 तक) एक अमेरिकी पुरुष के जीवन की आयु में 31 वर्ष बढ़े हैं। 1937 से 1941 के 14 वर्षों में यह 60 से 69½ वर्ष तक पहुँच गई है। स्वास्थ्य कम में हमने गुरुवनों घोर जीवन की गति के प्रति दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन किया है। अब जीवन अधिक सम्मान मिल रहा है इसलिए उसकी गति भीमी पड़ने लगी है। अब तो कुछ ऐसे भी अमेरिकी हैं जो दर्प से कहते लगे हैं कि मृत्यु की समस्या पर बिना प्रश्न की जा सकती है।

अमेरिका बड़े बूढ़ों का देश होता जा रहा है इस पर कुछ मासू बहाने वाले लोग भी हैं। पिछले 75 वर्षों में मध्य आयु में लगभग 10 वर्ष की वृद्धि हुई है। मध्य आयु 1880 में 20-0 से 1940 में 30 से कुछ अधिक हो गई। अब से इसमें कुछ कमी हुई है। क्योंकि बच्चों की उत्पत्ति में बाढ़ आ जाने से यह प्रतिघट कुछ पिर गया है। कुछ आश्चर्य की बात है कि अमेरिकाई लम्बी-मध्य आयु प्रमाणित क्यों मानी जाती है? इसमें कमी से क्या विशेषत्व पैदा हो जाएगा। आबादी की जनानियत हम धीमे मृत्यु और जगम से लरीय सकते हैं। किसी भी संस्कृति में इसका यही प्रश्न होता कि जीवन छोटा और दुःखमय या। टैबिफस और दबावक का विकास कम या। एक बच्चा अमेरिका में पैदा हो तो उसे 60 तक पहुँचना आसान है पर वही एशिया में पैदा होकर कठिनाता से 15 तक पहुँचेगा। लम्बी जिव्यमी से आसमी को अपने आयुओं को पुरा करने का अवसर मिलता है। किसी भी संस्कृति को इससे ऐसे मनुष्य मिलते हैं जो उत्पादन करत हैं। जहाँ तक अमेरिकी जनता का प्रश्न है यह कहना कि अब वे 'युवा' नहीं रहे यह 'युवा' शब्द के अर्थ पर निर्भर है। आबादी में हुए परिवर्तन से युवा और बूढ़ गणों का अर्थ भी बदल गया है। अमेरिका में युवावस्था अब बालीसे के आशीर तक और अमेरिकावस्था साठे के आशीर तक पहुँचने लगी है जहाँ से बुढ़ावस्था का प्रारम्भ होता है। अब केवल अष्टमियों में ही 45 से ऊपर के नर-नारियों को नाम पाना कठिन रह गया है। वहाँ भी अब वे पुराने विचार बदलते लगे हैं।¹

हैंने इसी अध्याय में अध्याय (गच्छ 3) राज्यों और लोगों तथा देहात और एहों में हो रहे आबादी के रहोचल की चर्चा की है। इन परिवर्तनों में जगम कर गे प्रभाग के आवायमन का अधिक महत्व है। बालीसे के दराक में

1 Youthfulness.

2. अविच विवरण क तिण देने अध्याय 3 का अनुभाग 7।

केलिकोनिया ऐरिजोना फ्लोरिडा नेब्राडा ओरेगन वाशिंगटन और मेरीलैंड के साथ राज्यों में आबादी सबसे तेजी से बढ़ी है। इनमें जम्मदर की अपेक्षा प्रवासियों के आगमन के कारण आबादी अधिक बढ़ी है। मिसिसिपी माइकासास उत्तरी इन्डोटा और ओहसाहोमा के चार राज्यों में जहाँ की आबादी घटी है जम्मदर डेवी की पर फिर भी आबादी बढ़ी क्योंकि वहाँ से अधिक लोग प्रवास के लिए निकल गए। यदि केवल जम्म और म्यूडर का ही प्रश्न हो तो दक्षिण के राज्य सबसे ज़बर सिय होंगे। इन्डियान और गरीब लोगों में जम्म की दर ऊपर है। किन्तु फ्लोरिडा-जैसे राज्यों को छोड़कर युवक मोरे और ह्यूडी लोगों दक्षिण से हट रहे हैं। पश्चिम की ओर प्रवास की गति बालू है। आतिरिक्त आवागमन की स्वतन्त्रता के कारण अधिक जम्मदर और कम आधिक अबसर के राज्यों और कम जम्मदर और अधिक आधिक अबसर के राज्यों के बीच आबादी का समन्वय होता रहता है।

आबादी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है और वह यह कि लोगों और कस्बों से हटकर लोग नगरों की ओर और बड़े नगरों से हटकर उपनगरों में गए हैं। बड़े नगरों की आबादी में इस प्रकार कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई है। उपनगरों में आसानी से मकान करीब आ सकते हैं जिनमें रसोई की सभी सुविधाएँ हैं। वहाँ से मोटर गाड़ियों से लोग बाहरों में अपने कार्यों पर आसानी से आ-जा सकते हैं टेनीसियन पर अक्कास आनन्दपूर्वक बिताया जा सकता है। इस प्रकार जीवन को सयसय सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण उप नगरों की आबादी तेजी से बढ़ गई है। लोगों और कस्बों तथा बड़े सहरों के जीवन से विरक्ति घाय-घाय हुई। रोमन प्रिंसिपेट² के दिनों की भाँति अमेरिका में 'लोगों को बापस लौटो का मारा नहीं है। किन्तु आम्बोसन यह है कि ऐसा करो कि लोगों प्रकार के जीवन का उत्तम धर्म प्राप्त हो।'³

विदेशों में उत्पन्न अमेरिकियों की संख्या में बढ़ी कमी हुई है। 1906 तक 6 प्रतिशत अमेरिकियों में से अधिक विदेशों में उत्पन्न न थे। वह समय भी बीत ही जावेगा जब 1930 में दक्षिण की भाँति (1.5 प्रतिशत के लगभग) सर्वत्र ऐसे अमेरिकियों की संख्या गणना हो जावेगी।

1950 से पूर्व अमेरिका में पुरुषों की संख्या औरता से अधिक थी। कारण था प्रवासी लोगों में पुरुषों की बहुतायत और औरतों की मृत्युदर में अधिकता।

1 Poor Whites.

2 Roman Principate.

3 इस प्रश्न पर इतने जवाब हैं जन्मदरों की स्थिति हाँफ के जन्मदर विदेश रूप से वर्ण की गई है।

19५० के बाद यह अनुपात बढ़ता है। इसका कारण प्रवासियों सम्बन्धी परिवर्तन तो हैं ही साथ ही प्रगुतियों की मृत्युदर में कमी भी इसका कारण है। अब 43 के ऊपर पहुँचकर अमेरिका में पुरानों की उमर की बीमारियाँ पकड़ती हैं। उनकी पत्नियाँ ही अधिकतर अब उनकी देखभाल करती हैं।

अमेरिका की आबादी सम्पूर्ण विश्व की आबादी का केवल ४ प्रतिशत है। पर अमेरिका में सारे विश्व का समस्त भाषा उत्पादन होता है। इसका कारण है अमेरिका की विद्यालय अधिक उचित धनोत्पत्ति उस समय के लोगों की संख्या को महीनों की कमा या उसका प्रयोग कर सकते हैं। 19५० में 7 करोड़ से अधिक अमेरिकी सामान्यतः देशों में लगे थे। अनुमान है कि 19५5 में यह संख्या 85 से 9 करोड़ के बीच होगी। नाय-कर्त्ताओं में औरतों की संख्या (विशेषकर विवाहिताओं की) बढ़ रही है। 16५० से काम का सप्ताह 6 प्रतिशत दशक घट रहा है। इस पचासे के मध्य सप्ताह लगभग 40 घण्टों का था। अनुमान है कि 1975 में स्थापित यहाँ और बिजली से निर्मित वस्तुओं के उपकरणों के प्रभाव के कारण काम का सप्ताह तीस या पच्चीस घण्टे का हो जाएगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि काम के घण्टे घटने पर भी उत्पादन बढ़ा ही है। अब लोगों का स्वास्थ्य पहले से बढ़ा है। कानून कम होती है। शिक्षा की सुविधाएँ अधिक हैं।

पड़न में यह सब विजय के गीत का-सा संवेगा पर मेरा हृत्ता ऐसा नहीं है। किसी भी राष्ट्र के मानव-साधन¹ का वास्तविक वन उसके विस्तार में नहीं बल्कि सद्गुण में है। इन सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा इस अध्याय के अन्त में अनुभाग में होगी। अभी तक आबादी की कृत्रिम वृद्धि नहीं हुई है जिससे अब ऊर्जा के साधनों या उत्पादन तथा कृषि की उत्पादन क्षमता या प्राप्त करने योग्य स्थान है। जिसकी वजह से अमेरिका की आबादी बढ़ रही है उसे देखते इस बात का समझ है कि औद्योगिक कारणों से या कृषि इस संसार में सक्रिय है। अमेरिका आज जिनका बच्चा मान पैदा करता है उससे अधिक उत्पन्न करता है। अपने मान की प्रति व्यक्ति मान भी बढ़ती जा रही है।

इसलिए हम यहाँ के मध्य में अमेरिकी साधनों और जनसंख्या के बहुत-से विचारों बच्चों के इन ब्रूम को देखकर भय से नीपने लगे हैं। उनकी विस्तार हो गया है कि उपवन योजना के अन्तर्गत और संख्याओं की वृद्धि के देर में अमेरिका इनके बच्चे पैदा करेगा जो उनका वन और दक्षिण की भाविता में बहुत अधिक होने और इन प्रकार उनके जीवन का स्तर गिर जाएगा। वे यह स्वीकार करते हैं कि अमेरिका में आबादी का घनत्व अभी कम है। अमेरिकी महाद्वीप में एक तरह का आबादी का घनत्व हो सकता है। किन्तु उनका तर्क यह है कि

ऐसे अमेरिका में जाबन-स्तर गिर जाएगा। जीवन को कृत्रिम साधनों से परि-
मित करने का प्रयत्न। वैज्ञानिक जीवन उसमें भीर विचारों से भर जाएगा।
फिर अविनाशकवादी प्रवृत्तियों को कोई रोक न सकेगा। इस मासपूर्व तर्क¹ के
प्रतिरिक्त सौम्यवादी दृष्टिकान² भी है। अस्पृशता का औचित्य सारी सामी अगह
में भारतीय पर पड़े होंगे। बड़े राष्ट्र की तरह गाँवों की घोर बड़
बाँटने। इसलिए विद्वानों की घोर स 'जनसंख्यानीति' के निर्माण की माँग
बढ़ती जा रही है।

यै 'परिवार-नियोजन' के विरुद्ध तर्क नहीं कर रहा है। परिवार नियोजन
आवादी निर्माण के प्रश्न को नहीं छोड़ देता है जहाँ यह है। किन्तु मैं किसी
'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति' के पक्ष में नहीं हूँ। ऐसी नीति यह मानकर
बसती है कि अमेरिका के लिए कोई आदर्श जनसंख्या हो सकती है जहाँ हमें
किसी नीति के द्वारा पहुँचना चाहिए। इस सम्बन्ध में सरकार को कोई उत्ससा
हैने का मतलब है कि हम जानते हैं या जान सकते हैं कि कोई 'आदर्श' जनसंख्या
है और कैसे उसे जनता के निजी फैसले के ऊपर लागू कर सकते हैं। इस सम्बन्ध
में मुझे संदेह है। 1921 से अब तक प्रवास के जो कानून बने हैं वे ऐसे मान
को मानकर बनते हैं। किन्तु यह कहना कठिन है कि इन कानूनों से अमेरिकी
जीवन में समृद्धि या समृद्धियों की वृद्धि हुई है। यदि कोई मुझ से पूछे कि गणित
योग्य अभिप्राय³ में क्या मैं अमेरिकी आवादी को बुद्धिपूर्वक बढ़ते देखता हूँ तो मैं
कहूँ कि "क्यों नहीं"? अमेरिकी जीवन के बहुत-से गतिशील समुच्चय सतत
जनवृद्धि की आवश्यकता के कारण हैं। इसका अर्थ है नए स्कूल, नए स्कूल
रुद्धे के नए स्थान नई सड़कें और परिवहन बड़ा बरेलू बाजार, बड़ी भूमिक
शक्ति और अधिक उत्पादन।

वृद्धि में अब किसी राष्ट्र ने जनसंख्या नीति अपनाई है उसका उद्देश्य
होता था कि अधिक बच्चे पैदा न हों या कम बच्चे पैदा किए जाएँ।
अधिक बच्चे पैदा करने का कारण या तो राष्ट्र की बारा के रुक जाने का भय
था (जैसे रोम साम्राज्य या फ्रांस) या उसे युद्ध के लिए सैनिकों की आवश्यकता
थी (जैसे जापान युद्धपूर्व इटली वगैरे)। कम बच्चे पैदा करने का कारण है
प्रति जनसंख्या विकास और बीमारी (जैसे भारत वर्तमान जापान संका
प्यूरटोरिको)। स्त्रीजन की जनसंख्या नीति सबसे पुष्ट है। स्त्रीजन में जनसंख्या कम
होने के कारण राष्ट्र की प्रवृत्ति का अंतर है। इसलिए उसे रोकने के लिए
बड़े जगह बड़ाना चाहता है। किन्तु अमेरिका में अभी न तो जनसंख्या की

1. Malthusian argument.

2. Aesthetic plea.

3. Calculable future.

अवनति और सांस्कृतिक घातपात का स्रोत है। म धावागी की इतनी बहुतायत ही है कि प्रश्न हो कि उनका पासना-बोपण कैसे किया जाए। अभी तक तो जनसंख्या में वृद्धि के कारण अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था मजबूत ही हुई है। स्थिति यह है कि प्रचुर संख्या में प्रवास को चातुर रक्षण का विरोध इसलिए होता है कि नुनयेवासियों को इन विदेशी जातियों की अधिक जगह से भय है। किन्तु समग्रतः अमेरिकी इस बात की चिन्ता नहीं करते कि प्रवासियों के कारण मूलजन की परम्परा की छवि होती या अमेरिका में जनसंख्या घातपात से अधिक बढ़ जाएगी क्योंकि उन्हें विश्वास है कि राष्ट्र मा तत्त्वों का भी पचा सिगा जैसा उमने मृत में किया है। हां अधिनायकवाद का भय अवश्य वास्तविक है और इस तर्क में भी गलत है कि आबादी के दबाव से इसका स्रोत बढ़ जाता है। फिर भी यह कोई बड़ा बटक नहीं है। यदि अमेरिका में कमी अधिनायकवाद आणता तो वह इस कारण से नहीं बल्कि किसी दूसरे प्रबल कारण से आया।

इस बात की सम्मानना सरलतम मूल है कि निरुद्ध अधिपत्य में अमेरिका की प्रति आबादी की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि वर्तमान में अमेरिका में जगह-र बढ़ गई है और मूल्य-र में कमी हो रही है तथापि संतति नियम के मापना की सतत बढ़ती जानकारी से आबादी पर निर्बल्य की पूर्ण सम्मानना है। निश्चित है समय से वृद्धि की यह गति अस्तित्व कम हो जाएगी। जनसंख्या-घातपात और प्रति आबादी के स्रोतों के बावजूद स्वास्थ्यकर प्रवृत्ति बने रहने की सम्मानना है। आबादी नीति के सम्बन्ध में निर्णय अपने जीवन के उद्देश्यों और अपने ज्ञान के प्रचार में परिवार बाँटि स्वयं करेंगे।

6 जनसंख्या के कारण

(स्वास्थ्य, जीवन, आवास और सुरक्षा)

आबादी के समय में सम्पादित सम्प्रदाय का कोई धर्म नहीं है। हाँ, यदि सतत सम्बन्ध जनता के जीवन गुण की फिक्र में हो तो हमका धर्म है। मैं जनता के जीवन के गुण की चर्चा की है। सतत अन्तर्हित-धर्मता की नहीं क्योंकि यह एक करवा बकार है कि अधिपतियों की अन्तर्हित-धर्मता में कोई गोट या नहीं है। यदि कोई वह मिश्र भी कर दे कि ऐसा कोई दोष या गवा है तो भी मूलजन का कोई कार्यक्रम ऊपर से थोड़कर उगे पूरा करना समझ के बाहर की बात है। अधिपति से अधिक हम जनता से यही पूछ सकते हैं कि क्या तुम्हारे नाम निरुद्ध जीवन-मापन के लिए जो आवश्यकताएँ होती हैं वे सब हैं? क्या

1 The Cult of Numbers

2. Innate capacity

अमेरिकी संस्कृति जनकल्याण कि व सब साधन उन्हीं उपलब्ध करती है ?

जनकल्याण के साधनों से मेरा तात्पर्य केवल जीवन की मौलिक आवश्यकताओं से है जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा-सेवा भोजन वस्त्र आश्रय आदि और मरणा। मैंने इसमें व्यक्ति और व्यक्तिगत की मोटी-मोटी आवश्यकताओं को ही सम्मिलित किया है। किसी भी संस्कृति को यदि उसे असह्य नहीं होना है तो अपनी जनता को कम-से-कम ये आवश्यकताएँ ही उपलब्ध करनी ही होंगी। हर क्षेत्र में इन आवश्यकताओं का कोई अल्पतम मानक अवश्य होगा।

अमेरिका में स्वास्थ्य समृद्धि अवकाश, भुरजा और मुक्त की दृष्टि सुस्पष्ट है। सामग्री और साधनों की इसकी देखरेख है कि जनकल्याण के साधनों के बारे में पूछताछ व्यर्थ मान्य पड़नी। यदि स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए आहार आश्रितों द्वारा निश्चित जीवन की आवश्यकताओं के अल्पतम मानक का ही प्रश्न हो तो हम कह सकते हैं कि भोजन ही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी अमेरिका का मानक ऊँचा ही होगा। किन्तु अल्पतम पोषक से आगे आदिम पोषक होता है। जिसके आगे भोजन में विज्ञान स्वाद और ध्वनि के समापन से बाहे हम कुछ भी जाएँ पर स्वास्थ्य की विशेष मान नहीं होता। इस दृष्टि से अमेरिका में जनकल्याण के साधनों पर पुनर्विचार करना पड़ेगा। अमेरिका के राष्ट्रीय उत्पादन और जीवन मान की छरी ऐसी है जो जीवन-मान की सभी परिष्कृतियों को और देती है। किन्तु हम जब ऐसा कोई मानक बना लेते हैं तो फिर सभी अपर्याप्तताएँ प्रकट हो जाती हैं। जब फेडरल स्ट्रक्चर ने कहा कि 'तिहाई राष्ट्र के भोजन मने हैं कपड़े खराब हैं और आहार अपर्याप्त हैं' तो उनका तात्पर्य यही था कि इनके समुद्र क्षेत्र में यह अवस्था वर्तमान के बाहर है।

यह देखने में अक्षय पर सत्य बात सबसे अधिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रकट होती है। डाक्टरों की संख्या और उनकी प्रवीणता अस्पतालों के संयुक्त शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की गहराई, निदान और भय-विज्ञान आदि नक मशीनों यंत्रों और यंत्रों की प्रशस्ती और रोगों पर विषय-आदि को देने तो इस क्षेत्र में अमेरिका की प्रशस्ति बाकी बाकी है। सरविमियम अस्तर ने 1913 में लिखा था "अत्यधिक पीढ़ी के राज्य में नहीं बड़ा हुआ कि यह जर्मि के बीच से पृथ्वी और स्वास्थ्य की नई योजनाओं पुनर्गठित शिक्षा विद्यालयों नए बंग से गठित अस्पताल तथा मानवता के प्रति नए दृष्टि कोण की साक्षी बने।" 1911 में जारोस जे० ह्यूडरसन ने इसी कल्पना की जहाँ

1 Shows welfare.

2. Optimum nutrition.

की भी जब उसने कहा था कि "दवाशाक की अमेरिका में अब इतनी प्रगति हो चुकी है कि जिससे अब कोई भीमार किसी बेसिर-मैर की बीमारी होने पर किसी भी बिजिरसक से बिजिरसा कराकर 50-60 की उम्रमी रखने की सम्झी बधा में पहुँच चुका है।

पिछनी घाबी घताब्दी से बिजिरसा की दृष्टि से अमेरिकी जादू के मुम और देश में रह रहा है। इस जादू को देखकर बड़ अश्चम्भित है। इस पर कभी कभी वह जुड़ भी हुआ है और उसने इसका प्रतिरोध भी किया है किन्तु अन्त में उसने यही कहा है कि इसका काम सबको भिलना चाहिए। द्वितीय महायुद्ध में जब अमेरिकी दवाशाक अन्ध कर्म और अन्ध बिजिरसा के अनुमनीय साधन बिजिमिपी या ओल्गाहोमा के गरीब सं-गरीब व्यक्ति के लिए भी सुलभ हो गए थे इस प्रकार के बात सतह पर था गए। यह बिचार दृढ़ होने लगा कि अच्छी-सै-अच्छी बिजिरसा की प्राप्ति सभी का संबिधानसिद्ध अधिकार है। यह हमारे मुम का एक नया फर्मल है। जो कभी बेवस धनवानों का दबाव समझ जाता था वह सबके लिए आबश्यक बन गया है। अब अर्धघास्त्री अमेरिका की स्वास्थ्य क क्षम में 'आवश्यकता' का संघेपण कर रहे हैं क्योंकि अब यह मान लिया गया है कि नियमानुसार यह सबका अधिकार है। बिजिरसा के क्षेत्र में आबसी से भी अधिक महत्त्व स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई इन बान्ति का है।

बिन्तु निराशा की बात यह है कि इस अकूत कोपन और उपायों से अभी अनेक अयकर मजामक रोगों का आग्रस गट कर दिया गया है जिन्हे अयम का सारा बाहरी रूप ही परिवर्तित हो गया है और सारा मानव-मादीर बेबीपमान अनुमधान की बस्तु बन गया है वही स्वस्थ आबादी नहीं पैदा हुई है। बरिण कैरोसिना और कोनक्किट, देहात और घहर या गम्भी बस्तिनों तथा अस्व प्रायु बाने लोगों और अयमर्ग के लोगों के स्वास्थ्य-बिना में भिन्नता है। यदि मानसिक स्वास्थ्य का बिच देंगे तो पारंगि कि एक करोड़ अमेरिकियों (मोतह में एक) की गणना मानसिक अस्वस्थों में है। इनमें 10 लाख साइकी टिक है। जिनमें दूसरे रोगों के बीमार अस्वस्थों में हैं उनमें अकूत मानसिक रोगों के हैं।

मेना में अर्ती में अस्वीडन बबनों का प्रमाण तो और भी नाटकीय है। 1910-11 में 20 लाख बकक (18 में 20 की उम्र के) बुनाये गए। इनमें 60 प्रतिशत शारीरिक और मानसिक बुरियों के कारण छोट दिव गए। द्वितीय महायुद्ध के अन्त में यह संख्या 33 प्रतिशत थी। किन्तु इसका कारण यह था कि उस समय स्टैंडर्ड डीपा कर दिया गया था। 1919-22 में 45 प्रतिशत अस्वीडन हुए। कोरिया युद्ध के प्रारम्भ में संख्या 69 प्रतिशत पहुँच गई थी किन्तु अन्त में फिर 33 प्रतिशत रही। इन संख्याओं का उपयोग आलोचनात्मक

दृष्टि से ही करना चाहिए। धीरों या कानों की कमजोरी या शरीर के अन्य किसी अंग की छत्राकी या साइकायूरेटिक¹ के कारण सेना वाले किसी को न में पर वह व्यक्ति दूसरे काम तो कर ही सकता है और बीर्या भी हो सकता है। यह भी सच है कि स्वयंसेवकों की संख्या कुछ जाने पर प्रसिद्धियों की प्रतिष्ठत और घट गई। यह तर्क दिया जा सकता है कि अमेरिकी सेना में भर्ती के लिए स्वास्थ्य का स्टैंडर्ड ऊँचा है क्योंकि भर्ती की उम्र के युवकों की संख्या अधिक है और उनमें से उन्हें अपने काम की संख्या मिल जाती है। फिर भी किसी भी विद्विस्ता की महान् प्रयति के युग में राष्ट्र के लिए यह सक्ता काफ़ी बुरी है। भरी बात यह है कि इनमें बहुत-से सुखर सकते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि वे उस वर्ग के थे जिनके लिए धार्मिक दृष्टि से विद्विस्ता पशुच के बाहर थी या फिर वे ऐसी पिछड़ी जातियों के थे जहाँ डाक्टर कम थे और अस्पताल की सुविधा अपर्याप्त थी। स्थायी रोगों की संख्या तो बिना को और काला बना देती है। प्रत्येक 8 में 1 अमेरिकी किसी-न किसी स्थायी रोग से पीड़ित है। इनमें भी 60 से 70 लाख व्यक्ति भयंकर रूप से बीमार हैं। इन रोगों में आर्थराइटिस, हाइपरटेंशन, आर्टिरियोस्क्लेरोसिस, सेरेब्रल पैन्सी और मैस्कुलर डिस्ट्रोफी² जैसे रोगों के भी रोगी हैं।

इन संख्याओं ने भाँवें जोस दी हैं। जब बार-बार 'स्वेनिंग' होती है, रोम के धीम निशान और रोकथाम की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। जनता को स्वास्थ्य की शिक्षा दान के लिए आनोशन बलाए जाते हैं और पुनर्वास का कार्य बड़े परिष्कृत से किया जाता है। डाक्टरों की निरन्तर कमी की समस्या भी सामने आई है। 1955 में अमेरिका में कुल सवा दो लाख अर्थात् प्रति 720 व्यक्ति के पीछे एक डाक्टर था। समस्या यह नहीं है कि डाक्टरों पेड़े की ओर कम लोग आकर्षित होते हैं बल्कि समस्या यह है कि समस्त कार्यों से (उदाहरणार्थ धार्मिक और जातिगत कारणों से) लोग निरत्नाहित होत हैं। डाक्टरों की शिक्षा के लिए पर्याप्त स्कूलों और उनके लार्च के लिए पर्याप्त धन की कमी है। लार्च ने आनबुनियों से सहस्यता देनी चाही पर उसे इस कारण ठुकरा दिया गया कि इससे स्कूलों पर उनका प्रभाव बढ़ जाएगा। मजदूर बात यह है कि संघ द्वारा दिया गया अनुसन्धान के लिए कम बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार्य जाता है। मज की सहस्यता तो ठुकरा भी गई किन्तु उसके स्थान पर उद्योगों से सहस्यता भी नहीं मिल पा रही है जिसे मज रहित समझा जाता है।

एक बड़ी कठिनाई है स्वास्थ्य के सम्बन्ध में धार्मिक लार्च की विशेषकर

1 Psychoneurotic.

2 Arthritis, Hypertension, Arteriosclerosis, Cerebral palsy and Muscular dystrophy

अमेरिकी सम्प्रदाय

निम्न मध्यवर्ग के लिए जो न तो सार्वजनिक अस्पतालों में जाना चाहता है, न अपने खर्च से महंगी बिजिरता करा सकता है। डाक्टर के यहाँ जाने पर 5 डॉलर पर बुसाने पर 10 डॉलर सर्जरी की औधी औषध विशेषज्ञों से परामर्श की औषध तो आसमान छूने वाली है उस पर एक्स्ट्रा आदि का खर्च प्रसंग से। ऊपर से दवाओं के दाम तो घामी बाकी हैं ही। मरमम यह कि कम आय के परिवारों का बीमारी में दिवासा निकल जाता है। इसमें डाक्टरों का दोष नहीं है। उनमें अधिकोद्य परिर्यामी हैं। अमेरिका-जैसे धानपीठ्य और लक्ष्मि देश में हम उनसे तापन जीवन और त्याग की उम्मीद नहीं करे? अनिवार्य स्वास्थ्य बीमा की योजना भी जिसमें मुख्य रूप से संघ का ही व्यय होता पर उसका अमेरिकन अधिकतम एनोसिएशन की ओर से यह कहकर पार किराज हुमा यह तो 'पंचायती रबा' है। एनोसिएशन निकामत करता है कि प्रायः उस पर बानिया की बीछार होनी है किन्तु वह भी निर्वोप नहीं है। उनसे बड़ी बहुत राई से स्वास्थ्य-मुरता की योजनाओं पर राजनीतिक किराज का संघटन किया। वह वह भूल गया कि मर्यादित वेना निजी क्षेत्र है पर मुय और धिता को छोड़ कर जनता के हित से उनका सबसे पहला सम्बन्ध है।

इच्छापूर्वक हो या अनिच्छापूर्वक स्वास्थ्य

1. अस्पताल और (1)

हो या अनिच्छापूर्वक स्वास्थ्य सुरक्षा के काम में प्रयत्न हो रहे हैं। मसलान धीरे (थुछ धम ठक) डाक्टर की खोज के लिए स्वेच्छा से बीमा की व्यवस्था प्रवर्धित कर रही है। साथी से अधिक जनता को अधिक लाभ हो जाता है। सभी बीमारियों के लिए धर्म के दिया जाता है या सेवा के लिए प्रार्थना—दोनों प्रकार की व्यवस्था है। मानिक-मजदूरों के बीच ऐसे प्रकार हो पाते हैं जिनके द्वारा बीमारी-रोग के लाभ और स्वास्थ्य की देन मान का प्रवर्धन होता है। गुपार्क राज्य में राजकीय बेकारी बीमा में जितने व्यक्ति सम्मिलित हैं उनमें तीन-चौपाई मानिकों द्वारा पोषित स्वास्थ्य और जनसंख्या की योजनाओं में सम्मिलित हैं। यद्यपि ऐसी योजनाएँ बराबर बनती जा रही हैं फिर भी बहुत-से अमेरिकी परिवार ऐसे हैं जिन्हें ऐसी दिमी भी योजना का लाभ प्राप्त नहीं है। उदाहरणार्थ 10 लाख अमेरिकी परिवार ऐसे हैं जो अपनी मांगी धन्य का धारा किसी गहरी बीमारी में खर्च कर रहे हैं। स्वास्थ्य-सम्बन्धी मुश्किलों के सामाजिक सबरन की दृष्टि से अमेरिका दुर्लभ और धीरे मार्ग स्वास्थ्य में पीछे है। निजी हाथों में स्वास्थ्य का उत्थान और वितरण करने में अमेरिका में स्वास्थ्य की योजनाएँ बड़े गंठ में जा सकती हैं तथा एक दुःखदायक प्रणाली में स्वास्थ्य की योजनाएँ बड़े गंठ में जा सकती हैं तथा एक दुःखदायक प्रणाली में स्वास्थ्य की योजनाएँ बड़े गंठ में जा सकती हैं।

1. Falk Anti-polio.

बाँट दी जब कि अमेरिका में प्रारम्भ में बाँटनी समय तक थोटासा रहा ।

1933 में स्वास्थ्य की देखभाल पर नयी समिति ने अपनी रिपोर्ट में सिखाया "पूछ या धानि प्रत्येक समय में अमेरिका में मानव-साधन बेरहमी से नष्ट किया जा रहा है" । जब स्थिति निश्चय ही उतनी बुरी नहीं है । एक पीढ़ी में स्वच्छामिश्रित स्वास्थ्य योजनाएँ, बाहरों की संख्या लक्ष्यों में स्वास्थ्य और जनसंख्या की योजनाएँ, बेटरनों¹ की संख्या द्वारा देखभाल और दूसरे रूपों में सब तथा गरवों द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की सहायता आदि की योजनाएँ कैसे पूरी हो जाएंगी ।

प्रश्न बाँकी है कि अमेरिका में बीमारियों की दशा कैसी है ? इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रीय बीमारियों का रूप बदलता रहता है । इससे संस्कृति के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है । 1900 के बाद से लैपेटिक निमोनिया संयुक्त बोवाइटिस एन्फेक्शिया एपेंडिसाइटिस रेयूमेटिक बुखार और घातक (गर्मी) के रोगों से होने वाली मृत्युओं में पर्याप्त कमी हुई है । उसके बाद भी मनुष्य मरते हैं—और भी दूसरी मारक बीमारियों का और बढ़ गया है । हृदय के रोग सेक्स हेमोरेज आर्टिरियोक्लेरोसिस कैंसर, और हिंसा से मृत्यु की संख्या सब बढ़ गई है । 1963 में सम्पूर्ण मृत्यु संख्या में 54 प्रतिशत हृदय रोग और अन्य सर्कुलेशन की बीमारियों से 16 प्रतिशत कैंसर से मरे । यानी 10 में 7 मृत्युएँ इस प्रकार हुईं । दूसरी बीमारियाँ जो अब बढ़ गई हैं उनमें प्रमुख हैं मानसिक रोग (1953 में 90 लाख) अपेंडिसाइटिस² और घातक बीमारियाँ (सेरेब्रल पाल्सी एपिमेप्ली मस्तिष्क स्लेरोसिस पाकिन्सन की बीमारियाँ) जिनसे मनुष्य असक्त और पंगु हो जाता है । इनमें मानसिक रोगों के कुछ विशेष वर्गों को भी जोड़ना पड़गा । कम-से-कम 80,000 मद्यमात्र 40 लाख 'समस्या पिपकक' जिनमें करीब 10 लाख भयंकर घराबी हैं । इसमें और जोड़िये 10 में 6 या 7 अमेरिकी सिर दर्द से पीड़ित हैं । सेवा में मर्तों के लिए पहल या द्वितीय युद्ध के प्रारम्भ में छूटे गए व्यक्तियों में 40 प्रतिशत को निम्नलिखित कारणों से छूटा गया मस्तिष्क क रोग, मानसिक हीनता मद्य सोरी या समसंगी कामुरता ।

इसके विरोध में कोई तर्क कर सकता है कि 'स्वास्थ्य' की परिभाषा सार्वजनिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि कम की क्षमता की दृष्टि से भी करते ही है ।

1. Veterans.
2. Cerebral hemorrhage.
3. Arteriosclerosis.
4. Arthritis.
5. Problem drinkers.

घौर कि इन बीमारियों के बावजूद भी अमेरिका में मृत्युदर बढ़ी है और घामु बढ़ी है। किन्तु सच बात यह है कि अमेरिकी बीमारियों की सफाई के लिए की जान वाली पतिघीमला से ही उत्पन्न बीमारियों से घस्त है। यह कहना भुनासिब है कि अमेरिका में व्याप्त प्रमुख बीमारियाँ वर्तमान जीवन में तनाव की सूचक हैं और मोटर वा कारखानों में दुर्घटनाएँ, अपमृत्युएँ, घमनी की बीमारियाँ, सेरेब्रल हेमोरेज की बीमारियाँ 'अमेरिका में निर्मित' के प्रमाण बिछू हैं। फिर भी इसमें सन्देह है। इस घतावरी के बीसे घौर तीसे को किसी ने 'एस्पिरिन युव' कहा था। परि ऐसी बात है तो घामीसे घौर पचासे को 'नीद की बोनी' का युव या 'अपमृत्यु का युव' या 'असौयकारक युव' कहा घाहिए। एसनवेव ने यह बतलाते हुए कि अमेरिकियों ने छठही बीमारियों पर बिजय प्राप्त कर ली है उन्होंने अपना घामुदय कहा लिया है घम उन्हें छुसी भयंकर घौर लयकारक बीमारियों का मुकाबला करना घाहिए। लिखा है कि 'इसने घीठ के स्थान पर अस्वस्वता को अपना लिया है'। अमेरिकियों ने राव के कीटाणुघों घौर बैक्टीरस वा घस्ता को पठा लगा लिया है किन्तु घमी ने इसके लहाने का पठा नहीं सपा पाए हैं। इस प्रकार हृदय घौर मस्तिष्क की बहुल-सी बीमारियों में भी बई बाठों में उन्हें सफसता नहीं मिल पाई है।

अपह अमेरिकी को होने वाली बीमारियों के स्वरूप का ज्ञान राष्ट्रपति घाइलनहावर को 1933-34 में हुए कोरेनरी घौर वेस्ट्रोइन्फेस्टिमस के घात्रघमों से हा सवता है। महीनो तक अमेरिकियों वा घ्यान किसी राजनीतिक जसमन में अघिक राष्ट्रपति के सरीर के अांतरिक घामों के घाटों घौर बावघामों ठबा घरीर के बासन बी घार वा। इसमें अमेरिकियों को घाने स्वास्थ्य की बिम्ला अघिक घी। सभी अघक अ्यलि राष्ट्रपति के सरीर में अघनी वरसाई देघ रहे घ। राष्ट्रपति की अांतड़ियों क लम्बाघ में कुछ आदघारी देकर डाक्टर पॉल डरने घ्वाँन ने कहा वा रि अमेरिकी अल अांतड़ियों के प्रति सजन हो घए हैं। राष्ट्रपति के डाक्टरों ने जब जबक जीवन के प्रति घाभा अ्यल की ली अमेरिकियों की प्रतिक्रिया क्या हुई वह मंधव में बहूँ ली एक मिराक की एक पुस्तक के घीपक ने यह सवते हैं 'अपवान मुझ हृदय के घीरे से बचावे'।¹

अध्य वा सेल लो देगिए कि अमरिका में स्वास्थ्य के अघ में जिन डाक्टरों स्वास्थ्य प्रकाघरों घौर अनुसंधावकों के कारण इनमी सकसता मिली है वे ही बेघाने अरुघी मर जाते हैं। कारण तनाव की बीमारियाँ हैं। स्वास्थ्य घौर बीमारियाँ के लम्बाघ में अमरिका की अांतड़ियों में कुछ बिसेधताएँ हैं। डाइन घौर रीवर्न डाइनेरेट में स्वास्थ्य के सान में प्रवति की घादबबूयें बहानियाँ निरुमली

1. Sleep-and-pill age Coronary age "Tranquillizer age"

2. Thank God for my Heart Attack.

है। इनकी बिजली भी घुब है। अमेरिकी 'घातघर्षपूर्ण औपनि' ऐन्टीबॉयटिक्स के सम्बन्ध में प्रति उत्पन्न होते हैं। पेंसिलीन की उपयोगिता में उनका अत्यन्त विस्वास है (1945-50 के वर्ष में उन्होंने 3000 टन पेंसिलीन भी) यही हाल विभिन्न माइसिनो कोर्गसोन और ए०-सी०-टी० एच० का है। धन स्थिति यह है कि इनके घरीर में इन दवाओं के प्रति घापीरक प्रतिरोध पैदा हो गया है। नई दवाओं और योनियों का असर सम परतत्काल होता है—सोने की योनी अधिक आपन की योनी सम पर तुरन्त असर करती है। इसी प्रकार घस्पतामा में धन बिजली और इन्सुलिन का इलाज आवश्यकता से अधिक प्रयोग में आने लगा है। सर्वत्र बड़े पैमाने की बिमारियों का बड़े पैमाने पर इलाज भी होने लगा है। प्रत्यक्ष इस बात का है कि कोई नजदीकी रास्ता निकल आए।

सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वास्थ्य के संयोजकों ने 'धमिमान' खेड़ दिए हैं—दिल की बीमारियों के बिच्छू कैंसर के बिच्छू सेरेब्रल पस्सी के बिच्छू। इनके दो कारण हैं, 1. खोब के लिए धन संघर्ष 2. बनता को इन पातक बीमारियों के बिच्छू सामान्य करना। उन्होंने इनके बीमारों की संख्या अनूप्य धिम की हानि मृष्ट यदि जीवित होते तो राष्ट्रीय धाय में कितना देते धारि के सम्बन्ध में धाकड़े एकत्र किए हैं। प्रत्येक समय कोई न कोई धमिमान बनता ही रहता है। फल यह हुआ है कि धन बनता इन बीमारियों के प्रति अक्षम ही नहीं उत्पन्न भी हो गई है। बिजिरता के क्षेत्र में इस अपार प्रगति से कहीं एक धीरे जीवन बढ़ा है कहीं साध राष्ट्र धन और घरीर के प्रति बिच्छूवस्त हो गया है। सभी को अपने भोजन के प्रति बिच्छू है वे सोने की या धानि की गोलियाँ खाते हैं। नाड़ी की गति गिनते हैं रक्त-चाप का घार्ट देखते रहते हैं। सिगरेट क्यों नहीं छोड़ पाते हैं इसके लिए बिच्छू रहते हैं। गुर्र और घाँतों पर साँस रोककर बिचार करत हैं। मसीजा यह होता है कि स्नानघर में दवाओं की धन मारिषा पैटेंट दवाओं की धीधियों से बरी रहती है। बड़े-बड़े दवाओं के कारखाने इसी व तो बनते और बढ़ते हैं।

बिदेगी पर्यवेक्षकों ने अमेरिका के बारे में एक बात नोट की है कि सभी अमेरिकी डाक्टर सोच करना चाहते हैं और सभी बिजिरता बिद्यालयों (ससार भर में ये उत्तम माने जाते हैं) का धमिकीय समय अज्ञात की खोज में जाता है। बा बात है उसे कैसे अज्ञातो भाँति उपयोग में लाया जाए इनकी बिच्छू के लिए उन्हें कम-स-कम समय मिलता है। यद्यपि अघर सामान्य बिजिरता की संख्या में कुछ बढ़ि हुई है पर बीर्यकालीन प्रकृति ता इन वी रिघाओं की घोर ही है—(1) और अधिक बिघेयज्ञता बिच्छू धर्ष होता कि कोई डाक्टर धन पूरे बीमार को नहीं देखेया और अधिध का डाक्टर डाक्टरों की एक टीम का सदस्य भर रहेया और (2) स्वास्थ्य की देख-रेख के लिए नए संस्थागत क्यों बा बिच्छू।

बिजिलिता के साथ में बृहद् वृद्धि होने के कारण धनी बिजिलिता सामान्य मजदूर की पट्टी से परे है — सामान्य एथनिक सम्पत्तियों के। इसलिए निश्चित है कि सम्मिलित स्वास्थ्य योजनाओं और मजदूर संघों के कार्यों की धीरे प्रगति बराबर बड़ेगी। अमेरिका में बिजिलिता सरकार के बस में बाह्य न रहे पर मजदूर संघों और नियमों के बंधन से नहीं छूट सकती। अविध्य में बिजिलिता मस्तिष्कों के नए स्वामी से होगी। यह सब समय में घाने वाली बात है। क्योंकि अमेरिका में बिजिलिता की प्रतिभा सदा से संबटनकारी प्रतिभा रही है।

स्वास्थ्य के बाद अमेरिकी जिस वस्तु की अधिक परवाह करता है वह है सुरक्षा। जो सोव 'कम्प्लायकारी राज्य' के 'बढ़ते हुए समाजवाद' के कट्टर विरोधी हैं वे भी इस सम्बन्ध में चिन्तित हैं। कई पीढ़ियों से अमेरिकी अपने हथ से इन विद्या में प्रयत्न कर रहे हैं। सरकारी सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था के बिचार से कुछ मोप बहुत उठने हैं क्योंकि वे सोचते हैं (घायल प्रमत्त हथ से) कि यह प्राइवेट बीमा कम्पनी को तहस-नहस कर देगी। इनके स्वार्थ उद्योग बीमा और मापन के प्रत्येक क्षेत्र में पुंछे हुए हैं। इस प्रकार अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था का निजी क्षेत्र को एकदम बलवत् पड़ा है। इसमें धाकर कुछ घसा है संघीय कृषाधी और उत्तर जीवियों का बीमा और राज्य बेकारी बीमा जिसमें मजदूर और मानिक दोनों बंधा देने हैं। एक व्यवस्था और है जिसके द्वारा संघ राज्यों को प्रथम और पञ्चमो तथा बुद्धों और बच्चों की देख-रेख के लिए धनु धान देता है।

राज-सुद्ध में ही यह सब बड़ा नास्तिकारी माना गया था पर अब यह सामान्य बात है। जब रिपब्लिकन पार्टी सरकार और कांग्रेस दोनों पर घातन करती है तब भी। बुद्धों और उत्तर जीवियों के बीमा की मूल व्यवस्था को अभी हात में लेने और सन्तुष्ट मजदूरों पर भी लागू कर दिया गया है। पर प्रस्तावी मजदूर अभी भी इस व्यवस्था के बाहर हैं। बेकारी के बीमा की व्यवस्था अभी भी पर्याप्त है। इसकी परिधि में उन सभी कार्यकर्ताओं की सम्मिलित कर लेना चाहिए जो किसी भी वेजे से लगे हों। उद्देश्य यह कि कोई किसी पर निर्भर रहने के कारण अपनी गहानुमूर्ति का विकार न हो। एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि धन नियम और मजदूर-संघ सम्बन्ध क्षेत्र धार्मिक नाम और निश्चित धार्मिक मजदूरी धारि के द्वारा सुरक्षा की धार्मिक विधायी न रहे है। इन सब विचारधाराओं के द्वारा ही अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था का स्वरूप निर्धार रहा है।

अति सुरक्षा की धारणा न बाध्यता से सम्बन्धित राज्य का उद्देश्य होने सदा है इसलिए बागबी बागबी के धारण से ही इन सम्बन्ध में बाध्यता सम्बन्धित रहा है। इस धारणा में तीन धनक गुणधारा की धार्मिकता बने है।

इसमें जैमोक्रैटिक और उदार रिपब्लिकन दोनों पारसों को ग्यस्त स्वार्थियों से लोहा लेना पड़ा है। 1900 से प्रथम विश्वयुद्ध के बीच के काल में राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी घनेक संस्थाओं की स्थापना हुई जिनका उद्देश्य मान-मन्दूर, मानसिक-स्वास्थ्य जन-स्वास्थ्य शिक्षाकरण मन्दूर-कानूनपास कराना या इसी प्रकार के जनकल्याण के कार्य थे। न्यू डील के काल में पूर्व के कार्य और बढ़ किये गए। साथ ही ऐसे कार्य भी प्रारम्भ किये गए जिनका फल 1935 के सामाजिक सुरक्षा कानून में हुआ। जिसने दो दशकों में इसका बार-बार विस्तार हुआ है। किन्तु इस सताब्दी के मध्य में भी इसमें कहीं-कहीं और बड़ा कमियाँ हैं स्पष्ट हैं। मानविक स्वास्थ्य बीमा जैसी कोई व्यवस्था अब भी नहीं बन पाई है और न कोई ऐसी दूसरी व्यवस्था ही है जिससे स्वास्थ्य की सुविधाएँ बेतोक-टोक सबकी प्राप्त हो सकें। सामाजिक बीमों के शिकारों को घाटीरिक्त यथोक्तता बीमारी या बुढ़ापे के सहारे के लिए लागू किया जाना चाहिए। पर अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हो सका है। अपने कर्म-काल में काम के प्रतिरिक्त यदि किसी दूसरे कारण से कोई घाटीरिक्त दृष्टि से यथोक्त हो जाए तो उसके परिवार के भरण-पोषण का कोई प्रबन्ध नहीं।

इन प्रवृत्तियों का व्यक्तिवादी अमेरिकन बिचारकों ने धुक से विरोध किया था। न्यू डील के मानववादी धामोशन को दलकर इमर्शन ने कहा था 'नये मूक दानियों में तुमसे कहता हूँ कि यदि मैं एक कोड़ी भी ऐसे आदमियों को देता हूँ जो मेरे नहीं हैं या मैं जिनका नहीं हूँ तो तुमसे लज्जा है। उसने इसे जसेबाब को भीख¹ की संज्ञा दी थी। फिर भी दानियों के कारण ही नहीं बल्कि आवश्यकता के कारण जनकल्याण के कार्यों का काम चला। 'बड़ी मन्त्री' के कारण मीलों को बड़ा मानसिक नक्का पहुँचा। उसने स्पष्ट कर दिया कि भाग्य का बरक यदि चल जाए तो जो लोभ घापीक दृष्टि से बड़े पुष्ट समझे जाते हैं वे भी बरबाद हो सकते हैं। इस प्रकार अमेरिकी विचार में धरता का मय बैठ गया। इससे यह प्रकट हो गया कि दुर्घटनाप्रसूता का प्रथम अकेले किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि सारे समाज का है। द्वितीय विश्वयुद्ध और कोरिया की लड़ाई के बहु स्पष्ट हुआ है कि बीमार और असमर्थ मानसिक-यथोक्त और कुपिष्ठित गम्भीर बस्तियों और अल्पधाय में पले व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र की मानव-सक्ति के लिए भार स्वरूप हैं। इस प्रकार हमके कल्याण के लिए जो कुछ हा रहा है वह युद्ध के कारण—बार-बरबादों से है। जैसे मान मानवता के मरोसे तो न जाने कब तक ये कार्य पड़े रहते। फिर भी इमर्शन की दानियों के आबन्द घने रिक्तियों में भी अपने भाई-बान्धुओं के प्रति जतनी ही सहानुभूति है जिसकी

1 Allow for extra.

जिसे भी देश की जनता में। टेक्निकल और धार्मिक समृद्धि के हर युग में प्रयोग्य और प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रति गूढ़ी भावना—बुद्धि और सहानुभूति की रहती ही है।

जमी तक अमेरिका में मजदूरों के मुआवित्त बेकारी भत्ते बुझाया बीमा हमदारी कम खर्च के मकान स्वास्थ्य बीमा संघ शामिल कल्याण फंड या बाकि मजदूरी धादि के सम्बन्ध में जो कुछ हुआ है वह छिटपुट ही हुआ है। इसमें एक प्रकार का सावधान तो है पर वह दूसरे किस का है। कल्याण के प्रत्येक क्षेत्र में जो कुछ हुआ है उसमें उत्तरदायित्व की स्वीकृति तो है किन्तु उसमें निजी उपयोग का कम-से-कम छड़ने और कर के ढांचे पर कम-से-कम बर्बाद—जोर दिया गया है। स्वेच्छा के सिद्धान्तों पर अधिक विस्वास किया है। मोटा धूम यह रहा है कि एक ऐसे धरातल का निर्माण किया जाए जिसके नीचे गुरखा और कल्याण न गिर सकें। सरकारी फंड का उपयोग सामाजिक बीमा के और अधिक आवश्यक जगहों में किया जाए। राश्यों को अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता दी जाए। केन्द्रीकरण कम-से-कम किया जाए। बर्ब-बीमा पर जहाँ तक हो सके अधिक-से-अधिक विपणन किया जाए। सरकारी धन हो तो भी प्राइवेट कम्पनियों के माध्यम से काम किया जाए (जैसे मजदूरों के मुआवित्त के क्षेत्र में)। सामान्य नागरिकों से अधिक सैनिकों के लिए प्रवृत्त किया जाए और कार्यक्रम से विस्तार का भार जनमत के दबाव पर छोड़ दिया जाए। अधिक सम्मानना है कि ये दबाव जारी रहेंगे। कल्याण रक्षा के कार्यक्रम धमुरे हैं कुछ क्षणों में तो दमनीय रूप में हैं। बीमें के साम बहुत घट्य हैं। इस प्रकार जनता है कि अप्रत्यक्ष भोजन कर और शिक्षा तथा मानविक गुरखा की भावना पीढ़ियों बलेगी। गुरखा के लिए जन के साधन व्यक्ति की सामर्थ्य पर छोड़ दिये गए हैं।

यही बात कल्याण के धन साधनों के सम्बन्ध में है। यद्यपि जमी बहूत कुछ करने को है पर गुरखा की समस्याओं का अमेरिका ने जित रूप में सामना किया है उसमें यूरोप की नकल मात्र नहीं है बल्कि उसका अपना निराला भी है। इससे लिए उसे बर्ब विचार और भावना के क्षेत्र में धन बालि के बीच से गुजरना पड़ा है। एकलक्षक धन जनकल्याण का जो बीमा अमेरिका में है वह बीमे के अमेरिका से एकदम भिन्न है। यूरोप वाले बीमे के ही उस ढांचे को अपना धार्म माने बैठे हैं।

अमेरिकियों के निवास की क्या स्थिति है? मानव शास्त्र की दृष्टिकोणी में निजी जीवन के लिए धार्मिक-स्थान चाहिए, समाज-शास्त्र की दृष्टिकोणी में प्रत्येक जीवन बिनाही कम्पुनिटी के लिए मकान चाहिए, मनोविज्ञान की दृष्टिकोणी में प्रत्येक परिवार अपना घर चाहता है। संस्था विचारकों के

के आवास-प्लॉट अपार्टमेंट कक्षों में बने मकान या इस्टेटों की बर्बादी की है। मुख्य बात यह नहीं कि गिर खियान के लिए प्रायय है कि नहीं वस्तु प्रदान यह है कि अपह साफ-सुपरी है या बीमारियों का घर है, कुत्ता है या साँस से मारी सुन्दर है या उबाड़ और वकसक। अमेरिका में आज इतनी समृद्धि है कि 'पर्याप्त' प्रायय ही आज सब समाज का मानव्य नहीं है।

मध्यमरी में अमेरिका में एक तिहाई जन-संख्या के आवास ठीक नहीं थे। अब यह बात नहीं। अब अधिक प्राय और कम प्राय दोनों एकाग्रों की आवास स्थिति में अंतर प्राय है। अब करोड़पतियों के गगनचुम्बी प्रसाद भी पसन्द नहीं किये जाते। अब बड़े-बड़े सेठ भी अपनी इस्टेटों में सावनी से रहते हैं। इसी प्रकार गन्दी बस्तियाँ घरीन के घर की भाँति मिटाई जा रही हैं और उनके स्थान पर नए मकान उठ रहे हैं। सबसे अधिक मकान—बासों—मध्य प्राय बासों के बने हैं।

अमेरिका में गृह-निर्माण के क्षेत्र में पूर्ण अग्रति ही हो गई है। प्रथम महायुद्ध से पूर्व के दशक में अमेरिका में कई आन्दोलन अमेरिकी जीवन में अपमान्यताओं की दूर करने के लिए आये थे। इसमें एक आन्दोलन टेनेमेंट सुधार के लिए भी आता था। किन्तु तीसरे के मध्य में न्यू डील के काल में गृह-निर्माण आन्दोलन को बड़ी गति दी। संघीय सरकार ने पिछड़े हुए गृह-निर्माण उद्योग में काफ़ी जन दिया जिसका उद्देश्य गहरी बस्तियों को मिटाना था। करोड़ों अमेरिकियों के लिए पर्याप्त आवास की व्यवस्था करना आवश्यक हो गया था। न्यू डील के काल में जो रास्ता इसके लिए अपनाया गया वह उचित भी था। स्थानीय गृह-निर्माण संस्थाओं को इसके लिए प्रेरणा दी गई। वे प्राइवेट फर्मों के माध्यम से काम करती थीं। ऊँचे-ऊँचे मकान कक्षों में कम गए। सामान्यतया इन्होंने एक क्षेत्र में आवासीय का घनत्व तो घटाय बड़ा दिया पर वे मकान 'सुन्दर, सुरक्षित और साफ सुधरे' थे। इनके प्राय-प्राय हरे-नरे स्थान भी छोड़ दिए थे। संघीय सरकार की इस योजना से बीमा कम्पनियों को प्रेरणा मिली और उन्होंने अपने नगर ही बनाने शुरू कर दिए। पुनर्वास प्राप्ति करण की धीरे से भी सरकारी कर्मचारियों और सत्रेय पोष मजदूरों के लिए 'हरी पट्टी वाले नगर' बने। द्वितीय विश्वयुद्ध के काल में युद्ध-उद्योगों के केंद्रों में यह प्रक्रिया आगे बढ़ी क्योंकि लोगों ने यह जान लिया था कि जोय ऐसे स्थानों में तब तक जाँके ही नहीं जब तक आवास प्राप्ति की समुचित व्यवस्था न हो। युद्ध के पश्चात् भी यह प्रक्रिया आगे बढ़ी क्योंकि युवक मृतपूरे सैनिकों के लिए मकानों की आवश्यकता थी। फिर गृह-निर्माण का दौर-दौर आता।

इसका और इजरायल के वास्तविकता के एक दृष्टिकोण में एक करोड़ आवास बने।
इसमें 3.5 से 4 करोड़ व्यक्ति बसाये गए। इसमें प्रत्येक मकान पर औसतन
10,000 आवास बने हुए। कुल मिलाकर 100 बिलियन आवास हुए। आज अमेरिका
में यह निर्माण का उपयोग सभी उद्योगों में बढ़ा है।

अमेरिकी आवास का बिना खींचने के लिए हमें विकास के दक्षिणी किनारे
में या ग्रेयाक में यूरोपियन के 'मीटों' से प्रारम्भ करना पड़ेगा। ये उन मकानों
में हैं जिन्हें 'जस्ता हासल' में का विवेकपूर्ण दिया गया है। इसकी संख्या 9
प्रतिशत है। ये बड़े बाहरों की बरबादी का बिना उपस्थित करते हैं। इसी प्रकार
छोटे मोटरियों वाले मकान हैं जहाँ 'सड़कों के दूसरे किनारे' छोटे-छोटे मकान
बने हैं जो बाड़े में सब और गमियों में इतने घन होते हैं कि उनमें रहना बर्बाद
के बाहर होता है। इसमें नहाने के कमरे नहीं के बराबर होते हैं। बूढ़े कमरों में
दिन-रात रहते रहते हैं। इनमें बहुत कम मकान हैं। इसके बाद मकानों का जो
हमवासों या बुझाये की योजना पर पुनर्रचना है। इसके बाद मकानों का जो
बास्तीमोर और फ्लाइंग्सिफिक कंटेनेमेंटों और कठारों में बने मकानों का जो
आवास की दृष्टि से इनसे कहीं अच्छे हैं। इनमें कुल मिलाकर और सरेसपोस
कमकारी रहते हैं। इस मकानों में एक परिवार को बूझने से घसका करने के लिए
मात्र एक शौचालय होती है। मनी एक शौचालय के मकान बन को उबा बैठे हैं। इनके
बाद निम्न छोटे मकान आते हैं। इनमें कुल मिलाकर और सरेसपोस
हैं जिनकी कच्ची ऊपर की जा चुकी है। इनमें कहीं-कहीं बर्बाद का आधार पर
पारंपरिक है। बड़ा जससे मुक्ति मिल चुकी है। इनके बाद उपनगरों के बाह्य की
मकानों के बरबो की तरह के मकान आते हैं जिनमें एक मकान में 5 या 6 कमरे
होते हैं। एक पैदाश होता है। बाप अपने मन की धीमी या रंग का मकान चुन
सकते हैं। पीछे छोटा-सा आवास भी होता है। इन बस्तियों में छोटे-छोटे बाजार
भी होते हैं। इसके बाद उन मकानों का मकान आता है जो इनसे भी अपहसर
हैं। ये कुछ अधिक समीर उपनगरों में बने होते हैं जहाँ 'रिहायशी मकानों की
आवश्यकता होती है और मकान में 'पहाड़ी पर बने मकान' और करोड़ों
की आनंदार इस्टेट और आनंदामी धनिकों का आनंद मकान है।

इन सब रूपों के लिए कोई सामान्य मापक नहीं है। इस लिए मकानों के बारे
में एक बात बताना है। यह यह कि इनमें मकानों के ढाँचे में अपने निजाम को
मुरादा रखने का प्रयत्न प्रचलित है। अमेरिकी निरूपण के विकास परभाव लोगों
में आता कि 'प्रीडिक्टिबल' मकान आवास के क्षेत्र में परिवर्तन छोड़ देते हैं।
जहाँ-जहाँ भी प्रकार की समस्याएँ, जैसे मकान निर्माण के क्षेत्र में बनें रोको

और हम उद्योग में मजदूर संघों की धमकी पैदा की। फिर विचार हुआ कि कारखानों में मकानों को बनाने की बगल कारखानों के छीछे पर मकानों के निर्माण में लगा जाए। मकानों के कुछ प्राकृतिक तैयार कर लिये जाएं। उनके लिए सामान बड़े पैमाने पर करीब कर लागतें गिराई जाएं। उनमें टेमीबिजन सेट लगाये जाएं। बस्तियों में बगीचे लगाये जाएं। खेल के मैदान बनाये जाएं और सांस्कृतिक स्थानों से उनका सम्बन्ध जोड़ दिया जाए।

यह इस आधार पर नगरों के किनारे-किनारे 'सामुदायिक विकास केन्द्र' अमेरिकी नक्शे की विद्यमान बन गए हैं। यद्यपि बड़े पैमाने पर निर्माण और सस्ती बर्तन के कारण शर्म विरे हैं फिर भी अभी शर्म काफ़ी ऊँचे हैं। वास्तु-शास्त्रियों और गृह-निर्माताओं की एक समिति का अनुमान है कि मुण्डन गृह-निर्माता संस्थाओं और संघ के आधारों के कारण सीमेंट काठ-कबाड़ लोहा-वाहन बहुत इस्तेमाल हो होता है पर गृह-निर्माण क्षमति अभी तक तकनीक नहीं है। इनमें मानवीकरण कुछ हुआ है। इनमें रहने के लिए सम्भवतः अमेरिकी बड़ी संख्या में जा रहे हैं। नगरों की तरह मकान भी किशोरों पर लपटे गए हैं। इसके लिए इनके मालिकों को आसंकायक रेहन या कर्ज लेना पड़ा है। रेहन के साथ बदमासी की जो भावना भी अब बह नहीं है। अब किशोर पर सम्मान-पूर्ण जीवन बिताने में अमेरिकी जनों को कोई एतराज नहीं। बल्कि प्रसन्नता ही होती है। वरों के शर्म भी निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं इसलिए भी यह प्रयास कम-कुन रही है।

नये मकान मानवीकृत ही नहीं बल्कि मानविक साधनों से भी पूर्ण हैं। ग्रोपस बर्नर, जोन डीज विद्यवाधर, जोनी-काम-सम्बन्धी-यन्त्र—सब सामान शामिल पड़ते हैं। टोस्टर, मिश्रण प्रेशर कुकर, बिस्की स्टोव, कचड़ा-भायक आदि भी मशीन के हैं। ये रसोई का काम बहुत हल्का कर देते हैं। मकान में एक टेमीबिजन सेट और रूकड़ जेयर भी होता है। ज्यों-ज्यों मकानों के शर्म बड़े और धरेलू लीफ़रों की कमी हुई य सब चीज़ें स्वतः विकसित होती गईं। पहले दिन घरों में कई लीफ़र थे अब उनमें कोई लीफ़र नहीं। इस नई परिस्थिति का सामना करने के लिए मकानों की बनावट में भी सुधार आवश्यक हो गया। ईतरकाता रिहायशी कमरा और भोजन घर सब सिक्ककर एक कमरे में समा गए। कभी-कभी तो रसोई घर भी इसी कमरे में एक किनारे होता है। ऐसा प्रात्यस्तिक रूप में सब हुआ अब मकान एकदम छोटे बनने लगे। इसके विपरीत प्रकृति मकानों में पर्यी की भी। यूरोप के मुकाबले अमेरिकी मकान में इतनी बगल भी कि माता पिता और बच्चों के लिए समस्त कमरे मिल सकें। अमेरिकी परिवार अपेक्षाकृत छोटा होता है। इसलिए इसका यह धर्म है कि ग्राम परिवार में सबको कमरे मिल जाते हैं।

सामाजिक सुरक्षा की भाँति गृह-निर्माण क्षेत्र में भी अमेरिका में कम-से-कम सामाजीकरण और अधिक-से-अधिक निजी उद्योग का स्थान है। फिर भी गृह निर्माण के क्षेत्र में डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों शासन संघीय हस्तक्षेप की बात स्वीकार करते हैं। गृह-निर्माण का क्षेत्र बिसाल होने के साथ-साथ मिस रियायतों है। संघीय सरकार गृह-निर्माण सभी बस्तियों (स्तरों) की सफाई, पुन विकास आदि के काम में मदद करती है। 1945-55 के दशक में 1 करोड़ से अधिक मकान बने। इनमें 40 लाख मकान या तो 'डेडवुड हाउसिंग एडमिनिस्ट्रेशन' (एच एच ए०) या बेडरन एडमिनिस्ट्रेशन' (बी० ए०) की सहायता से बने। येनोपामिटम क्षेत्रों में तो यह अनुपात ७ प्रतिशत तक था। जिस उपनगरीय क उपविभाग की बर्बाद होने की है वह मुख्य रूप से के० हा० ए० (एच० एच० ए०) की ही वृद्धि है। यह के हा० ए० रेहुम सीमा की पद्धति से सहायता करता है। यह प्रथा 1934 में एक व्यापारिक व्यवस्था के रूप में बालू की बई थी। फिर तो उसका नाम सड़नारी गृह-निर्माण योजना का ही विकास प्रारम्भ हो गया। आज जो दो-तिहाई मकान रहने वालों के स्वामित्व में हैं। उसका मुख्य कारण संघीय हस्तक्षेप ही है। यद्यपि इन योजना में सरकार का हाथ था फिर भी बँकों बोमा कम्पनियों और निजी निर्माताओं ने इसका स्थापित किया क्योंकि इसमें पाटे के बिरुद सरकारी गारंटी थी। बँके योजना में लाभ भी पर्याप्त था।

गृह निर्माण के इन नमोजवादे' में दरमदस कोई समाजवाद का तो वह पाटे का ही समाजीकरण का। (मजदूरों का यह है कि डिपेंडेंट टाफ्ट जैसे व्यक्ति को भी इन योजना का समझन करने के कारण समाजवादी कटार दिया गया था) यूरोप में समाजवादियों ने इस समाजवाद को देखकर नाक-भीड़ तिकोड़ा था। किन्तु अमेरिका में तो यह योजना सफल ही रही। सब तो यह है कि इस योजना में सरकार को भी कोई पाटा नहीं उठाना पड़ा। हाँ यदि फिर कोई मही जाए तो बात दूसरी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि पाटा उठाने के लिए सवार सरकार ने गृह-निर्माण के सम्बन्ध में एक मामल स्थापित करने की अपनी योजना सफल कर ली। एक बार तो के हा० ए० ने कर्ज के लिए निर्माता आबद्धों से निजी तुली जातियाँ बाले शर्तों में बसने के लिए कुछ प्रतिपारमज प्रस्तावों पर हस्ताक्षर करा लिए। किन्तु संघीय शक्ति का दूसरे रूप में भी उपयोग हो सकता है। कैपिटल बाउर की अध्यक्षता में सभी एक समिति में तो गृह निर्माण में राष्ट्रीय पदापात को समाप्त करने की निताहता थी है। स्वयं में पार्षदों के बिन्दु संघीय व्यापारिक में कैपिटल दिया। उसी प्रकार आज नहीं तो कम बहुसंघीय मदद में कम बाले मकानों की योजना में जातिवाद के बिन्दु कैपिटल है सकता है। ऐसा होने पर व्यापार के राज में राष्ट्रीय उपम-गुपन होगी। किन्तु इतना तो निश्चय है कि समाजवाद

पड़ोसी¹ जैसी कोई चीज न रह सकेगी (इस विषय पर इसी अध्याय के खंड 9 'घाहरी प्रकाश और कार्यों तथा खंड 10 'उपनगरों की जगति' में भी चर्चा की गई है)।

जनकल्याण की सबसे प्रारंभिक सामग्री भोजन है जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक अमेरिकी को विस्वास है कि यह मिलेगा ही। हाँ यह बात भ्रमस्थ है कि भोजन के बाद भोजन में उसका सबसे अधिक (31 सेन्ट) प्रति बालक खर्च होता है। अकासबस्तु देशों की परम्परा का इतना असर भ्रमस्थ हुआ है कि भोजन का प्रत्येक दाना बचाया जाए क्योंकि कोई ऐसा जिन भी खा सकता है जब दाना मिल ही नहीं। अमेरिका में खाद्य का प्राचुर्य सर्वदा से रहा है। जो प्रभावी आए उनके सम्मुख प्रश्न यह नहीं था कि खाना मिलेगा या नहीं बल्कि प्रश्न यह रहा कि कैसे उसे खरीदा जाए? बाद में प्रश्न यह हुआ कि जब खाने की इतनी रस-रस है तो इसमें से कौन-सा पाना चुना जाए। ऐसा भी समय था—विशेषकर युद्धकाल में—जब युद्ध की आवश्यकताओं के साथ कुवितरण का भी रोग सम गया था जिससे प्राचुर्य की भावना कुछ हीसी पड़ गई थी। उदाहरणस्वरूप 1941 में एक जाँच से पता चला कि प्रति दो में एक अमेरिकी को उतना भोजन नहीं मिलता जितना वह चाहता है। किन्तु राष्ट्र सच के खाद्य और कृषि संघटन के हाल के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि संसार में सबसे बच्छा भोजन अमेरिकियों का है। एक अमेरिकी औसतन प्रतिदिन 3,200 कैलोरी लेता है। प्रतिवर्ष 1,800 पाँच भोजन करता है। उसके भोजन में प्रोटीन सबसे अधिक है। एशिया के जावा-जैसे क्षेत्र का व्यक्ति सबसे रूढ़ी भोजन करता है। उसके भोजन में 2,000 कैलोरी खाद्य का आधिक्य वार्षिक 800 पाँच भोजन और प्रोटीन कम होता है। भोजन का यह अन्तर इतना अधिक है कि अमेरिका में एशिया के माँ बाप का 16 साल का प्रभावी बालक अपनी उम्र के बालक से प्रायः 4 इंच लम्बा होता है।

पिछले 25 वर्षों में विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिकियों की भोजन की प्राप्ति में बड़ा परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के दो कारण हैं—प्रथम 'संतुलित भोजन' करने की भावना और दूसरा पका-पकाया भोजन करने की भावना।

संतुलित भोजन का विचार शूट्रिचम अध्ययन का परिणाम है। किन्तु खाद्य-विज्ञान का प्राप्ति कभी न बनता यदि द्वितीय विश्वयुद्ध न होता। युद्धकाल में लाखों अमेरिकी ऐसे स्थानों में गए जहाँ भोजन का बंध ही दूसरा था। पहाड़ों और खेती के मैदानों में रोटी, सुपर का मांस गर्म बिस्कुट और घास खाकर

पने युवकों में साग संतरे का रस धीरे धीरे भोजन होता। अमेरिकी अमेरिकी जो पहले धर्म धीरे रोटी पर अधिक विश्वास करते थे धर्म में मांस मछली पान सग। यह परिवर्तन किस हद तक हुआ इसका इसी से प्रकाश किना जा सकता है कि कामजों धीरे सेना में बसवान अमेरिकी युवक जुलैमान रूप पीने में नहीं हिंमन्वते। यद्यपि कुछ हद अमेरिकी युवक को 'माता पर प्राधिका' की प्रकृति की संज्ञा देत हैं पर अधिक उचित यही होगा कि हम कहें कि अमेरिकी स्पृष्टिपान के मामलों में सजग हो गए हैं। धर्म के स्वास्म्य के लिए स्वास्थ्यकर भोजन का बड़ा श्रयान रगत हैं। कैलोरियों की जल्कठापूर्वक गनना करने हैं। समय-समय पर प्रपना वजन कराते रहत हैं। निक भोजन की संज्ञा बड़ रही है। अब अमेरिकी—प्रासकर महिलाएँ—सौन्दर्य के बाहरी दिखाने की उतनी चिन्ता नहीं करती।

अमेरिकी प्रतिबोधी हैं। वे प्रतिपायी हैं। इसके कारण हैं कि बाहर से आने के कारण अमेरिकियों को भूत की स्मृति है। फिर यहाँ प्रसन्नता की चिन्ता जितनी अधिक है उतनी ही मानसिक उलझने भी हैं मोटापे की जैसी समस्या अमेरिका में है जैसी अन्यत्र नहीं। मोटापे धीरे धीरे के बर के कारण निधी की लपन में 1940-50 के बीच प्रति ध्यस्त 3 पीढ़ की कमी हो गई। अमेरिकी बच्चा जैसा ही मोटा होता है जैसा बलि के लिए तैयार किया गया था। यहाँ जीवन का चक्र मोटापे से शुरू होकर बुढ़ापे में समाप्त होता है। किन्तु स्पृष्टिपान के प्रति जितनी सजगता इस शरीर के लीसे धीरे बासीसे में की उतनी पचासे में नहीं। स्कूलों बच्चों विज्ञानविद्यालयों कारखानों अस्पतालों से धीरे धीरे जहाँ कई बार भोजन परखा जाता था यह सजगता भर गई थी। नई प्रकृति भोजन के सम्बन्ध में गए प्रयोगों की भी। एथनिक बाहुल्य से बह एक समस्या धीरे श्रजाना भी सिद्ध हुआ। समस्या इसलिए कि इस बाहुल्य का लक्ष ही शहर में जमाव हो गया था। अमेरिका का विकास ही भोजन नुची की स्थितिगत दृष्टिकोणों में जोड़ देने से हुआ। यहाँ भाप अपने पसंद की इकाइयों मुट्ठाकर प्रपना भोजन कर लीजिए। इन प्रकार भोजन में निजी पसंद को मुट्ठा करने के लिए बह बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण सुविधा थी। यह प्रकाशारे संतार में रही। अमेरिकी एथनिक बाहुल्य ने व्यंजनों में भी समृद्धि लायी।

यूनिटन नौव भोजन को कर्तव्य प्रयत्न धीरे पुरस्कार के रूप में जीवन का संग मानते हैं। बाद के प्रकाशियों में इन प्रकृति के अनुसार अपने बच्चों को निपताया दि गाने समय घामी में कुछ भी न छोड़ो। किन्तु एक दूसरी पाठ्य भी बह भी बर्तीनिया कैरोलिना धीरे भुतिपाना की जितमें दलित की प्पाटेपनों की समृद्धि धीरे इत्यादि की नसा का संयोग था। उन्हें स्वास्थ्य स्पृष्टिपान में मोरी विद्यमिन या संतुलित भोजन की कोई परवाह नहीं थी।

खाने में एक विशेष सामान्य का अनुभव करते हैं। इनके भोजन में पसंद के लिए ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति के लिए भी खासगी का पर्याप्त स्थान था। बिदेसों में जाने वाले सैनिकों से देखा कि वेरिस प्लोस्टीन बियना जैसे सराब मूय, सभाद और मसालों पर कितना समय बरबाद करते हैं। बर सौटने पर इन्हें अपने देश के एथनिक और प्राथमिक भोजन के वैविध्य का महत्व सामंजस्य हुआ।

अब भोजन पकाना एक कला बन गया। घरेलू नौकरों की प्रथा की प्रायः समाप्ति से इस प्रवृत्ति को और अधिक बल मिला। इसमें इन्हें आधुनिक अमेरिकी की एक महान् घटना—सामान्य भोजन (बमाये प्रोसेस किए, पैक किए बके खाने) के उदय से भी प्रेरणा मिली। इसी बीच बीच बीच का भी विकास हो गया। कुछ घंटों तक यह अमेरिका बस्ती में ही का भी परिवर्तन था। प्रायः पके भोजन खासकर रोटियाँ इसने सिविलिटिक और पश्चिमी होतीं कि उनमें से महत्वपूर्ण घंटे तो श्रुति की प्रक्रिया में घुड़ होकर बाहर हो जाते।

सामान्य रूप में अमेरिकी भोजन में सुधार की सभी पर्याप्त पुंजाइय है। यह अनुभव किया गया है कि सामंजस्य बढ़ने पर भी भीख अमेरिकी के परिवार में भोजन में कोई विशेष अंतर नहीं आता। किन्तु अब ऐसे अमेरिकियों की संख्या बढ़ रही है जो भोजन को भी एक एडवेंचर मानने लगे हैं। अब वे पाक-विद्या की पुस्तकों और बातचीत द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर भोजन पकाने का निरन्तर प्रयोग करते रहते हैं। खुराक में परिवर्तन के कारण अब भोजन के क्षेत्र में भी अन्तिम होने लग गई है।

अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इस परिवर्तित दृष्टिकोण का अमेरिकियों की भोजन की कल्पना पर क्या प्रभाव पड़ेगा। खाने की भारत के निर्माण में बच्चे का सामाजीकरण होता है। इसलिए बच्चे और माता-पिता के बीच भोजन समाज का एक विषय बन गया है। इससे पुरस्कार, ईद भ्रम के दान और श्रम की प्रक्रिया सम्मिलित हो गई है। खासकर ये समाज माता और बच्चे के बीच होते हैं। बाब में पिता भी इस संदर्भ में शामिल हो सकता है। पर बाजार में भी जाती है। खाने की सामग्री वह चुनती है। बच्चे के लिए क्या बुरा है इसका निर्णय वह करती है। टेबुल के आधारों और भावों का फैसला वह करती है। बलिष्ठ और स्वस्थ बच्चे के निर्माण के लिए फुलहाइट, गेट-अप बंड आदि सभी जपानों का उसे सहारा बना पड़ा है।

इसका फल यह है कि भोजन सुविधा या फलदा से भर जाता है। वह या तो अधिकार के सम्मुख झुक जाता है या फिर किछोर-नुसखई से स्वतन्त्रता की रक्षा करता है। परिवार में कुछ प्रकार के भोजनों का प्रतीकात्मक मूल्य भी होता है। इससे कभी-कभी न्यूट्रिटिक उच्च-गुण और मनोवैज्ञानिक बीमारियाँ

भी पकड़ जाती है। जब बागियों में भोजन में रस लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। चायद इससे बाल-बच्चों और माता-पिता के बीच लगाव भी कम हो सके।

भारत के सम्प्रदाय में कुछ पूर्वाग्रह भी हैं। ये परिवार से गहरी संस्कृति से घाटे हैं। इसलिए ये चायद जैसे। कुछ प्रकार के भोजन बचपन की स्मृतियों के कारण और पर की स्मृति से अमेरिकी बन गए हैं। जैसे गेहूँ की केक सिरप मुनी फनी मुनी मुनी बड़े दिन का तुर्की दिनर पका भानू ब्लूबेरी पार्स या पीच वाटर, इनमें अमेरिकी पैयों को भी जोड़ दीजिए, फर्म काफ़ी बूबॉन हिल्सकी आइसक्रीम छोटा और विभिन्न कोला पेय। मैं इन्हें आधुनिक अमेरिका का प्रतीक मानता हूँ। पर आज स्टेवार्ड इनम बूच और आइसवाटर बोड़ना भी पसंद करते हैं। इनका रिवाज दूसरी संस्कृतियों में उतना नहीं है। यह सब होने पर भी सब तो यह है कि वैश्व की दृष्टि से अमेरिकी घासी बड़ी समृद्ध है।

7 किसानों की रीति

विज्ञान आज धानियों के मित नए शोनों का अनुसंधान कर हमें अधिक कर रहा है और आज अमेरिका में आद्यात्म का आश्रय है। इन सबके कारण हम माने यह भूल जान है कि गांधी का मूल तो धूमि ही है। धूमि का उपयोग हम कैसे करने हैं यही किसानों की रीति है। यह आवश्यकता की किसी कमी के कारण नहीं है। जब स जैडरमन ने मुक्त किसानों के समाज की रूपरेखा की तभी ऐ अमेरिका में किसानों का आदर्श क रूप में देगा जा रहा है। यद्यपि यह बात भी सच है कि आज ऐसी से नगरीकरण हो रहा है। चायद इसी कारण किसानों को आदर्श माना जाता हो। 'अधिकांश परिषद (Wb00 Wb0) की प्रतिस्थापों में दिन लागों की चर्चा होती है उनमें अधिकांश किसान हैं। बांधव में किसानों को महायत्ना और कम्पा को मजबूती देने के लिए जा भी कार्यक्रम रखा जाता है वह अर्द्ध से पान हो जाता है। यह इसलिए नहीं कि बांधव में घासी सेनों के लोगों का बटुमठ है यन्कि हम कारण भी कि अमेरिका में लोगों का यह विश्वास है कि किसान ही राष्ट्र की रीढ़ हैं।

किसानों की रीति व सम्प्रदाय में सामान्य अमेरिकी के मन में जो भाव है वे उनके आत्मिक नहीं हैं। आज में 3 वर्ष पूर्व तक अमेरिकी धर्म व्यवस्था मुख्यतः धर्म धर्म-व्यवस्था थी। अमेरिकी राजनीति मुख्यतः धर्म में किसानों की राजनीति थी और अमेरिकी-समाज मुख्यतः धर्म के धर्मों का समाज था। पर आज वे तीनों धर्म सामू नहीं होती। 11.5 में अमेरिका में 2 करोड़ 20 लाख में कम धर्मों का अनुसंधान का मात्र लोग प्रतिगत धर्म पर धांधल थे। इनके मुकाबल 11.30 में धर्म धर्म का अनुसंधान 2.5 प्रतिगत था। गीमा पर

भूमि अब उपलब्ध थी तब भी कृषकों का अनुपात मित्र रहा था। 1825 के आस-पास में बितने सौ लाख आस के देशों में सभे से समे उनमें उनका तीस-चौथाई कृषि से सम्बन्ध था। 1875 में यह अनुपात घाटा हो गया। 1905 में 70 लाख से कम भूमि 11 प्रतिशत व्यक्ति कृषि-कर्म में थे। इसमें 30 लाख मजदूर थे। इस प्रकार स्वतंत्र कृषकों की संख्या 40 लाख ही थी। इस संख्या में से हमें 'एक कृषक' माने रहें कि किसानों और उन किसानों की संख्या भी घटा देनी चाहिए जो अनुपात और कटी फटी जमीन में खेती करते हैं और उससे उतना भी पैसा नहीं कर पाते जिससे उनका खर्च पूरा पड़ सके। 1955 में यह अनुमान किया गया था कि 8 से लेकर 17.5 लाख के बीच परिवार ऐसे हैं जो इस समय कृषि पर आधारित हैं। पर इस देश में उन्हें उतना नहीं पैसा होता कि वे सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकें। यदि वे उद्योगों में लग जाएं तो निश्चित ही उनकी हानत भ्रम की अपेक्षा अच्छी रहेगी।

निस्वर्त वर्क ने 'कार्बून' में बिते अमेरिकी कृषि का महान् ह्रास कहा है यह सही का एक संकेत है। संख्या का यह ह्रास सुस्पष्ट है। 1830 से 1955 के 25 वर्षों में फार्मों की संख्या 8,300,000 से घटकर 5,300,000 हो गई। यह संख्या भविष्य में और भी घटेगी। अनुमान यह है कि 1980 में अमेरिका में कृषि बीबियों की संख्या 13.5 प्रतिशत (1955) से घटकर 8 प्रतिशत हो जाएगी। यह संख्या घटत-घटते इतनी कम हो जाएगी कि भ्रम में अन्य उद्योगों को तरह कुछ कम्पनियाँ ही फार्मों को खसारेगी।

कृषि के 'महान ह्रास' में महत्ता उत्पादन-बुद्धि में है। इसका प्रारम्भ इस सताब्दी के तीसरे में हुआ। इसका कारण वनस्पति जगत में जननिकी, संकरण और मिश्रण क्षेत्र में होने वाली शोधों थी जो न्यू बीन क काम में कृषि के स्कूलों और कालेजों में हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इस कार्य अपनी गति की सीमा पर पहुँच गया था। 1940 से 1955 के बीच यह कार्य अपनी गति की सीमा पर पहुँच गया था। 1930 के मुकाबले 1955 में 37 प्रतिशत कम मानव-शक्ति ने 54 प्रतिशत अधिक उत्पादन किया। केवल 25 वर्षों में ही कृषि की उत्पादन समता 110 प्रतिशत बढ़ गई। प्रति एकड़ उत्पादन तो करीब-करीब दोगुना या दूना काम के बंट कम हो गए। इससे फर्क क्या हुआ? इसका उत्तर है कि विज्ञान और योद्योगीकरण, नए क्रिस की धारें, धान के संकर, सुझों को सिंचाने के नए तरीके नए क्रिसमाशक और संशोधक रोगों की रोकथाम सिंचाई के नए साधन नई पूँजी की लागत और व्यापार-व्यवस्था की नई तकनीक।

हुआ यह है कि व्यापार की मायना और मशीनों का प्रयोग न कृषि को भी उद्योग में बदल दिया है। अमेरिकी कृषि में मशीनों का प्रयोग कोई अचानक घटना नहीं है बल्कि यह तो एक से ही था। अमेरिकी किसान यूरोप से ही

घनाम धीरे-धीरे अपने साथ साथ वे जिन्हें उन्होंने स्वामीय जमनाम धीरे-धीरे के धनुकूम बना लिया। वैज्ञानिक लेती का प्रारम्भ यूरोप में ही हुआ है और उसका प्रयोग अमेरिका से पहले ईंग्लैंड में होता था किन्तु ब्रिटिश मैनकामिक धीरे-धीरे के बंधों में बलित मशीनों तो अमेरिका की अपनी ईजाई हैं। मोटरों के फलफट हवाई मशीन संयुक्तमवाई मशीन कई फालों का हम धीरे-धीरे बुनने की मशीन धादि को बनाता यह सब तो आवश्यकता के कारण हुआ। अमेरिका में जमीन ज्यादा भी मजदूर कम। यूरोप में जमीन की कमी है धीरे-धीरे धावारी धादि। इसलिए वहाँ का मानक प्रतिकृष्ट उत्पादन में है। अभी भी यूरोप में धन-प्रधान लेती होने के कारण प्रति एक उत्पादन बहुत धादि है। अमेरिका में मानक काम क बंटों के धनुषार उत्पादन में है।

विद्यमान कुछ वर्षों में अमेरिका में कृषि वर्षों में जो उपजता पाई है वह बेजोड़ है। 1933 में अमेरिकी फार्मों में कुल 10 लाख एकर थे। 1935 में 45 लाख ट्रेक्टर धीरे 23 लाख ट्रक भी। लगभग 10 लाख कम्पाइन्स धीरे 75 लाख ट्रेक्टर धीरे की मशीनों थी। पहले वे सब मोटर से चलते थे फिर बिजली से चलने लगे। 1935 में 80 प्रतिशत फार्म बिजुल धादि से धादि थे। यह परिणाम है धान बिजुलकरण प्रबन्ध के जमनाम धारित एम० कुक धीरे धान कामोटी की धुरधिता धीरे बिजुल-सहकार के कार्य का। लयी के धादिध धान धन मशीन से ही होते हैं। कनिफोनिया के एक मध्यम फार्म पर धन धन धन से जमीन समतल की जाती है। हवाई जहाज से 'रेंज' किया जाता है। पहले पाताल कूपों से वर्षों के द्वारा मिखाई की जाती है। धन वहाँ प्रति व्यक्ति काम के प्रति बंटे मिठना कपास जगता है वह कल्पनातीव है। इसी प्रकार धुमरों की प्रजनन के धाधार पर म्यूटिगन कलनुमस से गिनाया जाता है धीरे धाग्य धानधरों की लयी सब धामुनों से गूब माटा कर दिया जाता है।

इसे धामों में 'स्वधाभिठा' के धायमन की संज्ञा भी गई है। किन्तु यह कवन लटीक नहीं है क्योंकि धमी भी मानव-धन के बिना धार्म बनाये ही नहीं जा सकत। फिर भी धामों में मशीनीकरण की प्रगति स्पष्ट है। 1933 में कई बुनने की एक मशीन जगता ही काम करती थी जितना पहले 80 या 10 मजदूर। छोटे गिगान जो अपनी धाधली मशीन नहीं लरीव लपने धन 'धुरातनधारी'

1. Threshing Machine.
2. Combine harvester
3. Combines.
4. Corporates farm
5. Beef Cattle.

बमटे जा रहे हैं। 1958 में चीससन अमेरिकी फार्म 218 एकड़ का था। यदि सब सीमा के फार्मों को छोड़ दिया जाए तो चीससन जेबफन काफ़ी बढ़ जाएगा। अमेरिकी कृषि के क्षेत्र हैं करोड़ 20 लाख फार्म जिसकी स्प्रूस वार्षिक धान 2,500 डालर की। धानस ज़ैरसन जैसे व्यक्तियों ने छोटे पैमाने के अमेरिकी फार्मों की कल्पना की थी। यदि ज़ैरसन धान भी था जाएं तो वे मशीन तक को देखकर कितने विरासत होंगे। प्रति बंटे के काम के अनुसार उत्पादन रसायन और हार्मोन विज्ञान उत्पादन रेखा ठीकी पूर्वी और बिजली-बालित मशीनों का प्रयोग कुछ भी तो उनकी कल्पना का नहीं है।

इस प्रकार मशीनों धानि ने कृषकों के सब रीति-रस्म ही बदल दिए हैं। विज्ञान योयोमीकरण व्यापारिक दक्षिण से उसका सब सम्बन्ध ही बदल गया है। धान दक्षिण का ओल केन्द्र से (कभी छोटे किसान जिसका प्रतिनिधित्व करते थे) बड़े किसानों और नैचम फार्म की ओर बढ़ता है। फिर भी हम छोटे किसानों की समझा किसानों (बटाई पर काम करने वालों) या पुनर्नू मजदूरों को उपेक्षा नहीं कर सकते यद्यपि अब उनका विमुक्तत्व कम अवसर हो चुका है।

स्वतंत्र किसान का महत्त्व बट गया है। पर अब भी ऐसे किसान किसानों में धनास उपाते या धानवा में सोड या सुघर पाते हैं या मेन या सॉमधाईरुध में धानू पैदा करते या विधोमिन में जानवर चरते मिल जाते। उसकी पत्नी धान भी मोहन पकाने (अब बिजली से) में बजोड़ है। उसके बच्चे फोर-एच-एल-ए के सदस्य हैं। वे हार्ड स्कूलों में मास्केट बाल खेलते हैं, कृषि विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं। कार और ट्रैक्टर चलाते हैं। रिपब्लिक बच्चों में जाते हैं। सिमरा देखते हैं। टेनीस खेलते हैं। नुस्तक-स्तन के सदस्य होते हैं। साइकल टाइम, लुजबीक, लुक और पीकर्स डाइबेस्ट पढ़ते हैं। फार्म ब्यूरो या पेंज के सदस्य होते हैं और अपनी जात विरासती में राजनीतिक दक्षिण रखते हैं। पर ये वे नहीं हैं जो ज़ैरसन या जैसन या बाहरन के समय में थे। उस समय तो वे अमेरिकी-समाज की रीढ़ थे।

अब हम अमेरिकी कृषि की ठीकी कुसमता को देखते हैं तो प्रामां हमें उसकी नींव के सामान्य गुणगुण अनुषों का ध्यान नहीं आता। उदाहरणार्थ धाने के फेनिफोनिपा में 8 लाख से अधिक सेलिहूर कर्मचारी हैं। पूरे दक्षिण-पश्चिम में अब भी मैक्सिको अमेरिकी बड़ी संख्या में सेर-क्रान्सीन से रातों में भाकर रिपापडे में छु जाते हैं। सारी सीमा को इन लोगों ने छलभी बना रखा है। इन्हें समय-समय पर पकड़कर हवाई जहाज से देश के बाहर निकालना पड़ता है। अभी भी अमेरिका में बहुत-से विरामितिया मजदूर हैं। इनमें बहुत-से तो

अमेरिका में ही बस गए हैं। पर दूसरे बहुत-से ऐसे भी हैं जो हर साल पाठे धीरे धीरे बच जाते हैं। केनियॉनिया के सान जोकिम धीरे इन्मीरियल बीबीज फेरेक नवम धाम हैं। कभी कभी गैकविमियम में इन्हें 'खेतों में कारखानों' की सजा भी थी। अब इनकी हासत में बाड़ी सुधार हो चुका है। पर इनमें काम करने वाले मजदूर अभी भी सखीय मुरसा धीरे सामाजिक बिबान की कार्य परिधि के बाहर हैं। इन्हें अभी भी पूरा वेतन नहीं मिलता।

दक्षिण में भी 'रबठन किसान' की बर्बा कठिन है। भूतकाल में दक्षिण में वेतन एक पयन होती थी। अभी हाल तक कई बर्बा की फसलों की रानी थी। पर अब सेती का काड़ी फलान हा चुका है। अब कई दूसरे देशों में कई की पर्याप्त सेती होने लगी है। फलस्वरूप अमेरिका का कई बाजार काड़ी सिबुह पया है। अब और पुणसता पर है। मिशिगिपी के बस्ते में टैक्सास में अस्वाभा के कुछ शकों में कई की सेती मचीन से होती है। अब बर्बा बाजारों के ढंग पर या काड़ी पूँजी से या मचीन लरीदने के लिए सहकारी समितियाँ बना कर ही मनी सम्भव है। दक्षिण में अब छोटे-छोटे फर्म अधिक मजदूरी के कारण लय हो रहे हैं। अब कटी-कटी जमीन में किसी तरह पुनराप करना या फिर अच्छी जमीन में मचीन से सेती करना ही सम्भव है।

मरा उद्धार यह कहता कि अमेरिकी जमीन पिछरी हुई नहीं है। अमेरिकी किसान का मुकाबला हिन्नेशिया या मलाया के किसान से बीजिए। बर्बा का निगान नियम बीमार, आया भूया है। लयाय चरों में रहता है। महाजनों के जगुल में रुने बर्बा क किसानों का कोई प्ररणा नहीं होती। वह अपने सेत का भी मानिक नहीं। अमेरिकी निमान धीरे उसकी हासत में जमीन घासमान का अरु है। इसी प्रकार धाहियों बिम्बागिन मिन्नेसोटा इतिनिघोष के बरिबार-बाबार के पामों को लीजिए या जन्मास इषाबा नैबरारका धीरे बाबोटाप क नेटु मुसर धीरे प्राइमबीक शोको को लीजिए धीरे उनका मुनारना यूरो क निमानों में बीजिए। अंतर स्पष्ट होगा।

प्रत्येक इति प्रणाली अपना सामाजिक भूम्य चुकाती है। 10वीं अठावी की अमेरिकी इति क्या थी एक प्रकार का भूमि का लानों को तरह चायण या जितम उगायन ब्यय कम हो लाभ अधिक। (प्रमन के रूप में बना दिया जाए कि उन समय की बिटिंग इति ती काड़ी लुभीती थी। इन अमेरिकी इति में मन्ने बाय अन्मात्र बेचनर जमे नहीं का न रगा) आज की मचीनी धीरे मुम्पनगिष्ठ इति का प्रणमा अमन सामाजिक भूम्य है। इति का सेतता बिबर रगा है पर जामों धीरे निमानों की नव्या में बाड़ी जमी हुई है। पुनता मजदूर जा इपर-बिबान क साथ पनित सम्भव रगता था अब नमान हा रहा है। अब उगता खान भुमयू मजदूर धीरे मचीन से रही है।

भूमिहीनता अब वास्तविकता का रूप ले रही है। बहुत-से कारखानेकार भूमिहीन हैं। हफ्ती भूमिहीन हैं इसी प्रकार मीसमी मजदूर। जैसे-जैसे मशीनें बढ़ रही हैं, भूमिहीनता भी बढ़ रही है। छात्रावरण के मिशनरिया को न सीजिए। यहाँ कृषि बाद में विकसित हुई और अब तक मशीनें घा चुकी थीं। यहाँ मशीनी कृषि नेम फार्मों के निष्पत्तियों और भूमिहीन भूमि मजदूरों के बीच की दूरी स्पष्ट है। यहाँ इन मजदूरों की यथा उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों से बचकर हैं क्योंकि इनके न अपने कोई संघ हैं न समझ रक्षा के लिए कोई काम है। इन्हें कृषि की कोई सुविधा नहीं न मगर जीवन का कोई सुख।

अमेरिका की किसान की जो कल्पना भी वह अब नहीं रही। इस पर माधुसूदन दास बड़ाये जा सकते हैं। नई सोवियेत ने सिखाया 'सब तो यह है कि यदि सुयोगित वैज्ञानिक और मशीनों के द्वारा खेती का बाप तो जीवन के एक मार्ग के रूप में कृषि एक मानववाचक पैसा है।' खेती के मुन्दीकरण के लिए यह पुराना संकल्प है। किन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अब जमीन के प्रति प्रेम नहीं है। पैदावार बढ़ाने कोसस और खर्च के लेख का सुझाव लेती पर है। उनी तो कौशल का ध्यान रखने वाले कृषि-विशेषज्ञ यह कहने लगें कि छोटे किसानों को अपनी भूमि छोड़नी पड़ेगी। जो बात इस समय छोटे किसानों पर लागू है धाने जाकर बड़ी मध्यम किसानों पर लागू होगी। कहा यह जाना कि कृषि से अधिकृत ये किसान उद्योगों में लग ही जाते हैं, पर इससे उनके निर्वासन का तथ्य तो फुटा नहीं पड़ता।

अमेरिका में कृषि और पूँजीवादी व्यवस्था के मूल में परस्पर विरोध है। एक ओर तो कृषि का पूरी तरह मशीनीकरण और औद्योगिकरण हो चुका है और इस प्रकार यह बहुत धर्म-व्यवस्था का संघ बन चुकी है पर किसान जो रसायनों की परीक्षा और उसका इस्तेमाल करता है जान उत्पादन करने वाला रह गया है। दूसरी ओर राष्ट्रीय सुरक्षा को छोड़कर कृषि सबसे बड़ा धार्मिक तत्व है। सुरक्षा उद्योग सरकार से सहामता पाता है। इसलिए दूसरे क्षेत्रों से उसकी कोई समानता नहीं।

इस निर्भरता के दो मूल कारण हैं। पहला कारण यह है कि कृषि उत्पादन की भाँति के विस्तार का क्षेत्र सीमित है। भोजन के क्षेत्र में हुई वृद्धि और अमेरिकी कर्मियों के खाने की दारु में जितना परिवर्तन हुआ है और उनका जीवन-स्तर जितना उठा है खाद्यान्नों की कृषि उस अनुपात में नहीं बढ़ी है। उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन-धर्म के बढ़ने से उत्पादन की भाँति बढ़ी है। फसल-कृषि मये मनु-उद्योग धूल है और पुराने उद्योगों का विस्तार हुआ है। पर कृषि के क्षेत्र में ऐसा नहीं हुआ है। दूसरा कारण यह है कि कृषि

उत्पादनों का मुख्य घटता-बढ़ता रहता है। यह घटती-बढ़ती हमेशा रही है और बहुत अधिक होती रही है। किसानों को हमेशा इसका सिंकार होना पड़ा है। जब दाम बढ़े रहते हैं—तात्पर्य सड़ाई के दिनों में—तो किसान इस बात को कोशिस करता है कि अधिक-से-अधिक जमीन खरीद ले। इसके लिए वह अपनी निजी जमीन भी बैंक रख देता है। और इस प्रकार अपने पर बाध्य मोल से लेता है। मंदी के दिनों में तो वह जैसे ही पिसा रहता है।

यही कारण है कि कार्य समस्या को स्थिर करना पड़ा और किसान को एक प्रकार से राज्य के संरक्षण में रखा गया। इसके लिए मुख्य को स्थिर रखने मूल्यों में समानान्तर कमी या बेशी करने प्रयत्नों पर नियन्त्रण लगाने 'मुमिबैंक' और सरकार द्वारा अत्य-विक्रय का प्रबन्ध किया जाता है। ताकि मूल्यों के घटने-बढ़ने से किसान पिस न जाए। इसका कारण भी है। जिस प्रकार पिछले वर्षों में राष्ट्र की वार्षिक या वीर्योमिक धाय में बढ़ि हुई है उस अनुपात में कृषि की धाय नहीं बढ़ी है। 1940 में किसानों की धाय कुल राष्ट्रीय धाय का 7 प्रतिशत थी। 1945 में यह प्रतिशत गिरकर 4 प्रतिशत हो गया। यद्यपि हम जाल में कृषि से धाय दुगुनी हुई, पर राष्ट्रीय धाय तो चौगुनी हो गई थी। सीमास्थ किसानों की दशा तो और भी स्थिति नीचट कर रही है। 1940 की एक बचना क अनुसार 15 लाख से अधिक कार्य-विरवारों की वार्षिक नगर धाय औसतन 1,000 डालर थी। राष्ट्र-भर के कामों की औसत धाय भी 4,000 डालर प्रतिधर्म से कम ही थी। यदि हम कार्य-विर धाय से इनकी तुलना करें तो यह बहुत ही कम है। हाँ दूसरे देशों के कृषिकारों की तुलना में यह बहुत अधिक है।

अमरिबी में इनको का राजनीतिक प्रभाव इनकी संख्या के अनुपात से बहुत अधिक है। उन्होंने इस प्रभाव का उपयोग सरकार के माध्यम से कृषि उत्पादनों के मूल्यों में स्वाविर रगने के लिए किया है। यद्यपि वार में मूल्यों की विराट रोकने का नियन्त्रण 'यू डील' के बार ही हुआ किन्तु किसी रिश्विन्न सरकार ने इसे बदलने का साहस नहीं किया है। 1935 में - रिश्विन्न डॉलर के मुख्य का कृषि उत्पादन वैसी में था। उल्लिख्य और पोषाधी से इसे रगने की जरूरत नहीं थी। बिन्धों में बेचने का प्रयत्न भी सीमित रूप में ही सफल रहा। कृषि क्षेत्र में कमी का भी प्रयत्न बेचने का क्योंकि प्रति एकड़ उत्पादन तेजी से बढ़ रहा था।

अमरिबी इनकी व मनः के सम्बन्ध में जारी बर्षा हुई है। किन्तु इस

मन की कोई सामूहिक इकाई नहीं है, जिसके बारे में चर्चा की जा सके। ऐरेना इम्पीरियल कम्पनी का मन बाइबा यान् उत्पादन से मिलन है। इसी प्रकार मैन के यान् उत्पादक का मन भी कुछ घोर ही है। यही बात प्रकामा के 'रेडनेक' या आबिया के 'वैडर' या 'ऊल हैट' की है। हम सब का मन प्रकामास के नीची कृपक या रिमो रोमी बेनी के किसान या बमाइका या प्यूरगोरको के निरमिटिया मजदूर से मिलन है। घनाम दोष के किसानों का मन कई-शेन के किसान या गेहूँ-शेन के किसान या बिस्किमिन या पेसिम बाबिया या ग्युपार्क के पशुपालक या पहाड़ी इसाके कं भरबाहे या मेड-बकरियों के गहरिमे से मिलन है। आबिक आसिमल एचनिक और वर्गगत मेद तो है ही व्यक्तिगत खेद भी है।

क्या हम सबका कोई सम्मिलित तत्व भी है जिसे किसान का दुष्टिकोण कहा जा सकता है। बेन्जेन ने इसे 'प्रार्थुनीबाधी और भय्मारमबाही' कहा है। मशीन की टेक्नोलॉजी ने घोर इसीलिए मनोविज्ञान ने इसे दूर छोड़ दिया है। यह अनुधारवाही है। वह भौसोमिक मजदूर से भविक सामाजिक संस्थाओं के क्षेत्र में बाहू में बिस्वास करता है। मजदूर का भय्मारमबाद तो मशीनों ने पिस दिया है।

इस दुष्टिकोण के साथ विकसत यह है कि इसमें इतिहास के तथ्यों को खस्ती विद्या में मोड़ने का प्रयत्न है। अमेरिका में विरोध के सभी एजनीटिक आन्दोलनों से किसानों का सम्बन्ध रहा है। उस के बिरोह से लेकर बड़ी मंदी के छुट्टी के आन्दोलन के बिलसिसे में 24 बच्चे की हिलालक बिलने अन्तिकारी आन्दोलन हुए हैं सभी मुख्यतया कृषि-सम्बन्धी आन्दोलन थे। हो सकता है कि किसानों ने व्यापारियों द्वारा अपनी सक्ति को चुनौती देने पर उनके विरोध में वे अन्तिकारी आन्दोलन बकाये हों। सभी रूपक अन्तियों के मूल में सम्पत्ति घोर परम्पटोबा की अस्तिबती मारा रही है। इसलिए बेन्जेन के इस कथन से हम सहमत नहीं हो सकते कि अमेरिकी इतिहास में वहाँ का किसान अनुधारवाही रहा है।

इस अन्ति का जोत क्या था और वह लगभग सपाप्त क्यों हो गई? किसान की प्रभुति का कोड न्यंकर व्यक्तिगतता भी। जैसे-जैसे व्यक्तिवाद रिपब्लिकन-हस्तसोप-विरोधी, बर्जिन्यी विरोधी अनुधारवाह से पुड़ता गया

1 Red neck.

2 Wool hat.

3 Preopitallet and animletic.

4 Shays Rebellion.

5 Farm holiday movement of the great Depression.

किमान अमेरिका के अनुदारवाद की रीढ़ बनने गए। वीजर-विट्रोह प्रमर्सेट देसायस क्लर्क-मेबर पाटियो नान पाटिजन सीमें पापुमिस्स और प्रगतिशील गुट, इन सबका नाम मध्य-पश्चिम के वृषि प्रधान राज्यों में था। कांग्रेस में मध्य-पश्चिम से जो 'जंगली गणों के लकड़े' छात के घन थे नहीं रहे। इसका मतलब यह रहा कि अमेरिकी रिपब्लिकनों को सबा यह विश्वास रहता है कि वृषकों के बोट उन्हें मिल ही जाएँगे। 1933 से 1939 के बीच वर्षों के चुनावों के परिणाम यह बतलाते हैं कि किसान उसी में सीश करते हैं जो वृषि उत्पादन के मुख्य द्रव्य रख सकते हैं। किन्तु 'यू डीए' और 'कमर डीन' दोनों करछों के मध्य भी किमान ने अपने मौलिक अनुदारवाद को अक्षुण्ण रखा है। अमेरिका बात यह है कि वृषक शान्तिप्रता से वृषक अनुदारवाद का परिवर्तन मजदूरों के प्रयोग के बदन के साथ बढ़ता गया है। यह कहना अधिक सही होगा कि क्या क्यों अमेरिकी किमान का जीवन-स्तर ऊँचा उठता गया वह अनुदार बनता गया है।

किमान की व्यक्तित्व का कारण यह है कि नैसर्गिकताओं और सहकारी कामों को छोड़कर अभी किमान को मिट्टी और जलवायु घटमलों और मीनूयों रमायन और डार्मियों से घेरते ही लगना पड़ा है। छोटे व्यापारियों की प्रति उन्मुख भी सभी काम अपने परिषद और बुद्धि से करना पड़ता है। अन्तर्गत सत्प्रता-प्रसक्तता वह गुरु भोवता है। इसीलिए दोनों व्यक्ति बारी हो गए हैं।

एक रूप में अमेरिकी किमान संसार के अन्य किमानों से भिन्न है। वह सामीप्य नहीं है। उदाहरणार्थ भारत में "8 प्रतिशत व्यक्ति गाँवों में रहते हैं। यूरोप के सामीप्य तो अमेरिका या न्यू इंग्लैंड में जा सकते थे पर भारतीयों से गुलाम माना जाता है। ऊँचा के मौलिक प्रभावियों और स्टेनियमापी दक्षिण पश्चिम के सामीप्यों की छोड़कर सामान्यतया अमेरिकी किसान अपने स्वयं पर हो रहता है। गाँवों और कस्बों में व्यापारी आइतिव्य मिल मजदूर और नोकर रहते हैं। इन सम्प्रदाय में मिलीयक ऐतिहासिक साथ मध्य पश्चिम के समाज के मुख्य धारा। होमस्टीड कानूनों¹ ने भूमि पर स्वतंत्र आबन रहने के लिए पार्यों पर निवास प्रतिबन्धन कर दिया था। एक फ़ाज थीपनन 160 एकड़ का था। इसका अर्थ यह हुआ कि किसान जमीन पर छिटक कर रहे। एक बन्दे का रहन और छाटा-या गिरजाघर होना। इनका काम यह हुआ कि अक्सर स्थानीयवाद पक्षों किमने स्थानीय स्वायत्तता पर जोर दिया। प्रति होनता के अर्थ और अन्तर्गत के जीवन ने उनके दृष्टिकोण में ही समता को

1. Koss of the wild jakass

2. Homestead Act.

पुष्ट किया। किसान नगर का बिरोह की दृष्टि से देखता है। नगर से उम्मा सम्बन्ध बैठा ही है जैसे कि उत्पादक उसके मांस का सस्त दाम में खरीदने वाले और अपना मांस ऊँचे दामों बेचने वाले बिक्रीस्थियों के बारे में रख सकता है। यह सम्बन्ध दर्जदार और बैकों का है। इन सबने उसकी व्यक्तिता बढ़ाई है।

मध्य-पश्चिम में या अन्यत्र सभी जगह स्वतन्त्र किसानों के जीवन में परिवर्तन हुआ है। अमेरिकी संस्कृति के मानक की दृष्टियों से उसका नया रिश्ता हुआ है और यह संसार-व्यवस्था की क्रांति का घम बना है। मोटर रेडियो सिनेमा टेलीविजन ने उसे घसघास से बाहर निकाला है। अब वह अन्य-विकल्पों में काम करता है, अधिकतर वह बड़े औद्योगिक क्षेत्रों में जाता है वहाँ उसकी मशीनों के पुर्जे मिलते हैं और उसकी पत्नी और बच्चों को नए नए फैशन। अब उसके बच्चे स्कूल की बस में इन क्षेत्रों में पड़ने जाते हैं। अब उसकी जमीन बचक नहीं रहती। सरकार उसकी फसलों के मूल्य निर्धारण से बचाती है। फसलों के बीदा करने में भी अब उसे सरकारी तकनिशियनों से मदद मिलती है। पर उसका काम अब भी कड़ा है। कार्याधिक्य भीषण और बाजार के झूठे सब भी हैं। किन्तु अब कृषि अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का एक हमकादी अंग बन गई है और उसकी सुरक्षा राज्य करता है।

संसार के अधिकांश क्षेत्रों में ग्रामीण जनता परम्पराओं से बंधी होती है। किसान के ऊपर चारों ओर से आधुनिक जीवन की छिन्न-भिन्न करने वाली दृष्टियाँ आक्रमण कर रही हैं। जिसे 'ग्रामीण-समाज' कहते हैं वह अब सबा का चुका है और अब वह सारे देश में बिगड़ने के विभिन्न स्तरों पर है, जमीन से लोग हट रहे हैं। किसान की बेटी जिसने विश्वविद्यालय की शिक्षा पाई है वह अब विवाह या नौकरी की तलाश में शहरों के जगह काटती है। किसान का बेटा का कृषि कालेज से डिग्री या चुका है, वह अभी तो धर्म पर ही टिक जाता है मही तो नागरिक जीवन से आकर्षित होकर शहर में जाता जाता है। कृषि जीवन की जो परिचितता है अब उसको बड़े धर्म या वैश्व धर्म भरण मने हैं।

अब भी धर्मों का आकर्षण समाप्त नहीं हुआ है। प्रति बप ऐम मुश्क सामने था रहे हैं जो धर्मों पर आकर बसना चाहते हैं। पर अब सरकारी जमीन नहीं रही। योही-सी जमीन पश्चिम में है जिसे हाल ही में विचार के साधन बुराकर कृषि योग्य बनाया गया है। पर वहाँ भी लोगों के लिए लम्बी बठार सनी है। एक और प्रवृत्ति के वर्तन हुए हैं। नगरों के लोग भी अपने देशों के अतिरिक्त धर्म बनाना चाहते हैं। इनके पास धर्मों में लगाने के लिए

पर्याप्त पैसा भी है। सभी-सभी तो धायकर से बचने के लिए भी ये पाटे की ऐसी करने का संसार रहते हैं। यह बूझा उदाहरण है हम बात का कि किसानों का रास्ता जैसे अमेरिकी धर्म-संस्कृति को प्रभावित कर रहा है।

३. छोटे नगरों की अवस्था

अमेरिका में पहले धायारी कम थी। तेजी में धायारी बढ़ी। इस बीच इस पर दो तरह से तमाम पड़ा जो धर्म भी है—ये है। धायारी छोटी इकाइयों में बढ़ी इकाइयों में जा रही है। २. साथ ही बढ़ी इकाइयों केन्द्र से उनकी परिधि की ओर बढ़ रही है। परम्परा के अनुसार छोटे-छोटे में अमेरिका की आत्मा अधिक सुरक्षित है। द. टॉकविले का विद्वान्पूर्व कथन है कि अमेरिका में राज्य और राष्ट्र के निर्माण के पूर्व छोटे ही सरकार और जीवन का प्रतिनिधित्व करते थे। न्यू इंग्लैण्ड में नगर पिछले ३०० वर्षों के हैं। यद्यपि राज्य राष्ट्र और धर्म-सम्बन्धों ने उन पर कम प्रभाव डाला नहीं है तथापि आज भी वे अपने दोनों मौलिक गुणों को सुरक्षित रखे हुए हैं। वे मुक्त हैं—आपसी सम्बन्धों में यही और अपने नगर के सम्बन्ध की चिन्ता।

द. टॉकविले ने अपने निजी कारणों में न्यू इंग्लैण्ड के नगरों की प्रशंसा की थी। वह आँखों से देखी-करने की प्रथा कला का क्योंकि यह "प्रवासीजनों को अपनी निवास भूमि के प्रति उत्साहीन बनाता है। वहाँ के जीवन में बड़े-से बड़ा परिवर्तन उसकी स्वीकृति के बिना होता है।" अपने बाँव की हास्य सङ्क की बुलिस या विरत्रापर की परम्परा से उत्पन्न तरीकार नहीं है। क्योंकि यह सोचता है कि इन बातों से उत्पन्न कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सब सब धर्मनवी की सम्पत्ति है जिसे वह संरक्षित करता है। इस बुद्धिजन्य विषय के मुद्राविले में अपने धार्मिक धर्मिकी नगर-सम्बन्धों की रक्षा। पाँडे उत्पन्न दुष्टिकीय बराबर पुनः रहा है पर अमेरिकी नगरों की 'प्राचीन स्वतन्त्रता' और वहाँ के छोटे-मोटे नागरिक का उनके प्रति लगाव का जो वर्णन उनके विचार है वह सही है। परम्परा के प्रारम्भिक दिनों में सभी नागरिकी और सांस्कृतिक नायों के साथ में नगर थे। निम्न और पाण्ड से लेकर टुमन और धार्मिक-साधक तक आज सभी राष्ट्रवर्ष इस छोटे-छोटे नगरों की ही उत्पन्न हुए हैं। बीच-बीच में एक अमेरिका के इतिहास में अधिकांश अमेरिकियों के लिए बढ़ी मौलिक समाज था।

विश्व विद्वान्मान अमेरिकी-समाज नागरिक धर्म इन छोटे-छोटे नगरों में सुरक्षित में निवास। विचार दिनों में ता विचार की महत्त्वपूर्ण रैगार्त बढ़ी सम्भव कीर्ती है। इसका कुछ कारण था यह भी है कि अमेरिका में सभी छोटी इकाइयों

छोटे फर्म छोटी व्यापारी फर्म छोटे कर्मिक यहाँ तक कि बड़े घरों के छोटे भाग सभी की संकल्पना हो रही है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ और मध्य के समय में बीच किसी समय छोटे नगरों में प्रायुक्तिक प्रसरण जीवन का आभाव महसूस किया। 1930 से 1935 के बीच तो निर्दिष्ट रूप से छोटे नगरों के जीवन में मोड़ आ गया। वह अमेरिकी जीवन में दूर पड़ने लगा। अमेरिकी शक्ति छोटे घरों के पास-पास घुमकर लगी गई, पर वह इन छोटे घरों को घुन नहीं। वे घसग हो जा रहे हैं। अब वे यूँ ही के नगर की तरह उभर रहे हैं, क्योंकि मुश्किल इन्हें छोड़कर जा रहे हैं।

हुआ यह कि छोटे नगरों का आर्थिक और सांस्कृतिक आधार ही डह गया। संसार तो यह सब क्षेत्र में हुआ जहाँ कटाव के कारण बुरी दशा है। किन्तु यह तो एक आर्थिक कारण है। सर्व-समुद्र क्षेत्रों में भी जहाँ मोटरों रेडियो टेलीविजन आए हैं राष्ट्रीय विज्ञान का विकास हुआ है और मशीनों से फर्मों की बेटी होने लगी है और जनता बड़े घरों की ओर जाने लगी है, छोटे घरों की संकल्पना हो रही अब बड़े घर और उनसे उपनगर परियम और विज्ञानी उपनगर और धारम के क्षेत्र हो रहे हैं। आइया के सीनियर सेक्टर के एक बड़े ने कहा कि 'जो बड़का अब यहाँ से चले जाता है वह फिर वापस रहने नहीं आता।' वर्तमान घड़ी के आनीस में इस नगर का आबादी आधी हो गई। मुश्किल अपने स्वयं से दूर नगरों में नीकरी खोजने जाते हैं या फिर वे ऐसे टेक्नीकल स्कूलों में जाते हैं जहाँ से शिक्षित होकर निकलन पर उन्हें उनके छोटे नगर में अपने उपयुक्त काम ही नहीं मिलता।

मैंने यहाँ छोटे नगरों (कस्बों) और नगरों की वर्गी की है जिसका अन्तर बताना उचित मुद्रिकन है। जनसंख्या ध्युरो किसी भी व्यक्ति को जो ऐसे स्थान में रहता है जिसकी आबादी 2,500 से अधिक है 'नगरवासी' मानता है। 1950 में 1,000 से 2,500 की आबादी के कस्बों की संख्या 3,000 थी। 2,500 से 10,000 की आबादी के नगरों की संख्या 3,000 से अधिक थी। 2,500 से 25,000 की आबादी के नगरों की संख्या 3,500 थी। इसलिए ये क्षेत्र की रेखा हम मोटे तौर पर 10,000 या 15,000 रख सकते हैं। पर यह भी अनमाननी ही है।

पर्य यह है कि आबादी के किस बिन्दु पर पहुँचकर कस्बे का जीवन अपनी परिधि को पार कर जाता है। कस्बे का जीवन का मुख्य इममें है कि वहाँ के नागरिक व्यक्ति एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर सकें। कोई कह सकता है कि ऐसे कस्बे का नागरिक कई वर्षों तक वहाँ निवास करने पर भी जब घर से बाहर निकलने पर आए और उसे अपरिचित बेहतर मिलन लग जाए तो वह कस्बा नहीं रह जाता बल्कि घर या नगर बन जाता है। छोटे घरों में अपरिचितों का मिलन और बड़े घरों में परिचितों का मिलन महत्वपूर्ण

इनके रूप की घोर सबका ध्यान गया। बहुत-से संसर्कों बिनापनपुत्रों पर बार बार घोर कलाकारों ने भूमार्क धिकायो या हामीबुद्ध छोड़कर छोटे गहरों में बसने घोर परित्यक्त धमरिनी हृदय की प्राप्ति के स्वप्न देखे। निरव विद्यालयों में बहुत-से प्रोफेसरों ने भी छोटे गहरों की शक्ति के पुनर्जीवन के लिए बी-तोड़ प्रयत्न किया है।

पर इनमें से कम सोमो ने इस प्रश्न पर गहराई से विचार किया है। साक्षर गया बात है कि छोटे गहरों की अव्यक्ति हो रही है और नई पीढ़ी उन्हें छोड़कर जा रही है। साक्षर घोर सन्तोषपूर्ण जीवन बिताने वाले नम सोमो को तो इसकी घोर धाकपिठ होना चाहिए था। किन्तु इस धाकपिठ को पाँवों की बड़ता घोर पर्याहार की शक्तियों से मुकाबला करना पड़ता है और इस मुकाबले में वे प्रतिशक्तियाँ मजबूत पड़ती हैं। इस प्रतिशक्ति का मुख्य वर्तमान घटी के इसे घोर बीसे के साहित्य में मिलता है। सिम्प्लेयर लुई के 'मिन स्टीट' के गोकर प्रेयरी घोर इन्गर की यास्टम की कविताओं में स्पून रिबर के विचित्र में घोर रोडबुड एन्डरसन घोर विघोडार ड्रीडर के बगनों में इनका दलन होता है। 1889 में एड होवे ने 'दि स्टोरी ऑफ ए कच्ची हाउस' में छोटे गहरों के जीवन के टुन्नेपन घोर बन्ध्यापन को नम रूप में साधने रख दिया था। इन सभी लेखकों ने बड़ी बेहारी से छोटे गहरों में व्याप्त प्राप्तीयता यता को देने वाली बिबसता घोर बन्ध कमरों में रहने से पैदा होने वाली बड़ता का विचित्र किया है। धमरिनी कम्पामिन्स के सहारे पत्रे इन छोटे गहरों के निवासी समाज के नियमों को छोड़कर गया जीवन बिताने वाले नर-नारियों पर जितनी निर्बलता से पड़ते हैं धाम्य धम्य बीसी स्थिति न हो। व्यक्ति की अपनी स्वयं की बिरोही प्रवृत्तियों पर भी य पने बसी दुकटा से पड़ते हैं। बाहरी सामाजिक पर्याहार घोर धाम्तरिक दबाव का विचित्र हमें प्रोफेसर द्वारा विविध पाशों के पहराए गहरों में अभी नाति बिबसाई पड़ता है।

अनेक धासोबक जिनमें टी० एस० इलियट भी हैं यह मानते हैं कि सजनात्मक सफलता के लिए धापसी जान-बहुवाना आवश्यक है। यह छोटे गहरों में ही सम्भव है। हो सकता है कि यह सत्य भी हो। पर वर्तमान काल के धमरिनी कवि घोर उपन्यासकार ने इसलिए नहीं लिखा कि छोटे गहरों से उनका धम्य या बस्कि उन्हेन इसलिए लिखा था कि यह सम्भव से छोड़ रहे थे। परम्परा के ठप्पे को छोड़ने के धमिग्रह से उन्हें सजनात्मक शक्ति मिलती है। छोटे गहरों का छोटापन ही उनके लिए धिकायत घोर नृणा का प्रतीक है इसमें छोटे गहरों घोर महात्मा सयाज का संघर्ष-रुपा बिरोह का भाव नूरी के साथ

उदरता है। विद्यार्थी बचक के कई नए उपग्रहों से भी छोटे ग्रहों के विमुक्त वा विषय¹ किया है। किन्तु एक प्रकार से पिछले दो सौ वर्षों के विषय प्राचीन रचनाएँ मिली या चुकी हैं। अब महान् रचनाएँ छोटे ग्रहों के विषय नहीं करती बल्कि अब उनमें बड़े नगरों और उनके उपनगरों का विषय होता है।

बहु सामाजिक परिवर्तनों ने छोटे ग्रहों का महत्व घटाकर उन्हें समय ही नहीं बर दिया बल्कि उनकी शक्ति के लोभ भी मुसा दिये। वर्तमान में अमेरिका में पश्चिम बह नगरों के व्यापारियों के हाथ में है। यही वैयक्त-साम्राज्य मजदूर-सम राष्ट्रीय बहाना मुट और जन-संसार व्यवस्था की नीतियों का निर्धारण करने हैं। किन्तु इसके पूर्व के अमेरिका में अमेरिकी इच्छा को व्यक्त करने वाले निरपेक्ष छोटे ग्रहों के बड़ी साहसिक व्यापारी और सम्पादक करते थे। जैसे जैसे व्यापार परिवर्तन और आधुनिक-प्रगति के साधनों के कट्टर बलबले मने जैसे जैसे शक्ति के केन्द्र भी हटने लगे। अब बहाने अपने अपने हाथों में धिया कर और सामाजिक कार्य नहीं कर सकते। इन कार्यों के लिए अब उन्हें सही सहायता के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। पश्चिम तो समाप्त हो गई पर अपनी भनके और मुटबन्दी से बँसी ही है। इसलिए छोटे ग्रहों में प्रचुर इस समाप्त शक्ति के हथियाने के लिए सज्ज हो रहे हैं।

बाहर से निरिजाधर की भीमारा टाउनहास मुख्य सड़कों के बीचों-बीचों और यहाँ के स्थानीय पत्रों की वेगने से तो यही मामूली होता है कि इन नगरों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। सब कुछ वैसे-का-वैसा ही है। किन्तु ये सब-सब हो चुके हैं। इनकी पश्चिम नहीं और नहीं बँसी है। परम्परागत जीवन विमुक्त हो चुका है। कई पीढ़ियों पूर्व चार्ल्स मैक्सि एडम्स ने इसे देखा लिया था जिगका विज्ञान उनके गुरु इर्मन्ग के लोभी से विनीत होते गाँव के काम्यपूजक बच्चों में मिलता है। अब तो नीतिज्ञता के सम-नियम इन ग्रहों के समाजों में भी बीस पड़ रहे हैं क्योंकि सम्पूर्ण समाज में नीतिक घराबकता व्याप्त है। कार्य होमिंग में मैसागुदल के कृषक करने के सामाजिक विघटन का अध्ययन किया था। इस दिन टाउन की धावाही। CPO के समय भी। उन्होंने लिखा है कि एक क्लक ने मार्जिनिक जन का सबन दिया और बह प्रसार हो गया। पढ़ने जाने पर उन उनका बड़ा बड़ा नहीं दिया गया जितना पहले देन थे। अब सड़कियाँ 'ब्रिटि' के समय चीन सम्प्रदाय पर भेती हैं। अब अज्ञात कुमारिक पर न तो जोर ही दिया जाता है न जगजा विज्ञान ही है। जायज ही कोई बड़े कि इन छोटे ग्रहों में सामाजिक स्वारथ्य की स्थिति बह ग्रहों से अच्छी है या बुरी घराब कम भी बानी है या बुरी का पारिवारिक जीवन बेहतर है। अब कोई स्थानीय हट-बिदारक कियाहीनता और ठट जनता तक भ्रष्टाचार और

1. Macrocosm of some small town.

धन को भी दृष्टि से दूर नहीं कर सकता। सुदृढ़ता और उदारता सावधानीमय है। सभ्यता के उन्नावरणों का अनुमयन पहलू या श्रुति नहीं भी रहकर समान रूप से दिया जा सकता है। छोटे नगरों में शान्ति अधिक हो सकती है पर सुख नहीं। परिवर्धन-सम्बन्ध हो सकता है पर मानव-व्यक्ति का नाम पहलू नहीं हो सकता है। सामाजिक और पारिस्थितिक दृष्टि से समझने के लिए एक और बड़ा सवाल है पर सम्पूर्ण में वह बंमस जैसा ही है।

यदि हमने के जीवन की ऐच्छता के आधारों की दिने धारणा की है तो मेरा यह कथन नहीं कि समर्थ कुछ स्थायी मूल्य नहीं है। हाँ वह उतना स्पष्ट नहीं है जितना उसे बताया गया है और इसी रूप में अमेरिकी जीवन में उसका स्थान भी होता। निराला पहली और धनी समाज के विकास में छोटे नगरों का महत्व ही नहीं समाप्त कर दिया है बल्कि उनका बहुत-से मूल्यों को भी नष्ट कर दिया है जिसका उनके साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा है। हमारा काकाइ निकन का स्थित फील्ड विविध एमन श्रुति का इम्पेरिया टु मन का इडिफिकेन्स और धारकनहार का एडिफिकेन्स निराला ही व ऐसे नगर इन्हीं जिसका अपना निराला रहा होगा जिसने ऐसे-ऐसे महानुषों को जन्म दिया। अभी भी ऐसे अनेक छोटे नगर हैं—विशेषकर ग्यु इंग्लैण्ड या मध्य-पश्चिम के धनी क्षेत्रों में जो अपनी परम्पराओं और धर्म के प्रति बड़े आग्रह हैं। टूमन ने बाल धर्म के सम्बन्ध में जब कहा कि हमारे बालकों को 'गिबट' की रूप 'कोरीज' की धर्म धारकता है तो वे इन्हीं छोटे नगरों के धर्म—धर्म बचकूरी रहित, जीवन की सीधा-साफ रहने से—की धारणा को ही प्रकट कर रहे थे। टूमन का निजी चरित्र-धर्मोपचारिक निष्कर्ष सावधान्यपूर्ण कथन निष्ठापूर्ण दुर्धर्म की मार्ग करने वाला 'नहीं' का धारकन करने वाला अनुप्य और धर्म को सटीक पहचानने वाला नैतिक धारण में होता—छोटे नगरों में जो सबल स्वस्थ और धर्मोपेक्षी है उसी धारण में निमित्त हुआ है। यद्यपि इन छोटे नगरों के धर्मोपेक्षी राजनीतिज्ञ टूमन की भाँति बहुमत की धारकताओं तथा धर्मोपेक्षी के हितों या धर्मोपेक्षी के हितों या धर्मोपेक्षी स्वाधर्म्य और धर्मोपेक्षी के धर्मोपेक्षी धर्मोपेक्षी से धर्मोपेक्षी स्थापित करने में धर्मोपेक्षी फिर भी बहुत-से ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जो टूमन की भाँति धर्मोपेक्षी और छोटे नगरों के धर्म के समझने की धर्मोपेक्षी करने हैं। और यह धर्मोपेक्षी है। यदि छोटे नगरों का धर्मोपेक्षी होता है तो इसके साथ धर्मोपेक्षी सम्बन्ध की परम्परा अपने निराला का धर्म और सम्पूर्ण का एक साथ होने का धर्म और धर्म नहीं बल्कि एक धर्म के रूप में धर्म जाने के साथ य सब भी धर्म बड़े धर्म।

हम को कुछ रचनाओं से प्रकट होता है कि छोटे नगरों से ऊब की बीमारी के मूल में ये छोटे नगर उतना नहीं है जितना समाज (कम्यूनिटी) की तोड़¹। प्रश्न यह नहीं है कि छोटे नगरों का पुराने रूप में पुनर्वास हो सकता है कि नहीं क्योंकि यह संभव है—बल्कि प्रश्न यह है कि उसके स्वाम पर कोई रसा ही समाज बनेगा कि नहीं? इस में अमेरिका में स्वाम की समस्या कहता है। जब तक कि ऐसा नहीं होगा अमेरिकी जीवन एक जंजल बिखिन्न रहेगा और अमेरिका का व्यक्तिगत समाज और समुदाय रहेगा²।

यदि यद्विषय में अमेरिका में वे छोटे नगर जो बित्त रह गए तो वे इसी ढंग में जिन्दे रहेंगे। उनका आर्थिक आधार दूसरा होगा। कृषि क्षेत्र के कस्बे या निस या ग्राम के कस्बे के रूप में वे न रहे बल्कि उनमें इति और उद्योग का सामय्य होना और उनमें बड़े नगरों और उनके उपनगरों से लोग बसने आएंगे। हम सम्भव में आने की वस्तुओं में वर्षों की जाएगी पर नहीं इतना ही पर्याप्त है कि बड़े नगर या उनके उपनगर समस्या का कोई हल प्रस्तुत नहीं करते। इस स्वाम की समस्या का हम छोटे नगर भी नहीं देखते। छोटे नगर अपने आर्थिक आधार में परिवर्तन कर सकते हैं—विद्युत् और उद्योगों के विकास करके। करण की प्रकृति के साथ। परिवहन के नए साधनों के विकास के होने से अब छोटे नगरों से बड़े नगरों में काम या मनोरंजन या स्वस्थ या अस्पताल के लिए आसानी ग प जा सकता है। छोटे नगर अपने पुराने रूपों की रक्षा करते हुए अपना और आधुनिकता का परिणाम करके नया जीवन निश्चित कर सकते हैं।

9 बड़े नगरों के प्रभाव और उनकी छायाएँ

आधुनिक रूप में अमेरिका का निर्माण नगरों के निर्माण की प्रक्रिया से ही हुआ है। उन नगरों की वास्तु के इस युग में भी यह प्रक्रिया अभी चल रही है। अमेरिका में अब किसी स्थान को नई धारण दी जाती है तो धमकाई हो बड़े नगर का रूप धारण कर जाता है। सामान्य और स्वयं बनाने में आम निवासी नगर भी बनता बनता है।

तबिल ममरोई में 'कम्यून ऑफ़ निटोड' में बड़ी विपत्ति के साथ यह समझाया है कि नगर किस प्रकार सामान्य आधुनिक के रूप में जन्म लेकर निता पर उदात्त रूप और फिर महानगर बन जाता है जहाँ तक नाम मधीन में जाता है। फिर भी अभी सम्प्रदाय में बड़े नगरों का विकास टैक्निक और

1. Quiet for community
2. American life will become more jangled and fragmented than it is and American personality will continue to be unfulfilled.

औद्योगिक विकास के साथ-साथ हुआ है। यूरोप में भी जहाँ नगर अमेरिका से पहले बड़े और जिनकी आबादी का घनत्व आज भी अमेरिकी नगरों से अधिक है ऐसा ही हुआ और एशिया में भी ऐसा ही हो रहा है। अमेरिका में जहाँ महानगरों का विकास हुआ है ता केवल वहाँ जनघनत्व ही नहीं बढ़ी है बल्कि व्यक्ति भी एकत्रित हुई है। उम्पाइन संवसन-व्यक्ति¹ पम्बहम और सवार के सावनों के क्षेत्र में होने वाली क्रान्ति के साथ-साथ—बल्कि उनके परिणाम स्वरूप अमेरिकी नगरों का विकास हुआ है। नये उद्योगों के विकास शक्ति से नहर नहर से रेल रेल से मोटर और हवाई जहाज स्टीम से गैस साइन वैस साइन से बिजली और स्वचालित-व्यक्ति व्यर्थ-व्यवस्था के प्रत्येक परिवर्तन ने शहरों के जीवन को उसम्माया है। फिर भी परिवर्तन लेनी से हा रहे हैं और प्रत्येक परिवर्तन शहरों के बाह्य और आन्तरिक रूप को बदलता है। तकनीक के क्षेत्र में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन नगर के आन्तरिक रूप को नष्ट करता है। उसका स्थान पर नये रूप जन्म ले रहे हैं।

संख्यात्मक वृद्धि से ही हम परिचित हो हैं। 1790 में जब अमेरिकी राष्ट्र का जन्म हुआ अमेरिका में ऐसा कोई बड़ा नगर ही न था जो यूरोप के नगरों की तुलना में बड़ा होता। बीराने में कुछ शहर थे जिनमें से तीन की आबादी 10,000 से 25,000 के बीच दो की 25,000 से ऊपर थी। 50,000 की आबादी का कोई शहर ही न था। न्यूयार्क की आबादी 1820 से पहले 100,000 न थी। 1830 में इसकी आबादी 10 लाख हुई। 1955 तक न्यूयार्क की आबादी 80 लाख से अधिक थी। 20 शहर न्यूयार्क की विद्यमानता से लेकर 6 लाख तक की आबादी के थे। 106 शहर ऐसे थे जिनकी आबादी 1 लाख से अधिक थी। जनगणना यूरो के प्रांकों के अनुसार 1940 से 1950 के बीच नगरवासियों की संख्या (2,500 से ऊपर की आबादी के शहरों के निवासी) 7 करोड़ 60 लाख से बढ़कर 8 करोड़ 90 लाख के आसपास हो गई। प्रांतीय संख्या पूरी अमेरिका की आबादी की 64 प्रतिशत वर्णानु वर्णानु की तिहाई है। उत्तर-पूर में वह अनुपात 60 प्रतिशत पश्चिम में 70 प्रतिशत दक्षिण में 60 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त गाँवों में रहने वाले कुछ ऐसे लोग भी हैं जो शहरों के मजदूर रहते हैं शहरों में काम करते हैं और जिनको रहने-सहज नागरिकों की तरह ही है। यदि उन्हें भी नागरिकों में शामिल कर लें तो मध्यमामियों की संख्या 80 से 82 प्रतिशत हो जाएगी। यदि 25,000 से 100,000 के छोटे और मध्यम प्रेमी के नगर मान लें तो सम् 1950 में 378 नगरों में 1 करोड़ 70 लाख अमेरिकी रह रहे थे। 4 करोड़ 40 लाख व्यक्ति 1 लाख से अधिक की आबादी मान

1 Motive power

2 Statistical growth

नगरों में रहते थे। इस प्रकार 8 करोड़ 10 लाख व्यक्ति 25,000 से अधिक की घाबानी वाले नगरों में रहते थे।

इसमें प्रत्येक नगर का अपना निजराय और उसकी अपनी एक शैली है। ग्युवाक और बोल्सन को बुद्धिवाकियों का नगर होने का गर्व है। किन्तु 'सूपर कमाई बाढ़ों' का नगर विभागों भी इस घाबानी के प्रथम स्तर में साहि रियन पुनर्जागरण से प्रभावित हुआ। अब वह विद्या का केन्द्र भी बन चुका है। साइनामिसको ग्यु धार्मीन्स वास्सटम—इन सबको अपने निजराय का मान है। बोल्सन फिलाडेल्फिया वास्सीमूर को भी अपने इतिहास पर गर्व है। इसी प्रकार सास एलेक्स डीगपट हीडरटम शलास सीटम पोर्टलैण्ड ने सभी हाल में 'बम-नगरों' के रूप में क्वालि पाई है। यद्यपि अधिकांश नगरों का विकास उद्योग और परिवहन व्यवस्था के कारण हुआ। किन्तु वाशिंगटन का विस्तार पट्ट की राजधानी होने के कारण ही हुआ है।

इस पर डार वेने में एक पत्रा है। वह यह कि हम मूल जाते हैं कि अमेरिका में इतने 'बम' प्रयोग (डिस्ट्रिक्शन) भी हैं और वहाँ भी नगरों का विकास हुआ है। इन नगरों का जगमगात-पान के रूप में उत्पादन की मंडी के रूप में हुआ। ईकवास और मुडूर पश्चिम के उत्पादन बाहर नेबने के लिए विकास का मुख्य कारण मोड़ा है और इसी प्रकार होटायट का तेल। निवासी कबितास का मुख्य कारण मोड़ा है और इसी प्रकार होटायट का तेल। निवासी करमट के उद्योगों का केंद्र है। हाल में वहाँ और भीतरी सपु उद्योगों का भी विकास प्रारम्भ हो गया है। पूर्व के नगर बोल्सन ग्युवाक फिलाडेल्फिया वास्सटम और पटमाय का विकास कुछ की दृष्टि से महत्वपूर्ण सम्बरणाहों के रूप में हुआ। इन बातों के भी उदाहरण हैं कि किसी बड़े नगर का विकास इसलिए कर गया कि वहाँ अन्तर्महाडीपी रेल नहीं आई जबकि अगल का छोटा नगर उस रेल पर पड़ जाने के कारण महानगर बन गया। इस प्रकार पश्चिम के बहून-से नगर बस राजनीतिक दबाव जमीन के सट्टे और पूव की बहोन बड़े हैं।

अन्य इतिहास में कभी-कभी प्रत्येक नगर 'बूम' (धरगर्मी) का समय रहा है। बूम का अर्थ है अचानक विकास जब किसी नगर की धार अचानक की शक्ति के लिए लागू की गिनाई लगाएक होड़ जाण। प्रायः इस अचानक विकास का अन्त को कारण होता है। यह बूम भी नगर को बढ़ाने में गजरा लायना नहीं कर सकता। क्योंकि कोई नगर मात्र प्राण जानोष्माद और बाहरी म्नाटे पर नहीं बढ़ सकता। नगर के विकास के अपने नियम होते हैं।

1 It is not her of the world

2 Vacationing and leisure in lastrien.

यदि विकास का आधार वास्तविक होगा तो नगर बड़ेना और तब प्रारम्भिक सरगर्मी और बढ़ेगी। सिकागो की पहली सरगर्मी सियमाई और रैस-केन्द्र के रूप में हुई दूसरा चरण कृषि मशीनों के निर्माण अनाज और अन्य सामानों के परिवहन और सड़ते के कारण था। फिर युद्ध-अनुसंधान और उत्पादन के कारण। सास एंजलस में पहली सरगर्मी चाँदी की खान से आई, फिर तेज मिला गया उत्पन्नता सिनेमा के कारण और अन्त में युद्ध के कारण सरगर्मी आई। मोर्फो का नगर पहले बहुत छोटा था। वहाँ एक छोटा-सा बम्बरगाह का पर द्वितीय विश्वयुद्ध में जहाजों के निर्माण को लेकर वहाँ भी सरगर्मी आई और यह विद्यमान नगर बन गया।

नगरों के विकास की कथा के अध्ययन से पता चलता है कि भौगोलिक कारणों से ही नगर का विकास नहीं होता। नगर बन जाने पर अन्य सामानों का भी बोधप करता है। प्रथम विश्वयुद्ध तक यूरोप से और कृषि से प्रवासी युवक और युवतियाँ घटकर की और आकर्षित होकर जाती थीं। वर्तमान शरीर की जमीनें और पचासे में रोज़िग से ह्यूडी और (न्यूयार्क में) प्यूरटारिकी प्रवासी जाते हैं। अधिकांश रूप में इनके अभिप्राय¹ तीन थे—धाराम अवसर की खोज और लड़क-भड़क।

धाराम का पाठ तो एक पौड़ी पूर्व ने दिया जो सीमान्त जीवन की कठिनाइयाँ भुन चुकी थी। अमेरिकी महिलाओं के लिए इसका विशेष महत्त्व था। इन्होंने सीमान्त जीवन के इतने कष्ट भोगे थे कि यूरोप के धाराम यदि अमेरिका में मिल जाएँ, तो वे उन्हीं का स्वागत करने को तैयार थीं। अध्ययन ने इस अभिप्राय को और आगे बढ़ाया। अमेरिकी रूप स्थानपर और अमेरिकी शहरों के आबम्बर की बुरे ओषों ने पहले तो हँसी उड़ाई पर बाद में वे लोग भी इनके प्रशंसक बन गए और जगहों की भूलत करने लगे।

इसी से बड़ी अमेरिकी नगरों की लड़क भड़क भी है। 1880-85 की पत्र पत्रिकाएँ इसे 'शहरों का प्रमोशन' कहती थीं। विश्व में पहली पर बैठा युवक शहरों के तुल्य और भीमारों की ओर उत्पन्न दृष्टि से देखा दिसमाया जाता। उस समय सिकागो बीट्रायट, मिनीपोलिस जनीबरीयट पिट्सबर्ग बोस्टन न्यूयार्क उनके आदर्श के मिलनी कल्पना में करते थे। और युवतियाँ ये शहरों की स्वतन्त्रता और पुष्पित-वाचिता पर मुग्ध थीं। उनकी संस्कृति की प्रति धीनता जिस गरवारमकता और रोमांस की भाँष करती थी उस काल के मुवा युवति शहरों के बातावरण में उसकी प्राप्ति की आशा रखते थे। वहाँ लोग हकटते होते वही न बुझा हो सकेगा सौन्दर्य और बेपमूया प्रबोधन और वातचीत

में पाप बैंगन का सबसर मिलेगा। यौन-वृष्टि प्रेम और विवाह के सबसर मिलेंगे। विषम पञ्चम वर्षों में राहों की आबादी इस तक मड़क स भी बढ़ी है।

इन तीनों धर्मिणायों में सबसे बड़ा धर्मिणाय धर्मीय सबसर की प्राप्ति का था। पाप बहुत मगर एक अंगत ही मित्र हाथे जिसमें बहुत-से तो मर्य हो बात और बने-गुन बनीय बन जाते। किन्तु जो सम्मता का पूजते हैं वे बलि के सम्मत्त म ग्राहनीय नहीं करते। नागर बीबन के कारण अमेरिकी जनता तभी हो रही है जिसे गांव या छोटे राहों की सड़कों के नहीं बल्कि बड़े राहों की पार्श्वों में निवास एक की ठीक-ठीक और मर-सपाटे के सपने घाते हैं। इन्हें बात क पदे पाठ देने बाग राहों के दोर-गुन सं सम्मत्त होना पड़ता है, मीड़ भाड़ को बरबाद देकर निरसने या फिर घंटों एक अपह घड़े होकर प्रतीक्षा करने का संयं पान का सम्मत्त करना पड़ता है।

वे इन्ने बर्दाश ही क्यों करते हैं? उत्तर यह है कि सब नहीं करते। इसी से जनगण की धार मोम जा रहे हैं। जो बर्दाश करते हैं वे आबस्यकतावत क्योंकि राहों को वे छोड़ नहीं सकते। मजदूरों को कारखानों या रेल या सड़कों के राहों के पाग रहना ही है व्यापारी धनी बाजार के निकट रहेगा। इसी प्रकार सेनाक बनाकार या निवासक राष्ट्र की गतिविधि से सम्पर्क बनाये रहने के लिए बर्दाश रहते हैं।

पहले की धर्मिणाय सब राहें धाराम का परिवार नहीं है। पना बसा हुआ धीर धानी में धर्मिणाय ताकतियों की मीड़ भाड़ से भरा नगर बर्दाश वीरों के नीचे मिट्टी नहीं मिलनी और कोई धर्मिणाय न गांव न सड़का है सब धाराम नहीं ताकती धी की जगत है। न्यूयार्क में भीड़ के घंटा में बसने वाला कोई भी धर्मिणाय नहीं बनेगा कि वह राहों का जीवन में सीमान्त जीवन से धर्मिणाय है। यह कष्ट मोन बर्दाश इसलिए करते हैं कि यहाँ नाटक-पर मंगीय रात्रिकर रैस्तर को ताकत हमान नहीं बढ़ा कर सकते। इन मुन-नापनों के धर्मिणाय राहों की धार धारपण का मुख्य कारण तनाव गति और सबसर है। बीजपट में हर मजदूरों और छोटे राहों में गूब तेजी में भीड़ घाई है। इनके सबसर में बिजिन हुआ कि इनमें धर्मिणाय यह नहीं मानने कि राहों जीवन से उन्हें रागा हुई। वे बीजपट में रहना पसन्द करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि रैन धाराम धार मंगीय धर्मिणाय की वृष्टि में वह क प्रति धारपण है।

1. A lot of comfort.

2. Tension Movement Opportunity

इस प्रकार अमेरिकी नगरों का जीवन मात्र तकनीकी और धार्मिक कारकों की ही उपज रहा है वहिक उसमें एकान्त का भी सम्मिलन है। इसी स्थान पर आकर अमेरिकी संस्कृति का बाइबीस्टाइम¹ रूप महत्त्वपूर्ण हो जाता है। हममें घराब की जोज राशि-बलब यौन तृप्ति की उत्कण्ठा और उसके अन्तर का ही प्रश्न नहीं है। ये तो फ़ॉस्टियम भूय और मोग-सामग्री से बंचित रह जाने के मन का बाहरी निवास है। नगर मानवीय विराग की उपज और उसका प्रतीक है। यह उसकी दशा भी है। अनुभवों के प्रति आत्मक जगता पर बेचैनी का साप छोड़ सकती है नगर उसका सामूहिक प्रतीक है। ई० बी० ब्लाइट ने न्यूयार्क के बारे में लिखा है कि घराबों और अद्भुत यह नगर ऐसा है जिसे न देखने का धन है 'मृत्यु'।²

यह दाग गहरा है पर इसमें सही जीवन की वास्तविकताओं को छिपाना नहीं गया है। ब्लाइट के अनुसार तीन न्यूयार्क हैं, एक है देशी लोगों का जो नगर के पारम्परिक जीवन को बनाए जा रहे हैं दूसरा है बसान और व्यापारियों का जो दिन में व्यापार के मिससिने में राय को पेंट-मुलाकात आदि के लिए सहर में रहते हैं पर शाम को ही उपनगरों में बस जाते हैं, तीसरा न्यूयार्क है प्रवासियों का जो यूरोप अफ्रीका और एशिया से आये हैं। मध्य-पश्चिम अमेरिका आदि से भी बहुत-से युवक अन्तर की तलाश और दुनिया देखने के लिए यहाँ आते हैं। कुछ वर्षों तक दूरे नगरों में भी ऐसे स्तर हैं। बड़े शहरों में एपनिक स्टाक अधिक मिलते हैं वहीं व्यावसायिक और बुद्धिवादी वर्गों पर अधिक बोर रहता है। पर सभी अमेरिकी शहरों में मोटे तौर पर कम और जगता मन और निर्बलता अति उपभोग और अपूर्ण उपभोग के विराधित मिलेगे। यह बात सारे अमेरिका में ही मिलनी। फ़र्क इतना ही है कि नगर में यह भेद सुस्पष्ट होता है क्योंकि सारा देश ही सिकुड़कर छोटे-से क्षेत्र में आ जाता है।

बड़े नगर अमेरिकी मन और शक्ति का परिचय देते हैं वे सारे देश के बैंकिंग और वित्तीय डॉके का निर्माण करते हैं। सारे देश की संचार व्यवस्था के ये केंद्र हैं। विज्ञापन प्रकाशन और सैम्पयनता का प्रारम्भ यहाँ से होता है। इसका धन यह नहीं कि ये उत्पादन नहीं करते। प्रत्येक बड़ा नगर अपने किसी उत्पादन के कारण ही बड़ा होता है। ये बड़े नगर उत्पादन के साधन-सामान सारे राष्ट्र को आर्थिक डॉका प्रदान करते हैं जो उनकी निजलक्ष है। यही इच्छा आता है जो सार के सारे डॉके का आधार है। वहीं इच्छा और साध है वहीं शक्ति

1 Byzantine.

2. This mischievous and marvelous monument which not to look upon would be like death.

3 Salesmanship

धीर है मज है ।

बहुत बड़ा दूरवासी शक्ति के केन्द्र होने हैं । छोटे-छोटे तो उनकी जागीर जैसे ही रहते हैं । उदाहरणार्थ म्यूसाक के एस्मिरा जैसे मन्त्रालय नगरों में जो बड़े कम-कारखाने या रोजगार हैं उनके स्वामियों में अधिकतर बाहर के लोग हैं जो म्यूसाक पिछले बड़ी-बड़ी जैसे बड़े-बड़े नगरों में रहते हैं । एस्मिरा में तो मजदूरों के प्राबल्य भी ऐसे ही हैं । क्योंकि मजदूरों के राष्ट्रीय ठके भी बड़े स्तरों पर मिल जाते हैं । दूरवासी स्वामित्व की यह स्थिति दक्षिण और पश्चिम में भी प्रचलित है । ये स्थान भी पूरव और मध्य-पश्चिम के क्षेत्रों से नियमित हो रहे हैं । बड़ा नगर घटसाटा और घसाटा डिपार्टमेंट छोटा नगर (घसाटा 25 000) दूसरे नगरों के साथ-साथ कम-कारखानों के लिए बोली बोमन हैं । इन कारणों के स्वामी भी वहाँ न नहीं रहते । प्राचीन उद्योग के लिए नगरों की विपरीत करना व्यापार-मंडल का मुख्य काम है । अक्सर करने के लिए प्रयत्न करते हैं । यान्त्रिक कोई नियम बहिष्कार से ऐसे स्थान पर कोई कारखाना जोलना चाहता है जहाँ मजदूरों में विद्युत्-शक्ति हो तो उसे बजेटों नगरों से प्रस्ताव या जाएँ वहाँ कम विद्युत् सस्ते मजदूर कम प्राय कर और राजनीतिक सरक्षण की सुविधा मिल सकती है । एक बार यदि कारखाना गुप्त गया तो वह नगर कमका मुहताब हो गया क्योंकि मानिक स्वामीय रसा का नष्ट करने के लिए पूरे साम्राज्य का हाथ देकर कारखाने के बारे में फैसले करते हैं । कारखानों में परिचित के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रसंग्य होता है । यदि कारखाना किसी दूसरे और मन्त्रालय में बना गया तो स्थानीय मजदूरों और व्यापारियों की शक्ति का अनुमान कर पड़ता है ।

नगरों के लिए जिस दृष्टिकोणों की उपस्थिति है वे वहाँ के नहीं हैं बल्कि बाहर के हैं और व्यापारिक व्यवस्था के हैं । फिर भी व्यवस्था और प्रायश्चित्त के सम्बन्ध में प्रत्येक नगर का अपना दृष्टिकोण होता है । नगरों की प्रायश्चित्त के बीच प्रायश्चित्त का नाम है उसके सामान्य की प्रायश्चित्त का नाम है और नगर की प्रायश्चित्त का नाम है । किन्तु जब सामान्य बेकारी फैलती है और नगर पर प्रायश्चित्त विपत्ति पड़ती है तो यह 'बुरदरिज' पड़ जाता है । कारखाने बन्द हो जाते हैं पैसा कम हो जाता है । उपहार पर काम चलाना पड़ता है और बेकारी का रूप मन्त्रालय पर नकार रहता है । मन्त्रालय में या दूसरे या बाहर में मन्त्रालय पर एक सामूहिक हार्द के रूप में प्रकट होता है ।

बाहर से सभी यही समझते हैं कि सारे अमेरिकी शहर एक से हैं पर बात ऐसी नहीं। प्रत्येक शहर की अपनी वास्तुबसा है रहन-सहन और मकानों की अपनी शैली है और अपनी मनोरंजा है। प्रत्येक का अपना एक प्राकृतिक इतिहास है जिसका प्रत्येक चरण से जुड़ते हुए उसकी मौलिक तैसी बदसती रही है। फिनाइस्फिया और बोस्टन अभी अमेरिका की राजनीतिक और सांस्कृतिक राजधानी से पर अब से प्रांतीय नगर हैं। सानफ्रांसिस्को सिमिनाटी न्यू यार्क-जैसे बहुत-से नगर जो अभी व्यक्तिवाद और जुए के मूर्तों के रूप में बसे थे अब अन्य शहरों की भाँति प्रतिष्ठित नगर मान जाते हैं। इंडियाना-पोलिस-जैसे कुछ नगर भी हैं जिनसे बहुतसी प्रांतीयता का मिटाना मुश्किल है। सिकागो क्लीवलैण्ड सिमिनाटी मिन्न पोलिस, कैन्सास जैसे अन्य नगर भी हैं जहाँ अभी नाटक कम्पनियाँ और संगीत पण्डितियाँ 'घाने की कृपा' करती थी और अब वे सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित हैं।

यूरोप के बड़े शहर धीरे-धीरे बड़े हैं। पर उनके मुकाबल अमेरिकी नगर ऐसे बड़े हैं मानो रातों-रात सब हो गया। कुछ मोड़ ऐसे से सब प्रयत्न करने पर किसी योजना के अनुसार इनका विकास किया जा सकता था जो अमेरिकी योजना का रूप ले सकती थी। चार्ल्सटन अल्मापोलिस और विलियम्सबर्ग में योजना बनी थी थी पर 'अन्ति' ने इसमें बाधा दी। अमेरिकी राष्ट्र के उदय के पश्चात् वाशिंगटन बोस्टन फिनाइस्फिया बफलो क्लीवलैण्ड और डीट्रॉयट आदि नगरों की योजनानुसार बसाने की बात सुनी गई थी पर वाशिंगटन और सक्का का छोड़कर और कहीं कुछ न हुआ। कारण शहर इतनी तेजी से बढ़ रहे थे कि योजनानुसार बसाने की पूर्णता नहीं थी।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में एक बार फिर नगरों की योजनाबद्ध बसाने का प्रान्तीयता बसा। कारण वाशिंगटन सम्मेलन (1893) और मेरिस से अमेरिकी वास्तुकारों का धिक्का ग्रहण कर वापस आना। इसने सिकागो का योजना को जन्म दिया और समुद्र के किनारे-किनारे नगरों को सुन्दर बनाने की योजना बनी। किन्तु बिना योजना शहरों के बढ़ने का रोप इतना बर्बरता था कि ईनियल बर्नहम फेडरल ओमिस्टीड और चार्ल्स मैकिन्स जैसे व्यक्ति भी कुछ न कर सके। किन्तु अमेरिकी वास्तुकारों के मन में नगर को सुन्दर बनाने की बात जल गई। आन्धोसक जब पड़ा कि राज्यों की राजधानियों नागरिक केन्द्रों विरचविद्यालयों विद्यालयों यहाँ तक कि रेल स्टेशनों को भी सुन्दर बनाओ। इन्हीं के उद्योग नगरों के आन्धोसक के प्रभाव में उपनगरों को भी सुन्दर बनाने की बात चल पड़ी। इन आन्धोसकों की कमजोरी यह थी कि इसमें अभी लोगों के लिए यकान और उद्यानों की योजना ही प्रमुखत्व से सामने आई। पटरियों को और चौड़ी करने और तरीकों के मकान भी सुन्दर

बनाने की धोर कम ध्यान दिया गया। विसियम लीडन के तन्त्रों में 'इसमें जनवादी चर्चा तो बहुत थी पर कम के माम पर सुन्य था।'¹

इस प्रकार नगर योजना के दोनो धाम्नेतवों के बीच 100 वर्ष का समय बीत चुका है। इन धाम्नेतवों के ऊपर स्थिर स्थाप² की कड़ी परत पड़ चुकी है। इन पर इस पुरो घाटावरी की परम्पराओं जोम केय और गमती से सामू 'सबजम द्वितीय सबजन मुखाय' के सिद्धान्तों का भी प्रभाव है जो साम के कमान के शाय तक ही सीमित न होकर सौम्य उपयोगिता और क्रमागुवार विकास के शाय य भी प्रवस कर गए हैं। इसके बाद धाए इजिनियरिंग के समस्कार धोर गगनचुबी भवन मोटर वाह धीर य केज³। पर नगर-विकास धाम्नेतव तो इतन दूर से बने की के कुछ कर ही न सके। तब तक अमेरिकी धाहरा का मोनित रूप स्थिर हो चुका था। धर तो उन्हें उस खाके के धन्दर ही काम करमा है।

इन घड़वरी का मुख्य कारण योजना-हीनता है। अधिकांश अमेरिकी धाहर मनमाने रूप से बने हैं। जहाँ मुविषा मिमी या सोम रीच न पया नगर बड़ बने उनम कोई सौम्य नहीं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी धम्युपयुक्त। मायों धीर ठठों के धामधाम भेड़िया-धसाम की तरह रेतके स्टेशनों स्टाक बाडों रसामत के कारणों या बिजली के कारणों को धरे हुए ये नगर बने हैं जहाँ स्थान स्थान पर कोड़ की तरह मदी कस्तिरों भी हैं। धाय धीर धूत की बीमारियों का डर तो सदा बना रहता है। नीच स्थानों में समय-समय पर बाड से बरखादिया भी होती रहती है। केवटरियों की बदबू धीर धूरें से यसा घुटा है। इन मकानों में रहन वाला का जीवन कैसे सुगी होया।

जब हम यह कहते हैं कि नगरों के विकास की कोई योजना न थी तो इसका धर्य यह नहीं कि इनने विकास में कोई सिद्धान्त नहीं दीयता। नगर विकास के धाम्नाधो के एक हम में विभिन्न धाहरों का धाम्ययन करन कथमाया है कि प्राय सभी अमेरिकी नगर एक ही ढर्रे पर बड़ हैं। प्रत्येक नगर य एक कोड होता है जिनमें ध्यातरियों के धनगर धीर धूगानें बीच होटम वियेटर, सिनेमा पर टाउनहाम धीर कार्यालयों के भवन हावे हैं। इन कोड के चारों धोर होते हैं गोमन रेतक बाड केवटरियां थोक बाजार धीर सधु उपयोग कारणाने मदी कस्तिरों टेनेमेंट जिनमें बड़ बग कछ पत्राङ्क कथम कारीगरों की साक-मुबरी कस्तिरों धीर मध्यकर्म के मकान बड़ उपायों के कारणाने नभी-नभी बाहरी

1. It had a lot of democratic phrases but little democratic action.

2. Vested interest.

3. Thru-way.

क्षेत्रों के लिए बाजार, निवास के बड़े-बड़े मकान (छायादार सड़कों के किनारे) और संत में निवास और उद्योगों के एक उपनगर का घेरा होता है जिसमें अधिक और कम घाम वाले साथ-साथ रहते हैं।

पहले यह समझ गया कि ओह के बारे में और बस्तियाँ पैदा हो गईं। केन्द्रीय शक्ति ने उन्हें बाहर की ओर फेंका। फिर परिवहन के प्राथमिक साधनों के प्रकार के बाद यह सिद्धांत प्रतिपादित किया गया कि शहर केन्द्र से बाहर की ओर मोटर और बस परिवहन की सड़कों के सहारे बढ़ते गए, वे नीची जमीनों और अस्वास्थ्यकर स्थानों से निकलकर ठीकी और स्वास्थ्यकर जमीन पर गए। संत में मेट्रोपोलिटन नगरों के अतिरिक्त और अमोल्पावी विकास को स्पष्ट करने के लिए कहा गया कि नगरों में एक नहीं बनेक ओह होते हैं जिनके बारे में और नगर बसता है।

स्पष्ट है कि ये सभी सिद्धान्त एक ही दोष से विकृत हैं और वह यह कि विकास के बाद उसके कारणों को सिद्धान्त का रूप देना। साफ बात तो यह है कि नगर उसी ओर बढ़ते गए जहाँ बसने वालों ने साम देखा और परिवहन की सुविधाएँ मिलीं। नगर बढ़ने में निर्णायक ह्रास रेखाँ मोटरों और वास्तविक सम्पदा (रियल इस्टेट) के स्वायकों (प्रोमोटर्स) का रहा। कुछ लोग इस पर यह कह सकते हैं कि अमेरिकी नगरों का विकास कठोर के संगीतों है। पर मनमाने विकास को हम आर्थीरिक संगीतों का विकास-जैसा नहीं कह सकते।

अमेरिकी नगरों के निर्माण-विषय के अध्ययन से प्रवास की गति-विद्या का इतिहास मान्य होता है। उदाहरणार्थ बुकमिन के इतिहास में जब ब्रिटिश मू इंग्लैण्ड वाले आइरिश यहूदी इटाली लुब्धी स्केन्डेनेवियन पूर्वी यूरोप वाले आर्मी प्युटोरिकी आरी-आरी से आए। इसकी अपनी-अपनी असल बस्तियाँ हैं जिनका अलग-अलग मिश्रण है। इसीलिए न्यूयार्क के बारे में कहा जाता है कि उसकी प्रत्येक सड़क एक भाषा है, उस या आर्य आकों का प्रत्येक लोग एक पड़ोस है।

अमेरिकी शहरों की सबसे बड़ी असफलता उनकी नगरी बस्तियाँ हैं। टागस्टाय ने लिखा है कि सभी सुखी परिवार एक-से हैं पर सभी दुःखी परिवार अपने ढंग से दुःखी हैं। शहरों के बारे में टागस्टाय की यह युक्ति उमटे रूप में सही है। प्रत्येक शहर की आड़ी-बुहारी अचकती सड़कें अपने अपने ढंग की अकेली हैं। पर इनकी पगड़ी बस्तियों में एक अजीब मुरीमी एकता है। इन बस्तियों में सर्वत्र एक जैसा ही आवाजराज है—निर्धनता, रोम, अपराध और अशुचिचार का। अटलांटा के इन्डिअनों की पगड़ी बस्ती और मैक्सिम बमियम या पैकसन

1 That all happy families are alike but every unhappy family is unhappy in its own way

होकर घोरतों का शिकार होता है। बच्चे घपराब के लिए बाध्य किए जाते हैं। हारे लोगों के लिए अमेरिकी शहर एकल्प्य भवितव्य हैं जीवन वास्तों के लिए दूसरे रूप में। गंदी वस्तियों का ग्रथ है—कुगुण-वधयात्म बोद्धिमात्र सस्ते होटल सेकून लघापर सस्ती बेव्याएँ और उनके वसाम। इनके सम्बन्ध में बाइबिल का बचन किताब सत्य है “इस प्रकार तुम्हारी दण्डिता तुम्हारे लिए बाध की तरह होगी और तुम्हारी धार-यकताएँ हबिमार लेका तुम पर दूँगी।”¹

पंजी वस्तियाँ कोड़ की तरह अपचकुन हैं। जैसे-जैसे बेचैन धावाही एक स्थान से दूसरे स्थान में जाती है यह कोड़ कैमता जाता है शहर के प्रायेक भाग में कमीन की छीमछ बटती-बढ़ती रहती है। एक बार जहाँ किसी क्षेत्र में शम मिरा कि प्रभावित आठियाँ उपर मुक पड़ती हैं। जबकाहुत बड़ जाती है और बस क्षेत्र का रूप ही बदल जाता है। परिवर्तन के इस काल में बातीय सचर्य भी सामने आते हैं। स्कूलों में यह सचर्य विकट होता है और सबकों पर भगड़े होने सवते हैं। धावाही निकलकर शहर के ही किसी दूसरे क्षेत्र में या उपनगर में जाती है। इस प्रकार नगर की सारी जीवनी-व्यक्ति ही क्षीय हो जाती है।

प्रायेक शहर के इतिहास में प्रजनति घोर पात के समय धाए हैं। मृत में इस प्रकार की घटनाओं के बाद बहु भाग फिर से धावाद हो जाता वा। किन्तु भाग जब सरकारी लण यातायात की मीड़ भाड़ घोर घपराब बड़ गए हैं सम्पन्न और सिमित वर्ग ही अधिकतर बाहर हुटन का लुर्ब बर्बात कर पाता है। कम धाम वास्तों के पास इतना पैसा कहीं कि दूसरे स्थानों में रहने का लुर्ब उठा सकें। जब लोग उपनगरों में बड़ी संख्या में जमे जाते हैं तो जो लोग वहाँ बच रहते हैं वे नगर की सारी सुविधाओं और बेबाओं का उपयोग मुफ्त में करते हैं। इस प्रकार सरकार की यह योजना कि इनका लुर्ब सारे शहर पर बराबर बराबर पड़े विफल हो जाती है। सुबह शाम उपनगर के निवासियों की यात्रियों के कारण मुख्य नगर के सारे रास्ते प्रवण्ड हो जाते हैं। मजेदार बात यह है कि जो लोग सारे सप्ताह शहर में रह जाते हैं वे भी सप्ताहात में सैर-सपाटे के लिए बाहर जाते समय इस यातायाताधरोष के शिकार होते हैं।

इस प्रकार ये बड़ शहर जो परिवहन के क्षेत्र में हुई कान्ति के कारण बड़े हैं उसी परिवहन के कारण-आलों माटरों से कट्ट वा रहे हैं। इस प्रकार मपर सवत-नतिपीन मनुष्यों और पींगारों का एक घस्यायी बड़ाव है। इसीलिए शहर के विकास की अधिकांश योजनाओं में यातायात की सुविधाओं के विस्तार की ही प्रमुखता रहती है। यद्यपि यह सही है कि भूवाक के सबकों के जाल को

1 'So shall thy poverty come as a robber and thy want as an armed man.'

है। सड़का घाटों के प्रबोद्धित विरोह में इसीलिए शामिल होता है क्योंकि वहाँ उसे किसी का होने और किसी के प्रति प्रवृत्ति रखने का अवसर मिलता है। यही बात मशीनी रोसकृत और सामोह प्रभाव के सम्बन्ध में है। इनाम के लिए सड़ने वाले लम्बवर्ती की तरह एक-दूसरे पर टूटते हैं। व्यापार के लिए देशवास की प्रतिपोगिताएँ होती हैं। टेसीविजन के दुश्मनों को देखकर लाखों व्यक्ति प्रसंता करते हैं। मर्तकियाँ रात्रि-कमलों में मशीन की तरह घंघात करती हैं। किन्तु इन सबके बारे में सबसे बड़ी बात यह नहीं है कि ये मशीन की तरह हैं बल्कि यह है कि वे मशीनी-जीवन वाले लाखों करोड़ों व्यक्तियों का मानसिक लिखाव डूर करती हैं।

इसी ढाँचे में अमेरिकी सड़क ने अपना परिचय विवक्षित किया है जो वे क्रेडिटोर के टॉकबिले या ब्राइस के वषणों से भिन्न है। इस पर मिटटी या मौसम का उतना असर नहीं। यह उतना आधिक नहीं अपितु अधिक सन्नेहवादी है। मित्रता कार्य काम प्रम और ईश्वर के इच्छाशक्त के सम्बन्ध में यह कम विरवास रखता है। ये सब इसके व्यक्तित्व को स्थायित्व प्रदान करते हैं। सामाजिक स्कूलों रास्तों बसों या बाजारों में छोटे मोटे अगड़े होते ही रहते हैं। इसलिए सब यह उनकी उतनी चिन्ता नहीं करता। यदि इनके प्रति भावनी सीमित प्रतिवाद का दृष्टिकोण न अपनाये तो जीवन ही धुंधल हो जाए। स्पष्ट है कि और जीवन चिन्ताओं के सम्बन्ध में यह प्रकाश जोड़ हो जाता है क्योंकि घाटों की भीड़ भाड़ में ही यह बड़ता है वही कुछ भी बनावत नहीं रहता। कठिनाइयों और मानव-कृत आर्थिक विपत्तियों के प्रति यह समबुद्धि का आग्रह रखता है। वह क्रिजूसखर्ची नहीं करता। काम के समय में यह पूरी तरह समय बचाता¹ है पर आराम के समय वही तरह बरबाद भी करता है। सबके व्यक्तित्व के पृथक विकास केपमूपा की एकता और स्वाय के निर्माण सावधानी और पशुनी ही भेंट में किसी का प्रभावित करने की क्षमता पर बस बेता है। इसने सब के स्थान पर चिन्ता प्राकृतिक शक्तियों से—सतरे के स्थान पर—सुरक्षा और दूसरों की राय की चिन्ता स्थापित कर ली है।

इसका अर्थ यह हुआ कि नागर जीवन ने नर-नारियों को उनकी सहज प्रवृत्तियों से दूर कर दिया है। नगर माननाहीनता तनाव और अमेरिकी जीवन की अनुकूलता (कम्फार्मिज्म) का मूल नहीं बल्कि उसका आधार है। या दूसरे शब्दों में नगर संस्कृति के मूल्यों का मुख-स्थल है।

पशुी बस्तियों व पतिविकृत प्रत्येक नगर में पाप के अन्ध और अपराध की समस्या है। यदि किसी पाप कर्म की जाँच पर सारे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित

हो जाता है या कोई अशुभार उस पर जोर देता है या नगर-मुधार को
 कभी जोर पकड़ती है पुतिन-बम में सन्निभता या जाती है। ऐसे घबराहों पर
 छोटे घपराधियों के दबाव या सार्वजनिक हाथों में रहने वाले लोगों को भी पकड़
 लिया जाता ॥ १ ॥ हिन्दु नगर-मुधार आन्दोलन मोठे समय का हुआ है। पापियों
 और राजनीति तथा रैकेटों^१ और सम्प्राप्त व्यापारियों का सम्बन्ध इतना
 घनिष्ठ है कि इन सम्बन्ध में कुछ कर सटना मुश्किल है। बहुत-से नगरों में
 राजनीतिक अधिकार की परम्परा नाई की दुकान से जाती है—ये नाई गम्भी
 बलिष्ठों में रहने वालों की कमठोगियों से परिचित होते हैं। इन्होंने राजनीतिक
 कृपा का बादा जमा किया और उन्होंने इनके प्रति भक्ति की छाप गवाई।
 बाद में वही राजनीतिक नेता ठकेदार बन जाता है। फिर ईजात उठी बरों से
 उनका नाम पड़ता है। इन प्रकार सामर ही कोई बड़ा नगर ऐसा हो जहाँ का
 प्रभाव घपराध राजनीतिक अष्टाचार और व्यापारिक कृपा की विमूर्ति से
 प्रभावित न हुआ हो।

नगर की 'मशीन' का नाम ही इसलिए पड़ा कि इसे अवैयक्तिक रूप में
 कुछ मोटे राजनीतिक धर्म के बनाव रखने के लिए प्रयोग में लाते हैं। नगरों
 में घपराध का भी यहीमीकरण हो चुका है। घपराधियों के निराह और रैकेट
 राष्ट्रीय स्तर पर सक्रियता दिखाते हैं। फिर भी इन यहीमीकरण की राज
 नीति और घपराध—दोना धर्मों में धर्म भी हो सकती है। राजनीतिक मशीन
 को किसी दल^२ के द्वारा चालित होती है जो निताम स्वामिमुजी होता है। इस
 मशीन का उद्देश्य जातीय गरीबों के सत्ते पर अशुभ अधिकार रखना और इस
 प्रकार अविनाशीतों की अधिकारीमत्ता का प्रयत्न रखना या। ये सब राज
 नीति का जानिय लो^३ से सम्बन्ध आचारात्मक-भक्ति के आदान-प्रदान रूप
 में ही था। इन मशीन में भी सामन्तवाही की भाँति दबदबी है। हिन्दु
 मशीन का बाहरी शीला जमा सामाजिक स्वरूप को छिपाए रहता है। इसी
 प्रकार अरबों की मशीन का एक और ये सामन्ती बहामा बन्दते हैं और
 दुनियाँ पार में व्यापारी। रैकेटों के राजा अपने विचारों से अर्थ बमूनी करते
 रहते हैं।

जब नगरों के शासन की समस्या अरबों और अष्टाचार से घाटे पहुँच
 चुकी है। बड़े लड़कों के शासन में जो बार्ने नामने या रही हैं उनसे और पीछे
 के राजनीतिक विचारों का ध्यान ही नहीं गया था। अमेरिका अपने इतिहास
 में अविनाश रूप में कुछ देखा था। इसलिए उनकी शासन की दबावों
 पीछे-छेदी थी। नरपावर्षों में कभी ग्युवार्न-ईंग महानगरों की बन्पना ही न

1. Barba.

2. Free.

की थी। न्यूयार्क का बजट अधिकांश राज्यों से बढ़ा होता है। इसका वासन संघीय वासन के साथ सबसे महत्वपूर्ण है। न्यूयार्क में पुमिष्ठ शिरा रास्तो पुमो हाबेर, टुक हवाई बड़े मार्वजनिष्ठ अस्पताल रेल व्याय प्रादि की घन स्पाएँ दुक्क हँ।

वासन के य सब घग घपने में महत्वपूर्ण हैं। बील-बाले तीर पर ही ये एक वासन के अस्तमंत हैं। जैसी प्राविधिक नागरिक सेवा अमेरिकी घप के अस्तमंत हैं, जैसा राजनीतिक नेतृत्व अमेरिकी राष्ट्रपति दता है। सभी प्रकार की व्यवस्था की आवश्यकता अमेरिकी नगरों को है। नगर प्रबन्धक मान्दोसनों में जो जाने वाली भाँगों में यदि नगर को और अधिक राजनीतिक अधिकार दे दिये जाएँ तो स्थिति घण्डी हो सकती है।

अमेरिका के बड़ नगरों के बार में सबसे बड़ी बात यह है कि घब ये इतने बड़े हो चुक हैं कि फट पड़ेंगे। न्यूयार्क वनीवर्लण्ड घिकापो सब घपने पिछलमे नगर हैं। इन्होंने घपना घसग घपितत्व बना मिधा है। घब ये बड़ी इकाई में आत्म-घासी इकाइयों के घप में है। किन्तु कठिमाई तो घपनगरों को लेकर है जो इन महानगरों के घप तो हैं पर ये वासन का खर्च बर्बास्त नहीं करते। जैस बेस्वेस्टर स जसीं डिटी तक एक लख है उसी प्रकार औद्योगिक कन्ज कोनविटक्ट और मस्साचुघट्स की एक पट्टी है। एसी ही पट्टियाँ बफलो पिट्सबर्ग घिकापो और नाम एग्निस्म के चारों ओर हैं जो डीक्कों मील तक बकी पई हैं। इनम रसायन जघोम मोटर और इवाई बहाइयों में काम करने वाल मजदूर मने पड़े हैं। य नगर नहीं बल्कि एक कुहत्तर औद्योगिक साम्राज्य के प्राण्ट हैं।

अमेरिका के अनेक माम्मुकारों और आयोजकों ने कल्पना की है कि किस प्रकार य दीयाकार दुक्क घपनी सीमा में रहे जा सकत है—कन्द्रीय नगर का नपा कर दें और फिर से योजनानुसार बसा दें। किनारे के बिकास को सुयो मित कर दें। सम्पूर्ण नगर की एक इकाई मानकर भी उन्हे अनेक छाटी-छाटी इकाइयों में विटडिट कर दें। इन इकाइयों में काम करने के रहने के और घामोर-अमोर के केन्द्र हों। यह कल्पना गणितीय कल्पना है। किन्तु प्राचर्य ही होपा यदि अमेरिकी जो घब तक घपने पाहणों के सम्बन्ध में योजनाहीनता को बर्बास्त करते रहे हैं। भविष्य मे इस प्रकार विषयलक पर बनाई गई किसी योजना को घमस में लावेंगे।

एक ही लज है जिसमें कुछ समन्वित कार्य हुया है। यह है गहरों के पुनर्नवीकरण का। 1933 तक 2,50 गहरों में ऐसे काम हुए। कुछ में मात्रा कम थी कुछ में अधिक। केन्द्रीय क्षेत्रों में जा अंश घबनति का प्राण्ट हो चुके हैं उन्हें गिराकर फिर से बनाया जा रहा है। जो स्थान स्वास्थ्यनर हैं

लिए हैं। किन्तु इस विकेन्द्रीकरण में भी एक औद्योगिक और जनसंख्या की पट्टी बनायी है। बड़े शहरों में बाहर ये जैसे तो गए हैं पर इसमें पारम्परिक युद्ध के समय की समस्या हम नहीं हुई है। धनी भी ऐसे क्षेत्र हैं जो खतरे में पड़ सकते हैं। हाँ, अब जनता रेखा पतली अवश्य पड़ चुकी है।

इसका सबसे बड़ा उत्तर उनका है जो कहते हैं कि विकेन्द्रीकरण और जमीन के चरम उत्तों को न आकर हम जानों को बचा सकते हैं पर सम्पत्ता को नहीं। मगर अमेरिका की अपार शक्ति से बड़े हैं। यदि आत्मघाती युद्ध¹ में ये नगर न बचें तो सम्पत्ता भी न बचेगी। दोनों के साम्य एक साथ जुड़ है। दोनों को बचाने का तरीका है कि हम उन शक्ति में विश्वास रखें जिससे ये शहर बड़ हुए।

10 उपनगरों की शक्ति

जालीसे के बीच अमेरिका का आकाश से लिया गया चित्र सबसे में लिए गए चित्र से काफ़ी भिन्न है। जामों कस्बों और बड़े नगरों के मध्य पहले जहाँ ज़मीन की अब जहाँ सगमय सभ्य बस्ती और आबादी है। यह रेखा मस्साचुसेट्स से उत्तरी कैरोलिना तक विन्हापो से डीट्रायट तथा बफ़ली और फिर पिट्सबर्ग तक और सामरसिसको से मैक्सिको की सीमा तक जाती जाती है। पहले जो खुले स्थान थे वे अब ठेड़ी से भर रहे हैं। छोटे नगरों और बड़े शहरों से आबादी इन ज़मीन जगहों में गई है। यह आबादी का विकेन्द्रीकरण ही नहीं है बल्कि बीच के स्थानों में गमन भी है। उपनगर और शहरों का विस्तार इती का परिणाम है।

अमेरिका में उपनगरों का विकास शहरों के स्थान पर और उसके पूरक रूप में हुआ है। स्थान के प्रतिनिधित्वरूप उपनगरों का उदय इतनी ठेड़ी से हुआ है और उसके परिणाम इतने दूरगामी हुए हैं कि उन्हें जानिकारी कहा जा सकता है। इन शरी के बीच में ही यह परिवर्तन शुरू हुआ था। उस समय हमें और शहर के चुनाव के लिए क्षेत्र के रूप में ही इसकी चर्चा थी। इनमें कई छोटे शहरों का पक्ष प्रवर्त² था। ज़मीनशील शरी के धन में ही ज़मीन मानी व्यक्ति यहाँ बस रहे थे। किन्तु पाठार्थी के परिवर्तन-काल में उन्हें या चुकी या जा पर और नोकरी के स्थान के बीच रोक रही थी। शरी का बीमा बीटरों का कास था। इस समय में मोटरों की सेवा के लिए प्रस्तुत हो चुकी थी। शीस के संदी के समय गति समय की प्रतीक्षा कर रही थी। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् यह फिर तेज हो गई। पचास में यह गति और तेज हुई। जहाँ पास के

1 Suicidal war

2 Hinterland

मैदान और मॉडर्न मॉडर्न के या घास के रोग के एक बड़ा पूरा समाज बन गया। विभागीय स्टोरी की भाषाएँ भी अब बड़ी पुनर्गठित और इस प्रकार शहरों के बाजारों का इजारा भी बिखरने लगा।

उपनगर अब बड़े नगर का पड़ोस या डामिटरी¹ न रहा। यह शहर से जुड़ा हुआ तो था पर उसका अपना सामुदायिक जीवन था। अमेरिकी जीवन में इससे कुछ ऐसी बातें हो गईं जो पहले न थी। जनता और स्थान के बीच एक नया सम्बन्ध पैदा हुआ। केवल यही नहीं कहा जा सकता कि शहर प्रति विस्तृत हो गया था किन्तु जीवन का एक ऐसा स्वरूप प्रकट हुआ था कि जिसमें नगर इतना बना कि उपनगर बन गए और ये उपनगर भी शहर का स्वरूप बदलने लगे। उपनगरों में अपने पड़ोस प्रदेश बनाए। नगर उपनगर और पड़ोस प्रदेश चीना न मिलकर एक ऐसे स्वरूप को जन्म दिया जिसे मैं बलस्टर सिटी² बर्नाल्स³ यूरो-जैना नगर कहता हूँ।

एक परिभाषा के अनुसार उपनगरवासी यह व्यक्ति है जो शहर में काम करता है। ऐसा अबह रहता है जहाँ अधिक स्थान हो और इन दोनों के बीच यात्रा जाता है। अनुमान है कि 1933 में अमेरिका में ऐसे व्यक्तियों की संख्या तीन करोड़ थी। 1941 में इसकी संख्या दो करोड़ दस लाख थी। इनमें एक करोड़ दस लाख नए उपनगरों में रहने के शहर के बाहर के और राज्यों में बूटि ग स्वतंत्र थे। एक दूसरी परिभाषा के अनुसार जिसने उपनगरों के निर्माण को धामिल कर लिया जाता है उपनगरवासियों की संख्या चार करोड़ बीस लाख थी।

पिछले पचासों में उपनगर-वास उत्तर-पूर्व महाद्वीपों में मुख्यतः पश्चिम में ही सीमित न था बल्कि पश्चिम पूर्व दक्षिण-पश्चिम और मैदानों में भी फैल चुका था। प्रत्येक क्षेत्र में वेबल शहरे दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं। बड़ी भी प्लोरिडा में उपनगर हैं। उपनगर-वास अब अमेरिका में प्रमुख हो रहा है। 1931 में 10.1% की संख्या में - प्रतिशत की बूटि हुई। 1940 में 10.1% की संख्या में प्रतिशत की बूटि हुई। नगर के चारों ओर के उपनगरों के बूटि की जनसंख्या में 3.5 प्रतिशत की बूटि हुई। उपनगरों के चारों ओर घटते उपनगरों में रहने वालों की संख्या में 41 प्रतिशत की बूटि हुई। इस प्रकार बड़े नगरों (और छोटे शहरों) में उप

1 Dormitories

2 Deep South

3 Standard metropolitan Central Cities.

नगरों की ओर और उपनगरों से उनके चारों ओर के क्षेत्र में आबादी जिसकी है। आशा यह है कि यह जिसकाब तब तक नामु रहेगा जब तक उपनगरों के अपने-अपने उपनगर न बन जाएँ और अधिकतर अमेरिकी जगत्तार बस उपनगरों और मुख्य नगरों के अर्ध-उपनगरों में रहने लगीं पहुँच जाते।

जो हो रहा है उसका अर्थ है कि अमेरिका फिर बस रहा है। वहाँ सुनिधा हो चुकी जगह हो जहाँ को टहलने के लिए पास ही अच्छे स्कूल हों कार के लिए तैयार हो और गुँगा हुआ समुदाय हो। लोग बस रहे हैं। जिस प्रकार कार सबके लिए सुलभ हो गई है। उसी प्रकार टेलीविजन घर घर में आगमिक सम्बन्ध को पहुँचा रहा है। अब महानगर के क्षेत्र से उपनगर दूर भी बस सकते हैं। इन्नेवर हाब्स ने इन्फोर्ड में जिस 'उद्यान-नगर' या 'पिछले छोटे शहर' की कल्पना की थी अमेरिकी उपनगर उससे भिन्न हैं। अमेरिका में वे इतने सुयोजित नहीं हैं केन्द्रीय शहर से वे चुली जगह के द्वारा अपने असम भी नहीं। अमेरिकियों को इसकी पुष्टि वहाँ कि वे किसी योजना की प्रतीक्षा करें। काम की ही ओर जब दृष्टि हो तो बीच में जगह कीन छोड़ेंगे ?

साथ विकास टेढ़-मेढ़ हुआ है। नौजवान वहाँ बसना चाहते थे वहाँ वे अपने जहाँ को अच्छी तरह पास सब ओर से (अर्थात्) मकान के आसपास क्रियाकारी मार सकें। यदि उनके पास मकान बनवाने के लिए प्यारा नहीं तो केन्द्रीय आवास प्रशासन से वे मदद ले सकते थे या फिर संघीय सरकार के बीने पर कहीं अवकाश से प्यारा नहीं ले सकते थे। 'वास्तविक-सम्पदा' की योजना आप-से-आप मोह-प्रिय हुई। क्योंकि मकान बनाने का खर्च बढ़ गया था। उपर इतना योजना के अंतर्गत काफी जमीन खरीदकर उन पर बड़ी संख्या में एक साथ मकान बनाते थे। इस कारण मकान सस्ते पड़ते थे। आसाम दशों में ये मकान बेचे गए। निगम संस्थाओं की नौकरियों में लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बूमना पड़ता इसलिए वे यही चाहते हैं कि जहाँ जाएँ आसानी से बढ़ सकें। वे सुरक्षित पुराना मकान बेचकर नए स्थान में मकान न लेते थे। छोटे शहरों की अवगति से अमेरिकी समाज में जो रिक्तता आई थी उपनगरों न उसे भरा।

मैंने अभी कहा है कि उपनगरों में विकास टेढ़-मेढ़ हुआ है। 'सुयोजित सामुदायिक जीवन' का प्रचार तो बहुत किया जाता है किन्तु सब बात तो यह है कि कुछ एक को छोड़कर इनमें योजना नाम की कोई चीज ही नहीं है। यहाँ वास्तविक-सम्पदा की योजना को जिसकी बजह से उपनगर बड़े समझना पड़ती है। इसके अंतर्गत चुली जगह खरीद ली जाती, उसकी भूदियाँ और

1. Cluster cities.

2. Satellite town.

3. Real estate developments.

पेट साफ कर दिए जाने जमीन को समतल करके टैम्प-मार्के रास्ते सीधे कर दिये जाने पानी पागाने आदि कर्मों बिछा दिए जाते मकान बनाने के लिए छोटे छोटे टुकड़े काट दिए जाते और लमूने के छीर पर कुछ मकान बना दिए जाते या गरीबशर्तों के लिए खुले में सहायता कर सकते थे। मकान बनाने में बड़ी बाग़जान की प्रचाली अपनाई जाती थीर इसका सब करने का उद्देश्य यह होता कि अधिक-से-अधिक मुनाफा मिल सके। कुछ स्थानों में योजना इससे धीमे भी बढ़ती थी। सामान्य प्रयोजन और अन्य कार्यों के लिए सामुदायिक केन्द्र भी बनाए जाते। स्वयं छीर बचक के लिए भी जमीन छोड़ी जाती जिन्हें मकान या निवास बना सकते थे। इस प्रकार एक काम सामान्य ही काम होता था।

किन्तु सामान्यतया योजना 'वास्तविक-सम्प्रदा' की आवश्यकताओं तक ही सीमित रहती थी। बुनरोजरी से जमीन समतल करने में खर्च तो कम प्रयत्न रहता था पर इसके अलावा का साग प्राकृतिक सीन्धर्व नष्ट हो जाता। बस्ती में बने हवाय, ताकतान स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए नितास्त छिद्र दर ही होते थे। पुनर्जीव इलाक़ों या न्यू इन्वैण्ड के नगरों की भाँति बीच में जगह छोड़ दी जाती थी जो अधिक के निवासियों के लिए जोड़ का काम कर सके। अधिकतर रूप में पैस के साथ में एक-दूसरे ज़मीन बीच ही जाती थी जिससे उद्योगों आदि के लिए जमीन ही नहीं बचती थी। कहते थे कि सारी बस्ती ही उद्योग वाली जिसका सब कहें कि बस्ती में कोई उद्योग नहीं।

जब आबादी के स्तर और घाए—धोम को मन्दनों में बाँटने की नयी-समस्या उठ गयी हुई जिसकी छोर शुरू में ध्यान ही नहीं दिया गया था। इसमें काफ़ी राजनीतिक सहाई घटक भी हुए। मसँवार बात यह है कि जो लोग घरों से मकारियों की धाड़ भाड़ को बचक के भाँते थे उन्हें घरों की बड़ी समस्या इन बाँटे मिली। स्वयं भाँते के अनुपात में नहीं बड़। स्वयं का खर्च अधिकतर उद्योग बनाने है। यहाँ गहरा की तरह उद्योग भी नहीं थे। वास्तविक-सम्प्रदा योजना का अंतिम उपनगर निवास-क्षेत्रों के रूप में बड़। पैकटरियों बन्दू छोर धुँएँ का धमाक़ा ही उसका मुख्य धारण था। किन्तु मोड़ ही समय में उपनगरों के निवासियों और उनके आवासों का गीगना पड़ा कि किसी भी समय में उद्योग छीर आवास का उपाय बचक-मजूर और बर्ष-मजूर आदि-मजूर और नवीनता सब परम्परा का अनुगम होना आवश्यक है।

उपनगरों में हमें से अधिकतर न था। य एकदम नये एकदम कच्चे पैगन में एकदम एक के रखना से एकदम समन्वित और नितास्त बस्ती में बने थे। नए बन्दूक और सामुदायिक जगल के काम की माँगा की पूर्ति में लिए थे एकदम

बस्ती में विकसित हुए। सामूहिक मन में जो सम्मिलित हुए, दोष उनका नहीं है क्योंकि वे तो परिस्थितियों के बचाव के कारण साधारण थे। उनके सामने समूचे बच्चों का जीवन था। दोष उनका है जो उनके नेता या सरकारी अधिकारी थे। उन्होंने योजनाएँ बनाकर उपनगरों की वृद्धि का नियन्त्रण क्यों नहीं किया? उपनगरों को बसकों में ही उन समस्याओं का सामना करना पड़ा जो अधिकतर शहरों को अतापियों तक भुगतना पड़ा था। इससे यह सिद्ध होता है कि अमेरिकियों ने अपने प्रमुखों से कुछ भी नहीं सीखा। जो कमियाँ और बुराईयाँ सबियों से अमेरिकी शहरों में बरसाई जा रही थी उनकी ओर उनका ध्यान गया ही नहीं। जब उन्हें एक नया व्यव्वाय प्रारम्भ करने को मिला उन्होंने वह किया जो सबके सामने है।

नये उपनगरों के बसने से बर्ग-रचना में भी परिवर्तन हुआ। पहले उपनगरों में सभी व्यापारियों, छात्राचारों और बकीलों के मकान थे। किन्तु अब धनी उपनगरों में इनसे अधिक लम्बा बसनों की है। मेडिट टाउन या मार्क फ़ारेस्टर जैसे क्षेत्रों में व्यवसायों वाले टेकनिसियन या बड़े निगमों के छोटे अधिकारी किराये पर या अपने मकानों में रहते हैं। हवाई उद्योगों और सुरक्षा उद्योगों के कारखानों के माध-माध कुशल कारीगरों की बस्तियाँ हैं।

भौगोलिक दृष्टि से एक भीतरी उपनगर (शहर के मजबूत) और एक बाहरी उपनगर (शहर से काफ़ी दूर) होता है। इसमें एक कच्चा (व्हाउ) भी छोड़ दीजिए जो उन लोगों का होता है जो सप्ताहाव वहाँ बिताते हैं या किसान हाँ हैं या कलाकार जिन्हें नियमित रूप से शहर से काम नहीं पड़ता। किन्तु बर्ग-रचना में भौगोलिक दृष्टि से अधिक धाता है।

उपनगरों का अमेरिकी मुद्रक मध्यवर्गीय है। यह बात उसके निर्माताओं विभागीय स्टोरों यापि में भी स्वीकार की है। उपनगरों में जो मकान बने हैं वे मध्यम आय वालों के लिए मध्यम बाम के बनाये गए थे। किन्तु समय यह है कि नया मध्यवर्ग जिसमें निगमों और सरकार के अधिकारी विज्ञापन और विमय के अधिकारी टेकनिसियन व्यवसायों में बने कर्मों और सफेदपोश बर्गकारी सम्मिलित हैं अमेरिका की वर्ग-व्यवस्था के विकास को प्रकट करते हैं। शहर के पड़ोस के हितापुण बातावरण से लंब घाकर वे ऐसे सप्ताह में रहना चाहते हैं जो उनसे बेहतर होने के साथ-साथ बड़े नगरों के सांस्कृतिक बातावरण से दूर न हो। यह उम्ह स्टेटस का ज्ञान देता है जिससे उनका धारण सम्मान को पुष्टि मिलता है। यह उन्हें बड़े शहरों और छोटे शहरों दोनों के उत्तम धरा प्रदान करता है।

नए मध्य-वर्ग में जो आन्तरिक परिवर्तन हुए हैं उन्होंने अपने मन में अपनी और समाज से अपने सम्बन्ध की जा तरबीर की है। उपनगर को पमन में

बाहरी जामा देने का प्रयत्न है। वे नगर के समुदाय से अपने को अलग करना चाहते हैं कि नगर में 'बनाम' होकर रहना नहीं चाहते। बड़े मयारों में तो कोई अपने ही मकान में रहने वाले पड़ोसियों को भी नहीं जानता है। वे संक्रमण नाम से गुजर रहे हैं। इसलिए 'अस्थायित्व' से घोर भी घबड़ाते हैं। इसलिए वे अपना घर बनाया चाहते हैं। जहाँ अपने पड़ोसियों से मिलकर वे अपना मुग-मुग बाँट सकें। जहाँ अपनी कार के लिए उनका अपना दीपक हो जहाँ से जब चाह वे उस बाहर में जा सकें। वहाँ उनकी अपनी पुनर्वासी हो जिग के रुबि के अनुसार राजा सकें। यह एक वर्ग है जो गतिशील हो रहा है अपनी यह वर्ष अपने व्यक्तिगत की जड़ें जमा रहा है।

इस प्रकार उपनगर में बसने वाला अपना 'जाट' चुनता है मकान की छिनी चुनता है मकान बनाने के लिए कज सता है। मकान बनाकर उसमें रहता है। उसकी पत्नी 'हाउस-मूटीकन' के आधार पर उस सजाती है। वह अच्छे बाजारों में अच्छी बुकाना घर कार में चढ़कर जाती है जहाँ उसे प्यारी से सब सामान मिल जाए। घर में रमाई के मग में मग उपकरण वह ले जाती है। रहने के कमरे में एक टेनीसकोर्ट होगा है। पति और पत्नी दोनों प्रतियोगिता में पहनाने से ऊब चुके हैं इसलिए वे सापरवाही के कपड़ पहनते हैं। इससे उनमें विभाग का भी भाव आता है। घर में कोई लोकर नहीं। व्यक्ति-के-व्यक्ति हुआ तो किसी के बच्चे के। बहाना या सफाई करने के लिए थोड़े समय के लिए मजदूरमी रख ती। अन्यथा घर पर सब काम सब अपने हाथ में ही करते हैं। घर में छोटा-सा पाग का मकान है जिसकी कटाई का मिर्चा खाद के स्वयं करते हैं। अपना ताता गुद पराया जाता है। भोजन की किताबें पढ़कर के स्वयं व्यंजनों के निर्माण के प्रयोग भी करते हैं। पति प्रायः निम्नतर अपने काम से बाहर रहता है। पर आधार का प्यारा विज्ञान बन जाता है और बच्चों के साथ सब तक गलता है जब तक बच्चे न जाएँ। अनुमान लगाया गया है कि अपने जीवनकाल में घर में दार और दार से घर जाने जाने में वह ८ लाख मील चलता है सर्वात् वह अपनी दूरी तय करता है जिसने ५० बार सारी दुनिया का चक्कर लगाया या मरता है। इन सारी गतिशीलता के मूल में एक भावना काम बानी है और वह है कि उस 'उपनगर के जीवन में मध्य उग का स्टेटस' जिस

जीवन को एक गीति के रूप में भी उपनगरी जीवन अमेरिकी व्यक्तिवाद का इन्फार्मर बनाता है। इसका वर्णन मानवीकरण और साम्प्रदायिक धर्म तक मानविकीकरण हो जाता है। इसमें एक 'जाट' जुनियर की 'विश्वामोहा

The middle-class status of suburbanite

अज्ञान मैज' नाम पुस्तक में उपनगरों के जीवन का गहन अध्ययन प्रकट हुआ है। इस पुस्तक में आज के उदीयमान उपनगरी जीवन का विश्लेषण प्रच्छाई से हुआ है जो भविष्य का प्रमुख जीवन बन सकता है। उपनगर बाड़ी को एक नए पड़ोस के माध्यम में अपने जीवन की नई जड़ें मिलाई जो पहले के अमेरिकी जीवन में अप्राप्य थीं। यहाँ बहु पड़ोसी से भ्रमसर मिल जाता है। सम्झा करने की जिसे फूसल है ? घरों के भीतर दरबाज नहीं (कम खर्ची घोर बगह का भाव देने के लिए) बाहर के दरबाज का भी कोई उपयोग नहीं। धब इनका स्थान पून-यतिमो की खिड़कियाँ ले रही हैं। जो भी नया व्यक्ति रहने के लिए आता है, बाधा के घनृक्ष्य वह भी इस समाज में मिल जाता है। आत्मकेन्द्रिता को यहाँ बुरा माना जाता है। क्लब और सामूहिक नामों में सभी खुसकर भाग लेते हैं। बच की उपस्थता भी बड़ चुकी है। घोरों की धब सुबह धाम आपस में मिलती है। एकान्त का जीवन बिताने के भ्रमसर कम है। भ्रगर कोई किसी प्रकार का पर्वा करना चाहता है तो गुप्त रीति से करता है। सराब पीने में प्रयत्न इस बात का नहीं होता कि लोग जानें कि पीने सराब पी है बल्कि प्रयत्न इस बात का होता है कि इतनी ही पी जाए कि कोई पहचान न ले पा उससे किसी को किसी प्रकार की समुबिधा न होने पाए। उन्होंने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए कारों के 'पून' बना रचे हैं। इसी प्रकार साइकिलों, पुस्तकों, किमोनो का प्राय सामुदायिक उपयोग होता है सब एक-दूसरे के निकट है प्रायक का जीवन प्रायक पर प्रकट है कोई अपनी समस्या अपने ही नहीं भुगतता। झूट के चर्चों में उपनगरों के निवासी "माई चारे के बन्धी" हैं।

इस प्रकार के जीवन में कुछ तो सीमा के जीवन-सहयोग का संघ है तथा कुछ धैनिक जीवन का घोर कुछ समाजवादी सामूहिकता का। जो लोग परमाणु-वादी व्यक्ति हैं, विरह धार्मिक समुदाय के पुजारी हैं वे अमेरिकी मानक के मध्य 'बड़े हुए उपनगरों' की समुदाय की प्रकृति की घोर बड़ते बेचकर छोड़ा काँप भ्रमस्व जाँचेंगे। बय धाम और बर्ग के सम्बन्ध में एककपता के कारण मानक और भी भ्रान्त-रहित हो गया। प्रारम्भ में उपनगरों में बिनाहित युवा सम्पति ही पाए जिनकी धाम 6,000 या 7,000 बास्तर थी उनके बच्चे इस साम के पीछे के ही थे। वर्ग के प्रति इनका दृष्टिकोण भी एक समान ही था। वे सहिष्णु गतिधीन परिधमी महत्वाकांक्षी और भविष्य के प्रति आशाबिध थे।

किन्तु इस घारे समाज को एक बर्ग में ही रक्त लेना भूल होमी। केवल इतना कहा जा सकता है कि नय अमेरिका का इतना संघ मध्यवर्गी है। बड़ा उपनगरी विकास इतना जबरनशील न था जितना उससे पहले के घोर छोटे उपनगर थे। बड़े पैमाने पर भ्रमक बनने थे जिन्हें बेचना था। इसलिए औद्योगिक

पहली प्रोपर्टी (हमियों का छाहकर) को भी मिला सबको रत्न मिया गया। बरत टैकनिसियन बरतसाथों वाप मजदूर, सफेदपोछ सब एक ही स्थान में बस गए। धातु धातु और बिबरसनीयता सबही समान थी। पहले के उपनगरों और बाहरों के निवास 'अ' या सीमित क्षेत्र' में उतनी लोकतामिबता न थी जिसनी इन उपनगरों में। किन्तु इस कास्मनिक भय के कारण कि हमसी वास्तविक भयका का मूल्य पटा ऐसे उठ नहीं मिया गया। यह स्पष्ट करता है कि लोकतम की उनकी वस्था बिलगी सीमित थी।

उपनगरी समाज अमेरिकी बय-व्यवस्था के नतिधीन ठरकों से बेहद सम्बद्ध था। मजदूर अब प्रारम्भ होता है प्रारम्भ से दुकान अभीष्टक या सेम्समें में माण्डनिक मीनेजर और माण्डनिक मीनेजर से सेम्स मीनेजर बहु एक प्रकार के उपनगर में दूसरे प्रकार के उपनगर में बना जाता है। जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है मकानों का स्तर भी ऊँचा उठता जाता है। नये व्यवहार आत आते हैं रवि के नव मान्ड बनने लगते हैं और नव प्रकार के मित्र बनाए जाते हैं। कुछ धना ठर निम्नवर्ग के परिवार भी धनार्थ लिए उपनगर लोक सेते हैं, उपाधुरणार्थ लम्बर या बर्तु का स्तर मजदूरों जैसा ही है पर वे भी आमदनी की सीमा में मध्यवर्गीय पदोम का सेत हैं। वे बिजाजन मोटे तीर पर मध्यवर्ग की सीमा में ही है। आमदनी में आत्यन्तिक धनर बड़े गहरों में ही अधिक हास है।

मेरा तात्पर्य यह नहीं कि उपनगरों का समाज (अमेरिका) कफामिस्ट (गव-कव) समाज है। इसका वास्तविक परिमिष्ठ है और जीवन की रीति एक नम है। फिर भी इसमें एकलपक्ष नहीं। उपनगरों में जो सामाजिक प्रतिष्ठता है उसका बल कारण उठ पचाने की भावना है और कुछ जैसा मैं पहले बहु बुरा। सामाजिक और धानपन में भयङ्क है। बल धनों में इनका कारण एवं ही प्रकार का काम करने में धाने वाली पठा को दूर करने की भावना भी है। दूसरे प्रकार है बिस्वाग और मध्यभूमि के साथ में प्रतिष्ठता प्राप्त करने का धनर उठने साथ एक नया समाज निर्माण करने का धनुभव और सामूहिक बाधों में भाग लेने की दृष्टा नम लोगों के लिए पर्याप्त धानपन का बाध करनी है जिसने अमेरिकी सामूहिक धारण और एक इरेपन दोनों का धनुभव प्राप्त किया है। उपनगरों पर बाहर में एकलपक्षता जारी नहीं जा सकती। किन्तु सामाजिक धनता और सामुदायिक जीवन बिगाने का कामना लेने सामूहिक बाधन है जो सब धेदभाव निरावर एकलपक्षता का देन है। बल लोगों को इन बाध का भर है कि यह नहीं नवाज है जिसे मकनवर्गी धन में बनायेगा—एक

पड़ोस एक पिरोह एक बर्न और एक भावी समाज ।

इस नय के पीछे तथ्य भी है । एरिक फोम ने जब उपनगरों की भूमि प्रकृति की गीका की तो 'स्वतंत्रता से पलायन सिद्धान्त'¹ को वह एक नया ठक वे रहा था । किन्तु जब 'सेन सोसायटी'² में वह इसका समाधान प्रस्तुत कर रहा था (जो 18वीं शताब्दी के कोरिथिरिस्ट समुदाय जैसा था) तो उसने इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि इस समय उपनगरों में ही नए कोरिथिरिस्ट के दर्शन होते हैं । व्यक्तिवाद का दोष है कि वह समाजवादी होता है । सामुदायिक जीवन का दोष मानवीकरण और एकतरफा है ।

उपनगरों में नम लोगों को ऐसा भय या विचार घाता है । बल्कि उन्हें तो इसमें एक प्रकार का रोमांच ही होता है क्योंकि इससे उनकी दृष्टि विस्तृत होती है और एक नया अनुभव प्राप्त होता है । बी० एम० ट्रेवेन्पान ने 18वीं शताब्दी के फ्रेंचोई मध्यवर्ग के सम्बन्ध में कहा था "समय उनका था और वह सोने का था"³ । यह बात अमेरिका के इस नये मध्यवर्ग पर उतनी ही लागू है ।

किन्तु इस सोने में खोट की चारियाँ भी और यह स्वर्णकाल भी बीतने ही वाला था । नया उपनगर एक बर्नीय था जिसमें सबकुछ न य इर्शमिए इसका कोई औद्योगिक आधार न था । संतुलित समाज के लिए मुख्य वेता ही पड़ता है और वह मुख्य है अमेरिकी समाज की बिबिधता और कोसाहस से दूर भागने से इनकार करना और उसके धर्मों को शक्ति के रूप में स्वीकार करना । जो मोम उपनगरों में गए वे यही सोचकर तो गए कि वहाँ उनके बच्चों की पिला का उत्तम प्रबंध हो सकेगा । किन्तु उस 'उत्तम' की प्राप्ति में सहामता देने के लिए उद्योगों को वे चाह नहीं ले गए जो 'कर' देकर पिछा की मदद करते । उन्होंने 'अबाधित प्राय के मोमों को दूर रखा । फिर वे धारण्य करने लगे कि उनके स्कूल इतने बर्ध्य क्यों हैं ? शाल में उपनगरों को औद्योगिक जीवन से सम्बन्ध जोड़ना ही पड़ा ।

घर और मोकरी के सम्बन्ध का भी प्रश्न है । नगर आयोजना का आदर्श यह है कि आदमी अपने काम पर पैदल जा सके और वहाँ से पैदल घर जा सके । किन्तु जब उपनगरों का ठोस सत्य सामने आया तो बात ठुस कि वहाँ से मात्र एक कम मोटरों पर ही निर्भर है और प्रतिदिन सुबह-शाम यातायात की समस्याओं से लड़ना पड़ता है । नगर परिवर्तन यह है कि शहर के बहुत-से व्यापारिक और औद्योगिक कार्य-कलाप मध्य नगर से बाहर जा रहे हैं । कम

1. Escape-from-freedom thesis.

2. Bane Society

3. Meanwhile the hour was theirs and it was golden.

स्वल्प धन बहुत-से उपनगरवासियों को रोज़ घाट की छूटी नहीं मापनी पड़ेगी। धन उनका कार्यालय भी पास था गए है। यदि यह प्रवृत्ति जारी रही तो उद्योग और निवास-क्षेत्रों का भी सम्मन्वय हो जाएगा।

इसका अर्थ यह है कि 'मुम्बे' नगर का गठन धन कुछ हीला-बाता होगा। फिर भी मोटरों पर उसकी निर्भरता छा रहेगी ही। हाँ पर और मौजूद सब स्वल्प कुछ बदलेगा। धन रास्ता दोनो तरफ़ से जारी होगा। अप्रत्याशित रूप से यह पटना फ़ैर मायड रिट के बाढ़कर मिटी की कल्पना के अनुरूप है अमेरिकी और ब्रिटिश आयोजकों के आरामदेह और पृथक गए कस्बों की कल्पना से यह काफी दूर है। पीछे जब मैंने यह कहा कि अमेरिका में उपनगर संख्या में महत्व की दृष्टि से बढ़ेंगे इससे मेरा यह तालय नहीं कि ये धार्य सम्पन्न होंगे अल्प में उपनगर और नगर में सम्मन्वय अवश्य होगा।

उदाहरणार्थ न्यूयार्क को ले लें। इसमें पाँच करोड़¹ निवास रहे हैं। ये सब मिलकर एक मण्डपार नगर बना रहे हैं। इसका विस्तार कितना है यह जानना मुश्किल है क्योंकि नगर कई दिशाओं में बना गया है। 1976 तक न्यूयार्क की आबादी दो करोड़ हो जाएगी जो बड़ी स्वतंत्र देशों की आबादी में अधिक है। उपनगरों में आबादी के बने जाने से मध्य नगर का भी स्वल्प बरत रहा है। धन यह बरत एक अधिकृत क्षेत्र के रूप में रह जाएगा। मध्यम के बाहर बन जाने से अमेरिकी और एरीजी का अन्तर सुस्पष्ट हो गया है।

किन्तु यह निश्चित है कि नगर या उपनगर अपने नरोगे नहीं जी सकते। मैंने पीछे बताया है कि उपनगर का नया जीवन क्या है और उसके कार्य क्या हैं? नगर उद्योग धन-धनराया पैदा करने वाले हैं और उनके कार्य काम कर रहे हैं। नगर और उपनगर दोनों को मिलकर कोई तीसरा सामुदायिक जीवन विकसित करना पड़ता है। यही जीवन जारी है और धनराया की कठिनायियों को पार करेगा। यह सामुदायिक जीवन बने या नहीं पटना तो स्पष्ट है कि उपनगर शहरों के साथ रहने और ये शहर के निवासियों के साथ नए बने बग़वती के दर्जे पर रहेंगे।

यह सब जो हो रहा है उसके लिए अमेरिका का सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप में पर्याप्त धन भी बचाना पड़ रहा है। नगरों के बीच जो मुसीबतें भी होती हैं। पर अमेरिकी अपने जीवन में एक ऐसा परिवर्तन ला रहे हैं जो गुण का दृष्टि में आदर्श होने हुए भी नए धन-राशियों और निवासियों के अनुरूप है। अमेरिकी इसे आने ही लग में कर रहे हैं। वे नये

1 Broadacre city
2 Ilwaco, La.

शहर तो बसा रह हैं पर इस सम्मान में ब्रिटेन के 'गये शहरों' से प्रशंसा नहीं ग्रहण करते। जब वे पुराने नगर-निवेश के नक्शों के अनुसार भी नहीं चल रहे हैं तबमें शहरों के बीच इरी-मरी पट्टियों की व्यवस्था रहती थी। पुराने शहर के या नम उपनगर के बीच कोई संतुलन नहीं है। संतुलन यदि कहीं है तो पुष्पेश्वर शहर के बीच हो सकता है पर मुझ इसमें भी संदेह ही है।

३३ क्षेत्र जनता और स्वतंत्र के बीच एकलपता

यद्यपि एक 'अमेरिका' की आवश्यकता तो है पर सचमुच में कोई एक समन्वित अमेरिका है नहीं। अमेरिका के दस्तखत एक नहीं घनेक हैं। अमेरिका 48 राज्यों में विभाजित तो है ही। यद्यपि इन राज्यों की सीमाएँ किसी वस्तु को बाँधती तो नहीं पर प्रत्येक राज्य को अपने जीवन के ढंग पर गर्व है। उनका अपना पूर्वाग्रह और अपना निजी व्यक्तित्व है। कई राज्यों को मिला कर एक बंड बनता है। उनर क लम्बो में ये बंड 'यूरोप के राष्ट्रों की धुँवसी छाया' हैं। राज्यों की जाति से बंड भी उत्तर-दक्षिण के बल की लपटी हैं। प्रत्येक वास्तविकतावादी राजनीतिज्ञ को अपने जुनाब के साम्योत्तम में बंडों के आक्रमण का सामना करना पड़ता है। उसकी पार्टी में ही बंडों के स्वाभ हाते हैं। कांग्रेस में भी बंडों के घुट होते हैं।

किन्तु एक कुशल सार्वक विचारन भी है जिसका आधार जनता और स्वतंत्र पर्यावरण स्टाक अर्थ-व्यवस्था आसी इतिहास सबकुछ और जीवन का ढंग है। इसे रोज (Region) या उपक्षेत्र कहते हैं। राजनीतिक दृष्टि से बंड (Section) क्षेत्र ही सकता है। किन्तु राज्य का ढंग असमायवादी है जबकि क्षेत्र का समायवादी। ऐसा ही सकता है कि आज किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का अनियोजित विकास हो पर आज में तो इंडोनिशिया और लेबीय आयोजना से—जैसे नदी धाटी योजनाओं के माध्यम से—इनका एकता को मजबूत ही किया गया है। ये क्षेत्र जारी मरकम अमेरिका को टुकड़ों की परिधि में बाँधते हैं। अमेरिकी महाद्वीप इतना बड़ा है कि उसका कोई खास जीवन नहीं हो सकता। बस ही शहर इतने छोटे हैं कि उनके अन्दर किसी प्रकार के जीवन का कोई अर्थ ही नहीं। 'गाँव और महाद्वीप का बीच' वहीं धंग पाता है। अमेरिकी जीवन में मासवीकरण और परमाण्वीकरण की दो शक्तियाँ हैं उनकी प्रतिघात के रूप में ये क्षेत्र और उपक्षेत्र काम करते हैं।

राज की कपरेला जरा उपपुण है। इस सम्मान में जितनी सूचियाँ बनी हैं उनमें कोई साम्य नहीं है। सामाज्यतया ग्यु इम्मीड गण्य सदस्यटिक क्षेत्र अमरी-ब्रिशन धुर-ब्रिशन ब्रिशन-पश्चिम महाद्वीपों का प्रवेश पर्वतीय क्षेत्र, सुदूर-पश्चिम और प्रसन्न उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र बताए जाते हैं। वे जीवोत्पत्ति

आधुनिक और सांस्कृतिक इकाइयाँ हैं। कृषि के आधार पर भी समूह बनते हैं। जैसे जूट की खेती वाली पट्टी गेहूँ की पट्टी पौतों में चलने वाले चौपायों का क्षेत्र अपनी क्षेत्र परिवर्तनीय विनियमन के आधारों का क्षेत्र।

बहु क्षेत्र के उपक्षेत्र भी हैं। एक भौतिक का निर्माण सभी प्रायद्वीपों और क्षेत्रों को घेरकर जाता है जैसे टैनेसी मिश्रित धरमाम्बास मिडिलीपी काम्पिया प्रायद्वीप कोनेडिक्ट रीजियो, वेबोरा साउथ, रीड काम्पियो मेडाम्बो मेडाम्बो प्रायद्वीप। इनमें बहुत-से स्थानों में बाढ़-निष्पन्न और जन विद्यन के बीच भी है हमारा हमें रीजियोनल क्षेत्र भी कह सकते हैं। पहाड़ी क्षेत्र का भी हमें ही एक-आधेय नक्का बन सकता है जिसमें राकीज और एपनगियम ही नहीं बल्कि हार्डट याउथ वीन माउथ्स बर्कसायर्स एनरिज और प्रायद्वीप भी सम्मिलित होंगे। 'अमेरिकन कोम्पेज माता' की पुनर्वा के दीपको में भी उपक्षेत्र की ओर ध्यान आकृष्ट होता है जैसे, 'सैनन बन्दी' एनरिजबन्दी गार्बेदारबन्दी पायटोरुन्दी डीप रेस्टाकन्दी म्मोगूकन्दी रेजटरन्दी पाइनोरुन्दी और वेन हूडम कन्दी। ऐसे उपक्षेत्रों का बहुवचन बिना बिना है। क्षेत्र तो एक क्षेत्र में एक सांस्कृतिक इकाई है। यह क्षेत्र पहाड़ या नदी का बेसिन या जीन इस्टा या रीजियोनल इकाई भी क्षेत्र का हो सकता है। सभी यह समर्थों के अनुसार भी बन सकता है। बिना घलगाव या 'स्टार' और परम्परा को एकत्रित के आधार पर भी उपक्षेत्र बन सकता है। क्षेत्र का समय विभिन्न-विभिन्न हो सकते हैं किन्तु किसी क्षेत्र या उपक्षेत्र के निर्माण के लिए मोठौर पर प्राकृतिक परिवेश की एकरा और आधुनिक इकाई का होना आवश्यक है। ये सब सामुदायिक जीवन और समान इतिहास और संस्था का निर्माण में सहायक होते हैं।

ये क्षेत्रीय संगठन ही अमेरिकी वैविध्य को प्रकट करती हैं। जैसे अमेरिकी 'स्टार' में अनेक जानियाँ हैं जैसे ही अमेरिका के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न परिवेश हैं। इस वैविध्य ने अमेरिका की एकरा में महायन्त्रा भी है।

प्रायः हमारा प्रतीतिज्ञा भी वैविध्य है। राष्ट्र और देश के बीच वैविध्य है। इसी कारण समाजवाद और विभागों या म्युनिकिपल्टी में प्रतिस्पर्द्धा बननी पड़ती है। लिबरलैड (बदलाव) और बहु राष्ट्रा में सदा चलाचल बननी है। सभी-सभी एक ही क्षेत्र या राज्य में हमें अनेक उपक्षेत्र होते हैं जिसमें एकरा या परम्परा के अनेक भेद होते हैं। ऐतिहासिक में सैनिकान प्राय के क्षेत्र और इतिहास रीजियोनल के क्षेत्र में समान प्रायमान का प्रचार है। मद्रोमाना का राजनीतिक इतिहास में पहाड़ी के अनेक प्रोटेस्टों और

बाड़ी बाने प्रौद्योगिकियों के संघर्ष का उत्तम अवसर होगा। दक्षिण में ही मातृ मिट्टी और गर्दन बाने आर्यियों के पहाड़ियों का जीवन अटलांटा के प्रौद्योगिक क्षेत्र के लोगों के जीवन से भिन्न है।

1930-1940 के अमेरिकी विचारक बर्न रेखाओं को चीरती लेनीय भक्ति के प्रति बड़े सावधान थे। वे 'राष्ट्रीय मन' की वास्तविकता को स्वीकार करने से कतराते थे। वे लेनीयता या उपलेनीयता को इतिहास का प्रगम मान कर प्रागौद्योगिक संस्कृति का अवशिष्ट बतलाते थे।

परिणाम यह हुआ कि अन्तर्गत राज्य परम्परावाजियों—विशेषकर दक्षिण के मेचकों तक ही सीमित रहा। 1920 के दक्षिण के भूमिवादियों ने इसे प्रभुवाद, धार्मिक और राजनीतिक प्रोपगाम और एक साहित्यिक सिद्धान्त के रूप में बदल दिया। उन्होंने इसे उत्तर के भूट मानवतावाद के विरुद्ध हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। दक्षिण के लेनवाज का एक दूसरा सम्प्रदाय भी था जिसका केन्द्र नार्थ कैरोलिना का बिस्मिथियम था। यह इससे अधिक ऐक्यमिक और उदार था। मजेदार बात यह है कि अन्तर्गत दक्षिण में ही अधिक छला-छूना। इसमें संदेह नहीं कि मुसाम-प्रवा गृहयुद्ध और पुनर्निर्माण के बड़े-बड़े मसलों पर दक्षिण और रोप अमेरिका के बीच कोई बड़ी विस्तृत ही चुकी थी। इसके प्रतिरिक्त भी वाणि-व्यवस्था प्रामीणवाद कमवाद और जीवन-वापन के विरे स्तर के कारण दक्षिण के मेचकों में अपनी मसल इकाई मानकर दक्षिण में अलग संस्कृति की कल्पना का प्रचार हुआ।

यदि कोई पूछे कि अमेरिकी अन्तर्गत क्या है तो उसका उत्तर देने के लिए श्रमिक जन का परीक्षण करना पड़ता।

न्यू हम्पशायर का कोई अकेला मन नहीं है। हो भी कैसे सकता है। अपनी उत्तर के मेन यांकी जाहे वह भाग्य की बेटी करने वाला कुपक हो या सिपवाई का मजदूर या मसूमा और हाउसेटोनिक और कोनेक्टिकट बाटी का प्रौद्योगिक मजदूर इनमें अन्तर स्पष्ट है। इसी प्रकार बोस्टन के स्टेट स्ट्रीट और हार्वर्ड याई के पुराने अभिजात वर्ग और नये आहरित प्रवास के राजनीतिक नेताओं में कैमोष्ट और न्यू हैम्पशायर के यांकी किसानों और न्यू पोर्ट या प्रीमियर की प्रहामि काणों के स्वामी बानिकों में यहाँ तक कि न्यू हैम्पशायर और कैमोष्ट के रैज कैमोमिक प्रवासियों और मेससाचुसेट्स कोनक्वियट और रांडे प्रामोशेय के आहरित कैमोमिकों और इटालियन कैमोमिकों में भी अन्तर है। पर एक बात है—पुराने साँच में जाहे जो भी गई बागुपकी हो सींचा टूटा नहीं है। कुछ लोगों को यांकी के अपने मूल स्वान में जीवित बच रहने में संदेह है। फिर भी न्यू हम्पशायर की कोई संस्कृति है तो उसे मैं यांकी संस्कृति ही कहूँगा—उपपुण चतुर, व्यक्ति बारी और अपनी भाव्यताओं पर बुद्ध।

पड़ने परम काल में इससे महान् लेखकों और विचारकों की परम्परा को जन्म दिया है। इस परम्परा के प्रारम्भ में जोनाथन एडवर्ड जैसे कुछ कट्टर संत भी हुए हैं। पर उनकी कट्टरता स्वयं को कष्ट देने की ही थी। न्यू ब्रांक का स्वभाव उनसे जसबाबु जैसा समझीतोग्य था बड़ाई का—हमसा एक ठोबी सिध हुए और मुनि-प्रीसा ही है जिसमें किसान यदि परिश्रम करे तो मजे में रह पाता है।

पदवि 'पश्चिम प्यूरिटन' काय प्राय नहीं रहे और जार्ज एप्ली जैसे चरित्र मदारदा बीकन हिम और सुईबर्ग स्वशास्त्र के मोर्चों में डोम जाते हैं। न्यू इंग्लैण्ड का मन में एक सुनियोजित एविन है जो उसकी प्यूरिटन परम्परा मिट्टी जनजातु और इतिहास की उपज है। इस काल्पनिकता से ही ट्रान्सेन्डन्टलिज्म और काल्पनिकी समवादी धार्मिकताओं और जोसिया टकर के प्राराजकता बाही मिश्रता का जन्म दिया। न्यू इंग्लैण्ड में एक संवेदकवादिता है जो उसे बुरोविषयों और नैतिकतावादियों के बोध संतुलन बनाए रखने में मदद देती है। बोरो से कान्तिवाद तक हमका दर्शन रहा है—पीटिक्टता और इसका हास्य वसिणी पहाड़ी की लाकड़काष्ठों में अधिक बिटेन की लाकड़काष्ठों के गड्ढीयु रहा है। हममें 'इतिहास इव्स'-जैसी पुस्तक इसी कारण गिर सका कि न्यू इंग्लैण्ड में पुराने ट्रान्सेन्ड के तरन पर्वान मात्रा में सुरक्षित थे।

पश्चिम जर्मन को 'आलिङ्गन' में घटका पाँकी कहा गया है। उसकी भाव कि एकान्तविषया और साकाय अनुभव में प्राप्त अनुभूति ही न्यू इंग्लैण्ड की विचारधार का मध्यविन्दु है। सोबेस का 'विस्तो केपस' में या पाँकी जहाजियों में या बंम भी समुद्र में बर्बाद हो अपना आत्मिक समुलन या न्यू इंग्लैण्ड के तट का राबान नहीं भूयने या राबान फाट की बबिताघों में इसी विचारधारा के दर्शन होते हैं। ऐडम्स में भी यही विचारधारा मिलती है। उन्होंने जनमान होते हुए भी राजनयता राजपुरुषता न्यायवादी विचारधारा के आधारपथों के इतिहास और मानव-इतिहास में पश्चिम के ज्ञानुओं की ग्राह्य की थी। ऐडम्स सोबन बीगंडी हाम्म जैसे न्यू इंग्लैण्ड के परिवार बीडिक सामन्ततन्त्र के मजदूर थे। इन्होंने अपनी स्वनामक परम्पराओं को कामू रगते हुए अपनी बंध परम्पराओं में अपना विराग बनाए रखा।

किर भी न्यू इंग्लैण्ड की मुख्य राजनीतिक दल लोकतन्त्र के धन में नहीं मान्यता के धन थे हैं। इन लोकतन्त्र में लोकतन्त्र का भी विविध विभाग है। जनन मानका काल्पनिक धर्मिकवाद का द्वारा पश्चिम आधार, बर्बाद

1 Calvinism.

2 Transcendentalism.

उद्योग और मन-संस्था के साथ क्रान्तिवादिता नहीं मिलेगी जो मतभेद के बाधा वरण में फनती-फूसती है। न्यू इंग्लैण्ड की परम्परा मतभेद की परम्परा है। हेमरी ऐडम्स ने लिखा है कि "किसी वस्तु का प्रतिरोध करना न्यू इंग्लैण्ड का स्वभाव है। बच्चा संसार को प्रतिरोध की भावना से पैदा होता है। पीढ़ियों से उसके पूर्वजों ने जनों में संसार को उस वस्तु के रूप में देखा है जो पाप-शक्तियों से भरा है जिन्हें मिटाना है और संसार का मुकाबला करना है। न्यू इंग्लैण्ड का निवासी बच्चा जो या बचान प्रतिद्वन्द्वी संसार से संघर्ष के कारण पूजा से भी प्रेम करना सीख गया है।" इस धारम विषय से यह स्पष्ट हो जाता है कि न्यू इंग्लैण्ड का स्वप्न क्या है ?

कुछ दिनों से न्यू इंग्लैण्ड का कपड़ा-उद्योग बलिष्ठ या परिधम की ओर जा रहा है। इसके गोदाम खाली हैं और उसका धार्मिक प्रभुत्व समाप्त हो रहा है। इसके धर्म-शास्त्री इस बात से चिन्तित होकर क्षेत्रीय सर्वेक्षण कर रहे हैं ताकि धार्मिक पुनरुत्थान हो सके। धुक में इसने नेतृत्व लिया पर धन बहु इसका बन्ध भुगत रहा है क्योंकि उद्योग के क्षेत्र में उसकी टेक्नोलॉजी पुरानी पड़ चुकी है। इसने अन्त-विद्रुत योजनाओं का विरोध किया था। उसका भी परिणाम उसे भुगतना पड़ रहा है। प्यूरिटन सन्तों का धर्म उगम ही नहीं रहा पर एक नई कैथोलिक धारावाही धा गई है जो अपने धर्म के प्रति बड़ी आस्थावान है। इनकी एडम्स ने धोद्योगिकता के प्रभाव में पुरानी सामाजिक परम्परा के टूटने पर बड़ाहट प्रकट की थी। पर इस बड़ाहट का स्थान नई सामाजिक व्यवस्था की निमित्त स्वीकृति ने ले लिया है।

फिर भी न्यू इंग्लैण्ड पारम्परिक मन के बीतने से अमेरिकी विचारधारा और प्रमदीकरण के माध्यम की महानता नष्ट हो गई है। हावोर्न ने अमेरिकी दुन्ही जीवन का बड़ी धार्मिकता से चित्रण किया है। मार्क्सेज के कुछ ध्यंग न उद्योग स्थान लेने की कोसिध की पर इसमें बहु असफल ही रहा है। इसी प्रकार कॉटन मैफेर के 'वे ऑफ़ डूम' या कोनाथम एडवर्ड का स्थान 'यांकी सिटी' का संघ्यारमज सर्वेक्षण न ले सका। अमेरिकी साहित्य के काले सिचाव का मोन्द दसिण के लेखकों के कर्मे पर पड़ा जिन्होंने एक दूसरे रूप में ही उसकी धर्मव्यक्ति की।

न्यू इंग्लैण्ड की कुछ प्रवृत्तियों का सहाययता से महीन भी बनाया गया। मात्रा न करने के लिए जिदगी पाये पर एक बीकन हिम महिगा कहती है 'मारा मैं दाशा क्यों कर्क जब कि मैं स्वयं नहीं हूँ ?' एक दूसरी महिला से पूछा गया कि बोस्टन की महिलाएँ हैट नहीं पहिती हैं ? तो उसने धायण सरल ढंग से जबाब दिया "हमारे हैट ? क्यों हमारे पास हैट तो हैं ? न्यू इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक एपासिज ने खबर दी कि 'न्यू इंग्लैण्ड विरुध के धराधम की सबसे

पुरानी अवस्था है। दूसरे भागों के बहुत-से अमेरिकी म्यू इन्डस्ट्र के मूठ पर वर्ष में बुरा मानते हैं। बिचपनर ऐसी विचारधारा से कि बोस्टन एब्स है और कि उसका संस्कृति के क्षम में एकाधिकार प्राप्त है। पैरी मिसर ने दाद दिया था कि ऐतिहासिक म्यू इन्डस्ट्र बालों ने असातिष्ठानिरम और हड़ताम के रंगों में अपनी जान जोखिम में डाली और वे योंको निष्पक्ष में सारे अमेरिकी में फैल गए। उन्होंने भूमि हड़पने बालों और इजारेदारों के सहाई करने को हिम्मत दिया। वहाँ भी व यए उन्होंने वहाँ के समाज का विरुद्ध था। बर्निक ने कहा है कि म्यू इन्डस्ट्र बालों में प्यूरिटन और बेतगाम साम की भावनाओं का निष्पक्ष है। इसमें भी दूसरी भावना ही अधिक बनवती है। फिर भी उसने काफ़ी निर्माण किया और म्यू इन्डस्ट्र अमेरिका के निजी रूपरेखा में अधिक अमेरिकी मन का प्रतिनिधित्व करता है।

म्यू इन्डस्ट्र का मन और उसका सामाजिक ढाँचा अंशतः मध्य-पश्चिम में भी स्थापित हुआ है। म्यू म्यू इन्डस्ट्र की पचसीसी अरबों भूमि के स्थान पर यहाँ बुद्धिमान भाव के सम्बन्ध में और बालों के भावों के स्थान पर यहाँ बुरा पर है। म्यू इन्डस्ट्र का प्यूरिटनिरम अब महाद्वीप में फैला तो वह धारभूत बारी हो गया। वास्तविकता की मनोवृत्ति का स्थान यहाँ के शहरों में "बाइबिल बेड" में ले लिया। जहाँ एक राजनीतिक दृष्टिकोणों का प्रयत्न है म्यू इन्डस्ट्र और मध्य-पश्चिम में बड़ी एक है जो मस्त्राकमदम के लक्ष्य परिवार और घोड़ियों के टॉट परिवार में है। ऐशम परिवार में आभिजात्य है बट्टाट्टा होते हुए भी बिरोध की भावना है कि मध्य-पश्चिम का अग्रबैटिव—मैकडिन्सी और और हैने का हाथिय और टॉट का—बस्त्रा और व्यापारियों के मध्यमों का है जिसमें बम्पना गल्लि का समाज और भीतर है। मध्य-पश्चिम का रैटिकनिरम भी मुख्यतः ये दृष्टिक और पोपुलिस्ट है। इसमें उन बुरकों की कानिवाहना बोनरी है जो दूरबामी बनिर्को का विरोध करती है और जिसमें रैटिकनेरियन और जर्मन अल्प-मध्यमों का भी स्वर है। एक बात यह है कि एक नहीं दो मध्य-पश्चिम है। एक है घोड़िया दक्षिणा इतिहास और मिनिगन का क्षेत्र जो भूतकाल में अग्रबैटिव विचारधारा का लड़का और दूसरा मिनीगन विरोधी और बिगडिन्सी का क्षेत्र जो मुख्य रैटिकनिरम विचारधारा का क्षेत्र है। घोड़ियों रैटिकनिरम के लिए "गल्पनिया की मानुभूमि" है और दूसरा क्षेत्र मुपायवादी धार्मिकता का पालन रहा है। वर्तमान स्थिति का पक्ष मध्य में मिनेमोग और मिनिगन ही भूगर्भ की रैटिकनिरम विचारधारा की परम्परा के एकमात्र बाह्य रूप था।

हमारे और बीज के समय में जो राजनीतिक बिज पा घर बढ़ नहीं रहा। मध्य-पश्चिम का मध्य पश्चिम की रैटिकनिरम विचारधारा अब मर चुकी है। मध्य-पश्चिम का

सन्तानवाद बर्ल हार्बर के साथ खड़ा हो गया। हाँ उसका प्रेक्षक भी अभी अभी विदेशनीति के मुँहरे पर टहलता नजर आता है। मध्य-पश्चिम अभी रिपब्लिकनों का गढ़ था पर अब वह स्थिति नहीं रही। अब उनका बहुमत कम हो गया है। बिजान सघोष बिजान मगर और ह्यूमिडो पोर्को, र्बर्को पाइरिस्को आदि के सघोषों में सब नामों के कारण अब वहाँ की राज नीति कृपि प्रभाव नहीं रही। आज से 30-40 वर्ष पूर्व कहा जाता था कि मध्य पश्चिम की सोशलिस्टता पूरब के मुकाबिले बाबिल है। पर अब वह बात नहीं। मध्य-पश्चिम के भारी सघोषों उपमोय बस्तुओं के सघोषों प्रोसेसिंग बितरण और बिल में सबकी व्यापार-सक्ति के लिए स्थान है। यह सब है कि राजनीति के क्षेत्र में सिनेटर बोसेड मैकार्बी-जैसे बाबिलवादी अब भी प्रकट हो जाते हैं। पर यह बात मध्य-पश्चिम के सम्बन्ध में ही नहीं है बल्कि दक्षिण में भी है और इसका कारण पूरब के प्रति द्वेष है। किन्तु मैकार्बी के सम्बन्ध में था यह राष्ट्रीय बटमा हो गया था।

‘मध्य-पश्चिम के बिलगाववाद’ जैसे प्रयोगों में अभी तक लेबल का खतरा है। ‘बिदेसी’ और ‘रेडिकल’ के प्रति अब और नापसन्दी का भाव मध्य-पश्चिम में ही नहीं दक्षिण में भी है। पर दक्षिण में इसका लय वेहातवाद और जाति व्यवस्था के साथ भीरता के गुणों में हुआ है जब कि मध्य-पश्चिम में यह अमेरिका के बाहर के अल्पजात पुर्नर्प विरुद्ध के प्रति धर्मिबाव पैदा करता है और ऐसी भावना को जन्म देता है जिसमें उस विरुद्ध में कोई वास्ता ही न रहा जाए। इस बिलगाववाद के प्रतीक सिनेटर राबर्ट ए० टॉफ्ट थे। किन्तु अपनी मृत्यु के पूर्व के आइजनाहार्बर की बिदेस नीति की बहुत-सी बातों को मान चुके थे। गृह-निर्माण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सार्वजनिक हस्तक्षेप की बापटी इस तक के स्वीकार कर चुके थे। ‘टॉफ्ट’ से भी बाबिल बिलगाववादी पैटरसनवादी वास्तु ए० बिदेस का ‘महाडीपवाद’ था। इसका अनुसार यदि अमेरिका बिदेसों के पक्ष में न पड़ती अपन महाडीप में आन्तिमक महत्त्व का विकास कर सकता है। किन्तु ये दोनों बिचारधारार्थ परमाणु दम्पों और पिसिलों की ईजाद के बाद अमेरिका में पुरानी पट खड़ी है।

धातुम हटन नामक एक संघेज ने ‘मिडवेस्ट एट नून’ नामक पुस्तक में मध्य-पश्चिम के मन का अफसोसपूर्ण अध्ययन किया है। उसका बिचार है कि इसका निर्माण साम्यवादीक जनबाधु से हुआ है। वहाँ काई हैमन या बसन्त नहीं केवल है गर्मी और जाड़ा। मैं उन सम्बन्धों के धर्म के अनुपात की भी चर्चा की है जो छोटे मनर्न के बाध-विध जनबाधु का इसका कारण बतलाता

है। निरुद्ध और बार्बर ने समग्र म्यूम्की इडियाना (मिडल डायन में) तथा मॉरिस इतिहास के सर्वोत्तम निये से। इन्होंने अपने-अपने ढंग से इन समुदायों में मध्यम क प्रभाव पर प्रकाश डाला है। इनके कथन का सार यह है कि यद्यपि सम्पूर्ण अमेरिकी संस्कृति ही मध्यम की है फिर भी मध्य-पश्चिम अमेरिका के किसी भी अन्य भाग से अधिक तीव्रता के साथ अमेरिकी समाज को प्रतिबिम्बित करता है। जब कोई लेखक उपन्यासकार कवि यात्री या समाजशास्त्री मध्य-पश्चिम के सम्बन्ध में लिखता है तो वह यह जानता है कि दूसरा प्रभाव मारे अमेरिका पर पड़ता। बहुत दिनों से मध्य-पश्चिम अमेरिका के अन्य भाग। से अधिक अमेरिकी माना जाता है।

तो मध्य-पश्चिम वालों की अपने सम्बन्ध में यह वस्तुता है। वे पूर्व की पश्चिम तथा वा गढ़ मानते हैं इतिहास को मूल के पौरव की बन्ध ठसैया में गिरा मानते हैं। उनकी दृष्टि में मध्य-पश्चिम का धर्म निर्माण ही नहीं हुआ है। अपने धर्म के सम्बन्ध में उनकी धारणा है कि उसमें गजबैटिब और प्रगति धीन धर्मों विचारधाराओं का धेष्ट धर्म मुरलित है। मध्य-पश्चिम वालों ने वा बाहरी धर्मियों से इन धर्म के सम्बन्ध में जो धारणाएँ भाव बना रखे हैं वे ठीक नहीं। धार्मिक निरक्षर ही पक्षित होता है और तब निराशा होती है। इस दुर्दृष्ट भावना की एक धारा यहाँ के साहित्य में बराबर प्रवहमान रही है। जैसे ही मध्यम के धार्मिक और उसके अनुभूत अनुभवों में दूरी स्पष्ट हुई साहित्य में निराशा की धारा प्रबल होने लगी। धीन धर्म में मध्य-पश्चिम के प्यूरिटनवादी न बिना डूबर में बिड़ोड़ दिया। डेरडह तेंडरमन के 'बाइमा बर्ग' धर्मियों में उन धार्मिक संघर्ष का विवेक हुआ है जो मध्य-पश्चिम के स्वयं की समाज के धर्म पर होता है। एडमर को मास्टर्न के धार्मिक धर्म धर्मियों के बर्तन के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिगी है जिसका नाम है 'चुन प्रति विरामपान किया है' इस प्रचार उन्होंने अपनी धार्मिक के विराम समाप्त हो चुका है। इनकी पुरानी धर्म मष्ट हो चुकी है और पुराना नितरी धर्म हो चुकी है।

जिन्नु मास्टर्न और एडमर धर्मियों के यह निर्णय लेने से कुछ जल्दी कर ही है। मध्य-पश्चिम की वह चतुर रचनात्मक शक्ति ने नए धार्मिक साम्राज्य धर्म कर दिये हैं नरी कोड के गाव ही नहीं लगी गई। धर्म भी छोड़े रख द्योनि-दून एडियेसन या गेम्बर्गनिक धर्म के धर्म में यह प्रतिभा प्रगट है। रिच धर्म की धार्मिक धर्म प्रतिभा धर्म विमल नहीं हुई है। नूद विनिधान और धर्म मानव धर्म धर्म धर्मों की परम्परा निरानों और रीगपट में धर्म भी जीवन है। राजनीतिक धर्म में हेरो धर्म जैसे धर्मियों न बिना कर

दिया है कि कैसे एक असामान्य सामान्य व्यक्ति बड़े-से-बड़े पद का सम्मक भार वहन कर सकता है। कन्सास के सिवाही आइजन्हायर ने रिपब्लिकनों के लोभे नेतृत्व को पुनः जमकाये का प्रयास किया है। इंडियाना के केन्डेलबिस्की और इन्डियाना के एडमंड स्टीवेन्सन राजनीति में प्रसफल रहे। किन्तु इन्होंने अमेरिकी परम्परा में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एकठा हो यदि मध्य-पश्चिम को आदर्शवादी धर्म से हम ज 'अमेरिका का हृदय' कहें, न इसे हम अमेरिकी मध्यम वर्ग के 'बैम्बर घोड़ा हॉर्स' के रूप में ही उपस्थित करें। सब तो यह है कि मध्य-पश्चिम प्राकृतिक दृष्टि से ही नहीं वस्तुतः धन्य की श्रेष्ठ दृष्टियों से भी चौराहा है। उसने इसके पुनः और दोष दोनों प्रत्यक्ष साक्ष्य किये हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धन्य कहते हैं कि यह कभी भी 'सोन' नहीं रहा। सभी भी नहीं हैं। इसकी कोई भौगोलिक, आर्थिक, ऐतिहासिक या सांस्कृतिक इकाई नहीं है। इसमें समझ नहीं कि जितने रूप में सुदूर-पश्चिम या पश्चिम-पश्चिम या सुदूर-पश्चिम या न्यू इंग्लैंड ही सोन हैं यह नहीं है। इसके मुग सम्पूर्ण अमेरिकी मुल में वृद्धिमान है।

सब तो यह है कि मध्य-पश्चिम की दो अमेरिका के सम्बन्धों की कई स्थितियाँ हैं। एक समय या जब यह अन्तर्-सीमान्त का। फिर यह भौगोलिक और वापारिक जीवन के विकास का प्रतीक बना। किन्तु 1950 के बाद न तो यह सीमान्त रहा न रातों-रात विकास की प्रतीक बना। वास्तविकता यह है कि मध्य-पश्चिम नाम ही एक अनुपपन्न हो गया है क्योंकि अपने परिवर्तन वाले तो इसे पूरा का हिस्सा ही समझते हैं।

यह अमेरिका का मध्यप्रदेश या मध्यप्रदेश हो गया। यह मध्य अमेरिका हो गया। इस रूप में भी यह भौगोलिक और सांस्कृतिक चौराहा बना रहा। किन्तु संरक्षित प्रवाह गया हो गया। इतिहासकार यह बात ध्यान रखते हैं कि मध्य पश्चिम के निर्माण में अमेरिका का भी पर्याप्त निर्माण हुआ। मध्य-पश्चिम सीमा शान्त के निर्णायक पुनः सुझाव है। यह भी सुझाव ही है कि गृह-युद्ध में मध्य-पश्चिम ने किताब निर्णायक हिस्सा लिया था। गृहयुद्ध को हम उत्तर और दक्षिण के बीच मध्य-पश्चिम के नियंत्रण के लिए युद्ध की संज्ञा भी दे सकते हैं। मध्य-पश्चिम के अन्तर्गत से कपट बचाकर ही उद्योगपतियों ने धारित के भौगोलिक विकास की गति थी।

किन्तु 1950 के बाद जिस नव अमेरिका का उदय हो रहा है मध्य अमेरिका की धन-मूल्य उससे बहुत मिलती-जुलती है। व्यापारियों का प्रभाव फिर से बढ़ा है। राष्ट्रपति आइजन्हायर के हृदय में भी उनके प्रति बड़ी स्नेह है जो राष्ट्रपति घाट के मध्य में था। धन की बैरी ही देस-मेन है और जीवन के उद्देश्यों के प्रति बैरी ही धन्य-वर्गी है। यदि आप मध्य अमेरिका का सुदम मध्यम

करें तो आपकी विदित होगा कि उसमें भी सम्पूर्ण अमेरिका की ही भाँति कल्याणिक के प्रति मुखाब्ध अभिप्रेतन की भावना मध्यम की रहन-सहन और विचारपारा पर जोर, उपमगरी रहन-सहन के नए ढंग पक्षोत्तियों से भाई-भारा स्थापित करने की भावना अलग-थकी समने बाज विचारों के प्रति असहिष्णुता नैतिक मानदंड के प्रति अन्धेरेगर्दी मिलेगी। इस प्रकार यदि न्यू इंग्लैण्ड अमेरिका का आभिजात्य मस्तिष्क का प्रतीक है तो मध्य-पश्चिम जन-संस्कृति का भीतर।

न्यू इंग्लैण्ड की भाँति इसमें बाई टिकाऊ सामाजिक अभिजातवर्ग न था। मध्य दली में भी न था। इनका लोकनायक व्यापारी है किन्तु इस अभिजात की बात इतनी तेज है कि उसमें बिना सामाजिक बग की जगह देने की कुरसत नहीं है। ये अमेरिका की भाँति इसकी मुख्य विशेषता यही है कि यह इबमन है। धन धानपास के सांस्कृतिक अमलामु का बटीमोटर है। धन अमरिका न जहाँ एक घोर इसे घाबर का पाया पहनाया है वहाँ इस नीचा दर्जा भी दिया गया है। किन्तु यह अपनी ही गति से अपने घादों की घोर बना गया है। उसे अपनी बात में इतनी कुंठ ही वहाँ है कि वह रुककर रोमर्य न बार न विचार करे। अमेरिकी जीवन की असहिष्णुता का चिह्न हो गया है। आज वह 'मपटन पुर्य' का कण्ट-विन्दु है। बाहे पच्छा या बुरा यह अमेरिका न धर्म और उसके भविष्य का पर्याप्त रूप में चाहक है। यदि मध्य अमेरिका बिना प्रभ्यता का अनाकर्षक घोर दुष्प्राप्य प्रतीत हो तो उसे स्वीकार कर लना चाहिए कि यह बात सारे अमेरिका पर लागू है।

त्रिम दक्षिण कहन है बाल्मन में उसमें तीन उपमगरीय संस्कृतियाँ हैं मुहुर दक्षिण ऊपरी दक्षिण (राज्यों की एक सीमान्त पट्टी) और दक्षिण-पश्चिम। मुहुर दक्षिण एक प्रमती राज बना रहा। यहाँ इति ही प्रमान है। यहाँ या तो सीधा गारा न मुखाब्ध बहुमव्या म है (जैसे एक्कवस्ट कष्टीय मं) या फिर उनको अपनी मर्या अक्षय है कि 'महा मय बना है। मोटे घोर पर दय शेष में आख्या अमाशमा मिमीगिनी मादय केरालिना मुदियाना और पनोरिशा दामिन है। बर्जीनिया नाय केरोमिना कंटकी घोर टेनेसी ऊपरी दक्षिण का सीमान्त पट्टी म दामिन है। घोर टेनमान आरनाहोमा तथा अरनन्सास एन इगरी सीमान्त पट्टी है जो दक्षिण-पश्चिम की बगल में है। अमरिका अमेरिकी इतरी तीनों का दक्षिण कहन है। पर यह दक्षिण की दफाई थी अब रागिन हो रही है।

दक्षिण के मत की अविज्ञान विशेषार्थ जून की विरामन है। पुराने धर्म बना बग के एक व्यापारी दक्षिण की बनना का भी। यह पुनानी 'ग्लानिक' का इति। इनका उद्यम बगल के गेनों घोर बनाना में हाता। इनका धार्मिक

धाधार प्वाटिशन होते भीर सामाजिक धाधार बास प्रया रहती । इस स्वप्न की कास्मनिक ज्वाला कैथूम और फिट्जह्यू के राजनीतिक सिद्धान्तों में बसती रही और उनके अनुयायियों ने एक ऐसे दक्षिण को देखा जिसकी अपनी एक प्रसन संस्कृति है । किन्तु गृहयुद्ध और पुनर्निर्माण ने पुराने धमिजात बग को समाप्त कर दिया और प्वाटिशन प्रणाली भी इसी मटर में खस्त हो गई । दक्षिण को गृहयुद्ध का गहरा मूक बुकाना पड़ा । सारे युद्धक कट मरे प्रापिक दिवाला पिट गया युद्ध के बाद बल्लभ करने वाले सैनिकों की स्मृति अब भी ताजी है । ज़प्टाबार और बुशा ये सब उसी युद्ध के परिणाम हैं ।

सन् 1860 में हेनरी ग्रेवी ने 'नये दक्षिण' की वर्ण प्रारम्भ की । तब से 80 साल हुए इसकी वर्ण होते । पर अब भी यह 'नया दक्षिण' मूठ की धोर ही देखता है जिसमें मूठ के प्रति पान और वीरक की भावना है । इसमें उत्तर के प्रति बुद्धा है । उत्तर वालों को यह अब भी बिजेता के रूप में ही देखता है । इसमें दास प्रथा के प्रति अब भी अपराध की भावना है । हस्त्रियों से बिर जान का मय अब अब भी बना है । दक्षिण ही एक ऐसा भाग है जिसमें वतमान की बतना और भविष्य की सम्भावनाओं के स्थान पर मूठ के प्रति मोह है । यह यह नहीं देखता कि उसमें निर्माण की कितनी शक्त है बल्कि यह मूठ के प्रति वीरक और एक मय से पीड़ित है ।

मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं कि दक्षिण का प्रकृति कोई मन है या नहीं एक मन है । अब दक्षिण की वर्ण बसती है तो कोई पूछ सकता है कि किसका दक्षिण ? ग्रीको कैलिहुर मजदूर या साम्री का दक्षिण या गोरे कपड़ा मजदूर का दक्षिण या दई क किसान का दक्षिण या किसी भीर बितरण के पैसे में लये मध्य-वर्ग का दक्षिण या कोकाकोला या इन्फार्मर कम्पनी के प्रबन्धकों का दक्षिण या पैपलहिल जार्जेंटिस जिसे सफ़िश वास्टिन नामन और फ़्येट बिले के विश्वविद्यालयों का दक्षिण या बरबाहों मजदूरों के सबटनों का दक्षिण या मजदूर बानों का दक्षिण को प्रतिबिम्ब प्रथमित धन्य साम्यताओं को बुनौती है ? इसका मतलब यही हुआ कि दक्षिण तेजी से बदल रहा है । यहाँ भी दृष्टिकोण और वर्ग-व्यवस्था भी उभी स्थिति में है जैसी अमेरिका में साम्यन नहीं । दक्षिण कहने से भी कुछ सामने आता है उससे धार्मिक छिपा ही रहता है ।

बगों के बीच बिसलाह एक रूप गया नहीं है । पुराने दक्षिण में भी प्वाटर धमिजातों और मोक्रान्धिक किसानों के बीच बिसलाह था । इनमें पहला सर वास्टर स्कॉट लार्ड बाइरन और कार्मिहिल के संगार में रहता था । यह ब्रिटेन के साम्यवादियों के जीवन और विचारों की मज्ज करता था । प्रायः एक ही पीढ़ी का उसका धामिजात था । दूसरा बग बहुत ही लम्बा ऊँची और

जैसमनिपन था। पृथुतुड में इनकी हार ने इन्हें एक कर दिया था। किन्तु पुनर्निर्माण के पत्रस्वरूप एक दूसरे वर्ग का उदय हुआ जो गोर्डेन सेडो और बैटरसन जैसे शिक्षित गाने रमाने युक्त दाताओं का था। इनका ध्येय सहिष्णुता था। इनमें मिह की साम्यवादी साहचर्यता नहीं बल्कि सामझी-जैसी सामाजी थी। ये उत्तर के पूँजीपतियों के साथ धूमधिसकर काम करते थे। सी० बान बुडबर्ड ने बहु दण्डायेड भी बना दिया है जिसमें इन्होंने रिपब्लिकनता से गुप्त मोड़ दिया था जिसके पत्रस्वरूप पुनर्निर्माण के कारण उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए प्रसिद्ध ऐस का चुनाव हुआ। जब हम सामझी के गोरे अमेरिकनों में इनकी गता के विरुद्ध बगावत की तो हम बगावत में दलितों पापुनिसम का रूप धारण दिया। टाम बोटसन और देन टिलमैन-अमेरिका इनका नेता थे।

मुद्र पुर के जैसमनिपन दमाजनों की परम्परा में ही बोटसन के दिनों के पोपुलिस्ट भी है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि पोपुलिस्टों की राजनीतिक और धार्मिक रुपरेखा में अनुसार आनिवाद का रूप धारण कर लिया। बोटसन और माँग दोनों दलितों की श्रुति से धार्मिक पीगलिक चरित्र बन गए हैं। उनका पोपुलिस्ट नकारात्मक था जिसमें उत्तर के व्यापार और धन के प्रति विद्रोह की भावना थी। उनकी नास्तिकता का स्पष्ट विरोध में था इनमिए परिस्थिति का बचकर ये (बोटसन के लिए) उनका आतिवाद सस्ती नेता विरी और (माँग के लिए) पापुलिस्ट सस्ती नेतागिरी में बदल जाता मुद्रिम न था। बॉयसन एक दण्डवी तक पहुँच कर भी से जाबिया के तबनरों को छोड़ता रहा और माँग मुद्रियाना के अपने साक्षात् पर निरहुता रूप में जमा रहा। इन दोनों और इनके अनुयायियों के चरित्र यह बतगाता है कि दलित भावों का पराजय था। एक स्मृति का चित्ता यहूत मूल्य चुकाता गया था। जब जैसमनिपन दमोजों का स्थान पोपुलिस्ट ने नहीं बल्कि दलित के उत्तर दमाजनों में दे दिया है। अनुयायियों विचारधाराओं अशांतों विधानमंडलों स्थानों सामझी में इनका प्रमुख है। आनिवाद के प्रति इनका दृष्टिकोण में धारणा है और धार्मिक प्रश्नों पर भी इनका दृष्टिकोण कड़ा नहीं है।

जिस वही 'विपगाई' कहते थे उसमें सामाजिक परिचयन बड़ी ठेकी से था रहे हैं। एक बतगाता है कि 'आई' परिचयन आ रही है बीगाये पूरब धा रहे हैं सीलो उत्तर आ रहे हैं सीलो दलित धा रहे हैं और गंगा देश में धा रहा है। 1910 में 1920 के 2) बनों में दलितों में कृषि के काम में गये गानों की संख्या बचन मात्र में पत्रर बलीग मात्र हो गई। जनी न्यू डीम और द्वितीय विरुद्ध और धार्मिक नेता तथा दलितों के उत्तर जाने के परिधामग्रहण

बनता घोर देव

बनता धीरे देव
वर्तमान पचासे के बीच यक्षिण में ध्रुवने परिवर्तन हो गए हैं इसका ज्ञान
"नौ नौ ब्रह्मा" से हो सकता है।
...युगमयिक बन गया है। जिसकी धीरे सस्ते
... एक मय

वर्तमान पञ्चायतों के बीच दक्षिण में स्थित है।
 विदाह प्रान्त बिहार से हो सकता है।
 पुराना बरिह दक्षिण में प्रोचामिक बन गया है। बिजली और सस्ते
 मजदूरों के कारण यह उत्तर से उद्योग दक्षिण में खिंच रहा है। एक नया
 मध्यम वर्ग में रहा है जिसे भूत के समय के भूत रहे हैं। यह दक्षिण
 का प्रतिनिधि बरिह प्लांटिंग का विमान या प्रवाप्त का राजनीतिक नहीं
 बरिह स्थानीय व्यापार मंडल का व्यक्ति है। 1950 की गणना में दक्षिण में
 (टेक्सास को लेकर) सात गहर—होस्टन न्यू यॉर्क प्रतारिता इलाम मूर्धनिले
 बरिहम और सान प्रोटोबियो—एसे हैं जिनको प्राचीन पाँच लाख से अधिक है।
 सपनयरी जीवन भी दक्षिण में प्रवेश गया है। कारखानों के प्रागमन से यह
 यह दक्षिण पर एक दल का प्रमुख नहीं रहा। कारखानों के प्रागमन से यह
 मजदूर भी मजबूत होने लगे हैं। इसमें जितनी सफलता मिलेगी उतना ही
 प्रतीक अमेरिकी गौरा सजग होगा और फिर वह जातिवाद का विकार उठनी
 सफलता और सफलतापूर्वक न हो सकेगा।
 सफलता और सफलतापूर्वक न हो सकेगा।

संघ ने राष्ट्रों के अधिकारों के विरुद्ध कठिण नागरिक अधिकार दिये हैं।
 कठिण मुद्राओं में सुप्रीम का ने व अधिकार मान लिए हैं। फलस्वरूप मुद्रा
 हस्तियों को शिक्षा प्राप्ति के क्षेत्र में संघ बन के प्रभुत्व मिल गए हैं। प्रभ
 'प्रभुत्व पर बराबर अधिकार का पूर्णप्राप्त हो गया है। 1932 से 1952 तक
 के सुविधा काल में इमोजेक्ट पासन रहा। फलस्वरूप बलियन के बहुत-से सिनटर्न
 और कांग्रेस सदस्यों को पासन का प्रस्ताव अनुमत्त प्राप्त हो गया है। जस्टिस
 से जो एम० ब्लैक द्वारा किया गए सुप्रीम कोर्ट के बहुत-से फैसलों से बलियन में
 प्रशासन का एक नया पर प्रगतिशील तत्त्व उभरा है। यह पोपुलिस्ट प्रान्दो
 तन और न्यू डील के सम्मिलित परिणामस्वरूप जन्मा है इसमें बलियन की
 दुर्गन्ध नहीं है। प्रस्तावों की सास मिट्टी में पैदा होने के कारण इसमें एक
 प्रकार का नैसर्गिक कड़वापन है जिसे रूप में पकड़ मिट्टी में होता है। बर्बा
 निया राजनीति के क्षण व प्रभुत्व उभरा नही रहा बसे जेफरसन मीड
 इन मोनरो नाम देकर और एडमण्ड रण्डोल्फ की जम्ममूनि बर्बादिया में ही
 था। प्रभुत्व बलियन की राजनीति का केन्द्र सीमा के धोद्योयिक राष्ट्रों जैसे
 केन्टकी टेनेसी जार्जिया और प्रस्तावों में सहाई नहीं जा रही
 है। प्रभुत्व बलियन की सबसे महत्वपूर्ण सहाई नहीं जा रही
 है। प्रभुत्व बलियन की सबसे महत्वपूर्ण सहाई नहीं जा रही

हमारे देश में भी राजनीति का केंद्र सामान्यतः शक्तिशाली व्यक्ति पर रहता है। यह दक्षिण की राजनीति में बसा गया है।

हाथी है। दक्षिण में अराकाप के किसी मुकदम की सुनवाई के समय किसी जूरी को या अराकाप के कमर के बाहर घूमने-फिरने जाने को देखिए, दक्षिण के न्याय में मुकदमों को या दक्षिण की किंगी राजनीतिक समा में भीड़ को देखिए, किसी दक्षिण के कारखाने में जहाँ हड़ताल है वहाँ के शोर को देखिए, या तानिबार की रात का बाजार में गये आदम्य आपकी वास्तविक दक्षिण की संस्कृति के दर्शन मिलेंगे। दक्षिण का घसमी स्वरूप जितने माना रूप में देखिए में मिलेगा अन्य किसी देश में नहीं। राजनीति का प्रेम यहाँ अधिक प्राथमिक रूप में घोर गारे रक्त अधिक प्रारम्भिक रूप में मिलेगा। गोरे नागरिकों की शक्ति को स्वतंत्रों के पावेबन्ध-विरोध के विरोध में बनी वह यहाँ की स्वाधीनता की प्रतीक है। इसी प्रकार दक्षिण की उदारता भी अपनी दक्षिण उपज है। उसमें प्राथमिक जलना घोर मिश्रण की भावना का पुट है। इस पचासे के मध्य में जिनकी लड़ यह दक्षिण में भी अन्य किसी देश में नहीं। यहाँ मध्य के भाग पर आगुद रहता जितना मुश्किल का उठना सम्भव नहीं नहीं।

तेजी से होने वाले परिवर्तनों के कारण एक नया दक्षिण जन्म ले रहा है। औद्योगिकरण और मीलों भागों के महाकल्पन के प्रभाव के फलस्वरूप दक्षिण की एकमतता बढ़ रही है। यद्यपि स्वतंत्रों के एकीकरण के विरुद्ध समान रूप से गहरे तीव्रता भी परन्तु अब एकी संभावना नहीं कि भविष्य में किसी प्रकार पर गृहयुद्ध की भाँति इस प्रकार की एकता का भाव रहेगा। जैसे जैसे दक्षिण प्राथमिक औद्योगिकीकरण और लघु पार्टी-सम्बन्ध से दूर होता जाएगा उसे लघु उत्तराधिकार बनने करने पहुँचे और स्वायत्तक भावों से उसका काम न बन सकेगा।

ग्रीष्म के भी कुछ बिन्दु मजबूत माने जा सकते हैं। पतापट्ट हफ्टर के दिशि जन सक्ति और ग्रीष्मम मिटी के स्थानीय दक्षिण के स्वरूप में सम्प्रदाय में अग्रिमता में दक्षिण के लिए गहन में रक्त समुदाय प्रतिबिम्बित हुआ है—विशेष कर दक्षिण क्षेत्र में। दक्षिण में जन का स्वरूप प्रायः भावों से अधिक बढ़ावा। अब बढ़ भी बीता वह रहा है। वहाँ की शक्ति सज्ज है—मीलों गरीब गारे सम्प्रदाय पुगने अग्रिमता के बने-गये (कभी-कभी दक्षिण सम्प्रदाय पर सामाज्यवाद विरोध हुए) और पुराने अग्रिमता के भाव। इनमें जितना विरोध दक्षिण में रह्यो हुआ है उतना सम्भव नहीं नहीं। अब ये बर्ग भी रिपन रहे हैं। तेरे मीलों भी हैं का सम्प्रदाय में पहुँच रहे हैं। मजदूर वर्गों में गरीब छोटे सम्प्रदाय भी हैं। पुगने अग्रिमता के भाव अब सम्प्रदाय में गिर रहे हैं। वरीयों उन्हें और मीलों फिर जाने का अवसर है। ऊँची सामाज्य के वर्ग में सामाज्य भी तेजी से हो रहा है। 1930 से 1943 की चौलाई द्वादश में सामाज्यवाद के स्तर में जिनकी तेजी से बढ़ि हुई है उतनी तेजी से अन्य किसी भाग

में नहीं।

इन सब के परिणामस्वरूप दक्षिण में राजनारमक साहित्य बड़ी तेजी से उठा है और अब वह अमेरिका के श्रेष्ठ साहित्य की पाँठ में आ गया है। सब तो यह है कि दक्षिण का पुनर्जागरण मध्य-पश्चिम की बीसवीं सताब्दी के प्रारम्भ के साहित्यिक आन्दोलन और न्यू इंग्लैण्ड के 'मोस्टेन डे' के समानांतर बसा है। एनेम-सासगा से टॉमस उसके विविध फ्रान्कलर और मूडोरा बेस्टी तक राबर्ट पेन बारेन और टेनेसी इन सब में क्षेत्रीय संघर्ष और परिवर्तन के उत्सम्बर होने वाले लेखक के प्राग्भारिक प्रभाव की अभिव्यक्ति हुई है। मध्य-पश्चिम में भी ऐसा ही हुआ था जब डेवड, डेरड्ड एण्डरसन और सिम्मेयर लेबिस ने अपने घास-घास के कृषि प्रभाव और छोटे नगरों के संसार को औद्योगिक और बड़े नगरों के संसार में बदलते देखा था और इस परिवर्तन की चेतना की अभिव्यक्ति की थी। दक्षिण के लेखकों के सम्बन्ध में एक बात है और वह यह कि जब कि वे अतिशय से नये संसार में बकते जा रहे हैं अपने श्रेष्ठ के इतिहास के प्रति जागरूकता के लिए भी वे बाध्य हैं। समानता को और आगे ले जाएँ तो कहेंगे कि वहाँ भी साहित्यिक पुनर्जागरण उसी काम में हुआ जब कि औद्योगिकरण के प्रारम्भ के कारण न्यू इंग्लैण्ड के लेखक और विचारक अपनी काल्पनिक परम्परा और मानव व्यक्तित्व के पुनर्मूल्यांकन को बाध्य हुए थे।

जब संस्कृति की कल्पना तेजी से बदलती है और कोई वस्तु जिसे हम चिरस्थायी समझते हैं तेजी से विनीत होने लगती है कला और साहित्य का उन्मुक्त प्रस्फुटन हो सकता है। हानि के इसी दर्ब ने दक्षिण के लेखकों को दक्षिण और समय के प्रति जागरूक बना दिया है। इसीलिए वे समय के विभिन्न स्तरों पर जो एक-दूसरे से गिरावट पुष्क है सिद्ध रहे हैं। गृहयुद्ध के बाद जो दुःखान्त घटनाएँ हुई और जो तात्कालिक परिवर्तन हुए और उससे उनके मन में जो हिमवृत्ति बनी उसकी और अमेरिकी और बिदेसी दोनों आलोचक प्रभावित हुए हैं। फ्रान्कलर के उपन्यासों में दक्षिण के अण्डराब और गर्ब के प्रति वही भावना है जो हाबोर्नी में प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड के अण्डराब और गर्ब की भावना के प्रति है। फ्रान्कलर ने अपने जीवन में प्रतीक रूप में दक्षिण की स्थिति-व्यवस्था के प्रति चेतना और उसके भावनात्मक रूप को पुनर्जीवित करने की चेष्टा की थी। किन्तु उनका न्याय एक दर्शनीय निष्कर्ष से ठँबा है क्योंकि अपनी प्रक्रिया में वह मानव की स्थिति के बिस्व जनोम मूल्यों तक पहुँच सका है। यही बात राबर्ट पेन बारेन के उपन्यासों विशेषकर 'घास बि किंग्स देन' पर लागू है। यही बात टॉमस उसके के सरकल बर्बों के सम्बन्ध में भी एक दूसरे रूप में लागू है। यावद उनके ने अपने पिता की जो वलाधिक प्योर की

बहु उमरी अपिन्नार के सिद्धांत की खोज भी। यह खोज इसीलिए घोर गहरी हो गई क्योंकि पुराने ब्रिचन की संस्कृति घोर उत्तक मूल्यों से उसका सम्बन्ध बिगड़ गया हो चुका था। दक्षिण में एक लक्ष के रूप में लसकों के मन पर अबस्य अपिन्नार कर रखा है जिसका किसी दूसरे लक्ष का अपने सैनिकों पर नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने सैनिकों से कहता है कि या तो मुझे स्वीकार करो घोर पूजा करो नहीं तो मुझे पत्नीकृत कर दो। यदि मुझमें खूबतर विगड़ने हो तो मेरे बारे में धन्य मिला।

फिर भी मजदूर बात है कि दक्षिण के वर्तमान सैनिकों में जो बड़े-से बड़ा भी है वह मिलियन स्मिथ की भाँति सामाजिक यथार्थवादी नहीं है। स्मिथ ने अपनी पसन्द 'कट्टेज फूट' में जाति-व्यवस्था घोर पूजा की विरुद्ध क कहन की कड़ी दिल्पा की है। इसके एक मनोभावनात्मक गतिरोध पैदा होता है जिसमें नीचा घोर स्वतः दोनों जातियाँ का सामाजिक विकास रुक जाता है। मैंने प्यारनर बारेन उन्हें, यूडारर कस्टी धार्मिक जिन सैनिकों का बिक्र किया है उन्होंने इसका समन अवलोकन करने दिया है—बुरा प्रतीक या धर्म धर्मनिष्ठ सैनिकों में। वे जिन सैनिकों में बिखरते थे वह पाप से मिले हैं। उनकी समानता हम पार बासीन तुलना घोर डाँटाबस्की से कर सकते हैं जिन्होंने एक धर्मनिष्ठ सैनिक में सामंती समाज का चित्रण दिया था जो उनकी भाँटों का नामने ही लुप्त हो रहा था।

यद्यपि दक्षिण के सैनिकों का मन अब भी 'पुराने ब्रिचन' से प्रेरणा लेता है फिर भी उनकी रचनाओं में एक प्रकार का विप्लव है घोर वह विप्लव धार्मिक दक्षिण का विप्लव है। गरीबी घोर जाति की समस्या लुप्त नहीं हुई है हाँ धार्मिक घोर राजनीति उन्मत्ति के कारण सब अवसर नहीं है। बहुत से जमीन बान्धन बन गए हानिग गीरा घोर हानिगों के अवलोकन मकमी अवलोकन था नहीं है। फिर भी विनीतिगो सम्बन्धों धार्मिक दक्षिण केरोनिना जैसे राजन भी है जहाँ धार्मिक भी गरीबों को हानिगों से बचाने का भय रहता है। हमने उनमें एक बाँटबन्धों की भावना पैदा होती है जिसके कारण वे 'विदेशियों' घोर 'दक्षिण' में ही नहीं हानिगों घोर उनमें बाँटने में भी पूजा करने हैं। इन पूजा का अवलोकन भी होता है जैसे धार्मिक घोर जाति-व्यवस्था को स्मरण करने में। दक्षिण का गरीब घोर हानिगों का सम्बन्धों में एक प्रकार का धार्मिक-विप्लव का पैदा भी है जिसका आधार बुनियादीभूत धार्मिक अवलोकन घोर धीन धार्मिकता योभी की धार्मिकता को बड़ी धार्मिकता का बीच मंजरी है।

हिंसा और माफूसी के साथ-साथ दक्षिण के जीवन में एक संघर्ष भी है। इस क्षेत्रीय विभेद के विमल में उसे छोड़ देने का मेरा इरादा नहीं है। दक्षिण का जो सांस्कृतिक पुष्प है उसने साहित्य का रूप नये लिये इसका भी कारण है। दक्षिण में सांस्कृतिक संघर्ष की परम्परा पुरानी है। यह दक्षिण के बस्तामों पत्रकारों राजनीतिक विचारकों से और पीछे अंग्रेजी के रोमांटिक स्कूल तक जाती है। इसी परम्परा में पुराने दक्षिण का पालन-पोषण हुआ था। दक्षिण के प्लान्टेशन (Plantation) के स्वामी सचमुच बोझों की पीठ पर खड़े थे। दक्षिण में यह ऐनिक परम्परा अब भी बनी ही है। सेना में धातु भी दक्षिण के छात्रों की संख्या बहुत अधिक है।

इस सुस्पष्ट जीवन के प्रत्यक्ष डेन की स्मृति के कारण दक्षिण के कुछ लोगों को अब भी भ्रमावृत्ति है कि दक्षिण क्षेत्रीय कामुनों की न मानकर संघ से भागे प्रत्यक्ष रूप में रह सकता है। दक्षिण अपना इतिहास नहीं भूल पा रहा है। उसे अब भी याद है कि वारों के मामले में पैर पीछे हटाने के स्थान पर उसने युद्ध की विमोचिका को मसख किया था। उसे अब भी याद है कि पुनर्निर्माण के काल में उसने अपने पैर बसाये रखे और उत्तर के रेडिकलों को परास्त किया। यह सोच सकता है कि नागरिक अधिकारों और पार्ष्वहीनता के इस तीव्र संघर्ष में वह अपनी स्वायत्तता बनाये रखेगा। किन्तु वह भूल जाता है कि पार्ष्व दक्षिण की कोई पुरानी संस्था नहीं है। बिमको के कामून तो अभी हाल में बने हैं। इसलिए भावचर्य की ही बात है कि इतिहास के प्रति एक इतनी नापक्व संस्कृति इतने धर्मिहस्तिक सुझाव में है।

इस मुताबिक से एक बात का ठो मुताबा हो ही जाता है कि क्यों दक्षिण ने जिसने इतने प्रथम श्रेणी के उपन्यासकार नाटककार कवि और समालोचक उत्पन्न किये—कसहोउन के बाद कोई प्रथम श्रेणी का राजनीतिक विचारक पैदा नहीं किया। (बस्टिस ब्लैक को मैं बिधि विचारक मानता हूँ राजनीतिक विचारक नहीं।) राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर विस्तार करने के लिए आवश्यक है कि अपनी समस्याओं पर सीधे विचार किया जाए, जिसके लिए भाव दक्षिण में बातावरण ही नहीं है। पिछले कुछ समय से दक्षिण में जो बौद्धिक प्रक्रिया है वह संवाद (dialogue) की नहीं बल्कि एकतारा (monologue) की है। संका निवृत्ति (persuasion) की जो कलाएँ हैं उनका स्थान दक्षिण में भ्रमकार-वास्तव और सक्रिय-वास्तव ने ले लिया है। भाव फिर दक्षिण से राष्ट्र के राजनीतिक और सामाजिक बंधों में बिलीन हो रहा है। उसकी रचनात्मक साहित्यिकता और क्षेत्रीय सांस्कृतिक शैली भी मध्य हो जा सकती है।

दक्षिण-पश्चिम की संस्कृति को एक और दक्षिण की और दूरसे और बड़े

मैदान बड़े रेगिस्तान और बड़े पहाड़ों की संस्कृति ने घेर रखा है। इसके एक ओर सुदूर दक्षिण की एक-कसमी व्यवस्था और गोरों का प्रभुत्व है तो दूसरी ओर मध्य-पश्चिम के पेड़ों के मैदान और तीसरी ओर पहाड़ों के जंगलों के मैदान हैं। इसकी धर्म-व्यवस्था के आधार हैं—तेल, पशु भूमि और टेक्सास और आर्जनाहोमा के नए उद्योग पंपे और पर्यटन तथा ग्यु मैक्सिको एरिजोना और दक्षिण कैलिफोर्निया के निश्चित कृषि प्रदेश। दक्षिण से हमें महाराष्ट्र और फुलव का लौहदर्य मिला है। इंडियनों की भूमि ही इसे नहीं मिली बल्कि इसने उनकी कला भी बिरामत में ली। स्टेमिज संस्कृति और उसके मिश्रण वास्तु-कला को हमने पश्चिमी बड़े मैदान और पर्वतीय प्रदेश से लिया है। अपनी पशु भूमि और मरुभूमि से हमें स्थान और विस्तार की भावना मिलती है। इन सबके सम्मिश्रित प्रभाव से यह प्रदेश अपनी एक शैलीय संस्कृति विकसित कर रहा है। अभी उसका स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं हुआ है पर वह निश्चित भव्य हो रहा है।

आर्थिक विस्तार की दृष्टि से यह प्रदेश अमेरिका में सबसे तेजी से घागे बढ़ रहा है। हमें 'बूम' की भावना का फिर से जन्म हो रहा है। मध्य पश्चिम में शुरू में जैसा बूट हुआ था उसकी याद यात्र इस क्षेत्र को देखकर ताजी हो जाती है। जमात हाऊस और सास एग्रेस के पूंजीपतियों का जमात वैसा ही है जैसा तिकापी क्रीकमैन्स के पूंजीपतियों का पच्चीस वर्ष पहले था। अमेरिका के आधुनिक युग के घन-मुबेरों में कुछ टेक्सास के तेल पतिया की मांगना है। दक्षिण-पश्चिम का विस्फोट है कि सब-कुछ सम्भव है और बार्ड की घटना घट सकती है।

पुराने मुनेरों के रूप में व्यक्तिवाद का सम्भवतः यह आग्निधि बढ़ा है। यह व्यक्तिवाद मार्क्सवादी उपयोग और शक्ति के नियंत्रण के विरुद्ध बड़े दिनों की घण्टा के रूप में प्रकट होता है। इसकी सबसे बड़ी नीति तब हुई जब वाशिंगटन में मुर्दाबाद का एक पर रगरगर राज्य के नियंत्रण से हटाकर तेल के संसारों का निजी तत्व में दे दिया। मजदूर जितने घटघटित इस क्षेत्र में हैं अमेरिका में घायल ही नहीं हैं। इनका कुछ तो यह कारण है कि स्टेमिज भारी प्रसारीयता और कृषि मजदूरों का तत्व कुछ नीचा है और कुछ यह भी कि दक्षिण-पश्चिम आधा सीमांत प्रदेश है जहाँ मजदूरों को संपर्कीयता बँधे हो बम होनी है।

ऐतिहासिक सीमा प्रदेश और कृषिगत उद्योगों के घन-ऐतिहासिक मेन के कारण बनी राष्ट्रीय विरोध के हतान गुह दान है। नवाबों भुंदपो और

जनता घीर देख

होपी¹ की सौम्यपूर्ण संस्कृति को उद्योगों का धातमण सहना पड़ा। फलस्वरूप एथनिक जातों के लिए यह बड़ा उर्वर प्रवेश सिद्ध हुआ। टेक्सास के बड़े मैदानों के पशुओं और चरबाहों को लेकर एक समृद्ध लोकवादी का निर्माण हो गया। हाँ जब इंडियन स्वेजी घीर जेमुइटी तथा चरबाहों का स्वाम पशुओं, वनस्पतियों बड़े मीनम फ़ायों सेना के हवाई यद्दों घीर हवाई जहाज के कार खानों पारामरहू होटलों बिघास संरक्षण प्रतिकर्तों घीर पलविद्युत-बीबों ने ले लिया है।

सबस नये सीमा प्रवेश के रूप में दक्षिण-पश्चिम एक नये घीर अधिक व्यक्तिमानी लोकतान्त्रिक के पालन का बाधा कर सकता है पर बात ऐसी नहीं। किन्तु राष्ट्रीय अनुभव की पुनरावृत्ति का धर्म कोई चकती नहीं है कि राष्ट्रीय जीवन-शक्ति की भी पुनरावृत्ति हो। यह भी हो सकता है कि जैसे ट्रैडिशन मशीन के पुर्जे बार-बार घूमते हैं वैसे ही मृत की पुनरावृत्ति हो। पीछे के सामाजिक संघटन की घीर पलटा लाया जा सकता है। घाब को परिस्थिति है वह मूल सीमान्त अनुभव में न भी। इसलिए यह बिघटनकारी भी सिद्ध हो सकती है।

टेक्सास की परिस्थिति ऐसी ही उलझन पैदा करती है। सारे अमेरिका में टेक्सास से अधिक शक्ति स्पष्टि प्रसिद्ध घीर शक्ति प्रदेश दूसरा कोई नहीं। टेक्सास ऐसे क्यों है घीर क्या है को स्पष्ट करने के लिए बड़े प्रयत्न हुए हैं परिणाम यहाँ का मुख्य शब्द 'स्केन' है स्वाम घीर पूँजीवाद यहाँ शाकर मित है। इसीलिए यहाँ को कुछ है वह बड़ा है। टेक्सास अधिक घीर से बिश्वास घीर टडाके के साथ बोलते हैं। उन्हें स्वर्णयुग में बिश्वास है। घन है तेजी से पैदा करते घीर बाइम्बर के साथ लच करत है। टेक्सास के एक अनिष्ट घमेली ने बताया है कि पिछले पचास में केवल हाउस्टन में 400 मिलियन² में। इनमें से बहुतों ने अपना जीवन चरबाहों या धर्म यजदूर के रूप में खूब किया था। तेज घीर 'बूम' के कारण ने घमीर बने। रोल्फ राइस काटों घीर हीटों के प्रसरण में खलौने सबको पछाड़ दिया है। ये बुद्धिवाद के विरोधी हैं। (यहाँ के एक पत्रकार ने बड़े गर्व से कहा कि टेक्सास ने कोई कवि पैदा नहीं किया) इसका कारण है यहाँ अधिजातधर्म की परम्परा का घमान। इनके राजनैतिक भाव भी कल्पे हैं। घन घीर शक्ति यहाँ इतनी तेजी से धाई कि लोकतान्त्रिक लिए प्रति धावरयक सहिष्णुता के विकास का पर्याप्त धावर ही नहीं मिला। टेक्सास बयस्क होने से पूर्व ही बनी हो गया। प्रीडता से पूर्व ही इसमें बिश्वास था गया।

1. Hopl.

2. Millionaire.

एक दूसरा दक्षिण-पश्चिम भी है—स्पेनी और इटालियों का। यहाँ स्पेनी संस्कृति के गढ़ हैं। पर प्राकृतिक भौगोलिक सम्प्रदाय का निर्माण हुआ है। यह स्पेनी संस्कृति भी इटालियन संस्कृति के लंडन पर बसी थी। इस दक्षिण-पश्चिम के जीवन का गप देखास घोर धोकसाहोया के बूमबासे दक्षिण-पश्चिम से भिन्न है। इनके पास न मेल के नुएँ हैं न यगनबुम्बी मकान। इससे जीवन की बलि संद—घागम घोर प्रमत्त की है। इटालियों की मनोबिकारभूयता स्पेनी कैमोतिकका की उरुछा पहाड़ों रमितानों का ऐन्वय इकमें है। डी० एच० मार्सेम मेरी घास्टिन एडमंड बिस्सन घोर जे० बी० वीस्टन जैसे भिन्नकों के लिए इनकी अपनी प्रान्तिहासिक घोर रस्यबासी है। इसी ने डेरों लेखकों का अपनी घोर साक्षित किया है।

इसी प्रकार मुरूर पश्चिम में भी भेद घोर बिरीध है। प्रारम्भिक काल के 'वाल्डर' की मनोवृत्ति अभी भी यहाँ घप है। दक्षिण-पश्चिम की भाँति यह भी मानता है कि जब कुछ सम्भव है। इसमें प्रकृति का सीन्वय है। पहाड़ों घोर प्रगाथतट के इन्वय तो अमेरिका भर में सर्वोत्तम है।

पहाड़ों घोर प्रगाथतट के शरों में प्राकृतिक दृश्य की दृष्टि से घातरस्पष्ट है। पहाड़ ऊँचे सूने घोर मलम है। प्रगाथतट की भूमि उर्वर घोर हरी-भरी है। दोनों शरों की घाविक मनोवृत्ति घोर शरों में भी घेर है। पहाड़ के क्षेत्र की घाविक व्यवस्था बनिनी है पुरर घोर मध्य-पश्चिम के नैगम-सागायों के हाथों। इनके मनित्र घोर घम्य भाषनों पर उनका स्वामित्व है जो यहाँ से दूर बसने है। घनाचोंड़ा लांका कम्पनी की बहानी मोष्टाना के इतिहास पर छाई ही नहीं है अविनु बहु इन क्षेत्र के घाविक घोषण का भी प्रतीक है। पहले मने बर्षा की है कि किस प्रकार घावारी जगसाहों के कटाव के कारण पगु क्षेत्र में लम्बर भौगोलिक क्षेत्रों में वा रही है। इन क्षेत्र को घाया इनी में है कि भूमि-निरुत्पा के कार्य हो रहे हैं जल-विद्युत-शौची के बन जाने पर इन क्षेत्र की घवित का मरुरवोन हो मरेगा घोर तब यहाँ नये उद्योग गुन सकने। परमाणु गविन के द्वारा यहाँ की मनित्र मण्डति का भी उपयोग हो सकेगा।

प्रगाथतट क्षेत्र की घाविक मनोवृत्ति लम्बर भिन्न है। यहाँ की घावारी उद्योग घोर मण्डमता इनकी लंबी में बड़ी है कि 'अनुपम बिजाम का निपद' कार्य कर रहा मानम होता है। पुरर घोर मध्य-पश्चिम के बिजाम के अितवे चरण से वे सब यहाँ जलविज की मनित्र जम्बी में गुन गए प्रनीन होने है। मैदानों मनित्र घोर शरों क मरुद गापन बाजार में तब घाये जब देखनिरम ज्ञान घनरी जम घबग्धा से वा। जलरक्म्य मीमाल मुरबरेम घोर वृत्रीवारी घवित घोर वृत्रीवारी बिरोधी बटिकोण का मरी लज बिबिध मणितम हा गया है। यहाँ मानाविक घोर बर्ग बिजाम के क्षेत्र में भौगोलिक मुरम्बार कुछ बार में

भाषा। फलस्वरूप औद्योगिक मजदूर संघर्ष यहाँ दूसरे क्षेत्रों से कुछ अधिक तेज है। इस दृष्टि से प्रशासित देश का सामाजिक और राजनीतिक बलबाहु टेनिसास से अधिक विभक्त-बलता है। दोनों क्षेत्र सीमांत 'बूम' और औद्योगिक ध्वस्त के सम्मिलन के प्रतीक हैं। दोनों क्षेत्रों में सामान्य-जन के रग-रंग के प्रति मंत्री और बिरोधी विचारों के प्रति घृति प्रसङ्गितता है।

दोनों 'बूम' के क्षेत्रों में एक स्पष्ट अन्तर भी है। यह अन्तर बौद्धिक बल-बाहु में है। साहित्य में टेनिसास का कोई विशेष स्थान नहीं है पर केसिफोनिया में साहित्य सदा से समृद्ध रहा है। जेटहार्टे मार्कट्नेन, जॉन मुईर ऐम्ब्रोस जार्ज्स जेक मंडन जेक मोरिस राबिन्सन जेफर्स ये सभी यहाँ की साहित्यिक उर्वरता की पुष्टि करते हैं।

यह पूरब या मध्य पटसाटिक क्षेत्र के सम्बन्ध में कुछ कहना है। यह एक लटीय पट्टी है जिसके एक ओर न्यू इंग्लैण्ड और दूसरी ओर दक्षिण, और एक ओर समुद्र और दूसरी ओर बड़ी-बड़ी झोमें हैं। पिद्सबर्ग और ब्रुक्लीन के आने-आप मध्य-पटिचम में और वाशिंगटन के पार दक्षिण में लान ब्राह्मैण्ड के बाद न्यू इंग्लैण्ड में पहुँच जाते हैं। इस पट्टी में ऊपर से नीचे तक औद्योगिक कारखाने हैं जिसका नगर है नवे-युराने उपनगर है। यहाँ निर्माण व्यापार, वित्त विज्ञापन के ही नहीं राष्ट्र के बौद्धिक और राजनीतिक जीवन के केन्द्र हैं। राष्ट्र के प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र का अमेरिका में प्रमुख रहा है। इसलिए अमेरिकी जीवन में अपना स्थान बनाने की इसे कोई चिन्ता नहीं। एबेनिक ईबिच्य से 'बरे' कास्वोपोलिटन दृष्टिकोण वाले इन पूर्ण लट्टी और औद्योगिक राज्यों को प्राम' सच्चा क्षेत्र भी नहीं मानते। इनमें प्राङ्गिक परि-वेष्ट की जायसकता नहीं। दक्षिण मध्य-पटिचम और मुबुर-पटिचम की भाँति इन्हें ध्वस्त के केन्द्रों के प्रति दुश्मनी का भाव नहीं सतता क्योंकि ध्वस्त के केन्द्र तो वे स्वयं हैं। एक विद्या में इनका मूँह यूरोप की ओर है तो दूसरी विद्या में देश के बीच। इसलिए इनमें एक प्रकार का कथिना का भाव है। ये मध्यप्रदेश (Interior) से शिकान्त और घटावत का भाव नहीं रखते।

मिश्रण ही इस क्षेत्र का मुख्य स्वयं न्यूयार्क है। न्यूयार्क शहर और उसके उपनगर स्वयं मिलकर एक क्षेत्रीय मयर का रूप ले बैठे हैं। प्रायः नेतावनी बैठे हैं कि 'न्यूयार्क' अमेरिका नहीं है तो यह ठीक ही है। किन्तु कोई दूसरी क्षेत्रीय संस्कृति भी अमेरिका नहीं है। यह बात बार-बार दुहराने से ही स्पष्ट हो जाती है कि न्यूयार्क के प्रति कथिनी दुश्मनी है। इससे यह भी प्रकट होता है कि न्यूयार्क की संस्कृति ने अमेरिका और विश्व को कथिना प्रभावित

मिया है।

न्यूयार्क को या बिरासतें मिली हैं। एक पुरानी डच अभिजातबर्ग की जिसका स्थान अब बिल प्रतिभा धीरे 'काफ़े समाज' के नये अभिजातबर्ग में ले लिया है धीरे दूसरी है पश्चिमी यूरोप की बौद्धिक बिरासत। यह बिरासत वास्कोनोविटन होन हुए भी अमेरिकी है। यहाँ से हमने सारे बिस्व पर प्रभाव डाला है। इसकी यादगारी में भार नभार की आतियों का प्रतिनिधित्व है। हास ही में न्यूयार्क की यादगारी की धारा कुछ परिवर्तित भी हुई है। अब यह मुख्य रूप से बौद्धिक यहाँ हल्की धीरे प्युन्रिटारिकी हो गई है। किन्तु यह बिस्व-जन निवास को याधार मानकर ही किया जा सकता है। तथीय तमर के रूप में न्यूयार्क का बिस्तार पड़ापी दोआ तथा राज्यों तक जाता है क्योंकि न्यूयार्क में सागों व्यक्ति ऐसे भी हैं जो रहने तो अल्पकाल पर उनका धारा जीवन न्यूयार्क का है।

न्यूयार्क में लोगों का धारा जारी है। मुख्य निरन्तर ही जीविका की सोच के लिए न्यूयार्क धारें हैं। ये अमेरिका की मूर्ति को ताजी बनाये रखते हैं। प्रायः कहते हैं कि न्यूयार्क को निर्माण की दक्षिण सारे राष्ट्र से मिलती है। पर-निर्मित बस्तुएँ कला धीरे संयमक रेडियो टेलीविजन चलचित्र पत्रिकाएँ, विज्ञापन बस्तुओं बिचार व्यवस्थापन के नमूने अजबूर संघ की टेक्नीक बौद्धिक धान्दो जन—ये सब तो न्यूयार्क से बाहर देश भर को मिलती हैं। इसी दक्षिण धीरे सर्वरता के कारण ही तो न्यूयार्क को अम्बेहू धीरे भय की दृष्टि से देखते हैं धीरे धृणा करने हैं। सबसे अधिक बढ़ता का भाव दक्षिण अल्प-पश्चिम धीरे दक्षिण-पश्चिम में है। कभी इसका कारण रसायनक कभी ऐतिहासिक धीरे कभी समसामयिक निरुपस्थ होती है। इन सबके अतिरिक्त इस बढ़ता का कारण न्यूयार्क धीरे पूरब के उधार बुद्धिवादियों द्वारा अल्प-पश्चिम की 'ग्रामीणता' धीरे दक्षिण की मोरों की प्रभुता पर धारोप भी है।

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'ग्रामीणता' अमेरिका में कोई धान्दोजन नहीं एक तथ्य है जैसे अल्प बहुजन-तथ्य है। इसमें अमेरिकी परिघेता धीरे सराहनी की अनेकता है। धान्दोजन के बिचार जहाँ धारें भी हैं वे बार में धारें। इन क्षेत्रीय धान्दोजनों में अमेरिकियों का धारोप धेन की बिरासत के प्रति आकर्षण बनाया है धीरे धानी बिगलनाथों के प्रति वर्ग की आकर्षण की है। हमने उनकी जमा गालिय धीरे मोहजीवन को नाबधी मिली है। नतरा हम जान का है कि जान धारो प्रति आकर्षण हास नहीं मतवासी (Collist)

न हो जाएँ। किन्तु अमेरिका में केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियाँ इससे प्रबल हैं कि वे ऐसी विचारधारा को जीने न देवी।

क्षेत्रीय भेदों के महत्त्व को अधिक धाँकने की सम्भावना अवश्य है। अमेरिका में परिवर्तन के दो प्रकार होते हैं, एक सारे देश में समान रूप से होता है दूसरा क्षेत्र विशेष तक सीमित रहता है। क्षेत्रीय परिवर्तन वैसे ही हैं जैसे पहिये के भीतर पहिया। इनमें कुछ तो बहुत छोटे और अन्य समाप्त हो जाने वाले होते हैं। किन्तु वे अमेरिकी बैबिष्य के समूहों के एक आवश्यक भाग हैं। ऐसे व्यक्ति जो अमेरिका में नहीं गए हैं वे इसकी कल्पना किसी विद्याभ्यास एकात्मक रूप में करते हैं।¹ अमेरिका के सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें भाषा विसमूपा विसमा जीवन के तीर-सरीकें गति विचारधारा आदि के क्षेत्र में एकता के साथ-साथ बैबिष्य भी है। मेन के छोटे सरोवर (Pond) और नील पानी से लेकर बड़े झील बंयलों और कैलिफोर्निया तक तक बड़ी झीलों के बर्फ-जमान से किंव रूख और टेक्सास के गान्सेस्टन तक तक अमेरिका में कोई एक सूत्र न मिलेगा जिसकी प्रशंसा या निन्दा की जायगी है। इसका यह धर्म नहीं कि अमेरिका असम्बद्ध स्वामीय विशेषताओं का एक समष्टि है, बल्कि अमेरिका में एकता के साथ बैबिष्य है। इन्हीं बैबिष्यों को संश्लेष में क्षेत्र कहते हैं।

मानवीकरण की प्रवृत्तियाँ प्रायः अमेरिका में पहले से मजबूत हैं। मुख्यतः से यह टेक्नालॉजी की उपज है। क्षेत्रीय भेद स्पष्ट ही समाप्त हो रहे हैं। हार्टफोर्ड घटनाएँ विस्मिष्टन एवान डब्ल्यास, डेन्वर और सीटल में प्रायः बिठनी समानता बीच पड़ेगी प्रायः से पचीस वर्ष पूर्व जितनी समानता न थी। इनके उपनगरों और उन छोटे-छोटे नगरों में जो इनके चारों ओर छिटे हैं यह बात और सही है। यदि इनके तीर-सरीकों का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि वे परस्पर परिवर्तनशील मार्गों से बने हैं। न्यू इंग्लैण्ड और बर्लिन में भी वहाँ क्षेत्रीयता की एक सचियों पुरानी है क्षेत्रीयता पिस रही है। क्षेत्रीय शक्त तो बित रहे हैं पर क्षेत्रीय परिवर्तनपूर्ण जिन्दा है। हाँ अब क्षेत्रीय विदेशों की तीक्ष्णता घट रही है।

समाज या सामाजिक ढाँचे संस्कृति और सामुदायिक तीर-सरीकों में फर्क करना चाहिए। अपने सामाजिक ढाँचों में व्यापार और मजदूर प्रवृत्तियों में यद्यपि और यद्यपि जीवन में बर्षों की रिश्ताओं में, परिवर्तन में बिठरण व्यवस्था में, बड़े माध्यमों के उपयोग में विज्ञापन और विनियमकरण में दैनिक

1. Like a monstrous monolith hewn out of undifferentiated rocks

उपयोग की वस्तुओं और एक भावना में छत्र सारे राष्ट्र के परिनिर्मित नमूनों में से रह है। वन विद्यालयों, रेडिया सिनेमा और टेलीविजन में इन्हीं नमूनों के दर्शन हुए हैं। किन्तु यही एक सामूहिक जीवन का प्रश्न है जैसे प्रति सम्मता और उमर प्रति दुष्टिकोण सामूहिक व्यवहार वास्तु और मनन धूमना और बावचीत करना, सचीत और नृत्य कला पुरत के समय का उपयोग मानसिक जीवन प्रम और पूजा जैसे धादमी बढ़ता और मरता है स्वान के प्रति भावना दोष सभी भी अपनी स्वायत्तता की रक्षा बिचे जा रहे है। बटाव की प्रक्रिया तो यही भी है पर उसकी प्रति धारण नही है।

एक उदाहरण लें। मंचीय का एक इन्डियन है जिसे जाज¹ कहते हैं। सात सप्ताह इस लम्बे अमेरिकन मानता है। यह न्यू योर्क में हर्मियों की एक बीज थी। यह उनकी व्यवस्था का एक चुन से उपजा है। अमेरिका और मैक्सिकन के इन्डियन से मूल ग्रहण करता हुआ न्यू योर्क में ही यह विकसित होता रहा। जब इसका अपना रूप बन गया तो यह ऐसे ही कर्पों से मिला जो सेंटपुई और हार्मोन में बन रहे थे। यह सम्मिलित रूप राष्ट्र की चारा में प्या मिला। अब यह कबल धनीय इन्डियन ही नहीं रहा। यही बात घोषणाओं की लोच-कपाओं और बैनाडों पर भी लागू है। सुदूर पश्चिम की बहमाओं की बहमाओं मिनन और प्युम्ना की वास्तुओं मिसीसिपी की रचनाओं सुदूर दक्षिण की वाद-बसा सम्म-पश्चिम के धार्मिक पुनर्जन्म न्यू इंग्लैंड के विरोध की भावना म्यूवाक के गर्भी मतवालों के सार का ग्रहण करने आदि की भी यही कथा है।

क्या यह धनीय रचनात्मक प्रतिभा समाप्त हो रही है? न्यू योर्क के निगमों ने मुझे बताया है कि धनीय विमलाव की पारदर्शिता चुकी है। उन्होंने कहा कि बड़े माध्यमी और बड़े मन में धनीय और लोक इकाई की भावना को नष्ट कर दिया है। निगम का तो इसी में प्रेरणा मिलती थी। अब जाज ने तो ठांडी या काहून्कर वास्तु कमी पैदा नहीं होयी। इन कबल में गन्धर्व भी है। और वह दुःख है। मेरे एक मित्र ने ऐसी बातें कही थीं। उन्हें एक समय प्राप्त हुआ जब ब बड़े माध्यम और बड़ा मन का रहे वे पर उन्होंने कही रहता और मिगना बगन्ध किया जहाँ ने सुख करने से। ऐसा प्रतीत हुआ है कि स्वायत्तता का एक ऐसा संकट है जो अभी तक शोध में है।

नामक हम सभी यह जान भी न पाएँ कि किस परिस्थितियों और प्रति

भारतों के किस ऐतिहासिक संयोग से न्यू योर्क का 'बाब' या न्यू इंग्लैंड की 'वेमस्टर' का निर्माण हुआ ? इस रूप में क्षेत्रीय संस्कृति—स्वातंत्र्य जनता पर स्पष्ट का योसमेल अमेरिकी जीवन की मुख्य सामग्री है। अमेरिकी इतिहास में कभी एक क्षेत्र कभी दूसरा सांस्कृतिक रचनात्मकता का प्रभु रहा है और इस रूप में उसने राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया है। अब-अब ऐसा लगा कि एक जगह का सोमा खत्म हो रहा है दूसरे स्थान पर दूसरे मूल्यवान् खनिज पराई निकल आए।

मेरे कहने का यह अर्थित्व नहीं कि सजीवता ही अमेरिका को औरस कल्याणमिष्ट देव होने से बचा सकती है। क्षेत्रीयता के समर्थक यह भूल जाते हैं कि सजीवता में कठोर सांस्कृतिक परम्परा भी छिपी सकता है। क्षेत्र राष्ट्र के मानवीकरण के नयुनों के बिना एक व्यक्ति है, पर मानवीकरण—जिसका सम्बन्ध जीवन के बाह्य से है—धीरे धीरे की अनुपपत्ता और अननुपपत्ता में प्रसर है। क्षेत्र अधिक कर्म में धीरे धीरे समाप्त हो रहा है इसलिए छोटे नगरों की भाँति अनुपपत्ता लाने के लिए इसका उपयोग भी सम्भी तरह हो सकता है।

क्षेत्रीय सम्यता से यह भाव नहीं की जा सकती कि वह अमेरिका को सीमन्तबद्ध समाज होने से बचा ले। यह कठिन कार्य तो उस व्यक्ति की स्वायत्त प्रवृत्तियाँ ही कर सकती हैं जो समूहों में रहकर भी समूह के अन्य व्यक्तियों की तरह व्यवहार करता है, जो अमेरिकी जीवन की विद्या विद्याओं और उनमें अपने स्वयं के प्रति जागरूक है जिसे विभिन्न प्रकार की मक्तियाँ प्राप्त हैं और जो उनके प्रति भी मक्त है अपने और सीमित रूप में क्षेत्र व्यक्ति और राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करने वाली निरपेक्षित शक्तियों के बीच 'ब्रिड' का काम कर सकता है। इस कार्य में अमेरिकी क्षेत्रीय संस्कृति अनन्त और मेघता के बीच स्वयं संतुलन स्थापित कर सकती है।

अमेरिका में वर्ग और प्रतिष्ठा

१. सम-भुक्त समाज

अमेरिकी समाज की मूल-कल्पना एक समहीन समाज के रूप में की गई थी। उसके बनाए जाने और विकास की पृष्ठभूमि में जो विरासत भी बहससह यूरोप की नाभित्तायी परम्परा है भी गई थी और संशत उसे अमेरिकी प्रयोग ने रूप दिया था। इस विरासत में ये चार परम्पर-सम्बद्ध तत्त्व थे विशेष अधिकार के प्रति श्रुति, सबकी समानता का निरूपक धर्म, सबके लिए समाज व्यवस्था के अन्तर्गत दोष और यह धारणा कि मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होना यह है नहीं करने के मुख्यार्थ से प्राप्त होती है।

अमेरिकी समहीन समाज का रूप अभी है। किसी भी व्यक्ति को दूसरे से कम या बराबर व्यवहार में मिले प्रत्येक को अपनी प्रतिभा और बुद्धिमान् विद्या के एक जैसा ही मौका मिले किसी को भी किसी के कुल पद या अधिकार के जाने न सुने देकर बड़े और न गिर झुकाना पड़े और आदमी की प्रतिष्ठा और सम्मान उसके बुद्धिमान् और गुणों के कारण हो, इसी विचार को अमेरिकन राष्ट्र निर्माता जेफरसन ने एक ब्रिटिश नाभित्तायी के दरवाजे में इस प्रकार प्रकट किया "परमात्मा के सुदृष्टी पर आदमियों का राज करने और बहु संयुक्त लोगों को उनका मुक्त बनकर उनका भार ढोने के लिए बुद्धिमान् पर नहीं भेजा है।" अमेरिका में स्वाधीनता के घोषणा-पत्र में जेफरसन ने इसी भाव को इस शब्दों में व्यक्त किया "सब आदमी समान भाव हैं।" इसका यह अर्थ नहीं है कि मनुष्यों में कोई वैयक्तिक भिन्नता नहीं होती बल्कि यह कि जो अन्तर प्रकृति प्रण है उनके अन्तर्गत मनुष्य के बनाये गए जाति या साम्राज्य के अन्तर और न जोड़ दिए जाएं।

इस प्रकार समाज का एक ऐसा बिज प्रकट होता है जिसमें न कोई शक्ति वर्ग है न कोई धर्म और नहीं रक्त जाति या विभिन्न के अन्तिमार्थकों का भी कोई स्थान नहीं है। केवल मान्यता और कार्य के द्वारा ही कोई प्रतिष्ठा के रूप में मान्यता प्राप्त कर सकता है। यूरोप के समाज में ऊँचे साम्राज्य और रक्त का मान था अमेरिका में बुद्धिमान् और गणतन्त्र का। इन दोनों समाजों का यह अन्तर उनको मूल प्रेरणा शक्ति में भी अन्तर का कारण बन गया। बड़ा भी

है 'बैवापल कुले जगम, महापलं तु पोष्यम ।' ठीक कुल या जाति में जन्म जना तो अपने हाथ में नहीं पर पुरुषार्थ अपने हाथ में है । कुल में जन्म मिलने के लिए मनुष्य को स्वयं कोई यत्न नहीं करना पड़ता और न वह अपने पुरुषार्थ से उसे बदल ही सकता है । जिस समाज में कुल या जन्म से धट्टा नापी जाती है उसमें विशेषाधिकार प्राप्त लोग हाथ भी नहीं हिलाता चाहते और वसितों में अपनी उन्नति की कोई धाधा या कुसु करने का उत्साह नहीं रहता । पर जिस समाज में पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा है और वहाँ भारती अपने काम से ही उठता या गिरता है, वहाँ धाधा और उत्साह छाया रहता है । यदि इस समाज को पलिच्छन्न या धनीरों का समाज भी कहा जाए, तो ये धनिक या धनीर सब नय धनीर होते हैं और जिस समाज में अधिजातधर्म के सभी सदस्य नवधनिक हैं तो वस्तुतः उनमें से कोई अधिजात नहीं होता । सब अपनी मेहनत से नीचे से ऊपर उठे होते हैं और ऐसे ही के लोग सम्मान का कारण मानते हैं । अमेरिका में 'बड़ी रियासतों' का स्थान 'बड़े भाग्य' (अपने प्रयत्न से खड़े किन्ने गए बड़े कारबार) ने ले लिया है । पर जब कि रियासत और जमीनारी पुरतन्तों होती है कई कारबार अपनी इच्छा-निपुणता से की गई कुर की कमाई होते हैं । फिर जमीन स्थिर भी नहीं रहती कुछ उसे खो सकते हैं और कुछ कमा सकते हैं । अमेरिका में कहावत है कि तीन पुष्ट में वहाँ के तहाँ मानि दादा ने कमाया, बाप ने उड़ाया और बेटा फिर बाँह बढ़ाकर मेहनत करने निकला ।

ऐसे समाज में वर्ग-द्वेष और वर्ग-संघर्ष का अंतरा नहीं है । यहाँ धाधा और उत्साह का राज्य है सबको अपने उज्ज्वल भविष्य में भरोसा है । यही अमेरिका के धार्मिक या अर्थव्यवस्था समाज का चिह्न है । यह पतिहीन या बंका हुआ समाज नहीं यहाँ सबको गीला है । जो चाहें सो करे, धनस्रोतों की नुट है जो नुट सके सो नुटे ।

अमेरिका के लोगों को अपने इस स्वतन्त्र और अनीहीन समाज में संघर्ष विरासत है । अपने धार्मिक समाज का गुण पाते वे नहीं सकते । इस गुणमान और प्रचार की ऐसी शक्ति कर बी गई है कि लोगों की इसमें विश्वास होने लगता है ।

यद्युत्साह के कारण अमेरिका के लोगों ने कुछ भाग्य धारणार्थ भी बना ली हैं एक धारणा यह है कि सकलता योग्यता से मिलती है इसलिए जो मरुप होता है वह योग्य भी प्रवर्ध होमा । पर यह कहती नहीं कि जो व्यक्ति सफल हो गया वही सबसे योग्य है और बाकी सब मूर्ख—धीर अयोग्य हैं । इस तर्क का यह धर्म निकलता है कि इस समय जिन लोगों के हाथ में पैसा और शक्ति

है वे ही योग्य हैं और बाकी असोम्य । इसलिए उनके हाथ में शक्ति बनी रहनी चाहिए ।

परन्तु सभी को उन्नति का समान अवसर देने वाले समाज में भी सभी मान ऊपर नहीं चढ़ पाते । कुछ ऊपर चढ़ते हैं दूसरों को नीचे भी उतारना पड़ता । यही नीचे उतरने की क्रिया अमेरिकन समाज की उत्थान की विपरीत होती है ।

अमेरिकन समाज की इस स्वतन्त्रता का एक और परिणाम है । मनुष्य की जितनी स्वतन्त्रता होती है उतनी वह और चाहता है । जितना ही अधिक नीचे का भेद और विषय अधिकार कम होता है उतना ही उसका विरोध अधिक तीव्र होता है । यही नीचे राजनीति विचारक डि टॉरबिने का कहना है कि विधायी अधिकार का यह विरोध इतना तीव्र होता है कि किसी का रसी भर भी विधायी अधिकार नहीं बढ़ाई जा सकता । अमेरिकन समाज में उन्नति करने के अवसर की समानता जितनी अधिक है, लोगों की आकांक्षा और भूख भी उतनी ही अधिक है । डि टॉरबिने के शब्दों में 'यह आकांक्षा जितनी ही सम्पुष्ट होती है उतनी ही बढ़ती जाती है ।' इससे अमेरिकन समाज में मानसिक प्रतिष्ठान होती है जो आर्थिक प्रतिष्ठान का साथ-साथ चलती है । अमेरिका का सामरिक यह धारणा करता है कि समाज उसकी सभी अधिक आकांक्षाओं को पूरा करेगा । अमेरिकन सामरिक धारणा से अर्थ ही प्रेरणा करता है और सबका समाज अवसर देने में जो अधिक विश्वास रखता है उसी में अमेरिका के समाज का आन्तरिक और प्रवृत्तिपूर्ण रूप प्रकट होता है ।

उन्नति की यह आकांक्षा समाज में अधिक-नीचे का भेद नहीं स्वीकार करती न यह कहन करती है कि किसी का अधिक अधिकार या हक हो । यह हर आदर्श में यह धारणा उद्गम करती है कि हम मुक्त-सम्प्रति प्राप्त करें अमेरिका में जो जो भी अच्छी चीजें हैं मरती हैं उन्हें पावें । साथ ही यह आकांक्षा सामान्य और सार्वभौम प्रकाश करती है । अमेरिका के नीचाऊँचे लोग अपने अधिकारों का लिए आसपास कर रहे हैं वह उन्नति की इस आकांक्षा से प्रेरित है । यहाँ उन्हे एक अधिकार मिलना है वह दूसरे की भाँति करना है और यदि उनकी भाँति पूरी नहीं होती तो उन्हें सहनशील होना है । पाप करने की, काम में और गमाव में लक्ष्मण करने की अपनी आसानी बढ़ाने की इस दृष्टि और धारणा का कोई अन्त नहीं । यह समाज को लक्षण बनाने लगाती है ।

अमेरिका में वर्गीय समाज का अर्थ कुछ भिन्न है । इसका अर्थ है कि समाज में वर्गों का अन्त नहीं बन रहा । यही वर्गीय अर्थ होता है उन्नति नहीं । यही अर्थ वर्गों के

बरबाते बंद नहीं है इसमें बराबर आमा-जाता समा रहता है। यहिसन और जाल टेसर के समय से ही अमेरिकी विचारकों का ध्यान इस बात पर गया है कि आर्थिक घबड़ियाँ केवल राजनीति ही नहीं समाज का रूप भी निर्धारित करती हैं। बार्ड सुमर, स्मान मिडियम वेबेन कून राम सभी प्रथम धनी के अमेरिकन समाजशास्त्रियों ने वर्ग के स्वरूप और समस्या पर बहुत विचार किया। अमेरिकन विचारका का बर्गहीन समाज भाष्यवादियों के बर्गहीन समाज से भिन्न है। अमेरिकन बर्गहीन समाज का अर्थ बान्तर म जुना या मुक्त बग समाज है जिसमें सभी को ऊँचे वर्गों में प्रवेश करने का अधिकार और अवसर है।

इस समाज को बर्गहीन हम मान में कह सकते हैं कि इसमें बग के बरबाते कभी बन्द नहीं रहते और नय शोय बराबर ऊँचे वर्गों में प्रवेश करते रहते हैं और लोग ऊँचे वर्ग से नीचे भी जात रहत हैं। अमेरिकी समाज की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसमें नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे का चढ़ाव उठार बराबर होता रहता है। सामाजिक मर्यादा और समृद्धि की सीढ़ी पर जिसने शोय यहाँ चढ़ते और उतरत हैं उसने किसी भी दूसरे समाज में नहीं। इसका एक कारण तो यह है कि अमेरिका में जाकर समेन बापे लोग यूरोप के बन्द समाज से वहाँ नीचे के लोगों को ऊपर चढ़ने का मौका नहीं या असम्भुष्ट होकर आया के और दूसरा कारण यह भी या कि अमेरिका को इस गई दुनिया में उन्नति करने का अवसर कम पड़ा या। वहाँ जमीन और प्राकृतिक सम्पदा की कमी नहीं रहती वहाँ कम मेद की दुर्लभ्य शीघरें नहीं लगी हो पाती। ऐसा कठोर बर्ग-भेद तो वहाँ पनपता है वहाँ मूल्य और जीवन के सापन कम होते हैं। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों में जिस लुने समाज का जन्म हुआ नगरों में भी वह बंध नहीं पाया। अमेरिका के नगरों में ही सम्पत्ति और सामाजिक मर्यादा की एक धेनी से दूसरी में उन्नति और अवमति का कम जारी रहा।

परन्तु हमर ऐसी बिलारई दिया है कि वर्गोन्नति का यह प्रवाह भीमा पड़ रहा है। कुछ विद्वानों का कहना है कि पहले के युवावस और अमेरिका के नये सीमान्त प्रदेशों के युवावस वर्गोन्नति सब कम होती जा रही है। प्रपर यह ठीक है तो यह बिलता की बात है। पर अमेरिका में लोगों की आम्दनी बत और शक्ति में जो व्यापक वृद्धि हुई है उस देखन हुए यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। अमेरिकन समाज की सीढ़ी के सिरे पर सदा से प्रचुर सम्पत्ति और उसे पहरी पटीबी रही है परन्तु पिछले दशकों में वहाँ धनिकों का पत बढ़ा है, वहाँ पटीबों की सटीबी नहीं बढ़ी है बल्कि बहूतों की हासत धम्भी हो गई है।

अमेरिका की पिछमी गहरी भेदी के समय ऐन्ड्रयुस धीर डेविडसन ने केसि कोनिया में नीब की खेती की सिमिति का सम्प्रयोजन किया था। इससे पता चला कि बहुत-से सोया का रोजगार उनके पिता के राजगार से भिन्न है परन्तु उनकी व्यक्तिगत खेती बड़ी बनी रही। यह भी देखने में आया कि बहुत-से गोम छोटी दुकान बनाने के बजाय बाबूगिरी, कारीगरी और मकेंदपोष धन्य उपाय पसन्द करने लगे हैं। एक धन्य गवेषक फोर्मे ने हाम में एक पड़ताल की। इससे पता चला कि मेहनत-मजदूरी करने वाले 10 में से 7 आदमी धीर दफ्तरों में काम करने वालों में 10 में से आठवां शुरु से बड़ी काम करते आ रहे हैं। मिस्स ने जिस जगह पड़ताल की वहाँ 10 में से 3 मजदूर शुरु से बड़ी काम करते आ रहे हैं और उन्होंने कोई तरकीब नहीं की थी। इसी प्रकार जो श्रम रोजगार का ऊँचे वर्गों के लोग में घटता है कोई भी नीबी या मेहनत मजदूरी करने वाली शर्त से ऊपर उठकर नहीं आया था। परन्तु मिस्स ने यह भी देखा कि कारखानों में लोग में दो फोर में बहुत मामूली मजदूर व धीर छोटे व्यापारियों में बीच में चार नीबी खेती के उठ से। नीबी खेतियों की आयबनी या मजदूरी बढ़ने धीर अधिक कमाने वालों पर उपाय टैक्स लगने के कारण भी अमेरिका में धन की विषमता या समीर-गरीब का अन्तर घट रहा है। यद्यपि अभी भी काफी विषमता बनी है जो बहुत-से अमेरिकावासियों की मजदूर में उनके मुक्त समाज के आदर्श के विनिरुद्ध है।

अमेरिकन समाजशास्त्रियों ने इसकी भी बहुत जाँच-पड़ताल की है कि सबसे ऊपर धीर सबसे नीचे के वर्गों में परिवर्तन का कम धीमा पड़ा है और स्थिरता बड़ी है। सन् 19०० में हाविय धीर जोसमीन ने बड़े व्यापारियों के वर्ग की जो पड़ताल की उससे पता चला कि उनमें आने ऐसे हैं जिनके पिता बड़े व्यापारी थे यद्यपि धीर बहुत की पीढ़ी के लोग नीचे से हैं। ऊपर उठे से धीर वेनी अपनी दुकानगारी आदि छोटे-मोटे धन्य करते थे। कुछ लोगों का हकाल है कि अमेरिकन समाज का बीचा दिन बर दिन बड़ा होता आ रहा है धीर नीबी अमेरिका के लोगों के लिए ऊँची धनियों में प्रवेश करना कठिन होता आ रहा है। यदि बड़े उद्योग धीर व्यावसाय बनाने के लिए अब बहुत पैसों की जरूरत पड़ती है इसलिए पूँजीशक्तियों के लड़ने की व्यक्ति मुसीबत रहता है और बड़े उद्योग व्यावसाय धीर संपत्ति उनी वर्ग के बचक में बनी रहती है धीर दूसरी की घन बनाने का मौका नहीं मिलता।

परन्तु कुछ आलोचकों की बिलबल टीक नहीं है कि शुरु में अमेरिकन समाज में वर्ग या धेनिकता नहीं थी और अब वर्ग धीर बढ़ता आ रहा है। अमेरिका में ऊपर बनने वाले वर्गों में भी दो धेनिकता की एक प्यूरिटन (प्रमाण्य धीर मुबारकरी आधारन वर्ग) धीर दूसरी रैफाइनर (धन के समर्थन ऊँचे

बरानों के जमीनार) इन लोगों की रहन-सहन बिल्कुल भिन्न ढंग की थी। प्यूरिटन सोम आत्मिकारी थे और डैव-नीच के जोर विरोधी थे पर कुछ दिनों के बाद उन्होंने इस सभी भेद को स्वीकार कर लिया यद्यपि वे प्यूरिटन मत मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति का पुरा अवसर देते थे। अमेरिका के बसिन्धी राज्यों में और उत्तर के कुछ राज्यों में समाज में संभ्रान्त और साधारण का भेद माना जाता था यद्यपि इस भेद का आधार शक्ति या धन नहीं बल्कि सुसंस्कृति और भद्रता थी। अमेरिका के पुराने प्रज्जहारों को देखने से पता चलता है कि उस समय भी धार्मिक शक्ति और स्वायत्त के आधार पर राज नीतिक गुटों और बर्बों के बनने की प्रवृत्ति थी। इस समय के अनेक वैफेदों में सामाजिक विषमता की कड़ी आलोचना मिलती है, इससे पता चलता है कि उस समय के समाज में खेती-नीच विद्यमान था।

वस्तुतः यह वास्तविकता है कि पहले अमेरिकन समाज में बर्ब-भेद नहीं था और अब हो रहा है या पहले ऊपर के वर्ग में जाना सहज था और अब कठिन हो गया है, बल्कि पहले का स्पष्ट बर्ब-भेद अब अस्पष्ट हो गया है और खेणियों को काटने वाली रेखा घुमनी पड़ गई है, और अधिकतर अन्याय मध्यम वर्ग में था गई है।

अमेरिका में वर्मोन्नति या बर्ब परिवर्तन की श्रिया किसी युग या प्रदेश में कभी ध्वजक रही और कभी कम। सबसे बड़ा परिवर्तन नीचा खेणियों में देखने में आता है, खासकर कारखानों के मजदूरों में जो उन्नति करके छोटे बुकानवार, औरमैन बूतरी-बुकानों और प्रबन्ध विभाग के कर्मचारी बन जाते हैं। अमेरिका में मध्यम खेणी का जितना विस्तार हुआ है उतना और कहीं नहीं हुआ है। मध्यम खेणी में और इस सभी के एक बर्ब से दूसरे में प्रवेश करने का कम बराबर भया रहता है। सबसे नीची खेणी के छठीय और बेहुनर मजदूरों के लिए उन्नति करना बड़ा दुष्कर है यद्यपि इनमें भी शिक्षा का प्रसार हो रहा है जिससे उन्नति करने में सुविधा मिलेगी। यद्यपि सबसे अधिक गति मध्यम खेणी में हुई है पर ऐसा न समझना चाहिए कि और खेणियों में परिवर्तन होता ही नहीं। अभी भी ऐसा बराबर देखने में आता है कि बहुत छोटा या नीची खेणी का आदमी उन्नति करने ऊपर बढ़ गया यद्यपि इसके लिए बड़ी योग्यता और बड़ संकल्प की जरूरत होती है।

पर सबसे बड़ा सवाल यह है कि सबसे ऊँची खेणियों में क्या हाल है? क्या यहाँ मध्यमशुर्कों के लिए बचक है? यहाँ लोगों कातेँ देखने में आती है। एक और तो पिता का सब सम्पत्ति और कारबार पुत्र को मिलता है और ऊँची खेणी पुस्तैनी बन रही है। दूसरी ओर नीची खेणी से आये नये आदमी भी अपनी योग्यता के कारण व्यापार और उद्योग में संचालक, प्रबन्धक ईजीनियर आदि

क ऊँचे पर भी पाव रहे हैं।

वास्तव में 1950 के बाद में जो पड़ताम की गई है उससे पता चलता है कि इस समय में ऊँची भूमि में घासा जाही धीर बढ़ी है। प्रकृति के ऊँचे पर्वों पर बहुत-से ऐसे हैं जो नीची धमियों में घासे हैं धीर इनमें से अधिकतर छोटे पर्वों के किनारों मजदूरी दुकानदारों धादि के लड़के के।

परन्तु परन्तु पत्रिका में प्रकृति के 900 सबसे ऊँचे पर्वों की पड़ताम कलाई जिसमें यह पता चला कि अधिकतर ऊँचे पर्वों पर घासे घरानों के ही लोग हैं। करीब 43 प्रतिशत व्यापारियों के धीर 15 प्रतिशत बकीम डाक्टरों धादि के लड़के के। 26 प्रतिशत ऐसे थे कि जिसके पिता उन कम के मानिक या मंचा लक थे। बहुत बड़े धादमी ऐसे निजसे जो नीची धमियों से घासे थे इनमें से 13 प्रतिशत में कम के घर वाले किसान धीर 8 प्रतिशत से भी कम मजदूर थे। 20 वर्ष से कम उम्र के अधिकारियों में 11 प्रतिशत से भी कम किसान धीर कोई प्रतिशत से कम मजदूर परिवार के थे। इससे धार्मिक व सम्पत्ति के बहुत बड़ी-बड़ी निष्कर्ष कि सबसे ऊँची जगहों पर अधिकतर ऊँचे पर्वों के ही लोग पहुँच पाते हैं साधारण पर्वों के लड़कों का उन पर पहुँचना बहुत ही कठिन है।

बड़े पर्वों के बच्चों को शिक्षा धीर हुनर सीखने का क्यादा अच्छा मीका मिलता है धीर के घासे पिता की जगह को वा सेठ हैं परन्तु यदि उनमें पिता की सम्पत्ति का अच्छा धन न हुआ तो उनका उन पर्वों पर बने रहना कठिन है। नये धादमी घासे घासे रहने हैं धीर असे ही के अपना कारबार सदा न कर पाएँ या करोड़ों की सम्पत्ति न छोड़ सकें पर के ऊँच पर वा पाते हैं धीर ऊँची धमियों के मददगार बन जाते हैं। इसलिये हम यह कह सकते हैं कि ऊँची धमियों में सम्पत्ति प्रकृति धीरे-धीरे परिवारों में बनी रहनी है वर नये धादमी अधिकतर के पर्वों पर घासे रहने हैं। इसी में अमेरिकन समाज का प्रभाव बना रहना है तथा ऊँची धीर नीची धमियों में मजदूरों की नीच नही धानी।

अमेरिकन समाज के विनियमन में हमें बर्त परिवर्तन के धमिया दो धीर बा। वा धर्मधन करना है एक धर्म के मूल धीर दूसरी सामाजिक प्रतिष्ठा का।

इस पर हमें धन में धाया है कि धार्मिक धन कम धारणानों के धानियों के हाथ में निरन्तर धारणारोना या धारधारो व धर्मधर्मों धीर धर्मधर्मों के धमियों में बड़ी लगने वालों धर्मधर्मधर्म या मजदूर मधों धीर धरधार के धमियों में भी गई है।

इसी तरह धर्मधर्म बनी हैं धमियों का धारधार के बजाय धानीधरी धीर धर्म धारधार धमियों की धीर धधार हो रहा है। धुगने धमियों में ऊँचा पहुँचना

धारण करता। उद्योगी लोग इसे सम्पूर्ण समझते हैं जब कि दूसरे लोग इसे वर्ग सेमी और मेन-मिलाप का अपूर्व उदाहरण और अमेरिकन समाज की अनोखी विशेषता बताते हैं।

प्रासोबकों का कहना है कि यह धारणा बिलकुल भ्रांत है और लागू मानबुद्ध कर इसे फैला रहे हैं। परन्तु जब तक कि किसी धारणा का कोई-सा आधार न हो वह व्यापक नहीं हो सकती। वास्तव में अमेरिका की नीची श्रेणी में यह धारणा दृढ़ता से जमी है कि कभी-न-कभी हमें भी उन्नति का मौका जरूर मिलेगा। इसी कारण उनमें यह निगूणा नहीं पायी जो शक्ति और वर्ग-युद्ध को बर्णन देती है। अमेरिका में नीची श्रेणी में बिरोह के नहीं करना क दुश्मन दिखाई देते हैं। यहाँ हमें लोग बिरोह करते नहीं अपर उठने के प्रयत्न में घटपटाते दिखाई देते हैं।

यह दृश्य हमें भ्रम ही करना दिखाई पड़े परन्तु इन लोगों में तो धारणा ही का नाव है और उनकी इस धारणा का कठोर आधार भी है। अमेरिका में प्रायः सबदूर नीची मध्यम श्रेणी के वर्गों की शिक्षा की प्रथिब सुविधाएँ हैं। घरों में नई वस्तियाँ और मोहम्मो बन रहे हैं वहाँ गाँवों से उखड़े हुए घर-घर बिहीन मकानों और छोटे लोगों को नई जगें बनाने का मौका मिलता है, मकानों सबों का कम बड़ा है जिससे मासिकों की उनकी माँगें माननी पड़ती हैं। टेलीविजन आदि के प्रसार से लोगों को एक नई दुनिया की झलक मिली है। अमेरिका की 70 प्रतिशत जनता ऐसे इलाकों में रहती है, वहाँ सामाजिक प्रगति का कम ठेकी से जारी है और हर घर में से तीन परिवारों को अपनी उन्नति की पूरी धारणा रहती है। प्र. स्मिथ्सोन की न्यू डीस नीति ने जनसाधारण की उन्नति क माग की बाधाओं को हटाने में बड़ा काम किया है और बाँ के राष्ट्रपति भी इसी नीति पर चल रहे हैं। अस्तु इन सब बातों के कारण साधारण आदमी को यह समझने का कारण नहीं मिलता कि वह ऐसे समाज में है जहाँ उन्नति का कोई अवसर नहीं।

अवश्य ही अमेरिका में काफ़ी सामाजिक विषमता मौजूद है, पर उन्नति का रास्ता बन्द नहीं। बल्कि यही विषमता लोगों को उन्नति क लिए, इस विषमता को मिटाने के लिए, दूसरों के बराबर आने के लिए प्रेरित करती है। अस्तु, अमेरिका का समाज माफ़गवाही धर्म में अखली या वर्ग रहित समाज नहीं है न अमेरिका का वर्ग-संघर्ष मार्क्सवादी न्यूने का संघर्ष है इसकी जड़ मार्क्स के पहले के राजनीतिक विचारों में है यह लोकतन्त्रो ङग का संघर्ष है।

अमेरिका का जीवन-चक्र

1. सङ्घर्ष और व्यक्तित्व

सङ्घर्ष की विशेषता को समझने की एक बड़ी सीढ़ी यह जानना है कि उसमें अपने जीवन चक्र के प्रति मनुष्य का व्यक्तित्व का क्या रूप छाता है।

रघुनाथ पुरान समझते हैं समाचारिक और धार्मिक कर्मकाण्डों के कारण समाज के सामूहिक सम्बन्ध बहुत घाम के से घोर व्यक्ति के अपनी जाति से सम्बन्ध तथा उन धार्मिक जाति के प्रति नीतिगत अन्तर्गत से सम्बन्ध घातक हैं पुनः मिलकर एक हो गए हैं। वहीं समाज व्यक्ति के जीवन-चक्र में इन मतभेदों के रूप में हस्तक्षेप करता था। वैसाजियम के मुसलमानों की वन देने में सहायता की इन मजबूत स्थितियों को 'जीवन-यात्रा के संस्कार' (Milestones of Progress) नाम से अभिहित किया है जिनके द्वारा व्यक्ति जीवन के प्रमुख अनुभवों की श्रृंखला में अधिक प्रवेश पाता था।

यह साधुनिष्ठ सङ्घर्षों की भाँति अमेरिकावासियों के भी इन 'जादू-टोने' के समाचारिक गायनों¹ के प्रति सब अपनी महत्त्व प्रस्थापना की है। हमारा रघुनाथ सब जगह यौवनोद्भव विवाह और मृत्यु के घबराहट में होनेवाले दृष्ट पट धार्मिक मतभेदों के से विवाह और व समाचारों के प्रमुखता द्वारा मनाये जाने वाले उगाह में दूसरे परिवार और जिनों तक ही सीमित रहते हैं। फिर भी यद्यपि ये मृत्यु तक समाज सब भी अपने साधारण और निम्नता द्वारा व्यक्ति के जीवन चक्र के विभिन्न प्रथमों का रूप देने के लिए उस पर प्रभाव डालता है। मन ही उन सब सहायता में सब धार्मिक में हो। एक घबराहट में सब सहाय अमेरिकी समाचारों 'जीवन-यात्रा' के संस्कार नहीं है बल्कि वैसाजियों और साधारणों के समाचारों है। वैसा वैसा सबों के बड़ा है सब उन सब लिए कोटिमान (सब के धार्मिक होने का बलि का धार्मिक संस्कार) की अपनी मोड़ पॉलियो का हस्तक्षेप के साथ रघुनाथ सहायता में सब हो गया है।

सङ्घर्ष और व्यक्तित्व में सम्बन्धपूर्ण सम्बन्ध है। व्यक्ति सङ्घर्ष का निर्माण करते हैं और सङ्घर्ष व्यक्ति का। और नीतिगत है। नीति ही उसकी सङ्घर्ष नहीं है। साथ बलिदान है ता सङ्घर्ष के सब बलिदान दावी² पर सङ्घर्ष

अमेरिका का जीवन बच

की खूबी या कसौटी यही है कि वह व्यक्तिगत के विकास के लिए कैसा बाधा बन प्रस्तुत करती है।

सभी संस्कृतियों में जीवन की जिया एव-सी रहती है—जन्म जरा-मरण वक्षपन बीबन ब्याह-सादी दाम्पत्य जीवन सन्तान का जन्म पालन-पोषण रोटी का बन्ना—ये जीवन के परिच्छिन्न घण हैं जो सभी देश और काल में उसी क्रम से चलते हैं। पर जीवन का बुनियादी ढाँचा एक होते हुए भी उस पर जो इमारत खड़ी होती है उसमें बड़ी विभिन्नता रहती है। संस्कृति ही इस बात का निर्णय करती है कि आदमी क कपड़े-लत कैसे होंगे खानपान कैसा होगा नापा क्या होयी बर्मे-कम क्या होगा बाप बच्चा कैसा होगा किस प्रकार उसक बिबाह सम्बन्ध होंगे आचार-बिचार, पसन्द-नापसन्द मान-अपमान सम्पत्ति और धन की धारणा और जीवन के धावध किस प्रकार क होंगे। इसी प्रकार की सेकड़ों बातें हैं जो मनुष्य को अपने समाज में परस्पर से प्राप्त होती हैं और उसक जीवन को एक कास सानि में डालती हैं।

अमेरिका-जैसे व्यक्तिवारी देश में भी संस्कृति के ये तत्त्व मनुष्य के जीवन में एकवृत्ता स्थापित करते हैं। साब ही अमेरिका में अनेक उप-संस्कृतियाँ हैं जो अपनी छाप डालती हैं। जैसे एक हल्की सत-मजदूर का जीवन एक गोरे उद्योगपति के जीवन से भिन्न होया। पर सब हल्की मजदूरों के जीवन में एक समानता मिलेगी जब सब गोरे उद्योगपतियों क जीवन में। दोनों अपने अपने समाज के आचार-व्यवहार बोली-बाली बिबि नियम का पालन करेंगे। कुछ हर एक उसे अपनी संस्कृति से जीवन में मजबूत मिलती है और कुछ हर एक बाधा भी।

बहा जाता है कि अमेरिका के समाज में नियम या रोक-टोक अधिक है। क्या यह सच है? जहाँ तक कामाचार या लैंगिक सम्बन्ध का प्रश्न है अमेरिका में अनन्याहे स्त्री-मुत्प में सम्बन्ध और एक ही लिंग में सम्बन्ध बहुत बुरा समझा जाता है और इस पर कड़ी रोक है पर व्यवहार में काफ़ी ढिलाई है। दूसरी धार बच्चा को घर और स्कूल दोनों जगह बड़ी छूट मिली हुई है। इसी तरह आवागमन सामाजिक व्यवहार और धर्म के मामले में अमेरिका में अधिक आजादी है ब्रितानी कभी भी किसी देश में हा सक्ती है। अमेरिका में माता पिता गुरु या सरकारी अधिकारियों का कोई राब-दाब नहीं। परन्तु अमेरिका में कुछ बातों में कड़ी राब-टोक और कुछ में बहुत अधिक आजादी है। वह एक पाताछोर की तरह है जो जख्मी जख्मी गहर से जबसे और उसमें गहरे में डूबता उतरगाता रहता है। आजादी और राब-टोक के इस मिश्रण से अमेरिकन बिचार कुछ बिभुड-भा हा जाता है साथ ही उनमें परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढाल लेने की क्षमता भी आ जाती है।

हमें यह भी देखा है कि अमेरिका में जीवन का क्या प्रयोजन या उद्देश्य समझा जाता है ? अमेरिका के व्यापार-वासियों में कुछ बातों का विशेष कर ज़रूर दिया गया है पर किसी वस्तु या व्यापार-वासियों का विधान और प्राप्ति नहीं है। व्यक्ति को अपने हक से जल्द से जल्द की पूरी स्वतन्त्रता दी गई है। अब दृष्टान्तों के अनुसार मिलने जुलने प्रेम विवाह संतान उत्पत्ति काम-व्यवसाय विलम्बित पार-मनोरंजन करने निगम करने-सहने की पूरी आजादी है। इस विचार से अमेरिका का समाज बना ही स्वच्छ है पर दूसरी ओर समाज में एक दबाव का आभास भी रहता है जिसमें हर व्यक्ति के मन में यह भाव रहता है कि हम जल्द ही बर्बाद करना है। अतः जल्द जाने के साथ-साथ दुनिया में सकलता पानी है। इस प्रकार का सामाजिक आवाहन व्यक्ति की स्वतन्त्रता का सीमित कर देता है।

हमें समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो समाज के बाहर के बाहर या दूसरी सीमा पर रहते हैं जो नीक छोड़कर चलते हैं जैसे कवि कलाकार संत और विद्वान्। अमेरिकन समाज ऐसे सामाजिक और राजनीतिक विरोधियों को काफी लक्ष्य देता है और उन्हें अपने हक से रहने देता है। यहाँ तक यौन व्यापार का उन्मूलन करने वाला जो भी कानूनी बंद लगता नहीं दिया जाता जिससे सामाजिक धृष्टता। अमेरिकन समाज हम विरोधियों से बचता छड़-छाड़ नहीं करता बल्कि वे भी उस समाज से छिड़-छाड़ न करें और अपनी राय अपने ही हक में।

हिस्सागत में और अन्य देशों में भी पुराने हक के समाज में बहुत-से रीति रिवाज और कानून-व्यवस्था पुरानी परम्परा में चल पाते हैं। बल्कि अपने माँ-बाप और घर व लोगों में रहते सीखते हैं। अमेरिका में यह परम्परा टूट गई है और हर पीढ़ी का नया निरमल है। अब यह और नये आचार-व्यवस्था में जीवन आरम्भ करता पड़ता है और सामाजिक कानूनों को अपने अनुभव में सीखना पड़ता है। समकालीन अमेरिकन मजदूर या मजदूर करने परिवार में लक्ष्य धन की जिन्गी बनाने समय में सहृदयी बनाना है उसे परम्परा के दूर जान भी लगे बिना कि माँ-बाप का गाना में क्या व्यवहार करना चाहिए ? कभी-कभी यह होता है कि परिवार में अपने अपने घरों की नींव और चलन देना है। उसी का पालन करने लगते हैं।

यह ही है कि इस प्रकार उनको सामाजिक व्यापार-विचार का बहुत बन्द और निश्चित रूप नहीं मिलता पर छोटे-छोटे घर उन्हें वह भाव रहता है कि उन्हें समाज में निगम हक में चलना है। समकालीन यह महका बना रहता है कि अपने को अपने स्वयं के जीवन में लक्ष्य होना है लक्ष्य बढ़ाई-बढ़ाई में जाने रहता है अपने परिवार के अनुसार या सर्वोपरि होना है अपना नाम

अमेरिका का जीवन-चक्र

जन्मा पाता है। नाम और पैसा कमाता है। समाज से मिलकर रहता है। पुत्र और धामन्द पाता है।

अमेरिका के लोग ठोस बातों को क्या कहते हैं? कल्पना को कम। सौन्दर्य को धनमूर्ति कहते हैं और बिस्मय, आदर और चारित्र्य का अपने में कोई महत्त्व नहीं समझता। जब तक उसका सम्बन्ध किसी ठोस बात या काम से न हो। यद्यपि इसी कम में तपस्या और त्याग का ऊँचा स्थान है पर अमेरिका में इसका महत्त्व उन्नीच है जब उससे कोई ठोस लाभ या प्राप्ति हो। धारणा रिक्त उन्नति के लिए अमेरिकन कष्ट सहने या तप करने को तैयार नहीं पर पैसा में या सेलफ़ में वह खुशी से कष्ट सहता है। वह पहाड़ पर चढ़ता है तो तपस्या के लिए नहीं अपनी सज्जता या शीरता का मझा पाड़ने के लिए। शैविक जीवन सेलफ़ परवैत-चारोहण के कष्ट का महत्त्व इसलिए है कि इससे उसमें वह नीमकपन आता है जो जीवन-संघर्ष में विजय दिलाता है।

पुराने या आदिम लोगों को जीवन की क्रियाएँ बिस्मय और रहस्यमयी मामूली पड़ती हैं। इसी को लेकर अपने पुराणों की कहानियाँ गड़ी हैं और ठोना टोटका मंत्र-युवा और रीत-रस्में रची हैं। उनके पुत्र्य या शीर पुरुष साधारण मनुष्य नहीं होते वे किसी देवी-देवता की सन्तान होते हैं न साधारण लोगों की तरह उनका पालन-पोषण होता है। वे बने बंगल में या नदी में बहते हुए पाए जाते हैं, उनको कोई सिंहिली या घेरनी दूध पिलाती है उनका जीवन साधारण घटनाओं से भरा होता है।

पर अमेरिका की शीर गाथाएँ दूसरे किस्म की होती हैं। अमेरिकन लोक कथाओं के नायक विज्ञान के जगतकार करते हैं। वेसुमार दीप्त कमाते हैं बड़ी बड़ी कठिनाईयों पर विजय पाते हैं। तल के कुम्हों और सीने की खानों का पता समते हैं।

पुरानी जातियों या राष्ट्रों के सामाजिक या धार्मिक संस्कारों में नाटक के तत्त्व होते हैं जिसमें पुराना इतिहास दोहराया जाता है या घाघों को मूर्त रूप दिया जाता है जैसे भारत की रामलीला। अमेरिका में इस प्रकार के संस्कार नहीं हैं। अमेरिकन नवयुवक के आदर्श—सेलफ़ के शैम्पियन विमान के उड़ाने फोर्ड और रॉक फेलर जैसे उद्योग व्यवसाय के नेता ऐडीसन जैसे वैज्ञानिक और सनसनी मचा देने वाले पत्रकार हैं।

इन्हीं आदर्शों को सामने रखकर अमेरिका का नवयुवक अपने को ईदता अपनी प्रतिष्ठा का धमका करता है अपना लक्ष्य स्थिर करता है। अपने जीवन की दिशा निर्धारित करता है। प्रवरय ही यह नाम धामान नहीं होता। अधिकतर आदमी समझकर रह जाते हैं मटकते हैं। बिरसे ही ऐसे होते हैं

को जगमगाती से निकलकर अपना अलग रास्ता बना पाते हैं। अधिकांश तो प्रवाह में ही बहते हैं। अस्तु व्यक्ति के जीवन पर संस्कृति की परम्परा का बहुत असर पड़ता है। अमेरिका की संस्कृति व्यक्तिगत को बढ़ाती नहीं उसे धान डग में घातने और विकसने का असर देती है। यद्यपि ही अमेरिका में समाज के कुछ ऐसे भी वर्ग हैं जहाँ व्यक्ति को प्रचलित तौर-तरीके से घात करने का प्रयास नहीं किया जाता फिर भी ऐसे समाज की पर्याप्त व्यक्तिगत के विकास या व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव नहीं कर पाती। अमेरिका का समाज कुछ धर्मों से सीला है और कुछ में कठोर, पर इसके ओढ़ों के बीच से व्यक्ति के विकास का काफी अवसर मिलता है।

वास्तव में प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिका के समाज में व्यक्तिगत विभिन्नता के लिए स्थान है या नहीं। बल्कि यह है कि क्या समाज का वातावरण ऐसा है जिसमें व्यक्ति को अपने को जानने और अपनी राह निकालने का प्रोत्साहन मिल सकता है या नहीं? नीचे हम इस दृष्टि से अमेरिकन समाज की परीक्षा करेंगे।

२ अमेरिका में औद्योगिक जीवन

अमेरिका के पारिवारिक जीवन का बहुत बिड़ल बिगड़ा सा है। तनाव व्यवहार बिगड़ हुए बच्चे यही रूप बाहरी लोगों को दिखाता और जिसमें माँ पति में मित्रता है। अमेरिका के आरम्भ जीवन पर डाँ बिले की रिपोर्ट और बच्चों पर डाँ रिपोर्ट और गैस की रिपोर्टों में यही पारलान बघनी है।

कान्फ़िडेंसियल भी काफी गम्भीर है। अमेरिका के नवयुवक और मरुभूमि प्रेम में पड़कर जल्दी विवाह कर लेते हैं फिर एन डूमेरे में ऊबकर पार-पार का पानी पीते हैं अल्प में सम्मान हो जाता है और पर मर का औरन के मोन-मोन पुनर्विवाह तक हो जाते हैं इसमें पारिवारिक जीवन बीगड़ हो जाता है बच्चे माँ पिता के प्रेम से बिलत हानर बिगड़ जाते हैं और अनेक प्रकार की सामाजिक बिगड़ियाँ पैदा होती हैं।

पर यह तम्बीर ठीक नहीं है हममें अमेरिकन परिवार की कमजोरियों का बहुत बड़ा-बड़ाकर रिपोर्ट गया है। इन कमजोरियों और दोषों के बावजूद अमेरिका का औद्योगिक जीवन मजबूत है। यह औद्योगिक बिगड़ का नहीं परिवर्तनीयता का योग्य है। यदि अमेरिका का पारिवारिक अस्तव्यस्त गराव होना तो इस पर आचार्य समाज भी गराव होगा अमेरिका का युग आधुनिक है या पारिवारिक बिगड़-बिगड़ समाजता का बिगड़ अनेक मन का काम बँधा करने की बजाय और युग अविध्य में बिगड़ाने सब अर्थ और योग्यता

अमेरिका का जीवन बच

सिद्ध होता। क्योंकि इन्हीं बातों पर अमेरिका की कुटुम्ब-व्यवस्था की बुनियाद है। अमेरिका के समाज और आचार-विचार की कुछ बातें आपको धक्की मर्नेयी कुछ बुरी पर अमेरिका का कुटुम्ब अमेरिका के जीवन का धंग है और उसमें उसका पुन-सोप दोनों मौजूब हैं।

यूरोप के परिवार भी घटका अमेरिका में आकार बदल गयी। यूरोप में पिता परिवार का मुखिया होता है। सेटी-बारी या काम-काज नहीं करता है पर अमेरिका में पिता की स्थिति दूसरी है। उसके सड़के उसे छोड़कर बने जाते हैं और अपना पंचा प्रलग करते हैं। सड़कियाँ भी व्याह करके अपना प्रलग बसाती है। पहले जैसे बड़ परिवार या कुनब जिसमें तीन पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं और मिल-जुलकर अपने लठ में काम करती थीं या पारिवारिक दुकान और कारबार बसाती थीं अब नहीं रहे। अब तो परिवार छोटा होता है पति-पत्नी और छोटे सड़के-सड़कियाँ। पुराना परिवार केवल भरम-पोषण ही नहीं घिसा संस्कृति नामिक आचार और विचार ब नाते रिस्तेदारों से सम्बन्ध बनाए रखने का साधन होता था अब परिवार उसी हुए तक यह नाम नहीं करता।

पर इसका यह धर्म नहीं कि परिवार का अब कोई उपयोग ही न रहा। अब परिवार केवल पति की कमाई पर ही नहीं पत्नी की कमाई पर भी चलता है और लख में पत्नी और सड़कियों की पसंद ही मुख्य रहती है। घर का रूप अपनी भी कायम है यद्यपि स्थान या घर बदलने की प्रवृत्ति बढ़ गई है। अब यह सिखा और धर्म का साधन उत्तमा नहीं रहता जितना संस्कृति का। अब इसकी बुनियाद पित्रमन्त्रि या पतिमन्त्रि पर ही नहीं परिवार के सब सदस्यों की स्वतंत्रता पर है। अब परिवार का मुख्य उद्देश्य सामाजिक कर्तव्य का पालन नहीं सबके हित का कलम रखना और हित-मिल कर रहना है। परिवार का जीवन भासा पालन के लिए नहीं धानन्द प्राप्ति के लिए है।

और यह नाई वेब की बात नहीं है। परिवार का सबसे पुराना काम मंठान की उत्पत्ति और सासन-पासन तो अब भी उसका मुख्य काम है। पति और पत्नी पिता और पुत्र भाई और बहन का सम्बन्ध अब परम्परा से उत्तमा बंधा नहीं है उसमें स्वतंत्रता या बराबरी का भाव अधिक है पर इसका यह धर्म नहीं कि अब वह पहले से कमजोर या लराब हो गया है। जिस प्रकार अमेरिका में अपनी बेधमूपा आचार विचार व्यापार-उद्योग समाज दासन और कानून प्रादि में समय और स्थिति के अनुसार परिवर्तन किया है उसी प्रकार अपने परिवार के ढाँचे में भी परम्परा और बिम्बेशरी का कपास रखते हुए परिवर्तन किया है।

अमेरिका का परिवार मुस्लिम, हिन्दू या चीनी परिवार से बहुत भिन्न है।

मुस्लिम परिवार में स्त्रियों का दर्जा नीचा होता है और पुत्रप कई स्त्रियों को लक्ष्य है। हिन्दू सम्मिश्रित परिवार का संभालन दादी या बड़ी-बूढ़ी स्त्री करती है। चीनी परिवार में पिता की आज्ञा-पालन पर बड़ा जोर दिया जाता है और पर का सबसे बड़ा व्यक्ति पुत्र होता है। इस में परिवार का बहुत सा काम माँ-बाप ने अपने ऊपर उठा लिया है। अमेरिका का परिवार एक तो बहुत छोटा हुआ गया है। इसका नाम ताऊ, दादा दादी बुधा-बाबा मीठी-मीठी की स्थापना नहीं रहा। इसका कार्य-क्षेत्र भी बहुत संकुचित हो गया है। अमेरिका और बहा मक बारगानों और स्कूलों में होता है। पढ़ाई स्कूल में पर्यटन पर में रोटी की दण्डमान आपत्ता में और अमरीकी का निपटारा अदालत में होता है। यहाँ तक कि बच्चों के पक्ष अदालत का काम भी मनोवैज्ञानिक का हीन लिया गया है। परिवार अब विवाहित जोड़ों और बच्चों के रहने की जगह रह गया है।

अमेरिकन परिवार की पाँच प्रकारों का वर्गों में रखा जा सकता है। इनमें चार बहुत बड़े पुराने वर्ग के हैं। एक मध्य अमेरिकन या ग्लो इन्फैन्ट का देहाती परिवार है वह बड़ी बड़ा होता है और इसमें लड़के ही गेती और घर का काम करता है और बड़े होकर लम्बा दादा-म्माह करने परिवार में ही रहते हैं। अमेरिकन नहीं होते। दूसरे विरम में अमेरिकन ब्रिगन क बड़ा अमेरिकन घराने का ग्लो इन्फैन्ट क पुराने पुराने के रहने घराने प्राप्त हैं। इन सम्पत्ति और प्रसिद्ध के कारण ये परिवार बड़े रहने हैं और ये अमेरिकन ग्लो या प्रदत्त भी नहीं छोड़ने। अमेरिकन परिवारिक बचन भी इनमें सबकुछ रहता है। तीसरे वर्गों पुराने क समाज अमेरिकन पुराने के इन्फैन्ट तथा अमेरिकन और बहरी परिवार हैं। चिन्ते अमेरिका काय दो-तीन बीड़ियाँ बीत चुकी हैं। ये अमेरिकन पुराने अमेरिकन घराना का बानी इस तक बनीय रगत हैं। फिर भी इनकी नई और पुरानी बीड़ियाँ में बानी अमेरिकन रगत में आता है। चौथे बीड़ियाँ परिवार हैं। इनमें अमेरिकन के गेती में मजदूरी करने वाले बीड़ियाँ भी हैं। अमेरिकन घराने आति हो बन गई हैं और उत्तर के बीड़ियाँ भी हैं। आ बहा-बागानों में काम करते हैं और बड़ी अमेरिकन काम या बीगा मिन जाने की उपाय रहने हैं। ये परिवार का अमेरिकन बहुत बड़ी मात्रा में। अमेरिकन काम पर बाहर रहता है। स्त्री भी अमेरिकन रानी बारगान में बाहर में मजदूरी करती है और बाहर रहती है और बच्चों की देख रोग बड़ा दादा-दादा करने हैं।

चौथी अमेरिकन वर्गों में रहनेवाले अमेरिकन परिवार की हैं। यही अमेरिकन अमेरिकन और बहरी अमेरिकन हैं। इनमें रगत के बहाय माता की अमेरिकन रहती है। अमेरिकन और अमेरिकन क विभाग के कारण अमेरिकन अमेरिकन और बीड़ियों के देख के वर्गों और बारगानों का देण बन गया है। अमेरिकन काम की अमेरिकन में

अमेरिका का जीवन-चक्र

साथों अमेरिकन नर-नारी देश के एक भाग से दूसरे भाग में जाकर बसे घोर बसते रहते हैं। इन्हीं परिवर्तनों से अमेरिका के मध्यमार्गीय परिवार का जन्म हुआ। ऊँचे घोर मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ बरेलू काम मशीनों की सहायता से करती हैं इसलिए उन्हें उतनी ही पुरत घोर सुविधा रहती है जितनी पुराने जमाने में उन घमीर परों की स्त्रियों को रहती थी जिनके यहाँ काम करने के लिए युवानों की प्रीब रहती थी। इन सब कारणों से स्त्रियों में स्वतन्त्रता घोर भात्मनिर्भरता का भाव अधिक आ गया है। प्रम घोर विवाह की स्वतन्त्रता हो गई है। पति घोर पिता की भक्ति का महत्त्व बट गया है घोर स्त्री तथा संतान की स्वतन्त्रता बढ गई है। अब हमें अमेरिकन समाज के ढाँचे की परीसा करनी है। देखना है कि इसमें कितनी स्थिरता है पारिवारिक बाता बरन घोर सम्बन्ध कैसे हैं परिवार का समाज से क्या सम्बन्ध है ?

सबसे पहली बात जो कोई बाहरी देखता है वह यह कि अमेरिकन परिवार में पिता की बहुत नहीं बसती। अपने बपतार या बचे में वह इतना व्यस्त रहता है कि परिवार की कैल देख में अधिक ध्यान नहीं दे पाता। यद्यपि उसे परिवार का मुक्तिवा सो समझ बाता है पर व्यवहार में स्त्री ही के हाथ में मारे अधिकार रहते हैं। घोर बच्चों पर यह अधिकार बसता भी बहुत कम है। बच्चे नहीं मानते कि माँ-बाप की आज्ञा-पासन हमारा बर्न या कर्तव्य है। माता-पिता से बचाव-सवाल करते हैं घोर समझत हैं कि खाने-पीन घोर व्यवहार में जो वे परिवार की बात मानते हैं उसके बदले में उनकी भी बात मानी जानी चाहिए।

पर ऐसा न समझना चाहिए कि सभी अमेरिकन बच्चे उध्मू खन या बिमड़े हुए होते हैं। अच्छे परिवारों में माता-पिता घोर बच्चों में स्नेह घोर सहयोग रहता है। माँ-बाप का प्रेसा बघाते हैं उसके लिए बच्चे झगड़ते नहीं वह पूरे परिवार के संर-सपाटे पर खर्च होता है। वास्तव में परिवार की स्थिरता घोर माता-पिता का अधिकार केवल बच्चे के जोर पर जायम नहीं रह सकता। इसलिए अमेरिकन माता पिता अपनी संतान का मन रखने का प्रयत्न करते हैं। घमनर ऐसा होता है कि माता या पिता एक बच्चे पर अधिक प्रन बिताते हैं, हमचे दूसरे बच्चों पर कुग प्रभाव पड़ता है। अमरिका में एक-दूसरे की देखा देखी बनने की भी बहुत प्रवृत्ति है। माता-पिता घोर संतान भी बराबर पड़ोसी या परिचिन परिवारों का उदाहरण दिया करते हैं घोर बीसा वे करते हैं बीसा स्वर्ण करना चाहत हैं। सब मिलाकर हम कह सकते हैं कि अमेरिकन परिवार में सभी सदस्यों को काफ़ी स्वतन्त्रता रहती है।

इससे बुराईया भी पैदा हो जाती हैं। बहुत-स परिवार टूट जाते हैं। माता-पिता घमनर नहीं जानते कि उन्हें बच्चों से कैसा आचरण करना चाहिए,

उनको भी सी घातों का मनी चाहिए। उनका धारण भी अक्षर सचछा नहीं रहता। व संतान के प्रति धनता बर्नध्य नहीं निभा पाते। बूँकि अमेरिकन परिवार विरासती के बंधन में नहीं बंधे रहते प्रत्येक परिवार दूसरों से स्वतंत्र होता है इसलिए एक परिवार यदि विनम्रता है तो दूसरे उसे गन्ता नहीं रिता जाने। हरेक परिवार अपने ही सम्ये समता है।

कहना है कि अमेरिकन परिवारों की इसी स्वतंत्रता और वृषकता के कारण नहीं कोई राजनीतिक सामाजिक या अधिनायक राज्य नहीं काम हो सकता। इसका एक कारण यह हो सकता है कि जो संतान अपने पिता की सामाजिक और वसासनी का विरोध करती है वह बड़े होने पर राजनीतिक सामाजिक को भी सतन नहीं करती है। परन्तु अमेरिका में जो राजनीतिक स्वतंत्रता और नावतन का साक्षात्कार है उसी के कारण पारिवारिक मोठ्ठन भी है जिसके कारण सामाजिक सतान की दृष्टि है चलने की कोशिश करते हैं उन पर रोड नहीं मोड़ते। बूँकि परिवार ही समाज की और राष्ट्र की सबसे छोटी न्याई है इसलिए पारिवारिक नावतन में वन लड़के-लड़की राजनीतिक अधि नावतता को भी बर्दाश्त नहीं करेगे व सीत बूँदकर किसी नेता के पीछे चलेंगे यद्यपि इस अमेरिका में गन्तावृषकता की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी है।

यह है कि यह त्रिमका बर्चन बरेरेन ह के उपपास 'साइक विद आदर' में लिखा है। त्रिमक त्रिना परिवार का सामक था। यह ती अमेरिकन कानूनों में यह त्रिनाया आता है कि माँ और बच्चे पिता पर सामन करते हैं। वस्तुतः कुछ नाम की भीड़ और कुछ समाज में स्वतंत्रता की प्रवृत्ति दोनों कारणों से अमेरिकन रिना में अपने अधिनायों में बटोनी स्वीकार करती है और यह तो यूरोप और अशियन अमेरिका भी अमेरिकन पारिवारिक स्वतंत्रता को पसंद करने लगे हैं और इसी हन पर वन रह है।

अमेरिकन इगर्ति अपने बच्चों के मानन-नामन के साथ स्वयं भी मानन भना चाहते हैं। वे नावतन-निनाय और परिवार सापोवन में विनभाग करने हैं। अमेरिका में विवाह व नावतन को जो उम्र साधारणतः 20 वर्ष होती है और 21 वर्ष को उम्र तक वह अपनी इच्छानुसार बन्धन वेदा कर लेती है और इनके बाद गन्ताव समाज का वन देती है। त्रिना-स नाम के ही जाने पर बच्चों की अपनी देन देन को अक्षर नहीं बड़नी और सामाजिक को धनता सामग्र देने का भी बानी मोठा विन आता है पर तक है। अमेरिकन माना धनता मारा धन धन की वृषकता बर्दाश्त और बच्चों के मानन-नामन पर देती है। परिवार का स्वतंत्रता का भार माना व निर पर ही बटता है, रिता केवन बर्दाश्त में वन रहता है।

माना बच्चों के बर्नाशमान और मानन-नामन सम्बन्धी रिताये और वन

अमेरिका का जीवन बच

पत्रिकाएँ पढ़ती है और यही बच्चे को पानती-पोसती और आचार-व्यवहार सिखाती है। अमेरिकन बच्चा घर में माता और पाठशाला में गुरुमानी के प्रभाव से बड़ा होता है। कमी-कमी इसका प्रभाव बड़ा बुरा भी होता है। बच्चा में स्नेहता या आशी है। माँ पर अत्यधिक निर्भरता के कारण कर्म लेन में जाकर वह बहुरा जाता है वह पुनर्पोषित व्यवहार करना नहीं जानता। धक्कर बड़ा होकर वह इस जनाने शासन से बिद्रोह भी करता है। दूसरी ओर सड़की पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है या तो वह ऐसा मर्द बूझती है जो उसके बाप की तरह स्नेह न हो और उस पर शासन करे, या वह ऐसा मर्द चाहती है, जो उसकी आत्मा पर बसे।

अमेरिका में एक जगह से दूसरी जगह जाने और अपना काम और रहने की जगह बदलने का काम इतना अधिक लगा रहता है कि हर अमेरिकन एक घर का सनना देखता है जिसे वह अपना कह सके जहाँ वह स्थिर होकर रहे सक गृहस्त्री जमा सक बाल-बच्चों के साथ सुल से जीवन बिता सके। अमेरिकन नवयुवक और नवयुवती बड़े बाब से पत्र-पत्रिकाओं में बरों के मन्त्रों और विश्व देखते हैं और अपने लिए वे एक घर की कल्पना करते हैं। इसी कारण दूसरे महायुद्ध के बाद अमेरिका में मकान बनाने के उद्योग में बड़ी ठेकी आई। अन्धे मकान को अमेरिकन लोग बहुत महत्व देते हैं। अमेरिका में बच्चों में अपराध की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का मूल कारण ही मकानों की घण्टी व्यवस्था का न होना बताया जाता है। अमेरिका में यह विचार किमा जाता है कि मन्त्रा मोहल्ला होमा तो अन्धे चरित्र भी होंगे। और उद्योग मोहल्लों में चरित्र सराब होया।

मेलक यह नहीं मानता कि अमेरिका में कुटुम्ब या परिवार का जीवन टूट रहा है। यह ठीक है कि यहाँ पिता-पुत्र में उतना घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है जितना चीनी या हिन्दुस्तानी पिता-पुत्र में है। यह भी ठीक है कि यहाँ का परिवार पुरानी परम्परा या कड़िया की उतनी रहा नहीं करता जितनी और देशों में होती है। इसका कारण यह है कि अमेरिका बड़ियों से बँधकर नहीं रहता चाहता। पिता-पुत्र का सम्बन्ध भी सामाजिक परिस्थितियों और रेश-काल के अनुसार बदलता रहता है।

अमेरिका में तलाक़ अधिक होते हैं। पर इससे यह न समझना चाहिए कि यहाँ के लोग विवाह के बंधन को नहीं समझते। वे विवाह सम्बन्ध का आधार प्रेम और पति-पत्नी दोनों के हित को मानते हैं। तलाक़ के बाद भी वे पुनर्विवाह करते हैं इसी से जाहिर है कि वे विवाह के महत्व को समझते

है। रहा तलाक़ का बच्चों पर प्रभाव तो अधिकतर बच्चे अपने को नहीं चिन्तित कि अनुसार बना लेते हैं और पुनर्विवाह के बार में परिवार के संग बन जाते हैं। वास्तव में माता-पिता के प्रभाव या तलाक़ होने का बच्चों पर इतना बुरा असर नहीं पड़ता जितना समझें कलह, विरोध और झूठा का।

कुछ लोगों का दयालु है कि छोटी या निचले वर्ग के लोगों का पारिवारिक या सामाज्य जीवन ज्यादा मुश्किल और घण्टा होता है। पर वास्तविकता हमने विपरीत है। साँकड़ों से पता चलता है कि निचले वर्ग में तलाक़ अधिक होते हैं। कुछ हद तक यह बात ठीक है कि निचले वर्ग के स्त्री-पुरुष का पारिवारिक या जीवन-सम्बन्ध ऊँचे वर्ग के प्रकार से ज्यादा घण्टा होता है। पर छोटी के कारण भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध खराब हो जाते हैं और बहसवी टूट जाती है। कुछ हद तक यह बात ठीक है कि तलाक़ खल वर्ग की बीमारी है और बड़ी से निचले वर्ग में घाई और सब हमें तलाक़ अधिक होने लगे हैं। किन्तु यह न समझना चाहिए कि विवाह-विच्छेद निचले वर्ग में घब बढ़ गया है। पहले भी यह बहुत होता था। पहले इन वर्ग के स्त्री-पुरुष एक दूसरे को छोड़ दिया करते थे जानूनी तलाक़ नहीं लेते थे सब लेते लगे हैं।

अमेरिका का चौथन परिवार मध्यम श्रेणी का है और यह बात गलत है कि मध्यम श्रेणी के परिवार में विवाह विच्छेद और अस्थिरता अधिक है। कुछ बाँधों में मध्यम श्रेणी का परिवार प्रमुखा होता है जैसे 'अंतिम-विरोध' में। जब बच्चे होते से स्त्री का स्वास्थ घण्टा रहता है और बच्चे की सम्मान भी घण्टी होती है इसलिए अंतिम-विरोध का चलन बड़ा इतना बढ़ा कि कुछ लोगों की जगमगा करने की बिन्ना होने लगी। पर दूसरे विद्वान नवविचारित वर्गों यह अनुभव करने लगे हैं कि बच्चों से ही पर में घाम-अनल रहता है इसलिए जगमगा बड़ी है। अमेरिकन परिवार की अस्थिरता की बहुत बची होती है पर सब मायामात अमेरिकन नृहस्य अनुभव करने लगे हैं कि परिवार का घाम यह स्त्री-पुरुष के सहवास में बड़ी बन्ध बाध-बन्धों के कारण से दूसरे हल पर में बंधु-बाँधों और समाज के बीच रहने में है।

3. माता पिता और बच्चे

अमेरिका में बच्चों का स्वास्थ और दीर्घ जीवित घाम कुरीतीय देशों से अधिक होती है। केवल एक दशक के भीतर बच्चों की मृत्यु-अंश में घाँट बढ़ी घाँट। म. 1920 में बच्चों की मृत्यु-अंश का जीवन 1000 पर 61.8 का जब कि 1971 में बरकर 100 पर 22.2 हो गया। बच्चे के मातन घाम के तरीकों को इनक नवभाव और घामों में मध्यम पर भी इतर

अमेरिका का जीवन शक

बहुत ध्यान दिया जा रहा है। सैकड़ों मनोवैज्ञानिक और समाज-सेवक छिप कर बच्चों के व्यवहार को देखते हैं और टेप तथा सूची कैमरा पर उनके खेल कूद, लड़ाई-दंगा और आचार-व्यवहार की फोटो उठाते हैं और रिकॉर्ड सेते हैं और फिर संग्रहीत जानकारी का विश्लेषण और अध्ययन करके बच्चों के स्वभाव को समझने की कोशिश करते हैं।

पिछड़े देशों में घरीबी और अत्यधिक सन्तान उत्पत्ति के कारण बच्चों का पालन-पोषण तथा शिक्षा-बीक्षा ठीक ठीक पर नहीं हो पाती। वीटिक मोशन की उपसक्ति तो असंभव है ही पर अमेरिका में यह बात नहीं है। कैबोलिक सम्प्रदाय को छोड़कर और सब जाग यर्म-निरोध के द्वारा बच्चों की संख्या कम रखते हैं। फिर भी बहुत-से बच्चे घनी भी यन्त्री और गरीबी में रहते हैं और बाने-पीने के लिये और पढ़ने की उचित सुविधा नहीं पाते तथा आबारायतों गद्याख्यातों और अपराध की धारतें चीखते हैं। अनेक घरों में स्त्रियों और बाल स्वास्थ्य केन्द्रों की कमी है। अभी भी 10 वर्ष से कम उम्र के करीब 20-30 लाख लड़कों को रोबी कमाने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है जिससे उनकी पढ़ाई में बाधा होती है। फिर भी सब मिलाकर अमेरिका के अधिकतर बच्चे सुख से रहते हैं। सुख से ही नहीं रहते बल्कि अधिक लाड़ से विपद् भी जाते हैं। अमेरिका की समस्या बच्चों के पारितिक विकास की है। सुख या विकास की नहीं बल्कि उनके मानसिक और चारित्रिक विकास की है।

अमेरिका में बच्चों के पालन-पोषण को बड़ा महत्व दिया जाता है। बच्चे पैदा करने के पहले माँ-बाप मूब सोच-विचार करते हैं कि हम बच्चे पर कितना खर्च कर पाएँगे उसको अच्छी शिक्षा दे सकेंगे अच्छी सोसाइटी में रख सकेंगे या नहीं? बच्चों को जनाया भी वही तरह जाता है जैसे कारखाने में भात तयार होता है। बच्चे अस्पताल में सब प्रकार की छूट बचाने का पूरा ध्यान रखते हुए डाक्टर या नर्स बच्चे को जगाते हैं। कुछ मास तक तो बच्चे का ऐसा बचाकर रखा जाता है जैसे किसी रेप्रीडरेटर में कोई चीज रखी जाए। कभी-कभी तो इनका नतीजा यह होता है कि बच्चे माँ-बाप या परिवार के सामाजिक प्यार और बुझावाटी से बंचित रह जाते हैं और परिणामस्वरूप अपने माँ-बाप से लगाव नहीं रखते।

सासकर मध्य वर्ग के माता-पिता तो जिसकुल किताबी डंप से अपने बच्चों को पालते हैं। उसे सहज स्नेह देने के बजाय वे उसे मनोवैज्ञानिक प्रयोग का विषय बना लेते हैं। वे यह देखते रहते हैं कि किताबों में किस उम्र में बच्चे में कितना विकास बताया गया है उसमा उनके बच्चे में हो रहा है या नहीं। बच्चों की आदतों के बारे में किताबों में जो लिखा रहता है उसी से वे अपने बच्चों का विशाल किया करते हैं। जैसे बच्चा घोंगूला चूसता है या बिस्तर में

पेगाब करे या तुमलाय ता उमगे क्या समझना चाहिए । व यही सोचा करते हैं कि हमारा बच्चा स्वस्थ है या अवर्धमान सम्मीला है या छोटा, पम्प्यो से ताजा है या मराई य । अमेरिकन चरित्र इसी महम में पड़े रहते हैं कि एक बच्चा हुआ घबड़ा या बर्द होना । घबरे होने में बच्चे के मन पर बुरा घमर होता है या बर्द भाई-बहन होने से उमगे ईर्ष्या-द्वेष का जाता है । बच्चे पर कड़ाई रगता घबड़ा या स्वभावना देना ?

बच्चा के पालन-पोषण पर अमेरिका में जिसना ध्यान दिया जाता है और जिसकी चर्चा होती है उसकी जायज हा बड़ी और हाथी हा । और यह स्वभाविक भी है क्योंकि सामान्य पवाने बहुत और बचका आदि बोले तथा धम्म घरेलू काम करने की मशीनों के आधिपत्य से घबरे स्थितियों का बचाव कुर्नेल प्रिगानी है और बच्चों के सातन-पालन पर के एवाका ध्यान से सकती हैं । और जब सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों की धूम मची तो बालकों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा पर भी इसका असर पड़ना ही था । यूरोप में अणुबम ने मनीबिज्ञान के क्षेत्र में जो नय गिडगुड स्थापित किए उनमें यह बताया गया कि पाँच वर्ष की उम्र तक बच्चे के जो संस्कार बनते हैं उसी से उनका जीवन का होना बन जाता है । यही यही कुछ माय तो यहां तक कहना है कि जन्म से छः महीने की ही अवधि निर्णायक होती है बल्कि जन्म के पहले ही माँ के पेट में ही बच्चों पर अभिप्रेत की छान पड़ जाती है । स्वभावतः हमसे माता पिताओं को यह बिगना होनी स्वाभाविक थी कि जन्म से ही बच्चे में उचित गहरार डाले जाएं । अमेरिका के मनोबिज्ञान बिचारर जान बी० बाल्मन के सिद्धांत ने हम प्रकृति को और भी बड़ाया दिया । उसका कहना था कि हम मरगा और धूम की प्रकृतियों को जन्म-जन्म हावी हैं इसके अलावा बच्चे का मन बाग बागड है जिस पर आ जाहे संस्कार हाता जा मकता है । छन अमेरिका में बच्चों के साक्ष्य की बाढ़ का गई । बच्चों को कित प्रसार पालन-पोषण चाहिए इस बिषय का नया साहस-विज्ञान बिज्ञान और कुछ बिद्वान बन गए, माया होने लगे अब बच्चों लगने पगो और माना-बिता धर्म मूर्खर बिद्वानों और रिताओं की मलाह पर बनने लग ।

कच नियों के बाढ़ हमकी भी प्रतिबिम्बा हुई और माग बितावी निद्राशी व बहान मन्त्र कोह और स्वाभाविक प्रकृति पर अधिक प्रयोग करने लगे । फिर भी अमेरिका के सामान्य मध्यम वर्ग के लोगों में बच्चों का बिगना करने उनको गबबने उनका टोट हाँसे में हाचने की बागी व्यवसा बाई जानी है ।

पर बोधी ऐलियों में मजदूरों और कामगारों में बच्चों पर हमला ध्यान मही दिया जन्म बोलि उनको अपनी कर्नेन मही दिवानी कि वे बिगाने बड़े और रिगन लगाने । की और मन्मान का मन्मान अधिक स्वाभाविक और कम

तनाव का होता है। जिन बातों में मध्यम श्रेणी के लोग बच्चों पर रोक लगाते हैं उनमें नीची श्रेणी के लोग ज्यादा छूट देते हैं जैसे—गोन सम्बन्ध सफाई कपड़ा-कत्ता तथा व्यवहार के आचरण। दूसरी ओर कुछ बावों में नीची श्रेणी के माता-पिता अधिक कड़ाई से काम लेते हैं। उनके बच्चों को माँ-बाप से बचाने का उनकी बात काटने की छूट नहीं मिलती। नीची श्रेणी के बच्चों की समस्या आवागमन की ओर अपराध-वृत्ति की है, जिसका कारण गरीबी कुसंगति बेज-कूब और उचित शिक्षा का अभाव पिता की शराबखोरी उपेक्षा आदि हैं। दूसरी ओर पोटोरिको जाति के बच्चों की हानि तो और भी बुरी होती है क्योंकि उन्हें अपमान और भेद का सामना करना पड़ता है। ऊँची या मध्यम श्रेणी के बच्चे भी बिगड़ते हैं पर दूसरे कारणों से जैसे अधिक नाइ-प्यार और रोक टोक के कारण। नीची श्रेणी के माता-पिता अपने बच्चों को बोझ समझते हैं और अक्सर उनको उन्हीं के बरोसे छोड़कर सिनेमा या टेलीविजन देखने बसे जाते हैं। उरीबों के बच्चों को काम करना और कमाया पड़ता है और अपने छोटे भाई-बहनों की देख रेख भी। जबकि सम्पन्न वर्ग के लड़कों को खुदमनी की पाठ पढ़ जाती है और वे यह माना करते हैं कि हमारे माँ-बाप हमारी साथी कर्मियों पुरी करें।

बच्चों पर बरकरार है पुराना ध्यान देने का एक कारण यह भी है कि अमेरिका के बहुत-से मध्यम श्रेणी के परिवार नीची श्रेणी से उठे हैं या देहात से शहर में आए हैं। एक ओर वे स्वयं पुरानी परम्परा से कट जाते हैं, दूसरी ओर वे खुद भी यह चाहते हैं कि उनका बच्चा ऐसे ढंग से पले कि ऊँचे समाज में प्रवेश कर सके। और देशों में बच्चा अपने समाज बिगड़ती कूट और पेसे की परम्परा में पसता है जब कि अमेरिका में पुरानी परम्परा नहीं है और माता-पिता का ध्यान इसी पर रहता है कि हमारा बच्चा ऐसे ढंग से पले कि समाज में सफल हो नाम और श्रमण प्राप्त करे। बच्चों से कही आदर्श डालने को वे ऐसे व्यस्त रहते हैं कि उनका काम पुरानी दुनिया की 'परी की कहानियों' और 'पुराणों' की कथाओं से नहीं पसता। उन्होंने अपने बच्चों के लिए जो साहित्य रचा है उसमें बच्चे या तो बड़ी कतुराई दिखाते हैं या बैककूपी। जीवन का जो पाठ पुरानी सम्पदा की कथा-कहानियों में मिलता है और जिसका अमेरिकन माता पिता गोजा और मुर्खता का समझकर तिरस्कार करते हैं वह इन नई कहानियों में नहीं मिलता और फलतः अमेरिकन बच्चा मार-भाड़ और अपराध के 'कामियों' की ओर झुका है। अपना अमेरिकन बच्चे के आदर्श मुख्य-रूपी पुरानों के महानुरूप न होकर बैसमाल के लिताइो और मुनेबाज या टेलीविजन के अभिनेता और कलाकार होते हैं।

अमेरिका के सामान्य मुख्य या मुख्य की स्नेह और माय की बड़ी भूख

होती है। सकलता की दोगुनी में और केरियर या डिग्री बनाने में वह हुरद की मूल नहीं पूरी कर पाता। प्रमी या प्रमिका से जो कुछ पाने का स्वप्न वह देखता है वह वास्तविक वास्तव्य जीवन में नहीं पूरा होता इसलिए अपने दिल का सारा प्यार वह बच्चे पर उड़ान देना चाहता है। बच्चे की चाह अमेरिका में इतनी उबड़ें है कि समाधान के बच्चों को थोड़ सेने के लिए सोम सम्मी रखने देने हैं। माता-पिता के प्रेम का धाधिक्य भी बच्चे के लिए बहुत स्वास्थ नहीं होता। पूर्कि अमेरिकन परिवार धधिरतर अपने में ही केरिष्ठ और दूसरों से दानन रहने हैं बच्चे का प्यार माते-रितेधरों में बँटने ॥ बच्चा माता-पिता पर और दानन माता-पिता दोनों के बच्चा एक ही पर, माता पर या पिता पर ही केरिष्ठ हो जाता है। या तो बच्चा माता-पिता के प्यार या ध्यनिष्ठता से दब जाता है या माँ-बाप बच्चे के इमार्गों पर माचते और धर्याधिक ताड़ करके उसे बिगाड़ देते हैं। दोनो दगाधों से बच्चे का स्वस्थ मानसिक बिबाध नहीं हो पाता।

कभी-कभी तो माँ-बाप बच्चों को देवता के दानन पर बिछा देते हैं और धरने को बिसरन देठा कर देने हैं। धानकर बूबरे देधों से धाकर अमेरिका में नए बने माय या मीची धकडूर या बनिमा धेधी में उठे बोध तो अपने बच्चों को अपने नम की पुगनी मीची परम्परा में बच्चाते रहते हैं और उनको अँधे सबाध की रहन निगाने का प्राधधिक ध्यर रहने हैं। धन यह होता है कि बच्चे धरने माँ-बाप और कुन को मीचा समझने लगते हैं और उनसे काठा स्कीधर करने में भी लगाने हैं। वे टेमीबिडन निनेमा और गैस के हीरो से अपने माँ-बाप की तुगधा करत हैं और उनको मीचा बाने हैं। माँ-बाप बच्चों की डिग्री ही धधिक लागिर करते हैं उनकी ही नय बच्चे उनकी करने हैं। धनन अमेरिकन माँ-बाप धरने बच्चों से धान बाने के लिए ध्यर रहने हैं। अमेरिकन इसी और पुनन धानी धबानी और मुधरना की रता के लिए बहुत ध्यर रहते हैं धारन निग नमनता है कि उनकी पुनी और बापा नमनती है कि उनका पुन रनी में उमय धनुगध रहेगा।

बागु हमने अमेरिका के भाषा निग के बारे में कुरी धारन न बाधनी बाधिन। यह भी धार रनना बाधिन कि पुगाने इव ॥ नयाध में बच्चों को कध भी धधिकार न से और भाषा-निग उगह बहुत दबाकर रगने से। दगाधी प्रगिनिधनधनन अमेरिका के भाषा निग बच्चों को बहुत धधिक दूट दे देते हैं। धर हमने नान भी दूसा है। बच्चे धर उध से और से नानन धरने के बजाय उनका स्नेह बाध करना ध्यर है। हमने बच्चों के उधिय नानन-नानन का धरध भी धनुगध बिबा दया है।

धीरे-धीरे अमेरिकन भाषा-निग भी धधिक ननुनिन दूग। नय 10,00 धक

अमेरिका का जीवन-चक्र

'बच्चाबाद का पागलपन' कम हो गया था और अमेरिकन व्यक्तित्व बंजामिन स्नोक की इस सलाह पर चलने लगे कि अपने बच्चों से स्वाभाविक व्यवहार करना चाहिए। अमेरिकन लोग अब समझने लगे हैं कि बच्चों को ठीक संस्कार देने के लिए माता-पिता को अपने साधारण और व्यवहार से उनके प्रागे उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। यदि पिता अपने को हीम समझेगा तो बालक में घास सम्मान जैसे उत्पन्न हो सकता है। बच्चे का स्वाभाविक स्वस्थ विकास ठीकी होना, जब न तो माता पिता उसे हार से क्या या बच्चा और न हार से क्या सूट हैं। यदि माता-पिता हमेशा संतान के बारे में चिन्तित रहें एक और कुछ प्यार बिछाएँ और दूसरी ओर बच्चे के अपने मन के अनुसार न चलने और अपनी प्राप्ति के अनुसार न निश्चय पर विचारित रहें तो बच्चे पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी तरह यदि माँ-बाप बच्चे के सुख और उन्नति के लिए कुछ कष्ट उठाएँ, उसे अच्छे स्कूल और समाज में भेजने के लिए कुछ खर्चता से रहें तो भी बच्चे का चरित्र ठीक से नहीं बनता। वस्तु यह है कि बच्चे को कुटुम्ब के जीवन में अपना उचित स्थान पाने का मौका दिया जाए, अपनी उपयोगिता जिम्मेदारी और महत्व समझने दिया जाए। अपने माँ-बापों और इष्ट मित्रों के बच्चों के सम्पर्क में पाने और अपनी योग्यता क ठीक अच्छा बनाने और सामाजिक सम्बन्धों को सीखने का मौका दिया जाए। अपने माता पिता के प्रभाव का अन्य व्यक्ति लोगों से मिलने-जुलने का मौका दिया जाए और इस प्रकार स्वाभाविक ढंग से बढ़ने और समाज में स्थान ग्रहण करने योग्य बनने दिया जाए।

4 जब बच्चे बड़े होते लपते हैं

ब्रिटेन में स्कूल जाने की उम्र होने पर लड़के को एकदम बर से उठाकर स्कूल भेज दिया जाता है जहाँ वह छात्रावास में रहता है और अपने साथियों से भली-भुरी आदतें सीखता है। अमेरिका के लोग अपने बच्चे का एकदम से घर नहीं छोड़ते। वे उसे छुट्टी में बच्चों के शिबिर में भेज देते हैं और जब उसे घर से घसगस करने का कुछ सम्पाद हो जाता है तब उसे छात्रावास में भेजते हैं छात्रावासों में अधिकतर बच्चे घरों के ही लड़के रहते हैं। घसगस में सेना में जाकर अमेरिकन किशोर अपने पैरों पर खड़ा होना सीखता है। पर बहुत-से ऐसे लोग भी हैं जो अपने बच्चे को घसगस नहीं करना चाहते दूसरी ओर साधारण या गरीब वर्ग के लोग हैं जिनके बच्चे स्कूलों पढ़ाई समाप्त करते ही जीवन के घसगस को छोड़ दिये जाते हैं। कुछ मध्यम वर्ग के लोग भी बालक

की इम्मेनसी में से होते हैं और इन स्यास में उन्हें किसी भी सैनिक स्तूल में भेज देने हैं कि वहाँ उसे डिमिप्सिड और स्थापत्यमन्त्री की धारत पड़ेगी।

अमेरिका में स्पर्धा की प्रकृति प्रधान है। क्या घर में क्या बाहर लड़ना पड़ी नीयता है कि हमें भाग बनना है। अमेरिका की अधिकांश जनसंख्या ऐसे लोगों की है जो पन या उन्नति की धारा में धुंमरे देगों में भाँकर बसे। पन बड़ी लहरें व पन में यह शब्द भरा जाता है कि हम अपने माता पिता से ऊपर उठना है ऊँच समाज में घेड़ना है ऊँच घर में शादी करनी है कमाया कमाना है। घरका घर बनाना है। ऐन स्पर्धात्मक वातावरण में अन्तर्मुखी स्वभाव के प्राणी का स्थान कहां? यदि कोई लड़का ऐसा हुषा हो मजबूत जाता है कि उसका स्वभाव विकसित नहीं हुआ और सामाजिक निर्दोषता को दिखाने की उन्नत है।

कोई धारणा कहां तक उन्नति कर सकती है इसकी सीमा अमेरिका में बड़ा बोझ पानी। समझा जाता है कि उन्नति के द्वार सबके लिए खुले हैं दुःख भरा हो तो कोई भी ऊँचे-ऊँचा घर या मकान है। उपपत्ति हा खरता है। हमने अत्यन्त लड़के-लड़की में लड़क ही अस्म्य आभावाद आ जाता है। बचपन में ही वह समृद्धि के वातावरण में रहता है। उसे अपने माँ-बाप से सब चीजें मिलनी जाती हैं। विमोचन की बन्धु के बाद विजय की गिनती की रेल और उनका बाप लक्ष्मण की मोटरगाड़ी घर के बाद एक चीजें उस घर व युवाविक्रम प्रभावित मिलती जाती हैं।

इसका एक लीला यह भी होता है कि अमेरिकन आत्मक का निराशा और विचरता के चक्के लड़ने का अभ्यास नहीं हो पाता। वे जीवन में बिना लड़ा के निल लेंदार नहीं हों।

सूखे या गुगने देगों में सब तरफ सेरे बने रहने हैं और लक्ष्मण और लक्ष्मणों ऐसा अनुभव करते हैं कि उसे इन घरों का लालना है। वह अमेरिकन विचार व भावे कायर शत्रु गुना है वह जिनकी दूर बाड़े का लालना है। उस बचपन में ही कष्टानु भरणता की कहानियाँ सुनना का मिलनी है। उसे यदि कोई दिना रहती है तो यही कि इन लड़कों में कहीं से पीछे न गूँ जाऊँ। निराशा या गुगन का उगव जीवन में कोई स्थान नहीं।

हमारी धारि अधिकांशीन बनों के लुब्ध भी अपने घरों की सोइकर धारें बदन की व दिग बने हैं और यदि उन लक्ष्मण लहो जिनकी ता वे अपने ही को दोष देते हैं यह लहो लक्ष्मण कि हमारा लक्ष्य अनाथ्य था।

अमेरिकन लड़का यह कभी नहीं भूलने वाला कि वह लैनी दुनिया में रह रहा है जो बाहुल्य में धारें लीड़ रही है। रेल मोटर, हवाई जहाज जिनके घर में वह बिना रहता है इन निरागर बोझ के अन्तर्गत है। दिन दूरा में वह

साँस सेता है वह बाबिराम गति और स्पर्श से मरी है। जो वह पड़ता है जो दकता है और जो धादर उसके सामने रहते हैं वे सब इसी उन्मत्ति की चोड़ के प्रतीक होते हैं।

उसने धाधा की जाती है सि वह असम्भव को सम्भव कर दिखावे इसी प्रकार वह भी अपने माता पिता और समाज से इतनी धाधाएँ करता है जो पूरी नहीं होती। उसके माँ-बाप स्वयं जीवन की भाण-चोड़ में इतने व्यस्त रहते हैं कि जिस पर ध्यान देने या उसे सम्भलने की कुशल नहीं पाते। स्कूल और पाठशाला भी उस वह सहानुमति नहीं दे पाते बल्कि वे भर्त्सित कार्यों की ओर झुक्ते हैं। ऐसी-विचित्र नाच और हल्लावाजी तक ही यनीमत है पर अपराध और हत्या जिसकी सड़कें धाएँ हिन मोटे मोटे धमरों में छपती हैं वास्तव में बड़ी चिन्ताजनक और भयानक बातें हैं। इसी प्रकार स्कूली लड़कियों के व्यवहार बचक भी हैं।

हमस दुष्टे (यू कंड सो होम एवेन) जैसे उपन्यासकारों ने रात को सड़कों पर इकट्ठा करने वाले गिरोहों का बड़ा ही भयानक और रोमांचकारी चित्रण किया है। वास्तव में अमेरिका का किशोर हमी गिरोहों से जीवन का पाठ पढ़ता है। वह गिरोह विद्रोह और अपराध के बीच की पतनी रेखा पर लड़ा खड़ा है। विद्रोही लड़कों का गिरोह ऊबम मारपीट और कमी-कमी अपराध के रूप में धाधा पिता धाधापक और पुलिस के अधिकार को चुनौती देता है। गिरोह के जीवन में ही अमेरिकन किशोर को नेतृत्व धाधा-धामन छात्रियों से बड़ावारी बहादुरी और कष्ट सहिष्णुता का धक्का सीखने को मिलता है। वहीं उसे स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का ज्ञान होता है। वहाँ वह सीखता है कि अपनी ताकत और हिम्मत के बल पर अपने धाधियों का सम्मान और उनके धाधुमा होने का मोरब धामा जा सकता है वैसे या बराने के बल पर नहीं। पर विद्रोह उसे मारपीट बसात्कार हत्या और मृत धादि बचक अपराध की ओर भी प्रवृत्त करता है। यद्यपि सब लड़के इतनी दूर नहीं जाते।

धहुरों में लड़कूँ धेनी के लड़कों के लिए गिरोहवादी का जो स्थाव है वही स्थान धिधित धर्म के लड़कों के लिए कामेज जीवन का है। वास्तव में पढ़ाई को इतना महत्व नहीं दिया जाता जितना लमकूर कामेज के राज नीति और सामाजिक जीवन को। अमेरिकन लमधुधक वेल्कूर में लमकने और धाधुधर बनने की बी-चोड़ कोविध करते हैं। वहाँ अमेरिकन किशोर की उमड़ती हुई रक्ति और जस्ताह की धमिधक्ति का बहुत धाधा धन मिलता है।

अमेरिकन लालक या लालिका ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं त्यों-त्यों वे अपनी स्वतन्त्र सत्ता को जताने की कोविध करते हैं। वे अपने माता-पिता और स्कूल-कामेज के अधिकारियों के धाधन से विद्रोह करके अपनी स्वतन्त्रता कोविध करते हैं।

परिवार के घरे में निकलकर वह अपने को स्वतन्त्र होने के साथ-साथ अपना भी पाता है।

जिन परिवारों में माता-पिता अपने अपने लक्ष्य-लक्षियों से मितता और स्नेह बरतते हैं उनके साथ और-सपाते की जाते हैं। आत्मिक मितता है। वहीं स्वतन्त्र बनने-पाने नहीं अनुभव करता। परन्तु ऐसे परिवार भी हैं जहाँ किसी या किसी-किसी को यह अनुभव पारिवारिक जीवन नहीं मिलता। अनेक ऐसे परिवार भी होते हैं जहाँ माता-पिता दोनों काम-धन्दा करते हैं। और लक्ष्य-लक्षियों को समय नहीं दे पाते। कुछ ऐसे परिवार भी हैं जहाँ पिता मरे या मृत रहते हैं। छोटी-सी भी मार भी सम्मान-स्नेह की भाँटा को मुना देती है। पर अनेक अमीर परिवारों में भी स्नेह का अभाव रहता है। ऐसे स्नेहीन परिवारों में भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त अधिक कठिनाई होती है।

बहुत-से युवक छोटी या लोथी आँखों के घरों में होते हैं पर मध्यम श्रेणी के बीच रहते हैं और उन संघर्ष में प्रवेश करना चाहते हैं। किन्तु उन्हें इस संघर्ष में जाने का मौका नहीं मिलता। अतः वे कुछ और असफलता के विकार होते हैं।

अमेरिका में युवक को उन्नति के अवसर मिलते अधिक हैं। उन्नति ही महत्वाकांक्षा भी उनमें है। पर उन्नति के साथ विनम्रता और व्यक्तता और विनम्र होने पर व्यक्तिगत का दुःख भी उन्नति ही अधिक होता है।

अमेरिका में युवक में एक बड़े-एक साथ गमने और एक-दूसरे को बराबर समझते हैं। पर जैसे वे कहते हैं। 'अमेरिका उन्हें लगाया जाता है। उन्हें यह बताया जाता है कि गोरे लड़कों को नीचे से न मिलना समझा चाहिए। उन्हीं तरह लड़कें भी बट-बटकर गयी जाती हैं कि उन्हें अपनी मान्यता के अधिक-से-अधिक दाव रखे करने हैं। उनमें अधिक-से अधिक फायदा उठाना है। बड़े हान पर अक्सर युवक को गहरा बड़ा रोना दिनाई देता है। और वे लोग बड़े वैयक्तिक समझे हैं। उनके बीच उन्नति अभाव बढ़ा है। प्रौढिक महत्वाकांक्षा को सबसे अधिक महत्त्व देने के कारण उन सब गुणों को बेकार लगना जाता है। किन्तु एक-एक समझे में बदल नहीं मिलती। यदि कोई लड़का बनना या भाव-अभाव है और अपने में बैठकर मन-विचार करता है तो उसका विकास उठाया जाता है। लड़कों को यह उद्देश्य दिया जाता है कि सबसे लंबे समय-अधिक अवधि तक, अगर बिना अपनी भावों में अपने-आप निभने वाली अर्थ-मन्त्र का मोलापत्ति है। बहुत-ही समय लगी-ही यह होता है कि युवक को उन लोगों के मिलना बहुत है। किन्तु वह मिलना नहीं चाहता और उन लोगों के दूर रहना चाहता है। किन्तु उसका अभाव न मिलता है। इनमें

मन में एक प्रकार का भ्रमोत्पन्न और अकेलापन भा जाता है। समाज में रहकर भी भावमी अपने मन के भीत के लिए तरसता रहता है।

बचपन से ही लड़के को अपने भविष्य के बन्धों के लिए तैयारी करनी पड़ती है और यदि वह पैसा या बच्चा उसके मन के माफिक न हुआ तो अपना मन मारना पड़ता है। बड़ा-सा बड़ा होने पर लड़का चास काटने लड़क से बर्तें हटाने समझता से जाने बच्चों को मनोरंजने के छोटे-मोटे काम करने मगता है और अपना पैसा खोड़कर अपने मन की चीज खरीदता है। इस प्रकार वह पैसे या पैसे की कदर सीख जाता है। वह ऐसे पन्थे और कारीगरी सीखने में लग जाता है, जो अपने उसके काम आएँगी। इन कामों में मिली सफलता से उसके माँ-बाप उसके भविष्य की सफलता का सम्बाध मगाते हैं और इसी से वह भी अपनी योग्यता का सम्बाध मगाता है।

अमेरिका में लड़का अपने मन का काम-बन्धा करने को स्वतन्त्र है। पर व्यवहार में यह स्वतन्त्रता काफ़ी सीमित है। उरीम बरों के लड़कों को बहुत मोठे नहीं मिलते, उनके काम-बन्धा बन्धे हुए हैं। फलतः इस वर्ग में कुछ और लोग भी काफ़ी हैं। मध्यम वर्ग के लड़के भी शुरू से अपना ध्यान उस पन्थे या व्यवसाय पर रखते हैं जो उन्हें करना है। कालेज में वह ऐसे ही बिपय लेता है, जिससे बच्चा पाने में मदद मिले न कि ऐसे बिपय जिससे बुद्धि विकसित हो और दृष्टि उधार बने। अमेरिकन लड़का या लड़की शरीर से अपना पहने हो जाता है पर मन से बन्धा रहता है। पौन सम्बन्ध के मामले में अमेरिकन समाज काफ़ी कड़ाई करता है। धातकम हर अमेरिकन किछोर को कुछ तात फौज में काम करना पड़ता है। फौज में पीनाचार के मामले में काफ़ी सख्त रहती है और लिमों से सम्बन्ध या पैपुन मुर नहीं समझा जाता फिर भी फौज के जीवन में लिमों को स्वाम नहीं और इसके कारण अमेरिकन लक्ष्य कुछ दिनों तक काम-बन्धा करके ब्याह करने और गृहस्थी बनाने का मोड़ा नहीं पाता।

अमेरिकन किछोर के सामने धातक या नमूने का भी बड़ा सम्बाध रहता है। लड़का अपने पिता की नकल करता है। पिता धातकदार दफ्तर या पैड़ी में काम करता है। बच्चा या पैड़ी में रोमांचकारी घटनाओं की क्या भुंवाइय। अमेरिका में शुरू में धातक बसने वाले लोगों को जंगली जानवरों और धातक-वासियों का मुकाबला करना पड़ता था। अमेरिकन किछोर को धातक और लड़कियों की इन कहानियों में धातक भी बहुत मजा आता है। यद्यपि धातक उसके जीवन में इनका कोई स्थान नहीं। धातक तो वह कर नहीं सकता पर मातापिता का जीवन उसे बहुत धातकित करता है। मार्क ट्वैन धातक सचकों ऐसे लड़कों की बहुत कहानियाँ लिखी हैं जो नहाया नहीं बाल बिछेरे और

गन्धे काढ़े पहने घूमता है स्कूल से भागता है धारावाहक करता है और मोरों या लड़कियों का मजाक उड़ता है। अमेरिकन बरों में स्त्रियों का शासन रहता है और स्त्रियों में भी स्त्रियाँ पढ़ाती हैं इसलिए उनकी प्रशंसा करना भर्त्सनीय मानी जाती है। बहमायों को बहानियों और वैज्ञानिक उपयोग पढ़ने का भी अमेरिकन लड़कों को बड़ा शौक होता है। पढ़ाई लड़कों को मतिशों में मारपीट करने निषार देने वाली बहने और योगाचार की बातें सुनने में बड़ी मनमानीदार मजा मिलता है जो उसका पूरकों को जयशिरों से भड़ाई करने में जाता था। इन बातों को वह भर्त्सनीय समझता है।

लड़कपन से निवृत्तकर विपरीत में जाने पर अमेरिकन लड़का बचस्क गुरा के अनुभव ईदता है। वह पाठियों और माथों में जाता है। उसकी इच्छा होती है कि उसकी छपनी मोटर हो और वह लड़कियों से मिले-जुले। इसके लिए वह नाम-बग्या करके बैठा जोड़ता है। लड़कियों के मिलने-जुलने में बीन-बाचना उतनी प्रचलन नहीं मिलती यह उल्लेख कि बचस्क पुरुष का जीवन कैसा होता है। बचस्क पुरुषों की तरह धारण करने में अमेरिकन किछोर मात्र और हवाई जहाज शोकाता है किछम और टेनीसबल का शिताप बनने की कोशिश करता है और तरह-तरह के कामों में हाथ प्रयत्नता है और दर-दर की छान छानता है। अमेरिकन मुक्त लेखकों की मुरु की रचनाओं में अधिष्ठार इनी उम्र के पुरुष के अनुभवों की कहानी रहती है और किछाव की विस्तार पर बड़े मन से हमारा उल्लेख किया जाता है कि मैथक ने गुरु से अनुभव किये हैं।

मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि सब अमेरिकन लड़के मैथ की तरह एक ही तरीक पर चलते हैं और व्यक्तिगत विनयता या लीक छोड़कर चलने वाले का अमेरिका में प्रभाव है। अमेरिकन मुक्त का एकमात्र अर्थव्यवस्था-व्यवस्था में मतलब हो नहीं सकता यह मुख्य अर्थ है अति आरामाभिव्यक्ति भी है और कुछ मुक्त करने शान्ति पर चलने की वांछित करते हैं और इसमें सकल भी हो। है। एक एक एक के दुमनों की तरह काम-काज करते हैं और रहते हैं इनके माथ बन-भी बातों में के चलने हंग पर चलते हैं। इन विद्या में प्रचलन अर्थ और समाज में संघर्ष भी होता है और परिणाम दुगर भी होता है। पर बीरे-बीरे अमेरिकन विपरीत व्यक्ति और समष्टि में समन्वय करना सीखता है और इन प्रकार व्यक्तिगत जीवन व्यक्तिगत का विकास कर रहा है।

5. कोरनिट, अब और विवाह

अब का अमेरिका के जीवन में बहुत बड़ा स्थान है। इनके अमेरिकन पुरुष ऐनी बेविन का मतलब देता है जो हानीपुत्र की शारिका से टकरा के

धीरे-धीरे अमेरिकन लड़की ऐश प्रेमी का दिल जीतने की कामना करती है जिस पर लड़कियाँ जाल हैं। बचपन में अमेरिकन लड़का या लड़की माता-पिता के स्नेह की जो मिठाई खाता है, वह उसकी प्रेम की व्यास को धीरे भी तीव्र कर देती है। अमेरिकन प्रेम बड़ा रोमांटिक होता है। अमेरिकन प्रेमी या प्रेमिका समझती है कि उसके सच्चे प्रेम का पान कोई एक ही है और इसी प्रेमी या प्रेमिका की तलाश उसका खाद्य भोज्य होता है और सब बातों में अमेरिकन पुस्तकार्यवासी होता है पर प्रेम के मामले में वह माध्यवासी होता है और सब बातों में वह अपने भाग्य का निर्माता स्वयं बनता है, पर प्रेम के मामले उसका बल नहीं बनता। प्रेम की शक्ति उसके लिए अत्यन्त रहस्यमय और दुर्निवार होती है। वह ऐसे जीवन साथी को ढूँढ़ता है जो उसके जीवन के सुनेपन को दूर कर सके और उसके अपूर्ण व्यक्तित्व को पूर्णता दे सके।

अमेरिकन युवक अपने प्रेम व्यापार में अपने जीवन-संगी की खोज में भी सही तीव्र स्पर्धा से जूटता है, जिससे वह व्यापार या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। उसके समाज में प्रेम और व्यवसाय में सफलता पौष की प्रतीक मानी जाती है। प्रेम के भलाइ को वह अपने पौष या भवितव्य का पटीका-स्वप्न समझता है। अपनी भवितव्य दिखाकर अपनी प्रेमिका का हृदय जीतने के लिए वह धापुर रहता है।

प्रेम का यह खेल या कोर्टशिप करीब 17 वर्ष की उम्र से शुरू होता है इस समय वह दोन सम्बन्ध के लिए पृष्ठ संश्लेष होता है। इस उम्र से लेकर अपने 15-16 वर्ष तक अमेरिकन किशोर-किशोरी प्रेम का खेल चुसकर खेलते हैं और स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का स्वाद खाते हैं। इन वर्षों में डेटिंग (मुसाक़ात) मोटर की धीरे, नाच धानियम और जूम्बन की जूम रहती है। बूकि अमेरिका में प्रेम के बाद विवाह होता है विवाह तय नहीं किया जाता, इसलिए लड़के-लड़कियों को कोर्टशिप या मिलने-जुलने में काफ़ी छूट दी जाती है। ठीकी शैलियों में यह मिलना-जुलना कालेज पार्टी या नाइट क्लबों में होता है मध्यम श्रेणी में सिनेमाघरों गिरजाघरों या खेलगाहों में और छोटी श्रेणी में मेलों या सस्ती सरायों आदि में। पर सभी शैलियों में 'डेटिंग' या संकेत सबसे बराबर प्रचलित है। डेटिंग की प्रथा अमेरिका की प्रासिद्ध है। इसमें लड़के या लड़की मिलने की कोई तारीख या समय स्मर कर लेते हैं। जिस लड़की की जिदगी पयास डेटिंग होती है वह अपनी 'पापुलर' या सफल समझी जाती है। यदि एक ही लड़की और लड़का बार-बार डेट करें या मिलें तो समझा जाता है कि उनमें प्रेम हो गया है। यदि नहीं-नहीं लड़कियों से डेट तय हो तो इसका अर्थ है कि अभी एक युवक प्रेम बचन में नहीं आया है। जो लड़का या लड़की जितने पयास धार्यक होते हैं उनके डेट की मांग उतनी ही अधिक रहती है।

इतिम में होता क्या है ? यह एक प्रकार से प्रेम का इन्धुपुत्र या घटरम है। भातिमन भूमन कर स्पर्श की परिणति शरीर समर्पण या संभोग में होती है। किन्तु इन्ही के लिए चेष्टा करता है और बिछोरी इन्ही को बचाती है, पर इन्सा बचा भी नहीं पाती। बहुत-सी बटें इसी चरम परिणाम पर पहुँच भी जाती हैं और कमलस्वरूप अमेरिका के समाज में यौन स्वेच्छाचार काफ़ी पामा जाता है। पर इतिम या प्रेम को यह घटरम महक बैलबाड़ स्वेच्छाचार या जीवन की उच्छृंखलता नहीं है। इसका मूल उद्देश्य है उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश। यह एक प्रकार का प्रयाण या दायम है जिससे किमोर या किमोरी यह जानने की कोशिस करते हैं कि वे एक-दूसरे के साथ मुझी रह सकते हैं या नहीं। इसलिए वे भातिमन और संयस्य भ बहुत दूर तक जाते हुए भी यदा-सम्बन्ध संभोग को बचाते हैं। इतिम के साथ-साथ बोझा बाँध लेते हैं और मबातार एक-दूसरे से मिलते और वेधरिय (भातिमन समस्पर्श) करते हैं। अन्तर यह जोड़ाबंदी हुई स्कूल या जालज से ही मुक्त हो जाती है और कालेज छोड़ने तक अर्थात् 4-6 वर्ष तक चलती है। अन्तर इस प्रकार जोड़ों में सपारी या बाग़दान भी हो जाता है। इसे एक प्रकार का विवाह या दाम्पत्य प्रयोग-ता बहना चाहिए। इस प्रकार के युवक-युवती एक प्रकार का विवाहित जीवन बिताने का समर या जाते हैं जो धार्मिक कारणों या सम्य कारणों से विवाह करने की स्थिति में नहीं होते। किसे का अनुमान है कि कालेज जाने वाले 50 प्रतिशत विद्यार्थी इस प्रकार की इतिम या प्रेम-वैधन का अनुभव प्राप्त कर चुके होते हैं।

अमेरिकन लीव प्रेम को विवाह के लिए प्रावश्यक समझते हैं और उनके प्रेम की परिणति विवाह ही होता है पर विवाह के बाद यह औपन्यासिक प्रेम एक सपना-सा लगता है। प्रेम की रंगीन दुनिया विवाह की ठेक रोयनी में गायब हो जाती है। विनेना-चिह्नों और प्रेम-कहानियों से प्रेम के जिस संसार की मूर्ति होती है वह नून ठेल लकड़ी के बग़े और बाल-बच्चों की विस्तारों में गायब हो जाता है। कमलस्वरूप अमेरिकन युवक या युवती को ऐसा लगता है मानो उसने भोला भया हो। फिर भी प्रेम की मृगतुष्णता बनी रहती है। स्त्री अवस्थाओं के पट्टों में घपने लोले प्रीतम का ईहनी है और पुरय कमर और कन्तर में अपनी निराशा को भुनाने की कोशिस करता है या कोट में धँकता है। अनेक सम्पत्ति विवाहित जीवन की बटु वास्तविकता से संमति बैठाने में लक्ष्य भी हाथ है और विवाह के पूर्व के औपन्यासिक प्रेम को दाम्पत्य प्रेम का कन देने में सकल ईर्ष्या है पर अनेक ऐसे मकल या मुग्गी नहीं होने। वे मन-ही मन प्यारे रहते हैं और पर-मुग्ग या पर-स्त्री से प्रेम की मूल मिटाने की कोशिस करते हैं या तपाह का सहारा लेते हैं। पर तपाह के बाद व फिर से विवाह भी

अमेरिका का जीवन-व्यवस्था

करते हैं। इससे पता चलता है कि विवाह बन्धन या साम्प्रदायिक जीवन में उनका विश्वास बना रहता है, वे केवल यह समझते हैं कि उनका चुनाव सतत था। औपचारिक प्रेम की इन विफलताओं को देखकर कुछ लोग यह कहते हैं कि इस प्रकार के प्रेम-विवाह से पुराने ढंग से विवाह अच्छे, पर अमेरिकन लोग ऐसा नहीं समझते। प्रेम करने की ओर अपने जीवन साथी को धुनने की स्वतंत्रता अमेरिकी समाज की स्वतंत्रता का अभिन्न अंग है। अमेरिकन जिस प्रकार अपना व्यवसाय धुनने की स्वतंत्रता है उसी प्रकार अपना बोझ धुनने की भी।

परन्तु व्यवहार में यह स्वतंत्रता काफ़ी सीमित है। बेनी घाय जाति और भौतिक बल को तोड़ना काफ़ी कठिन होता है। मध्यम वर्ग की कितनी किमी करोड़पति क लड़के से प्रेम और व्याह का सपना भले ही देखे पर उसे अपने ही वर्ग और व्यवस्था अपने ही मोहरे के किसी युवक से संतोष करना पड़ता है। इसी प्रकार युवक भी चाहे सिनेमा तारिका को मन में बसाये पर मिसत्री उसे साधारण अपने वर्ग की लड़की ही है। वैसा का भी काफ़ी महत्त्व रहता है। वैसा के लिए ही शादी करने के नाम से अमेरिकन युवती लड़कती हैं पर वैसा के साथ प्रेम हो तो सोने में सुनंघ या जाती है। इसके समाना वर्ग भेदना या संस्कार भी अनिष्ट रूप से प्रेमी के चुनाव को प्रभावित करते हैं।

अमेरिकन विवाह का सत्य सुन है। प्रेम को वह इसलिए बहरी मानता है कि उसकी समझ में प्रेम रहित विवाह से सुख नहीं मिल सकता। इस पर वह भी कहा जा सकता है कि अमेरिकन विवाह शारीरिक सुख पर आधारित है और वही पति-पत्नी एक-दूसरे से ठीके वही सम्बन्ध टूटने की नीबत आई। पर बात ऐसी नहीं है। सहास के साथ-साथ गृहस्त्री में भी स्त्री-पुरुष सुख पाते हैं। जसती गृहस्त्री के पुरुष को बेसा ही आत्मसंतोष मिलता है जैसा जसते व्यवसाय में और स्त्री को अपने बच्चों में समाज में सम्मान और हितवत् में सफलता और संतोष प्राप्त होता है।

बहुते हैं कि अग्रज पति सह चाहता है कि उसकी पत्नी घर के प्रबन्ध में निपुण हो समन्वय हो बच्चापार हो और भोजन अच्छा बना सके। अग्रज पत्नी चाहती है कि पति समन्वय हो विनोदी हो सञ्चरित हो और उबार हो। अग्रज सुन्दरता व्यवसाय-निपुणता या पैसा जमान में कमता और नाम भक्ति पर उतना जोर नहीं देते। दूसरी ओर अमेरिका में सुन्दरता आकर्षण पैसा कमाने की क्षमता और काम संतुष्टि को अधिक महत्त्व दिया जाता है। अग्रज इन्हीं में उन गुणों पर जोर दिया जाता है जिनमें गृहस्त्री जसती है और पति-पत्नी में मिलन होता है जबकि अमेरिका में सहास सुख पर। इससे एक कुरा गतीजा यह होता है कि अमेरिकन पति-पत्नी इसी जगता में पड़ जाते हैं कि वे एक-दूसरे को शारीरिक सुख देने में असमर्थ तो नहीं। इसके लिए व

कामपात्रता आदि पड़ते हैं। इस प्रकार की पढ़ाई से कुछ लाभ भी होता है क्योंकि इससे अनेक आतं चारणार्थ और झूठा डर दूर हो जाता है।

काम-शक्ति के बारे में यह चिन्ता कामुकता की ओरक नहीं है। अगर ऐसा होता तो अमेरिकन दम्पति व्यवहार की ओर झुकते जहां यूरोप में होता है। इससे यही सूचित होता है कि अमेरिकन स्त्री-पुरुष यह समझते हैं कि कामतुष्टि से सामान्य प्रेम और दूर होता है। अमेरिकन पुरुष स्त्री को आत्माकारिणी वाली या वरावतिनी के रूप में नहीं प्रेममयी आविन के रूप में देखना चाहता है और चाहता है कि स्त्री-पुरुष दोनों सहवास से समान सुख पाएँ। स्त्री या पुरुष किसी का व्यक्तिगत सब नहीं और दोनों को समानरूप से आनन्द मिले।

अमेरिकन स्त्री और पुरुष दोनों प्रेमेसेपन से बहुत चबराते हैं। इसलिये उल्लास के साथ अभिवांछ स्त्री-पुरुष फिर से व्याहृ करते हैं। अमेरिकन घरबारों में एक प्रेम पीढ़ियों का स्तंभ होता है। इसमें स्त्री-पुरुष अपने विवाहित जीवन की या प्रेमी-अभिका सम्बन्धी कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ पेश करते हैं और उसको सुलभान के लिए सलाह माँगते हैं। इससे पता चलता है कि प्रेमेसेपन या प्रेमपन को दूर करने वाले साथी की अमेरिकन स्त्री पुरुष की चिन्ता चाह और उत्साह रखती है।

कुछ लोगों का क्याल है कि अमेरिका में विवाह की प्रथा टूट रही है पर आँकड़ों से यह बात मजबूत सिद्ध होती है। 1840 के दशक में जनसंख्या में 14 प्रतिशत वृद्धि हुई पर विवाहित दम्पतियों की संख्या में 24 प्रतिशत वृद्धि हुई। परिस्थितियाँ अधिक उन्नत में व्याहृ करने के पक्ष में हैं। व्यावसायिक और धार्मिक दृष्टि में अधिक समब लगता है और रहन-सहन का स्तर भी काफ़ी ऊँचा हुआ है फिर भी प्रवृत्ति जैसी व्याहृ करने की है। व्याहृ के समय लड़की की औसत उम्र करीब 20-4 वर्ष है और लड़के की 22-23 साल। इसका कारण कुछ लोग यह बताते हैं कि अमेरिकन लड़की कमाई करने से चबराती है और पुरुष पर आविष्ट रहना चाहती है और कुछ लोग इसका कारण काम-आवना बताते हैं। परन्तु ये दोनों बातें ठीक नहीं क्योंकि जैसा पहले बताया जा चुका है कि विवाह के पहले भी अमेरिकन लड़के-लड़कियाँ जोड़ा बाँधकर रहते हैं और काम-आवना को संतुष्ट कर लेते हैं। दूसरी ओर काम-आवना करने वाली विवाहित स्त्रियों की संख्या भी कम नहीं है।

वास्तव में जल्दी व्याहृ करने की प्रवृत्ति का कारण स्त्री की काम-आवना या कमाई करने से चबराहृ नहीं बल्कि भ्रम की भाव है जो अपनी गृहस्त्री और घरने बच्चों से मिलता है। अगर यलावा अमेरिका में विवाहित स्त्री की समाज में दायित्व भी अधिक होती है। पुरुष इसलिए जल्दी व्याहृ करना चाहता है कि उसे जल्दी हुई गृहस्थी का स्वाद होने में अपना ही आनन्द आता है जैसा

बसते हुए कारवार में। साथ ही यह प्रबन्ध में निपुण मेहनतगारों और श्रमिकों का प्रबन्ध करने वाली बच्चों को प्रबन्धी तरह रखने वाली प्रबन्ध कपड़ा-सजावट करने वाली आकर्षक और मिसमसूर पत्नी से समाज में पति की मर्यादा बढ़ती है। दूसरी तरह पति प्रबन्ध पर प्रभा समाज में हस्तियत और इतरत हुई, प्रबन्ध लोगों से मिसमा-मुसमा प्रभा तो स्त्री की भी इतरत बढ़ती है। विवाह को प्रभा समझे हुए, निष्पत्ति का उत्तरा हस्ते हुए भी इन्हीं कारणों से अमेरिकन नवयुवक और नवयुवती जल्दी ब्याह करते हैं। अमेरिका में ब्याह के उत्तरों को काफ़ी बढ़ा-बढ़ाकर दिखाया जाता है। यहाँ ऐसी किताबों की भरमार है जिनमें हाई स्कूल पास बच्चे-सड़कियों का जीवन साक्षी के गलत चुनाव के उत्तरों से प्रभावित किया जाता है और वही चुनाव के तरीके और कलियों का बतौर बताती हैं। उसे बताया जाता है कि स्त्री-मुख्य की दृष्टि में समानता होनी चाहिए। पर विवाह की सफलता और साम्प्रदायिक प्रभुत्व इन स्त्रियों को नहीं बल्कि मन की ऐसी प्रकृतियों के मन जाने पर निर्भर होती है, जिसके बारे में पहले से कुछ नहीं मालूम रहता है।

विवाह विच्छेद के कारणों पर अमेरिका में बहुत खोज-बीन की गई है। समाज का न मिसमा पति-पत्नी में परस्पर आकर्षण का नष्ट हो जाना, व्यक्तिगत, अपने-पैस की लगी कलह या फिर तलाक़ और विवाह सम्बन्ध टूटने के सबसे सामान्य कारण बताए जाते हैं। विशेषज्ञों ने तो आँकड़ों का अध्ययन करके यह भी बताया है कि सबसे उत्तरदायक उम्र क्या होती है। पर विच्छेद का वास्तविक कारण होता है बचपन में पड़े संस्कार और घर का वातावरण समाज में व्याप्त आर्थिक स्थिति और तलाक़-बचक-बचक और मोह-बिलास पर और। अमेरिकन लोग विवाह में प्रभाव भी इतनी करते हैं जितनी पूरी नहीं हो सकती। वे सामान्य समझे हैं कि विवाह से स्वयं का द्वार खुल जाएँ। फलतः निराशा स्वाभाविक है।

अमेरिकन साम्प्रदायिक जीवन का मन्त्र अमेरिका के लोग जिन्हें में खूब उड़ाया जाता है। जिस की बीबानी पत्नी और उभा हुआ पति पत्नी के छरीदे हुए पड़ोसों-हट का जिस चुनावे वाला पति हस्त-पंदा पर आकर पत्नी के मगज आटने वाली बातों से परेशान पति दुगले औरतों पर साँक-साँक करने वाला पति और पुलिस के गिराही की तरह कड़ी नज़र रखने वाली पत्नी इन कार्टूनों के प्रिय विषय होते हैं। इन व्यंग्य चित्रों में भी अमेरिका के साम्प्रदायिक जीवन की समस्याओं की एक झलक मिलती है। अमेरिका में पति या पत्नी के पुराचार को पाप-पुष्प या नतिक्रिया की नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य की समस्या समझा जाता है। अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों का ह्वास है कि अधिकतर अमेरिकन समस्या के पुराने अपने पुराचार की परीक्षा के लिए व्यक्तिगत की ओर मुड़ते हैं। अमेरिका

में व्यभिचार मुख्यतः तभी पुरुष सम्प्रदाय काता है जब इससे विवाह-विच्छेद या घर के दुश्मने की नीबल या आए ।

तत्काल घोर विवाह-विच्छेद की चरती हुई सच्चा पर अमेरिकन समाज धार्मिकों ने बहुत विमता प्रकट की है । उनको डर है कि यदि हमकी संस्था बढ़ती गई तो अमेरिकन सम्प्रदाय ही छिन्न भिन्न हो जाएगी । प्रेम और विवाह का जो मनोहर सपना अमेरिकन युवक-युवती बनाते हैं उसे तत्काल का निर्मम बनेड़ा नूर-नूर कर देता है । इसलिए कुछ सैलक तत्काल का इस प्रकार बर्णन करते हैं बीते घोट का ।

बहुत-से लोगों की धारणा है कि तत्काल की बीमारी ता केवल बड़े लोगों की बीमारी है क्योंकि ऐसे की अधिकता के कारण इस वर्ग में मानसिक विकृतियाँ घोर समझने अधिक या जाती हैं । मेहनत-मजदूरी करने वालों के सीधे-सादे जीवन में तत्काल घोर विवाह-विच्छेद की युवाइस बहुत कम है । कुछ हद तक ऐल-भाराम बिलाम घोर फैसन का तत्काल से सम्बन्ध व्यवस्था है । पर धार्मिकों को देखने से पता चलता है कि अमेरिका में तत्काल घोर विवाह-विच्छेद केवल धनिक वर्ग तक ही सीमित नहीं है बल्कि कसकें घोर बाबुओं सामान्य कर्मचारियों घोर धर्मिका में मैनेजरी सिम्पिकों घोर ऊँचे पदाधिकारियों के मुकाबल विवाह विच्छेद की घटनाएँ अधिक होती हैं ।

इसका एक कारण ता यह होता है कि रण-वैसे की लंभी के कारण स्त्री पुरुष के मित्रा में बिड़बिड़ाहट या जाती है घोर घर में रोड कमह मचने लगती है । यदि घामदमी अधिक हो तो यह जोबल नहीं जाती । इससे घनीर घर की स्त्री यह भी देखती है कि तत्काल-मूबा घोर परिवर्तता स्त्री की कैसी लंगी में रहना पड़ता है इसलिए घनसर पति की पयावली होने पर भी वह कम सा जाती है घोर विवाह-विच्छेद की नीबल नहीं घाने देखी । पर मेहनत-मजदूरी करने वालों स्त्री क्यों दुष्ट पति को तरह से उसके लिए तो जैसे कंठा घर रहे होते रहे बिदेस । घूमरी घोर हालीबुक के मिनेमा-स्टारों के मिस्त्र-प्रति के तत्कालों की जो घरों घरवारों में लगती है सगें पड़कर यही धारणा होती है कि अमेरिका में वैसेबामे सोम विवाह को घेसबाहु समझते हैं । मरी के दिनों में ऊँचे वर्ग में तत्कालों को सच्चा में कभी या गई थी इससे भी पता चलता है कि जीवन की टोम बास्तबिचता स लाबिचा पड़ने पर बाग्पत्य सम्बन्ध में गंभीरता या जाती है ।

तत्काल का स्त्री-गुण्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ? क्या इससे उनका जीवन मोटा हो जाता है ? मुक (15 Goodo) ने इस विषय में काशी घामधीन करके यह देखा कि तत्काल का घमर बहुत दिनों तक नहीं रहता । घनसर तत्काल मंजूर होने के बाद ही गुरुत्वा नए स्त्री-गुण्यों से घुसाजाते (डैडिम) मुक हो जाती है घोर

अधिकार्य लोग पिछले कटु अनुभव से सबकुं सेकर दूसरे विवाह में प्रयास सफल भी होते हैं । पर यह भी देखने में आता है कि पुनर्विवाहित व्यक्तिओं में तलाक की घटनाएँ अधिक होती हैं । फिर भी जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है एक बार तलाक के अनुभव के बाद दूसरे व्याह में वे प्रयास सामाग रहती हैं और निमाने की व्यास कोसिध करती हैं और अधिकतर सफल भी होती हैं ।

तलाक से सबसे ब्यास आट और हानि बच्चों को होती है । माता-पिता के भयदे वर के टूटने और पिता से प्रलय होने का बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है । अमेरिका के कानून में तलाक होने पर बच्चों की सुपुर्गयी माँ को दी जाती है । पर चाहे माता हो या पिता एक से तो बच्चे का नाता टूटता ही है । किन्तु बहुत-सी स्त्रियों का यह भी कहना है कि तलाक के बाद दूसरे पति से विवाह होने पर भी उनके बच्चे अधिक सुखी रहते हैं बजाय माता-पिता के कसह से भरे घर में रहने से ।

तलाक या विवाह-विच्छेद की अधिकता के बावजूद अमेरिका में विवाह के प्रति भावना बड़ी ही है, गटी नहीं । विवाह से मुख मिस सकता है, विवाह सफल हो सकता है, यह विश्वास पहले से अधिक है । अमेरिकन लोग यह अधिकारिक अनुभव करने लगे हैं कि कानूनी बन्धन या धार्मिक और सामाजिक नियम तलाक रोकने और विवाह सम्बन्ध को बनाए रखन में सतना कारवार नहीं कितना पति-पत्नी का हार्मिक प्रेम और मन का मिलाप । वे समझते हैं कि व्याह पति पत्नी की सामे की बुकान या गुबारे का समझौता नहीं बल्कि आनन्द और सुख की सम्मिसित कोर है और इसमें धारीरिक सुख या काम-सुष्टि का बहुत महत्व है । वास्तव में काम-सुष्टि को महत्व देने से विवाह-विच्छेद की नुंजाइस बढ़ गई है क्योंकि अमेरिकन लोग यह मानते हैं कि ऐसा सम्बन्ध ब्यापन रखने से कोई लाभ नहीं किरये पति-पत्नी एक-दूसरे को धारीरिक रूप से सतुष्ट न कर सकें । ऐसे प्रेमहीन साम्पत्य जीवन से व्यजिचार घण्टा । इस गई प्रवृत्ति के कारण पुरानी नैतिकता के मानदंड भी जलट-जलट गए हैं । विवाह के पूर्ण सहवास या व्यभिचार का प्रब इतना बुरा नहीं समझा जाता कितना निष्फल विवाह का समझा जाता है । अब विवाह की सफलता की कसौटी यह है कि पति-पत्नी एक-दूसरे की काम-सुष्टि कर सकें जाल-बच्चों की प्रम से रलें और विवाह सम्बन्ध को बपन या जलवाइत का संय' नहीं स्वतन्त्रता स्नेच्छा और स्नेहपूर्ण सहवास समझें । विवाह सम्बन्ध की सफलता इसी में है कि जनमें पति पत्नी दोनों की सर्वेन और रचना-शक्ति का विकास हो ।

6 अमेरिकन समाज में स्त्रियों की स्थिति

अमेरिका में इस समय स्त्रियों की कितनी स्वतन्त्रता और अधिकार हैं,

उत्तम पड़से कभी नहीं थे। वे हर राज में पुरुषों का मुकाबला कर सकती हैं। फिर भी उन्हें सतोष नहीं है। सरकारी मोटरी व्यापार, डाकटरी बिजान में उन्हें पद पान में ही उसे संतोष नहीं होता क्योंकि इसके साथ वह पत्नी माता और स्त्री भी रहना चाहती है। अपनी स्थितिबद्ध प्रकृतियों का अपनी महत्वा-वांछाओं से मेल न कर पान के कारण वह मुच्छा और निराशा की चिकित्सा पसंदी है।

अमेरिका में सामाजी सङ्घर्षों की स्थिति सामाने सबको से भिन्न होती है। कम सामाजी भासे वग ये सङ्घर्ष एक प्रकार का बोझ बन जाती है। सङ्घर्षों की तरह वह कमाई नहीं करती। मध्यम वर्ग में सङ्घर्षों के लिए ऊँचा बर्तन होने की समस्या भी कठिन होती है। सङ्घर्षों की तरह वह गिराई बनाकर ठगम नहीं कर पाती बलाह-से बलाह अपनी सक्षियों से जाना-पूरी कर लेती है। इस कारण वह अपने को उपेक्षित-ही समझती है जो कि उसके पहनने धोड़न पर उसकी भी कपड़ी ध्यान देती है। उसके पिता उसे बहुत दुस्तार करते हैं और अन्य देवों के मुकाबले उसे स्वतंत्रता भी बहुत अधिक दी जाती है। फिर भी सङ्घर्षों के मुकाबले उसे कम स्वतंत्रता रहती है और वह माँ-बाप पर अधिक प्रभावित रहती है। इस कारण उसमें आत्मय कोजने की प्रार्थना पड़ जाती है और वह पति का सहारा बूझती है।

सङ्घर्षों के मुकाबले उसकी बाब-बाब पर अधिक निगरानी रखी जाती है। वह स्वयं भी इस बात का ज्ञान रखती है कि समाज में उसकी बदनामी न हो। वह उस संघ से रहे कि उसकी छापी घबरी हो। इसलिए वह बहुत बचाव-बतती है। छोटे नपटों में तो उसे और भी दबकर रहना पड़ता है क्योंकि छोटे समाज में बदनामी बहुत बन्दी फैलती है। इसलिए अमेरिकन किछोपी बड़े नपटों में रहना पसंद करती है। बड़ी संघर्षी उठाने वाले न हों पर यहाँ भी वह बुद्धिमान में पड़ी रहती है। एक और तो उसका मन उसे बुद्धिमान के अनुभव मन को प्रेरित करता है दूसरी और वह उसे उत्तरो से नाबवान भी करता रहता है। इसलिए वह सुरक्षा का भावय बूझती है जो उसे सहारा और मुल दे सके। नीचे केवोलिक प्रत्यक्षक जातियों में तो सङ्घर्षों पर बंधन और भी अधिक है। फलतः अमेरिकन स्त्री के सामने एक ही मुख्य कार्य पौर उद्देश्य रह जाता है कि वह अपने की किन प्रकार अधिक-से-अधिक धार्यक बनाए। अमेरिकन पुरुष ने अपने लिए अति और अधिकार का क्षम चुन लिया है और गुरुरता मोहता को सियों के लिए छोड़ दिया है। 10 से 20 वर्ष के बीच अमेरिकन स्त्री आई वह टाइपिस्ट हो या समाज सेविका याह बुजान पर लीदा बैठती हो या मिमेमा की प्रमिमेयी हो एक ही पुन में रहती है कि वह कैसे अधिक-से-अधिक धार्यक और मोहिनी बने। उसके धर्मों में उपद्रापन और साथ उसकी वैय मृप-

में नवीनता और निरुत्साहन कैसे आये होते वह अपनी जिंदादिली बुद्धिमान और खूबसूरती से पुस्तकों पर जादू कर सके। अमेरिकन फिल्मों में भी स्त्री का यही रूप देखने को मिलता है। सामान्य डिबोचर के चरित्रों में अमेरिका में औरत के रूपों का नज़र लेने से ही औरत नहीं बनती उसे औरत बनना पड़ता है।

अमेरिका की औरत जानती है कि सोना सजावट से बिकता है, इसलिए वह अपने स्त्रीत्व और रूप के सौंदर्य को खूब सजाती है। सजावट के सामान भी दुनिया भर से अमेरिका में सबसे अधिक हैं। वहाँ बाजारों में नये-से-नये कपड़े बहने और शूगर-सामग्री पटो पड़ी रहती है। साधारण लोगों के लिए यही चीज़ें मकल या हमीटेयन में सस्ते दामों में भी मिलती हैं। अमेरिकन औरत चाहे घमीर हो या घरीब वह अपने को नये-से-नये प्रसावनों से सज्जक रखती है ताकि अपने रूप-वास में वह अपनी सम्पत्ति के स्वाम्यता को प्रकट करे। सभी को सफलता नहीं मिलती और क्यों-क्यों उन्नत होती है और वह मिलने में देर होती है क्योंकि प्रयत्न किनूचित होता है।

अमेरिकन फिल्मों, मीडियों और विज्ञापनों में अमेरिकन सुन्दरी को एक तस्वीर खींच दी है। सिर्फ़ से यही सुबोस, घरीर के ऊपरी भाग से लम्बी टाँगें पतली कमर, कसे निरुत्साह लम्बी बदन उभरे स्तन छोटे चेहरा, बड़ी-बड़ी अपनी और कुसली हुई आँखें मुँह या मांस के सज्जकार प्रेम और मोता प्रेम काठिलाना बंधाव यह है अमेरिकन पुरुष के सपने की सुन्दरी का रूप और अमेरिकन युवती इसी नमूने के अनुकूल बनने की कोशिश करती है। यह रूप भी घरीब सौ रूपों में मिलता है और प्रेम भी किंगन बदलत रहते हैं। सोसाइटी या समाज में चलने वाली घरीरों की विनकुल सटेस्ट या ताज-हम प्रियम में रहना पड़ती है। हर मीने के लिए प्रत्येक फेयन है। घर में जान के लिए प्रत्येक सैर-सफाई के लिए प्रत्येक निरुत्साह के लिए प्रत्येक समुद्र तट के लिए प्रत्येक सबेरे के लिए प्रत्येक शाम के लिए प्रत्येक और हर ऋतु के लिए प्रत्येक पोशाक अने मोड़े हैंकिंग और वस्तुओं का प्रेम। मांस सजावट का रूप प्रत्येक-प्रत्येक रहता है। घमीर घरीरों के लिए तो कोई दिक्कत नहीं होती साधारण घेनी की मित्रियाँ भी इमिटेयन या गस्ती चीज़ों से काम चला सकती हैं।

फेयन के साथ ही रमाट या लड़-लड़ाई मित्रियाँ अपनी व्यक्तिगत भौतिकता भी प्रकट करने की कोशिश करती हैं। भौतिकता और न्यायन माने की खोज में वे पत्रिकाओं के पन्ने चलती हैं। फिल्मों से भी धारादियाव मिलते हैं। शूगर की चीज़ों के बिक्रेता भी नये-नये किंगन निवासों की दिक्कत रहता है और अपनी चीज़ों को बसाने के लिए पुष्पाधार विज्ञापनबाजों का सहारा लेते हैं। विज्ञापनों का बनाने में बड़ा बिपाय पड़ाया जाता है। इन विज्ञापनों के

अरिये व्यापारी सोच अमेरिकन स्थियों के निवास में यही भरते रहते हैं कि तुम्हारा फैशन पुराना पड़ गया है तुम को पोशोक धीरे जूते पहनती हो जो मिपस्टिफ लगती हो यह यसी यसी बसने लगी है धन गया पड़म यह है। फैशन के दुकानदार यह भी जानते हैं कि केबल करोड़पतियों के बस पर उनका रोबदार नहीं बस सकता इसलिए उनके बिज्ञापनों में यही दिखाने की कोशिश रहती है कि हमकी नई डिजाइनों सभी श्रेणियों के लिए उपयुक्त हैं और सभी की सामर्थ्य के भीतर हैं। बहुत-सी स्थियाँ अपनी पोशाक खुद सीमा धीरे बनाया चाहती हैं इनके लिए नई-नई डिजाइनों या मयूनों की किताबें घर बैठ-बा जाती हैं। अमेरिकन स्थियों की फैशन-पसंदी के बस पर घरों स्वयं के कारदार बसते हैं।

यह तो हुआ अमेरिकन स्त्री का एक रूप—सुन्दरता और शृंगार-प्रिय फैशन परकृत। उसके अन्य रूप भी हैं सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी उसने बहुत प्रवृत्ति की है। सबसे पहले तो मर्चों के बंधन राजनीतिक स्वतंत्रों और मोट के अधिकार के लिए उसने संघर्ष किया। इसके बाद यौन सम्बन्ध में बराबरी का प्राबोलेन बना जिसका कार्यध्वजी प्युरिटन ईसाई तत्त्वों ने कड़ा विरोध दिया। इसके साथ ही बेप-भूषा में शान्ति हुई पुराने लम्बे सपड़े अमड़ कपड़ों के बजाय खुल छीरे के जमाक को प्रकट करने वाले कपड़े जैसे स्थियाँ भी छंदने की पोशाक पहनकर छंदने लगी देखने की पोशाक पहनकर बेसकूर में काम लगे लगी मांटर और इबाई पहनाए बताने लगीं। चौथी शान्ति या महान् परिवर्तन गृहयुद्ध के काम आसकर पाकपाला और खाना बनाने के क्षेत्र में हुआ। बिस्बा बर लाय पेशाओं के बसने और बिजनी के बुन्हे और बरेमू मशीनों के कारण घर का काम काजी सरस हो गया और अमेरिकन स्त्री की काजी पुनंत मिसन लगी और अनेक स्थियों को दफ्तरों दुकानों स्कूलों छात्रि में काम करने का सुभीता हो गया फलस्वरूप धार्मिक या काम-बन्ध के क्षेत्र में भी एक शान्ति हुई। सन् 1920 में काम-बन्धा करने वाली स्थियों की संख्या 80 लाख थी सन् 1955 में 270 लाख हो गई और जो पूरी धर्मिक संस्था का 30 प्रतिशत है। पहन-पहन बिबाहित कामपार स्थियों की संख्या बिबाहित स्थियों से अधिक हो गई यद्यपि दफ्तरों में काम करने वाली स्थियों में अधिकतर बिबाहित ही होती हैं। ये परिवर्तन एक के बाद एक हुए एक परिवर्तन में दूसरा भिन्नता गया।

एक बात में अमेरिकन स्त्री काजी भाग्यवती है। संशय है कि अमेरिका की 70 प्रतिशत बीमर स्थियों के हाथ है। बीकों में 60 प्रतिशत बचत पाने (savings a/c) इनक नाम में है 70 प्रतिशत बीमा पानिगियों का मुगठान उनके नाम होता है बड़ी बगानियों के 150 प्रतिशत में अधिक बड़िया (built-up)

हिस्से भी स्त्रियों के नाम हैं और प्रायः 50 प्रतिशत मकानों पर भी उन्हीं के नाम बड़े हैं इसके अलावा देश में बिठनी खरीदवारी होती है उनका हीन जोयाई उन्हीं के हाथों से होती है। पर एक बात है वह सब धन उनकी अधिकतर पत्नी के रूप में मिलता है। अधिकतर कम्पनियों के दोषर और इमान्ती वायदाद की मासिक विपदाएँ होती हैं। इसके दो कारण हैं एक तो दिन रात कड़ी मेहनत करने के कारण अमेरिकन कारवारी अपनी स्त्री से पहले मर जाते हैं और अपनी विपदाओं के नाम जायदाद छोड़ जाते हैं और दूसरे धन के समीर अमेरिकन कम उम्र की स्त्रियों से ब्याह करते हैं और स्वभावतः पहले मरते हैं। पर बनाहूय स्त्रियों की वायदाद या धन का प्रबन्ध भी अधिकतर पुरुषों बकीलों या दृष्टियों के हाथों होता है। थोड़ी ही स्त्रियाँ ऐसी हैं जो कम्पनियों की कावरेक्टर हो या कारवार का संचालन करती हों। इसी तरह सरकारी या सार्वजनिक पदों पर भी स्त्रियाँ कम हैं। अधिकतर काम करने वाली साधारण या मध्यम वर्ग की हैं। अधीर स्त्रियाँ अधिकतर बीटे-बीटे धपने धन का मोल करती हैं।

य सब अधिकार स्त्रियों को बिना संघर्ष के ही नहीं मिल गए। इनके लिए इस सतासी के दशक में अमेरिकन स्त्रियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा है। इस आन्दोलन की नेत्रियों में एमावेसर्ड मैरी सायन जैनीटाइट एनीवर कन्वेस्ट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके कलस्वल्प दूर क्षण में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार मिले। परन्तु अधिकार मिल जाने पर भी अमेरिका में छान कर सवोल-व्यापार, राजनीतिक, धर्म-संगठन आदि के क्षेत्रों में प्रभावता पुरुषों की ही है।

किन्तु समाज-सेवा के क्षेत्र में स्त्रियों ने बहुत काम किया है। जेलघानों के सुधार, सपराबर्ही बंदी बस्तिनों के सुधार, मजदूरों बच्चों और स्त्रियों की भलाई और उनके हित के क़ामून बनवाने में अमेरिकन स्त्रियों की सेवाएँ बहु धूस्य हैं। ईजेन कैकर, जुलिया लैन्घाव जेन एडम्स मिलियन वासड आदि उन महिमाओं में हैं जिन्होंने अमेरिका के पीड़ित और शर्त प्राणियों की दया पर ध्यान दिया। मैरिया मॉरिस ने जेम्स रमन मॉरिस का हृषी सुताओं के साथ के लिए क़तम उठाने की प्रेरणा दी। राष्ट्रपति कन्वेस्ट के धासन के समाज कल्याणकारी कार्यों का जेम्स एलीनर कन्वेस्ट की है।

सभी देशों में पुरुषों के मुक़ाबले स्त्रियाँ कमजोर कल्पामयों और उदार होती हैं। माता और बहिनी होने के नाते उनमें दया याया और बाल्य अधिक होता है। अमेरिका की स्त्रियाँ भी इसकी अपवाद नहीं। अमेरिका का तीव्र स्पर्धायुक्त वातावरण यहाँ के पुरुषों की अधिक कठोर और सड़ाहू बना देता है। स्त्रियाँ इस स्पर्धा-संघर्ष से घबरा जाती हैं, यमल उनमें जीमसता और उदागता

भी पुरुषों में घटित माना में होती है। यद्यपि राजनीति में अमेरिकन स्त्री सामर्थ्य का समर्पण नहीं करती और पुरुषों की तरह वह भी अमेरिका की दो प्रमुख दमिगपंथों पाटियों डेमोक्रेट और रिपब्लिकन में बंटी है फिर भी इन दोनों पाटियों के घन स्त्रियाँ पुरुषों के मुकाबले प्रगतिशील और उन्नत नीतियों का अधिष्ठ समर्थन करती हैं। यूरोप की स्त्रियों की भाँति वे पारिवारिक प्रभाव में नहीं रहती।

साहित्य रचना में भी अमेरिकन स्त्रियाँ वहाँ के पुरुषों से पीछे हैं। यहाँ भी कुछ अच्छी उपन्यास लेखिकाएँ (एडिथ वार्नर एलेन पोसगो बिन्स वैनर) कथयित्रियाँ (एमिलो डिकिंसन एडना मिसे एमोनर वाइली), कहानी लेखिकाएँ (हेनरी जॉन्स वूडोरा बेन्सी) और नाटक कर्तृ (मिम्बिन ह्यूमन) हो गई हैं पर वे हावर्न मेसबिस मार्क ट्वेन हेनरी जेम्स फ्रान्कल, डमर, जैसे सफल लेखकों का मुकाबला नहीं कर सकती। घायब इसका कारण यह है कि अमेरिकन जीवन में लीज सवर्ण और हिंस स्वर्ण की प्रभावता होने के कारण वहाँ के साहित्य और कला-कर्मों में भी इन्हीं तत्वों की प्रमुखता है, जो स्त्रियों की कोमल प्रतिभा को धन्यते का उतना अवसर नहीं देता। कुछ लोग तो यहाँ तक कह देते हैं कि अमेरिका के हिंसा और वस्तुतामय जीवन में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं। प्रारम्भ में जब यूरोप से लोग आकर यहाँ बसे तो स्त्री न भी बचक काटने केठी करन अपनी जानवरों तथा अपनी जातियों से लड़ने में धन्य मर्द के कबे से कंबा भिड़ाकर काम किया। पर अब वह जीवन के संवर्ण—व्यापार उद्योग विज्ञान आदि की तीव्र प्रतिस्पर्धा—से धन्य हा गई है।

पर इनका यह ध्य नहीं कि अमेरिका में स्त्री के लिए कोई काम नहीं रह गया है। बलिव उसका काम बहुत बड़ मया है। कमाई या व्यापार-बनने के काम तो जरूर पुरुषों के बिम्मे हैं पर पर का पूरा काम बच्चों का पोषण और गिरा का प्रभाव पाकार हाट पाटी और सामाजिक समारोहों आदि की व्यवस्था सब उमा को करनी पड़ती है और यह काम कोई हलका नहीं है। फिर भी अमेरिकन महिला धन्य सही रास्ता नहीं निकाल पाई है। एक तरफ उठे मर्दों की बराबरी करने के लिए लयकाय जाता है और वह काम फटाकर पनमून पड़ना, रूढ़ में मिगरेट बकाकर काफेटल या गिराव हाप में सकर पुरुषों से हाइ करती है। दूसरी तरफ उसका परम्परागत काम है धन्ये बर की गोर। माता पिता धन्यी लड़की को धन्यी तरह पढ़ा सिखाकर, मुका-सिगाकर धन्य करवा-सता पढ़ाकर उसे मया में उतारते हैं ताकि धन्ये रूप-गुण से वह धन्य बर हुई मे। घादी के बाद गया होना इनकी बिन्स या-काप नहीं करने से मान मठे है कि घादी के बाद लड़की सामर्थ्य जीवन के दावित

निभाएगी भीमिश्र संख्या में दण्डे दीवा करेगी और उनका पासम-पोषण करेगी अपनी गृहस्थी बसाएगी और इसका साथ अपना धार्मिक बनाए रखेगी और अपने पति को बाजार की हवा खान से रोकेगी। अमेरिकन सड़कों के लिए सबसे बड़ा बुर्मांश यही माना जाता है कि वह किसी दण्डे युवक को धाकूट में कर सके और धमकाएगी रह जाए। इसीलिए कालों की पड़ाई में और पत्र पत्रिकाओं में वह फीसने की तरकीबें बताई जाती हैं। वर्ष के एक कार्टून में यह दिखाया गया है कि एक अमेरिकन युवती एक युवक को घसीटकर सब पर ले आ रही है। पर लोग यह नहीं समझते कि यह-कन प्रकारेण किसी सड़क को फ्रीस्टार ब्याह कर लेन से ही सड़की की समस्याएँ हल नहीं हो जाती। छाती के बाद भी स्त्री चलते ही दुखी रह सकती है जिसकी कोई प्रशंसाही स्त्री। स्त्री ही नहीं पुरुष को भी अपने जीवन-साथी से निराशा और विवशता हो सकती है। ऐसे सम्पत्तियों की समस्या कम नहीं जो परस्पर मानसिक और धार्मिक सहवास से संतोष नहीं प्राप्त कर पाते।

यदि स्त्री घरीब हुई तो अपनी निराशा और कुप्टा को त्याग का कामा पहचानने की कोशिश करती है और परिवार के लिए मुजानी और मध्यस्थ करती है और आत्म-बलिदान में संतोष ढूँढ़ने की कोशिश करती है। अभीर स्त्री मनो-बिरलेपकों या साम्राज्य सम्बन्ध के विरोध करने वालों का सहारा ढूँढ़ती है। जिसे मारि के सम्पन्न से इस बात का पता चलता है कि विवाहित जीवन से असंतुष्ट स्त्रियों की संख्या काफी है। जिसे जो सो यह भी पता चलता कि इस कारण कुछ पर-पुरुषों से भी सम्बन्ध कर लेती है। अमेरिकन स्त्री को केवल पिछे पुकारे जाने से और गृहिणी की तरह संभारे-सिंघारे जाने से ही संतोष नहीं मिलता जब तक कि उसे मानसिक और आर्थिक संतोष और जीवन की साधकता का अनुभव न मिले। पुरुष से मुक्त-दिपी खेलने से भी वह संतोष नहीं मिल सकता। असंतोष का एक कारण यह भी है कि लोग यह नहीं अनुभव करते कि कुछ स्त्री या पुरुष स्वभाव से कम ही कामुक होते हैं और इस कारण उन्हें संतोष या संतुष्टि अनुभव करने की शक्ति नहीं।

वास्तव में अमेरिका में स्त्री का जीवन बड़ा बच-सा गया है। दिसोरावस्था में उसका एक-साक सच्य अधिका-अधिक आर्थिक और मोहक होता है, साथ और रूप-जीवन पर होता है। आर्थिक या मानसिक प्रतिभा या युक्तों पर नहीं। विवाह के बाद माता बनने पर उसका एक-साक काम पर का प्रभाव और बच्चों का पालन हो जाता है। तब उसकी पति का व्यक्तित्व और महत्व बढ़ता है यह आर्थिक जीवन में ऊपर बढ़ता है पर स्त्री उसका साथ नहीं दे पाती। उसका तो प्रयास आनंद है उसका रूप-जीवन सो वह भी बचने लगता है। असल क्यों-क्यों पति के जीवन में पूर्णता पाती है, क्यों-क्यों पत्नी के जीवन में

रिक्तता घोर स्व-वीजन को बनाए रखने के लिए उसकी व्यग्रता बढ़ती जाती है। बच्चों के बड़े होने और प्यारी-भ्याहू करके अपना घर बसा लेने पर तो स्त्री को जीवन दायी घोर निरर्थक भासूम देने लगता है और जब तक वह बूढ़ी होकर दारी नहीं बन जाती और बर्ग-कर्म में नहीं लगती उसका जीवन खाली ही रहता है।

परन्तु इसपर ऐसा भासूम दे रहा है कि अमेरिकन स्त्री अपना मार्ग पहचानने लगी है। वह समझ रही है कि उसकी पार्थक्यता सर्व की मदद करने में नहीं बल्कि स्त्रीत्व की पूर्णता में है। अब वह अपने दाम्पत्य गार्हस्थ्य सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में मेक बिछाना सीख रही है। अब वह समझ रही है कि माता और पत्नी बनने के साथ-साथ वह अपनी शैक्षिक प्रतिभा का भी पूर्ण विकास कर सकती है। स्त्रीत्व की पूर्णता के साथ ही वह व्यक्तित्व की पूर्णता प्राप्त कर सकती है। यदि उसमें विशेष शैक्षिक और कार्यक्षमता है तो इसी कारण उसे अपने स्त्रीत्व को त्यागने और दाम्पत्य तथा मातृत्व से संबंध रखने की जरूरत नहीं। वह पत्नी और माता होने के साथ-साथ अपना मनचाहा काम भी कर सकती है।

7 प्रौढ़ावस्था और बुढ़ावस्था की समस्याएँ

जबानी बीसने लगती है तो आवामी को घाये की चिन्ता होने लगती है। वह अपना सैला-बोला लगाने बैठता है। संसार की सचमंशुरता का भी आमास बने होने लगता है। धारमा की रिक्तता का अनुभव भी उसे पहले पहल इसी समय होता है। अमेरिका में तो यह अवस्था और भी बुझबायी होती है। हम बता चुके हैं कि अमेरिकन स्त्री प्रजनन में पहुँचकर कंसा सामीपन अनुभव करती है। स्त्री ही नहीं पुरुष भी इस उम्र में अनेक चिन्ताओं में भविष्य हो जाता है। एक ओर उसकी पारिवारिक दायित्व बढ़ने लगती है दूसरी ओर वह बिगता छटाती है कि क्या वह इतना पैसा जोड़ पाएँ जिससे बुढ़ीटी धाराम से कट जाएँ। इसी समय उस अपने घरपर के सामीपन और धारमा शिक बहिष्ता का भी भाग होने लगता है। उसका बुद्ध और भी बढ़ता है जब वह देखता है कि उससे कम उम्र के लोग धागे बड़े जा रहे हैं जीवन की रोड़ में वह पिछड़ रहा है। अमेरिका में प्रौढ़ता या परिपक्वता को कोई महत्व नहीं देता यहाँ सारा और जबानी चुरती बेग या बैग पर है। प्रौढ़ता या बुढ़ता का स्वाग बूढ़े के दर पर है। यदि धाय किसी प्रजनन या बूढ़े की प्रसन्न करना चाहें तो वेबल यह कहें कि धाय देलने में बिलकुल मुश्किल लगने है।

धाय देलों में बुढ़ावस्था में धारमी में धारमिक दायित्व धारमबिश्वास और बीरता या जाती है जो अमेरिका के बूढ़ों में नहीं होती। पूरब के दलों

अमेरिका का जीवन शक

में बूढ़ों की इम्पट की जाती है पर अमेरिका में तेजी-धरती की कदर होती है जो जवानों में होता है बूढ़ों में नहीं। इसलिए यहाँ बूढ़ों की देख रेख की जा सकती है उनकी शक और समक को तरह ही जा सकती है पर उनको घाबर या मान नहीं मिल सकता। पितृभक्ति और पुरतों की पूजा की परम्परा जो पुरानी दुनिया में पाई जाती है वह अमेरिका में नहीं बिकसित हो पाई है।

जैसे जवानों का एक ढग होता है जैसे बुढ़ापे का भी। पर अमेरिका में लोगों को यह डंग नहीं आता कि उम्र हमने के साथ भी घाबमी अपना मान कैसे बनाए रहे। अमेरिका में उम्र हमने ही घाबमी समझ लेता है कि सब हम खरम हो गए। वह देखता है कि उसका रूप जला गया मिन बल गए, काम-बन्हा समाज में मान-मर्यादा पर प्रविष्टा सब जमी गई, उसके लिए कोई स्थान नहीं रहा। बन्हा केवल जर्जर, लोपसा तरीर। इसलिए बुढ़ापे का स्पष्ट होते ही उन के साथ उसका मन भी मरने लगता है। अमेरिकी बुढ़ापे की पवि-पत्नी का होता है और जिस छोटे से घर में वे रहते हैं उसमें बड़े दादा के लिए जगह ही नहीं होती। और देवों में बड़े लोगों की उपयोगिता होती है व सांस्कृतिक परम्परा के बाहक होने हैं पर अमेरिका में तो घाबमी बना कर खाने के धन्ने में इतना दूबा रहता है कि इसके अलावा और कुछ नहीं जानता और जहाँ वह इस काम से असम हूँगा कि वह और किसी काम का नहीं रह जाता नई यहाँ तक कि पीढ़ी के बच्चों को घिसा-बोसा देने सामक भी नहीं रहता। उसके लिए यही ध्य रहता है कि किसी बिज बन्ध या साज में अडका जमाने विरजावर में जाए, वाफ्टरों की हाबिरी व वेन्ट वबाधों के बिज्ञापन धादि देख और परलोक की बातें करे। अपने मिठे स्वास्थ्य की बिन्ता में अपनी लाबाठी का रोना रोने में और दूसरों का दोष निकालने में ही उसका सारा समय कटता है।

इस उम्र में वह नई बातों और नये बिचारों की ओर भी नहीं झुक सकता। इसके लिए वह पुरानी कड़ियों से ही बिपका रहता है और राजनीतिक और सामाजिक बिचारों में बकियागूस बना रहता है। और अमेरिका में ऐसे बकियागूस बूढ़ों की संख्या भी बढ़ रही है। बिबिस्ता और स्वास्थ्य बिज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति और नई औजों से अमेरिका में औसत उम्र काउंटी बढ़ गई है। सन् 1900 में अमेरिका में 05 बरें से अधिक उम्र के घादमियों की संख्या 30 लाख कुल जनसंख्या की 4 प्रतिशत थी। इन प्रकार अमेरिका में दीर्घानु अर्थात् बूढ़ लोगों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और घामे भी यही रह है।

इसक साथ-साथ बूढ़ों की समस्या की ओर भी अधिक ध्यान जाने लगा है। अमेरिका में प्रजिडेंट रूजवेल्ट के 'यू डील' यानी नब-म्यबस्ता क घादमिगत

सन् 193७ में समाज कल्याण या योगदान के कानून बनाये गए। सन् 19७७ में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 55 घण्टा बीसर खर्च हो रहे थे जिनमें से करीब 18 घण्टा बच्चों की योजनाओं आदि में बिये गए। मजदूर संगठनों के प्रयासों से मोहो, काबला मोटरकार बपड़ा आदि बड़े-बड़े उद्योगों में करीब १० लाख मजदूरों के पगार की व्यवस्था शुरू हुई। परन्तु अभी भी करीब 60 लाख कामदार ऐसे हैं जिनके लिए वेतन की व्यवस्था नहीं है।

अमेरिका में रिटायरमेंट की समस्या भी बिकट है। वहाँ के नगरपालों में जिन प्रकार की मर्जीना से घोर जिस वृद्धि से काम होता है उसमें खजाना आदमी ही कम खर्चते हैं। 50 वर्ष और ऊँची-ऊँची 65 वर्ष की उम्र तक पहुँचते पहुँचते कर्मचारी हटा दिया जाता है और उसकी जगह खजाना आदमी को ले ली जाती है। ये हटे आदमी शरीर और विमाण से दुरस्त और दुःखमय होते हैं फिर भी इनमें से छ के पीछे एक की ही बुरा काम मिल जाता है। नतीजा यह है कि अधिकतर को लंगी उठानी पड़ती है। सन् 1950 में एक पड़ताल से पता चला कि ऐसे कुटुम्बों में जिनके भूमिदा भी आयु 65 या अधिक है करीब 30 प्रतिशत ऐसे हैं जिनकी वार्षिक आयदानी 1 000 डॉलर से कम है और करीब आधे परिवार ऐसे हैं जिनकी आय 2 000 डॉलर से कम है। अमेरिका के सिङ्गाप से यह आयदानी बहुत कम है।

मध्यम और ऊँची आयदानी वालों को वार्षिक लंगी नहीं होती। रिटायरमेंट का भर्त्ता उनके लिए काफी खर्चा लगाकर काम-काज से विमान लेकर केमिफोर्निया या फ्लोरिडा में किसी सुन्दर स्थान पर पैन से रहना है ब्रूप में बीटना रेडियो टीवीबिजन देकना और मनोरंजन करना है। डाक्टर लोग भी काम में व्यस्त लोगों को यही सलाह देते हैं क्योंकि अमेरिका में सबसे ज्यादा मीठे हार्टियन और प्रतिपरिग्रम के फलस्वरूप स्नायवों के समाज से होती हैं। पर रिटायर होने के बाद लोगों का भी और ऊँचता है उनका समय नहीं कटता। अलग काम-काज साथी-साथी से अलग होकर वे और भी बेचैन होते लगते हैं इसलिए डाक्टर अब यह सलाह देते हैं कि एकदम रिटायर होने या काम-काज से अलग होने के बजाय भीमे-भीम श्रम बीचता चाहिए और दूसरी बातों में मन लगाया चाहिए।

यहाँ के मुद्राबल अमेरिका में औरतों की दम उम्र में कम बढ़ियाई होती है क्योंकि उनकी अवेला के मुद्राबल का मुद्राबला करने के लिए अधिक तैयार रहनी है। 35 वर्ष की उम्र में ही बुरीला की छाया उम्र पर पड़ने लगती है और बड़े अलग ऊँच उपाय ध्यान देने लगती है और 50 55 वर्ष की उम्र तक तो यहाँ के नाप उमका समझीला हो जाता है जब कि पुन्य तक तक भाग दोड़ कर मरता है, जब तक कि बुढ़ाया एकदम आकर सामने पड़ा नहीं हो

ता । फलतः उनको एकदम से धनका समता है जैसे पुर बग स दीवती हुई
 स्टर की एकाएक शक सप्त जाए ।

देखना यह है कि साधारण अमेरिकन इस धनक को कैसे बचाव करता
 । क्या वह इससे दूट जाता है या सम्मलकर जीवन का दूसरा रास्ता पकड़
 ता है । मध्य-पश्चिम अमेरिका के एक छोटे नगर में 65 बय से अधिक उम्र
 लोगों से बातचीत करने पर उनमें से 10 प्रतिशत ने यह कहा कि हमें तो
 उ बय में इतना धनम्ब है कि हम चाहते हैं कि इसका धन न हो । 20 प्रति
 श ने कहा कि यह हमारे जीवन का सबसे बच्छा धन है । 40 प्रतिशत ने
 हा कि हमें कोई आत्मीयन नहीं समता और हमारा समय बच्छे कामों
 कटता है । इस पता समता है कि बार में से तीन आशमी बुढ़ापे में भी
 मुल्त हैं । पर एक बात यह भी है कि बक्सर जोष अपने कष्ट को प्रकट
 ही करते और पुछने पर यही कहते हैं कि हम मजे में हैं ।

बुढ़ावस्था में आशमी क्या सोचता है और कैसे रहता है यह बहुत कुछ
 या समाज-नियम के आतावरण पर निर्भर है और अमेरिका का आता
 रण ऐसा है कि यहाँ मनुष्य सहज ही निवृत्ति-आग पर नहीं समता ।

अमेरिकन बुढ़ापे से इसलिये भी बचपते हैं कि इसके साथ मृत्यु की आवा
 नी रहती है । पुरानी संस्कृतियों में मृत्यु से मान इतना बचराते या नय नहीं
 होते हैं । पुराने संय के समाज में अधिकाई देशों में अन्त्यष्टि संस्कार बड़ी
 बचि से और विस्तार से होता है पर अमेरिका में मान मीत का नाम भी नहीं
 ला चाहते । यहाँ कोई मरता नहीं पुजर जाता है । मृत्युपर को के ऐसा समते
 ! जैसे वह कोई रीक हो । अन्त्यष्टि संस्कार के ऐसा अपभ्रान्त हुए करते हैं
 ते वह कोई छिाने की बात है । पुरानी या निछड़ी संस्कृतियों में मृत्यु की
 जीवन की नरबछा को जिस बीरता और अनुश्रितता से स्वीकार किया जाता
 है वह अमेरिका में नहीं मिलती । दूसरे देशों और सम्प्रदायों में भी मान मृत्यु का
 मय अनुभव करते हैं पर इसके साथ ही मृत्यु का रहस्य भी उगह आशपित करता
 है, उनका साहित्य भी इस रहस्य का उद्घाटन करने की चेष्टा करता है । के
 जीवन के इस अरम और मयानक संय से आगते नहीं । पर अमेरिका की
 संस्कृति आ जीवन और जीवित जगत् के ऐश्वर्य और शक्ति की प्रतिष्ठा है
 इसलिये मृत्यु की बात करना यहाँ निरर्थक समझा जाता है । अमेरिका में
 बहुशोक पर बार है परमोक पर नहीं । अम्य देशों के आसनिर्वा में कुछ परि
 स्थितियों में आत्महत्या का मयर्ष किया है पर अमेरिका में यह पापमय और
 जीवन आ मयापन समझ जाता है । अमेरिकन विचारक और सम्प्रदायी नरवरता
 और अमरता की समस्या में गिर नहीं सगते ।

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

१. समाज का आधार

प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक डि टॉकविले का कहना है कि लोकतंत्र सभी बन सकता है जब उसका एक बर्म और एक रूलम हो। यों तो बुनियादी सिद्धान्तों की प्राबल्यकता का प्रत्येक प्रकार के समाज को रहती है पर लोकतंत्र की विशेषता यह रहती है। जहाँ एक सम्प्रदाय जाति या व्यक्ति विशेष का राज्य होता है, वहाँ एकता बनाए रखने में इतनी कठिनाई नहीं होती है, जितनी लोकतंत्र में। लोकतंत्र में सबका समानता रहती है और अपनी अपनी इच्छाओं को बजाने की स्वतंत्रता भी। अमेरिका-जैसे देश में जहाँ अनेक जाति देश सम्प्रदाय और रंग के लोग बसे हैं एकता कायम रखना और भी कठिन हो जाता है और आवश्यक है कि यहाँ इतनी एकता है।

प्राचीन रोम और ग्रीस में राज्य-एकता का आधार जातीयता और संस्कृति होती थी। मध्यकालीन यूरोप में कैथोलिक ईसाई धर्म एकता का आधार था। चीन और भारत में राज्य की बुनियाद जाति और धर्म पर थी। जापान में सम्भ्राट् ईश्वर का अवतार माना जाता था। ईजिप्ट में वैधानिक राजतंत्र उच्चतम ऐनिकन बर्म और इजिप्ट-गणराज्य पर राज्य का आधार है। कस का आधार कम्युनिज्म है। अमेरिका में इस प्रकार का कोई आधार नहीं। न यहाँ कोई धार्मिक बर्म है, न पुजारी बर्म न सैनिक जाति न राजा न रईस। अमेरिका को बसाने वाले लोगों में धर्म में गहरी वास्तव्य और समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की भावना थी। वे इस भाव से भी प्रेरित थे कि वे एक नये देश और नई व्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं जिसमें हरेक आदमी को समान अवसर मिलना चाहिए। यद्यपि अमेरिकन लोकतंत्र की बुनियाद धार्मिक स्वतंत्रता और मनुष्य की समानता पर रखी गई है।

परन्तु जिस प्रकार का समाज यूरोप से आने वाले लोगों ने बनाया उसमें गहरा परिवर्तन हुआ। जलाना देशों और जातियों के लोग अमेरिका में आकर बसे इनका रहन-सहन भाषा धर्म यहाँ तक कि रंग भी भिन्न भिन्न था। अमेरिका में जिस प्रकार की धार्मिक व्यवस्था विद्यमान हुई उसका मूलभूत स्वभाव है। इसमें हरेक आदमी आने बजने की आजादी करता है। यहाँ की हवा में व्यापारीपन भर है। व्यापारी-समाज में सब चीजें धार्मिक भी बन चुकी हैं।

जाता है। फिर अमेरिका की शक्ति बढ़ी। यह सत्तार की महाशक्तियों में गिना जाने लगा। उस पर अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टाचारियाँ आ गईं। इन परिवर्तनों से अमेरिका के मूल सामाजिक ढाँचे और सामाजिक सिद्धान्त पर गहरा तनाव पड़ा। सन् 1840 और 1850 के बीच यहाँ भी कस-कारवाणों की स्थापना के फलस्वरूप मजदूर वर्ग की सृष्टि हुई। पूँजीवादी व्यवस्था का विकास हुआ, विद्यालय व्यापार उद्योग-वर्गों की सृष्टि हुई। केवल धार्मिक व्यवस्था ही नहीं सामाजिक और नैतिक व्यवस्था पर भी व्यापार-उद्योग की व्यक्तिवादी पूँजीवादी प्रतिस्पर्धा का प्रभाव पड़ा जिसका मूलमंत्र यह था कि अपनी फ़िक्र आप करो यदि नहीं कर सकते तो भगवान् माफ़िक है। अमेरिका के मूल धार्मिक स्वतंत्रता और अवसर की समानता के सिद्धान्त ने धार्मिक क्षेत्र में मुक्त प्रतिस्पर्धा के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित किया जिसमें समाज या राज्य धार्मिक क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप या नियंत्रण नहीं करता और व्यक्ति का कमाने और जोड़ने का मुक्त छोड़ दिया जाता है। यद्यपि अमेरिका ने व्यक्तिवादी दर्शन अपनाया है समाजवादी नहीं।

अमेरिकन समाज का देवता पैसा है। पैसे की ताकत यहाँ पय-पय पर दिखाई पड़ती है। नाटक सिनेमा अस्पताल सब में पैसे धामों की अधिक पूछ होती है। स्कूलों में भी ज्यादा पैसे वाले और कम पैसे वाले बच्चों के पहनावे भोजन में साफ़ ऊँच दिखाई देता है और बच्चे भी पैसे का महत्व समझते और धमीर-गरीब में फर्क करना जल्दी सीख जाते हैं। अमेरिका के व्यापार-व्यवसाय समाज में व्यापार और व्यवहार में दोस्ती का लिहाज नहीं किया जाता। कर्मचारी और मजदूर तथा मानिक या मैनेजर में कोई आपसवारी नहीं होती। कर्मचारी समझता है कि वह पैसे के लिए काम कर रहा है और उसका मानिक या कम्पनी भी पैसे से मतलब रखती है इसलिए वह काम भी भाड़ के टट्टू की तरह करता है। मनुष्यता क्या परीपकार और धारण को बोधी बातचीत समझ जाता है और इस तरह के धारणियों की हँसी उड़ाई जाती है। आइडियलिस्ट¹ (धारणवादी) इन्ड्रर² (परीपकारी) एग्रीड³ (विचारक) धाँधि नहीं होती या अर्थ के शत्रु है।

इसका यह अर्थ नहीं कि अमेरिका में किसी के दिल में दया-भाव होता ही नहीं। होती अवश्य है पर इसे दुर्बलता समझा जाता है। व्यापार और मोल भाव में दूसरों के अर्थों में आ जाने वाला धाँध में रहता है। इसलिए अमेरिका में लोग सावधान रहते हैं कि हम किसी के अर्थों में धाँध न डालें।

1 Idealists.

2 Do-gooders.

3 Egg-heads.

सरकार की ओर है। समाजकल्याण के काम के भी अमेरिकावासी बिचड़ हैं क्योंकि वे समझते हैं कि सरकारी सहायता का साथ उठाने वाले मुफ्तहोर घोर कामचार होते हैं। दूसरों की मदद करने का धर्म दूसरों के मामले में टीम बहाला है। साधारण अमेरिकन के मन में यही भाव बसा जाता है कि हम क्यों दूसरों के मददों में पड़ें? हमसे क्या मतलब? मनोविज्ञान के दम में अमेरिका की सबसे बड़ी देन है उसके प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हेनरी स्टैक सुलिशन का इंटर पर्सनल रिलेशन (व्यक्ति प्रति व्यक्ति सम्बन्ध) का सिद्धान्त। अर्थात् सामाजिक सम्बन्ध को अमेरिकन 'वैज्ञानिक व्यक्ति प्रति व्यक्ति सम्बन्ध' का नाम देता है। उसकी समझ में समाज केवल व्यक्तियों का बनावड़ा मात्र है।

इसीलिए अमेरिकन जब कोई परोपकार का काम करता है तो उसके लिए वह स्वार्थ का धाधार डूँढ़ता है। दूसरे लोगों की सहायता देने का समर्थन इसलिए किया जाता है कि इससे अमेरिका के शत्रुओं का नुकसान होगा। अस्पृश्यता को भी धारि विच्छेदों को अधिकार देने का समर्थन इसलिए किया जाता है कि यदि आज तुम नीचोन्नतों पर धरवापार होने दोय तो कल तुम्हारे अधिकार भी छिन सकते हैं। यहूदियों या हिन्दुओं पर धरवापार का विरोध इसलिए करना चाहिए कि आज यहूदी मारे जायेंगे तो कल कबोलिक भी मारे जा सकते हैं, इसके बाद अन्य सम्प्रदायों का नम्बर आ सकता है और अन्त में हम धाधार पर भी लोगों की हत्या हो सकती है कि उनके बालों का रंग लाल है या वे अशुभ नमर के निवासी हैं। इस प्रकार अमेरिका में अखड़े कामों का भी धेय अनुपमता या इन्सानियत को नहीं स्वार्थ और सुखपत्ती को दिया जाता है। पर प्रश्न यह है कि महान स्वार्थ पर आधारित समाज कैसे इतना बड़ हो सकता है जैसे अमेरिका है।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अमेरिका में सहनशीलता काय्यी है। यहाँ पोटॉरिको आधारित यहूदी इटालियन जर्मन नीचो नीची धारि बीलों देशों से आये हुए लोग बसे हैं जिनकी माया रीति-रिवाज खून-सहन और धार्मिक धाधार-विचार में बहुत जिन्यता है। अमेरिका में इन मिलनताओं के प्रति सहिष्णुता बरती जाती है। बड़-बड़े नगरों में जिन-जिन देवताधियों के धमन-धमन मोहमे हैं जहाँ वे अपने धर्म में रहते हैं। धीमे धीमे वो एक पीढ़ियों के बाद वे समाधारण में घुल मिल जाते हैं। यह सहनशीलता भी धार्मिक स्वतन्त्रता या प्रहस्तता (laissez faire) के सिद्धान्त का ही दूसरा रूप है जिस पर अमेरिका का पूँजीवाद या व्यक्तिगत उद्योग का समाज टिका है।

समाज में व्यापारी मनोवृत्ति की प्रधानता होने से आसीध भेद भाव मानवर बने हुए के निटने में भी बरद मिलती है। नीचो का रंग लाला है पर उसके

यह ठीक है कि वैसा होने पर भी नीचो समी जगह प्रवेश नहीं पा जाता, पर अमेरिकन बुकानदार नीचोबनो की कम-सक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकता। अनेक बड़ी बुकानों या डिस्ट्रिक्ट स्टोरो पर हथ्थी और यकूतो बर्मबारी रहे जाते हैं, ताकि इस जाति के बाहुक पाकृष्ट हों। कारखानों आदि में भी जब विभिन्न जाति के घादमी शाब-शाब काम करते हैं तो बड़े दिनों में उनके बीच के भेद भाव पिट जाते हैं और उनमें एका हो जाता है और इसी एके पर समाज की नींव है।

समाजशास्त्रियों ने समुदाय और समाज में अन्तर किया है। समुदाय या कम्युनिटी ब्यादा अनिष्ट हाथी है जैसे गाँव में। और समाज अधिक फैला होता है, जैसे आधुनिक उद्योग प्रधान शहरी समाज। अमेरिका का आधुनिक औद्योगिक शहरी समाज पुराने संकीर्ण देहाती समाज से बहुत भिन्न है। यह बतमा गढ़ा हुआ नहीं फिर भी इसके आचार में कुछ मुख विचार है। एक मुख विचार है स्वाय का यानी सबके साथ निष्पक्षता से व्यवहार होना चाहिए और कमाने लाने का मोका मिलना चाहिए। अमेरिका का कानून भी सबके लिए एक-सा है और आलीम भेद भाव के विरुद्ध और अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए इस कानून का सहारा लिया जा सकता है और लिया जाता है जैसे गीरे स्कूलों में नीचो बच्चों की बर्ती के लिए। इसी तरह बेमकूब मुक्केबाजी टेनीसियन और व्यापार में भी नीचो या अन्य जातियों के लोग घावे बड़ हैं और साथ अमेरिका उन्हें 'हीरो' मानता है। इस प्रकार अमेरिकन समाज में एकता का निर्माण हुआ है।

५. संस्थाओं की भरमार

अमेरिका में संस्थाओं बननी और समितियों की भरमार है। अमेरिकन लोगों को संस्थाओं का सदस्य होने का इतना शौक होता है कि उसका नाम ही ज्वाइनर¹ (संस्थाबाज) बड़ गया है। ये संस्थाएँ भी अलग-अलग प्रकार की होती हैं। बागवानी के क्लब औरतों के क्लब मिटवावरों के सब छात्रों के संघ, व्यापार और उद्योगों के संवहन कारीगरों के क्लब और कू क्लबस क्लान² जैसे कुछ संवदनों—मात्रों और विरादरियों की जैसे भरमार अमेरिका में है इसी और दुनिया में नहीं नहीं दिखाई देती।

सूबरी पोट नामक एक 17000 आबादी के छोटे-से नगर में 800 से अधिक संस्थाएँ हैं जिसमें करीब 350 दो काप्री पुरानी स्थायी संस्थाएँ हैं। सन् 1950 में अनुमान लगाया गया था कि अमेरिका को विरादरियों (फेटवियो) के

1 Joiner

2 Ku Klux Klan.

क़रीब २ करोड़ सदस्य थे। स्त्रियों के क़र्ज़ों की सहाय्य क़रीब एक साल की छोटे क़र्ज़ों और देहात के धानकों के ५-६०० क़र्ज़ों के क़रीब २० लाख मेंबर थे। कुछ मिलाकर अमेरिका में कम-से-कम ३० करोड़ व्यक्ति किसी-न किसी संघटन के सदस्य थे।

जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का कहना है कि वे नवब और संगठन बड़े महत्त्व का काम करते हैं। वे अमेरिका के अत्यन्त व्यक्तिवाद बिखरे हुए व्यक्ति को सामाजिकता सिखाते हैं। एक प्रकार से वे बड़ी काम करते हैं जो पुराने ज़माने में आति या बिरादरी क़त्ती को। अपने हम-नेवा और समान-अर्थ के लोगों से मिलने-जुलने की इच्छा से ही लोग इन नवबों में शामिल होते हैं। वे नवब एक प्रकार से समाज के प्रवेश-द्वार होते हैं। जब कोई धारमी कहीं नहीं बग़ल आकर बसता है तब उसे वहाँ के समाज में प्रवेश करने में कठिनाई होती है। नवब या संस्था की सदस्यता इस मुट्ठीबंदी को तोड़ने और समाज में प्रवेश पाने में सहायक होती है। वास्तव में बात यह है कि अमेरिका के स्वर्णमय व्यक्तिवादी समाज में जहाँ सबको अपनी अपनी पड़ी रखनी है, धारमी अपने को बड़ा महत्त्व और महत्त्व अनुभव करता है। वे नवब और समाज-सोसाइटियाँ इस अर्थसंपन्न को दूर करने का साधन हैं। इनमें आकर वह अपने व्यवसाय विस्तार और समान-अर्थ और बिचार के लोगों से मिलता जुलता है, मित्रता ओढ़ता है अपने व्यक्तिवाद का प्रभाव जमान का अवसर पाता है। अमेरिका में मित्रता ज़रूरी चीज़ नहीं होती जितनी और देशों में। अमेरिकन यह तो समझता है कि स्त्री-पुरुष में मत का मिलाप हो सकता है और वे सामोबन प्रगाढ़ स्नेह के बंधन में बंध सकते हैं, पर वह यह नहीं समझता कि पुरुषों में भी आपस में ऐसा प्रगाढ़ प्रेम हो सकता है। बहुत पहले स्नेह को वह भावुकता मानता है, नवब या बिरादरी में तो वह एक-दूसरे को भाई या बहिन कहकर पुकार सकता है पर बाहर किसी को ऐसे पुकारते उसे घर्म घाती है या वह अर्थ समझ आता।

वे नवब और संघटन भी माना प्रकार के होते हैं। कुछ व्यवसाय या धर्म विधेय के होते हैं कुछ सामाजिक या किसी धारम के प्रचार या धार्मिकता के कुछ प्राणीय हैं जैसे अमेरिका में पहले धारम जैसे प्रोटेस्टैंट या यूरोपियनों के प्रोटेस्टैंट धर्म जैसे या यहूदी धर्म के। कुछ विभिन्न सामाजिक होते हैं जैसे रईमों या बड़े धारमियों के नवब। अमेरिका में पुरानी परम्परा और रीति रस्म जैसी चीज़ तो है नहीं इसलिए अमेरिका वाले अपने नवबों की महत्त्वता को सामाजिक विधि और रीति रिवाज का रूप दे देते हैं। बहुत-से नवबों के नाम भी पुरानी देवों के अनुकरण पर रूढ़ि धारि होते हैं और तबस्य लोग काफ़ीतराब हैं तबस्य लम्बे आगे धारि पुरानी धारि यहनकर सड़कों पर जमूय बिबामते हैं।

गुप्त संगठनों में अमेरिका वालों को मजा आता है इससे उन्हें रहस्य रोमांच का शोष होता है, कुचलबल बहाल जैसे संगठन इसी मनोवृत्ति के उदाहरण हैं। ये संगठन बहुधा उपद्रव मारपीट और क्रूरता के काम करते हैं ये इन बात के चोत्रक हैं कि अमेरिकन लोगों के स्वभाव में अभी प्रीकृता नहीं आई है जैसे अंग्रेजी कोठरियों में छिपकर असीबाबा वालीस और के मिस्से का अभिनय करते हैं और मार-काट के बात बोलते हैं जैसे ही ये अमेरिकन अपनी गुप्त संस्थाओं में करते हैं।

पुराने सैनिकों के संगठनों में यह मनोवृत्ति और साफ़ भग्नकटी है। मूलतः ये संगठन फीब से छुट्टी पाये सैनिकों के हितों की रक्षा के लिए बने थे। मगर एक बार जून का स्वास मग जाने पर छूटना कठिन हो जाता है, इसमिष्ट ये संगठन मुद्र की भड़ास निकालने और हिंसा का थोका पूरा करने में भी सहायक होते हैं। बापिक सम्मेलन के चक्कर पर चमक चमत्ता के शोष बरमस्त होकर होटलों और सड़कों पर भी उपद्रव मचाते हैं। सेना में रहने के कारण इनको देश-व्यक्ति की समझ मिल जाती है। इसमिष्ट ये लोग जिसको देश-हित के विरोधी समझते हैं उस पर आक्रमण करने का अधिकारी भी अपने का मान लेते हैं। कामगरी संघटन और अपने या आदर्श के समझी लोग इनके खास शिकार होते हैं।

अनेक उम्र की औरतों और एही औरतों के लिए, जिनके पति अपने कार-बार में व्यस्त रहते हैं, ये कण्ठ खाली बक्त काटने के बहुत अच्छे साधन होते हैं। ये इन कनका में बैठकर साहित्य कर्मा कविता-पाठ नाटक आदि करती हैं।

कामगारी स्कूली शिक्षा और बाल-व्योक्तिज्ञान सम्बन्धी संस्थाओं में भी स्त्रियाँ बड़ उरछाह से भाग लेती हैं। सामाजिक और नैतिक आन्दोलन के लिए भी बहुत-सी संस्थाएँ हैं जैसे दासियों का मुबार, नीची और अल्पसंख्यकों को नागरिक अधिकार लाने आदि के आन्दोलन। इसी तरह प्रपिण्डोल पुस्तकी बहार, गरम और गरम बिचारों के संगठन हैं। वैज्ञानिक प्रोटेस्टेंट यूही आदि आनिष्ट सम्प्रदायों के संगठनों के बसावा नीचीजनों के आदीय संगठन भी हैं। कुछ समाज सेवा के संगठन हैं जिनमें सब सम्प्रदायों और जातियों के लोग भाग लेते हैं जैसे शिक्षा बाल अग्रज्ञान शरीरों को बसाने आदि के संगठन। असल असल थोका वालों के भी अपने कण्ठ और संगठन हैं।

इन संगठनों के द्वारा अमेरिका में व्यक्तिवाद और सामाजिकता का संघर्ष हुआ है। अपने अपने रास्ते पर चलने वाले लोग इन कर्कों के द्वारा अपने समाजपरवी लोगों के पास आते हैं। अमेरिका में पड़ोस में रहने वाले भी एक-दूसरे से अपरिचित रहते हैं। इन कर्कों के जरिये लोग अपने आस्तिक पड़ोसियों या शानियों के अपने समाज रजि स्वभाव और शौक के लोगों के सम्पर्क में

घाते हैं। पर यह भी न समझ लेना चाहिए कि सब धर्म संस्था बनाने की प्रवृत्ति सभी धर्मिकों में एक-समान है। जर्मन में इस सम्बन्ध में जो पड़ताल की उससे पता चला कि जैसे जर्मनों में यह प्रवृत्ति अधिक है। जर्मनी के 72 प्रतिशत लोग सबों के मेम्बर थे जबकि मध्यम योगी में 60 प्रतिशत मध्यम योगी में 40 प्रतिशत और इससे नीचे की दो योगियों में केवल 30 और 22 प्रतिशत। नीची योगियों के सबों में वास्तव में सब कम धर्म जातीय धर्म चर्च मानी धार्मिक संगठन अधिक थे। जर्मनी धर्मियों के सब जाने-नीचे के मिलने-जुमने के धर्म सामाजिक जीवन का प्रभावित करने धर्म अपनी सत्ता की रक्षा के लिए होते हैं जब कि मध्यम योगी के लोग उन्नति करने या घाते बढ़ने के लिए सबों के मेम्बर होते हैं। नीची योगी के लोगों को सबों का सदस्य बनने के लिए न समय होता है न पैसा। उनके धर्म भी कम ही होते हैं। उनका मिलना-जुमना अपने नाते रिश्ते में ही अधिकतर होता है।

सभी सबों के सदस्य बड़े उत्साह से संस्था की कार्यवाहियों में भाग लेते हैं जंग इकट्ठा करते हैं बैठकों धर्म धार्मिक सम्मेलनों में शामिल होते हैं। इन सबों से लोगों को जोकतनी विधि से काम करने की शिक्षा मिलती है। इन्हीं से न सीखन है कि म्यूनिस्सपल्टी या विधान सभा के नगर में जाकर देश का इन्तजाम कैसे करना चाहिए। सबसे बड़ा लाभ तो यह होता है कि इनके द्वारा व्यक्ति का विस्तार होता है गतिविधि बढ़ती है धार्मिक अपने संकीर्ण धर्म से निरामक अधिक विस्तीर्ण क्षेत्र में जाता है। साधारण धर्मिक हमल-जेल का बहुत इच्छुक होता है। सब उसकी इस मूल को पूर्ण करते हैं। एक बात धर्म। वैज्ञानिक विकास के कारण सब काम के बड़े बड़े धर्म लोगों को छुट्टी धर्म धर्मका अधिक विमाने गया है। इस जाली समय को प्रणवी तरह विमाने न सब धर्म संस्थाएँ बहुत महायक होती हैं। धर्म संस्थाओं के धार्मिक सम्मेलनों में सारे देश भर में हजारों प्रतिनिधि जाकर इकट्ठा हुए हैं। बाज-बाज में तो 1 लाख प्रतिनिधि तक जुट जाते हैं। धर्म बड़े कारबार सब अपने बजेटों का सम्मेलन करते हैं जिससे उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हो धर्म धर्मस्वरूप कारबार बढ़। परन्तु तो इस प्रकार के सम्मेलनों में कम सामान्य धर्म धार्मिक प्रमोद ही जाता या पर सब इनमें कुछ संकीर्णता घाने लगी है। धर्म सम्मेलनों में एक शत में काम करने वाले लोग अपनी सामान्य विधि के धर्मियों पर विचार विनिमय करते हैं धर्म एक-दूसरे के अनुभवों धर्म बटिमाहवा से लाभ उठाते हैं।

3. धर्म-सत्ताका धर्म व्यवहार

‘महाजनों के मन्त्र’ का संघः धर्मों लोगों में सब लोगों की महत्त

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

करने की प्रवृत्ति होती है। पर अमेरिका में साधारणजन बड़े लोगों की बात बात या फैसल की महत्त्व की इतनी कोविध नहीं करते बितनी उनके काम करने के तरीकों की। यहाँ उद्देश्य अपने को बड़े लोगों के जैसा दिखाने का नहीं बल्कि उनके समान बनने का होता है। अन्य पुराने देशों की भाँति अमेरिका में राजा-रईसों के पुरतनी बग या ठैबी बाति नहीं है। साधारण स्थिति के लोग दरया कमाकर ठैबी घेपी में प्रथम बिया करत हैं।

यूरोप से जो लोग 18वीं सदी में अमेरिका बूमने आत थे, उन्हें यह देखकर आश्चर्य होता था कि यहाँ जनसाधारण या छोटे लोग बड़े लोगों की कोई इज्जत नहीं करते न उनके सामने झुकत या बिनम्रता दिखाते हैं। फ्रांस के प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक डि टोर्कविले न इनकी प्रशंसा करत हुए लिखा है कि अमेरिका के लोग साफ़तभी होते हैं बड़े या छोटे सब एक-दूसरे के साथ बराबरी का बर्ताव करते हैं। पर अग्रज अफ्रिका बीमारी ट्रोसोप (1832) को यह देखकर बड़ा बकसा लगा कि अमेरिका में ठैब-भाब का भेद नहीं। उन्होंने लिखा कि यहाँ के लोग सम्झाक आत और सड़कों पर बूकते हैं स्त्रियों को लिहाज-राम नहीं लोग बड़े आसिष्ट और बूकत हैं। बीमारी ट्रोसोप के पुत्र उपन्यासकार ऐबेनोरी ट्रोसोप का भी सन् 180 में यह बीक पडा कि अमेरिका में छोटे या नीची घेली के लोग ऊँचे लोगों के प्रति लज या बिनोत नहीं होते पर उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यह समता और आत्म-सम्मान की निशानी है।

पहले बिरबुद्ध के बाद सामय यूरोप के अधिक सम्पक में धान के कारण अमेरिका में सिट्टाचार पर बहुत और बिया जाने लगा। सिट्टाचार पर पत्र पत्रिकाओं में लेख निकलने लगे और लोगों की संख्या में इस विषय की जिज्ञासे बिकी। धान भी सिट्टाचार का काफी महत्व है यद्यपि इसका सब बदन गया है। सिट्टाचार का धर्म अमीरी ठाठ, बमक-दमक बढ़िया फर्नीचर और बिनाबा नहीं बल्कि सलीका साहगी और समाज में रज-जस्त समझा जाता है।

आर्थिक विकास के फलस्वरूप अमेरिका में मध्यम घेली की संख्या बड़ी और रहन-सहन भी ठैबा हुआ। अतः मध्य समाज में कैसा व्यवहार हाता है यह जानने की भी उत्सुकता बड़ी। यात्रा में कैसा कपड़ पहनने चाहिए और पार्टी में कैसा बिट्नी कैसा निशानी चाहिए, कपड़ में आपण कैस करना चाहिए, बच्चों को कैसा रनना चाहिए आदि बातों की जानकारी मध्य समाज के लोगों के लिए आवश्यक हो गई। परंतु इतना ही है कि अन्य देशों में ठैबी घना के लोगों की बेशमूया आचार-व्यवहार के ध्यान को दूसरे लोगों में धन्य और ठैबा दिखाने की कोविध भी जाती है जब कि अमेरिका में उद्देश्य बनन घण्टी तरह रहना और पैसे का अरुण उपयोग करना है ठैबा दिखाना नहीं।

अमेरिका में अनेक जातियों और संस्कृतियों के लोगों का मेल हुआ है। इस कारण यहाँ सामाजिक आधार में कुछ बिभ्रमता भी दिखाई देती है। दक्षिण में और उत्तर के म्यू इंग्लैण्ड राज्य में इंग्लैण्ड से आये लोग काफ़ी घरसे से बने हैं और जमीन त्रासवाद वाले हैं। इसलिए इनके आधार-व्यवहार में कुछ रस्वीयन और कठोरता अधिक है। इसके विपरीत सरहुदी इलाकों में जहाँ बिभिन्न जातियों का मेल अधिक है लोगों का व्यवहार अधिक सहज और मिमनसारी का है और ढँक-नीच का भाव नहीं है। पर जो लोग नये-नये घसीर होते हैं या जो लोग मेहनत मशक़त का काम नहीं करते वे अपने को औरों से ऊँचा भी दिखाने की कोशिश करते हैं।

अमेरिका में जिस सामाजिक गुण पर सबसे बराबर धोर दिया जाता है वह है मिमनसारी दूसरों को प्रभावित और धारयित करने की योग्यता क्योंकि इसी से व्यवसाय-व्यवसाय में सफलता मिलती है।

बातचीत की कला अमेरिका में उत्तनी नहीं विकसित हुई है जितनी फ्रांस या अन्य पुराने संस्कृति देशों में। बात-चीत हँसी-मजाक व अमेरिका के लोग बहुत कुछ फिल्मों की और टेलीविज़न को नक़ल करते हैं। उसमें मौनिकता या विचारोत्तेजकता कम होती है बरं मजाक और चुटकुले अधिक। इंग्लैण्ड के डा० जानसन और पौन की हाज़िरी बजाबी और वेरिन के साहित्यिक समाज की व्यवस्था और प्रतिभा अमेरिका में नहीं। चिट्ठी लिखने की कला भी अमेरिका में अब भुप्तप्राप्त है क्योंकि अब लोग टेलीफोन और तार से बात करते हैं बैठकर चिट्ठी लिखने की उनको बुरसत कहाँ।

सुदृष्टि का भी अमेरिका में प्रभाव बताया जाता है। पर अमेरिका वाले सुदृष्टि का अर्थ घुट्टी पर रईमों की दृष्टि या पेड़ा धिसने की नज़रसत नहीं समझते। अमेरिका में मध्यम वर्गी के अर्थे धान-वाहने वाले लोगों की बहुत बड़ी संख्या है। ये सभी लोग अर्थे बंग से रहना चाहते हैं और जीवन का धामन्य उठाना चाहते हैं। यहाँ संघर्ष की महाक्रियाँ हैं हजारों की उपस्थिति हो जाती है अर्थे योगाङ्ग अर्थे माटक सिनेमा और अर्थे जगह सेर-समाटे का भी लोगों को बहुत शौक है। इनकी पसन्द उतनी लचील या परिच्छल तो नहीं होती जितनी यूरोप के धामनानी रईमों की पर इने निताण्ड कुहक और भरेग भी नहीं कहा जा सकता।

अमेरिका में ग्रीक और रोमन-कला जैसी पुरानी परम्परा भी नहीं है। इसलिए कला की परदा और दृष्टि यहाँ बन्धी है। पिछली सताष्टी में यहाँ ग्रीक और रोमनकला को बड़ी नक़ल की भरमार थी। अमेरिका के घसीर यात्रा दलनो और फ़ौज से नक़ली और मस्ती कलाकृतियों को धींग मंदकर धीरे-धीरे साने से और उनसे अपने पर सजाने से। पर धीरे-धीरे अमेरिका में

भी सुख का विकास होने लगा और लोग बूढ़ और सुन्दर चीजों में धन खर्च करने लगे। अमेरिका में कला या सुख बहुत छठी घर लोगों की नहीं साखों घाबमियों की चीज है। यह ठीक है कि फ्रेंच और रूस का नेतृत्व सबसे ऊँची स्तरों के लोग करते हैं। अमेरिका में भी बोटी के लोग ही नये फ्रेंचन बनाते हैं, पर यूरोप या और देशों की भाँति, यह बोड़ से लोगों में ही सीमित नहीं रहता बल्कि यहाँ साखों घाबमियों में फैल जाता है। क्योंकि अमेरिका में साखों घाबमी ऐसे हैं जो उसी प्रकार के कपड़े-सस्ते और लोक सजावट का सामान खरीद सकते हैं जो बड़े-से-बड़े लोग खरीदते हैं। अमेरिका में जब कपड़े या सजावट की नई डिजाइन निकलती है तो वह जल्दी बरों में फैल जाती है। इस विस्तार से एक फ़ासबा भी हुआ है। वह अकेहरपन और ठगक मड़क जो अमेरिका के नये घमरीयों में पाई जाती है अब लय हो रही है और जसका स्थान सादगी और सुरक्षित से रही है।

मगर इससे यह न समझना चाहिए कि अमेरिका में वैयक्तिक रूचि है ही नहीं। यहाँ भी रूचि भेद पाया जाता है। सामूहिक या लोक-रूचि के घनाबा लोगों की घपनी रूचि भी है। अमेरिका में घनकुमेर लोग टैक्स बचाने के लिए संसार भर से सुन्दर कला-कृतियों को खरीदने में करोड़ों खर्च करते हैं। दूसरी ओर बड़े-बड़े कारखाने हैं जो करोड़ों की संख्या में व्यवहार की वस्तुएँ बनाकर लोगों की रूचि को प्रभावित करते और बढ़ते हैं। इसके साथ-साथ ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जिनकी घपनी व्यक्तिगत पसंद और डंग होता है।

कुछ रूचि निर्माता भी होते हैं जो अपनी मौलिक प्रतिभा से लोगों की रूचि बदल देते हैं। जैसे जॉन रॉबर्ट जैसे मूर्तिकार रिचार्ड हूड जैसे वास्तुकार या एस्ते डे बुस्के जैसी सजावट विशेषज्ञ। सामाजिक और धार्मिक खेलों की भाँति रूचि के हिसाब से भी ऊँची मध्यम और नीची रूचि की खेलियाँ बन गई हैं जो कि इनका धामाधाम घमवनी या हिसिबत नहीं है। ऊँची और नीची हाइब्रिड और मोडो खेलियों में घादान प्रवाल जसता रहा है। ऊँची रूचि वाले भीषी या लोक रूचि से बराबर गई चीजें सेत रहते हैं जैसे ज्ञान और सगीत और कामिक (व्यंग चित्र) टुक में भीषी या पापुमर रूचि की चीजें समझी जाती हैं बाव में ऊँची रूचि वालों ने इन्हें घपना लिया। मध्यम रूचि वाले हैं जो न ऊँचे में होते हैं और न नीचे में। ऊँची रूचि वाले इनका ठिठस्वार करते हैं और म स्वयं नीची रूचि की चीजों से यथा करते हैं। ये लोग रूचि या मोसिबता-बिहोन भीक पर बसने वाले मध्यम वर्ग के लोग होते हैं।

जैसे रहन-सहन में जैसे ही कपड़-सत क नामजे में भी अमेरिका के बनी

घीर मध्यम श्रेणी के लोगों में फल मिल-सा गया है। बड़-बड़े व्यापारी नहीं दिखाइन को पैसाके लाखों की तादाद में बनवाते घीर ऐसे लोगों पर देखते हैं कि मध्यम श्रेणी के लोग उन्हें खरीद सकें। कपड़े की किस्म घीर काट-छांट में जोड़ा-बहुत फर्क रह सकता है, फिर भी पोशाक के फैशन में घमीर या मध्यम वर्ग का एक नहीं पता चलता। पूरबी देशों में खेवड़ों वपों तक पहनने-धोने के हथ में कोई फास परिवर्तन नहीं होता। जैसे बहू के जीवन में स्थिरता है वैसे ही देश भूषा में वर अमेरिका में तो मिरा फेसन बदलते हैं। कमी स्थियों की स्पष्ट की सम्झाई बहती है तो कमी बहती है। पहले तंग कोरुट पहना जाता था फिर बोरे की तरह बीना-बाला फाक फिर बदन के जमार को दिखानेवाली पोशाक। गू लुक या नई तर्ज निकलती है घीर सुरत पुरानी बड़ जाती है फिर घीर नई तर्ज बन पड़ती है।

एक अमेरिकन लेखक (बोर्टेब वेल्सेन) का कहना है कि वे नये-नये फैशन घमीर घीरमें अपनी घमीरी दिखाने के लिए चलाती हैं। पर वास्तव में फैशन बनाने वाली घीरमें घमीर श्रेणी की नहीं मध्यम श्रेणी की कानेज की लड़कियां घीर बकीस डाक्टर नारनाने के अधिकारी या सिनेमयी बनों की स्त्रियां होती हैं जो यह दिखाना चाहती हैं कि कम वैसे में भी हम चलने ही समीके स रह सकते हैं जैसे घमीर लोग। घीर भीभी मध्यम श्रेणी की घीरमें भी इनकी लड़क करती हैं। मध्यम श्रेणी की स्त्रियां बूखों को भीषा दिखाने या अपनी शान रीठने के लिए नहीं बल्कि मौलिकता धूम-धूम घीर सर्वन शक्ति को प्रगट करने के लिए नई रीसी या तर्जों का आविष्कार करती हैं।

बुद्ध लोगों का कहना है कि कपड़े के फैशन पर सामयिक बदलावों या प्रवृत्तियों का प्रभाव पड़ता है। जैसे महायुद्ध के बाद सन् 1910 के दशक में अमेरिकन लड़कियों ने लड़कों की बराबरी या होड़ करने की प्रवृत्ति पाई फलतः ऐसे शान-शाने कपड़ों का फैशन चला जिसमें लड़की-लड़के वंसी दिखाई पड़े। वर फैशनों के बदलने का एक कारण यह भी है कि एन ही बीज से लोगों का भी ऊब जाता है। शाय ही यह भी स्पष्ट है कि बीनी-बाली सम्झी पोशाकों के बजाय प्रवृत्ति ऐसे कपड़ों की घीर है जिससे बनने-फिरने में यथाया आतामी हा। सब श्यों की शिषाने के बजाय उनको दिखाने की प्रवृत्ति भी है। फैशन घीर कपड़ों का गौर शकन जीवन की निरुपाधों घीर विकसताओं को सहने में भी मदद देता है।

फैशन के आविष्कारक घीर जोषाक बनाने वाले भी विशाषनों के जरिये नये नये तर्ज बनाने की कोशिश करते हैं। मादनाम लड़की रेशम या रि नई किस्म के बन्नों के आविष्कार ने भी कपड़े बनाने वाली का बड़ा लाभ हुआ है। नई दिशाओं का प्रचार करने के लिए व्यापारी नाग लूबमूख लड़कियों या माइनों

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

को नयन-नय कपड़े पहनाकर दिखाते हैं। कासज की लकड़ियाँ नई तबों के प्रयोग में सबसे प्राप्य रहती हैं। बन्नी के पुराने जमाने के फँसनों को फिर से जमाती हैं तो कभी फौजी सिपाहियों की टोपी पहनती हैं बन्नी आदिवासियों के मोबाकिन या जुते तो बन्नी हिन्दुस्तानी डंग की कैंप।

मर्तों की पोशाक की स्थिति जमती है। इनकी पोशाक की तब नहीं बदलती। व्यापार प्रगति की पोशाक अब भी उसी सीले खोलेटी या कपड़े रंग की होती है जैसी 50 वर्ष पहले होती थी। कारखाने या कारखानों के मानिक और मैनेजर तथा कसक क कपड़ों में भी कोई छर्क नहीं होता सिवा इसके कि मानिक का कपड़ा मंहगे क्रिस्म का होगा और जरूर घण्टा बिसा होगा। हाँ मेहनत मजदूरी करने वालों के कपड़े घबस्य भिन्न होते हैं। इसी प्रकार किसानों की पोशाक हार्नम के नीचे छेला के कपड़े हामीबुड़ के घमिनता की पोशाक और परिचम के काउबॉय के लम्बे बूट और परात जैसी टोपी घबस्य घमस्य विविधता रखती है। अमेरिका में छेलापन और निकम्पन को एव समझा जाता है इसलिए वंसा होने पर भी लोग कपड़ों में मोहीनो नहीं बिसाते। कोई युवक अधिक बने-ऊने का साथ उस पर समाकृतिक व्यवहार का शक करने लगता है। किन्तु इतर हास में मर्दाने कपड़ों में कुछ रंगोनी और नवीनता लाने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी है। यह प्रवृत्ति भी मध्यम वर्गी में है। घमीर या ऊँची घमी में नहीं। ऊँची घमी और पर के लोग कपड़ों में चौकीनी और तड़क मड़क नहीं करते इसे के लोग बुरा समझते हैं। चौकीनी और फनन के अपनी स्थितियों के ही लिए साफ़ देते हैं। क्योंकि स्थितियों का मुख्य बगला पुर्णों को आह्वय करना और उनका दिक्कत लगाए रहना है।

4. अमेरिकन चरित्र

हर समान में कुछ खान नमूने के या टिपिकल चरित्र होते हैं। जैसे भारत में बाबू समावती पंक्ति मारबाड़ी सड़ आदि। अमेरिका में भी ऐसे खान चरित्र हैं। इनमें एक है फिक्स्ड या मामसा बैठने वाला। य सोम हर मामस को बैठने का बिस्मा मित है। मोटर सड़ बसान के कारण घापका बामान हुमा तो इसका मामसा ब करा देवे। सरकार का कोई काम हुमा बिनी की सिफारिश लानी इई ता य घापका काम करा देवे। घापको कोई चीज खगीइनी हुई तो थोक के साथ पर दा कमीशन पर दिला देवे। इहाँ में सम्बन्धित हुमी थगी के साथ हात है घास्टर की बात जानने वाले। बाई घयर मार्केट हो बाह्य राष्ट्रपति भवन में नाम पूरी खबर रघन का दावा करते हैं ये सब नेद जानत हैं। साथ ही खुद य किसी बात में बिरबास

मही करते सब की सोन-सेब निकालते हैं ।

दोसरे प्रकार के लोग होते हैं धनग रहने वाले । ये लोग किसी मगड़े या बिबाद में नहीं पड़ना चाहते इसीलिए किसी बात का झिम्मा नहीं लें । जैसे प्रकार के लोग समाज के साथ चलने वाले होते हैं । इनका सिद्धांत है 'महामनो बेन मत्' स पब जो हुआ बहती है ये उसी के साथ हो जाते हैं । ये किसी नई बात या बिबाद का स्वागत नहीं करते पर जब वह बात पुरानी पड़ जाती है या सब लोग उसे मानने लगते हैं, तब ये भी उसी की दुहाई देने लगते हैं । ये लोग परदेसियों और नबावंतुकों का विरोध करते हैं और बड़े कारों से अमेरिकन संस्कृति की दुहाई देते हैं ।

इन्हीं से मिलता-जुलता एक और प्रकार होता है बड़े हुए बरें कानून कापरे से चलने वालों का । इनमें अधिकांश बर्बादारी लोग होते हैं—पुलिस दमकन रेल दुहाई बड़ाज काफतार और सबसे बड़ा संगठन अमेरिकन सेवा के भादमी । एक बंधी डिजिटलिन में रहने और बड़े हुए बरें से काम करने की इनकी आदत बढ जाती है और ये लोग सफ़ीर के फकीर बन जाते हैं यद्यपि इनमें भी सबसे ऊँचे पदों पर आसीन लोग अपनी स्वतन्त्र बुद्धि बनाए रखते हैं ।

एक और प्रकार है ऊपर बहने वालों का । इनमें काफ़ी प्रतिभा और मौलिकता होती है पर ये लोग अपनी मारी शक्ति का प्रयोग ठेका खान पाने और वहाँ जम रहने में करते हैं । अमेरिकी समाज में उठार-बढ़ाव बराबर सया रहता है इसलिए ये लोग अपनी स्थिति को सुरक्षित बनाने की कोशिश में मने रहते हैं और समा संस्थानों में बहुत शामिल होते हैं क्योंकि इससे स्थिरता और प्रतिष्ठा मिलती है ।

ऊपर अमेरिकन जर्मि या व्यक्तिगत के जितने नामों मिलाये गए हैं वे सब इन बात के लोगक हैं कि अमेरिका में सम्य समुहों की भाँति व्यक्तिगत भी बिबी की चीज मानी जाती है जिससे वेन लड़ किये जा सकें । वास्तव में कदरेय पैसा लड़ा करना उतनी नहीं रहता जितना अपने व्यक्तिगत को मानना । यदि किसी चीज की माँग है तो यह उपयोगी है और ऐसे व्यक्तिगत का ही मूल्य है ।

अमेरिका में जर्मि के कुछ धार्मिकीय प्रकार भी हैं जैसे प्रचारक या बिबापनबाज । प्रचार और बिबापन की कमा को जितना मागे अमेरिका वाले में गण चलता और कोई नहीं । इसलिए प्रचार की चाह भी यहाँ बहुत है । घरघर में अपना नाम और बिब दमकर अमेरिकनवासी का दिल मिलता उठता है । बहुत-से लोग इसीलिए किसी सरपा या संगठन के सदस्य बनते हैं कि कभी अपने संगठन के पदाधिकारी के रूप में किसी बिदेसी मित्र के साथ उनकी ठकबीर निभ जाए । प्रचार की प्रवृत्ति इनकी बड़ मज़ है कि जीवन की बिबपुल

निजी बातों का भी विज्ञापन करने से सोग नहीं हिचकिचाते। धातम विज्ञापन की इस प्रवृत्ति के कारण सार्वजनिक जीवन में ऊँचाई प्राप्त करने के बाद सोम अपनी जीवनी सिखाते हैं जिसमें अपनी कमजोरियों को स्वीकार करने के साथ-साथ वे दूसरों का भी परीक्षण कर देते हैं। बड़ा फोड़ने या गोल खोलने में अमेरिका वालों को बड़ा ध्यान रख मिसता है। अक्सर तो वे इस प्रकार के कामों में जिनमें समाज में प्रमुख लोगों की कमजोरियों या निजी बातों का बड़ा-फोड़ किया जाता है सोम बड़ा नाम से पड़ते हैं। बड़े लोगों की दुर्बलता को देखकर जनसाधारण को यह तसल्ली होती है कि वे भी हमारे ही जैसे हैं। इसी प्रवृत्ति का एक और रूप है। कुछ लोगों को बरकर दूसरों का सब सबा रहता है। वे बराबर यही शंका करते हैं कि सोम हमारे पीछे पड़े हैं। इन लोगों को सब अगह पंचपात्री और पञ्चगव्यकारी कम्युनिस्ट फासिस्ट, महुदी उपहारी ही नजर आते हैं। बर और शंका से मस्त होकर वे सोम दूसरों के पीछे पड़े रहते हैं और सोद-बिगोड़ किया करते हैं। ये हुए प्रवांछनीय प्रकार।

एक और प्रकार है उन लोगों का जो समाज के अनुकूल बनने की कोशिश करते हैं और इसी का दूसरा रूप है बिगोड़ी या बह व्यक्ति को समाज से अपना मत नहीं मिला पाता। समाज के अनुकूल बनने की प्रवृत्ति का कारण ऐसे या पद का मात्र नहीं बल्कि जीवन के धीपी-तूफानों से बचने के लिए समाज की धाड़ भी जाती है। दूसरी ओर है बिगोड़ी कलाकार कवि लेखक या धादयवादी जो किसी प्रकार के प्रभाव या प्रविचार को सहन नहीं करता जो किसी भी मूल्य पर अपने सिद्धांतों या विचारों को छोड़ने को तैयार नहीं होता। ऐसा व्यक्ति या तो समाज से लड़ता है या अलग हटकर अपने विचारों और स्वप्नों की कला या साहित्य का रूप देता है।

एक और टाइप है जो अमेरिका का साठ टाइप या नमूना है। कर्मठ, बड़े कारखाने बड़े संपत्ति बड़ी इमारतें बड़ी करने वाला इन्जीनियर और व्यापारी या सारी दुनिया का चक्कर लगाते वाला सब कामों में हाथ मगाने की तैयारी जीवट का पनी, अमेरिकन सिल्ली, पंचम या बिगोपत्र। इसकी सबसे अधिक ध्यान ऐसे काम में जाता है जिसमें कुछ कर दिखाने का मौका मिले।

हम सब विभिन्न और विविध प्रकार के व्यक्तियों को मिलाकर हम अमेरिकन चरित्र का एक रूप पढ़ा कर सकते हैं।

5. समाज की विवृत्तियाँ

प्रत्येक समाज की अपनी अलग-अलग की विवृत्तियाँ भी होती हैं। अमेरिका

की बिकृतियों यूरोप से निम्न हैं। यूरोप में यदि स्वीकृतार्थ बेस्यावति और हत्याओं का जोर है तो अमेरिका में रेकिट, कालगन जोरी और ठगी का जोर है पर सबसे अधिक चिन्ता का विषय छोटी उम्र के लड़कों में अपराध की बढ़ती हुई प्रवृत्ति है। दूसरे विश्वयुद्ध के पहले 10 से 16 बप की उम्र के लड़कों की अनुमानित संख्या 170,000 से 200,000 के बीच थी पर्याप्त इस उम्र की जनसंख्या का एक प्रतिशत। सन् 1960 के दशक के मध्य यह संख्या 385,000 यानी 2 प्रतिशत हो गई थीर इसमें यदि उन लड़कों को भी जोड़ दिया जाए, जिनको पुलिस ने अपराध करते पकड़ा पर मुकदमा नहीं चलाया तो संख्या करीब 10 लाख पहुँच जाएगी। केवल विशुद्ध ब्लू (कैन्टीय वाल अपराध बप की उम्र सबसे खतरनाक होती है सबसे अधिक अपराध इसी उम्र में किये जाते हैं। अपराधिया में लड़कों की संख्या लड़कियों से पंचवुनी होती है क्योंकि लड़कियों पर नियरानी अधिक होती है। यों से सहृदय में अपराध अधिक होते हैं यद्यपि यों में भी यह प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि सबसे अधिक बाल-अपराधों नीचो व मध्य पिछड़ी जातियों के होते हैं जिनको देश के जीवन में उचित स्थान नहीं मिल सका है। बाल-अपराध के मुख्य कारण सहृदयों में अत्यधिक घनी और गंदी बस्तियाँ परीबी परिवार का दूषित वातावरण अपना माँ-बाप की शराबखोरी आदि हैं।

मध्य अपराधों में सबसे अधिक अपराध खोटी राहजनी मोटरों की खोरी आदि हैं। इन राहाजनी के मध्य में इन अपराधों में सहृदयों में करीब 150 लाख बावनी प्रतिवष पकड़े गए, पर जेल की सजा 20 से से 1 को ही मिल पाई। ठगी शबन बालसाजी व्यापार में भोखबकी फर्जी सेपों के बिक्री जैसे 'बार सी बीस' के अपराध भी अमेरिका की व्यापारी संस्कृति की विशेषता है। पर अमेरिका की सबसे बड़ी विशेषता है रैकेट और सिंडिकेट। रैकेट अपराध संघ-ट्रिस्ट रूप में है जिसमें मुख्य-बदमाश बाकायदा नाइट क्लबों होटलों दुकानदारों कारागारदारों मजदूर संघों टुक कम्पनियों आदि से कर उगाहते हैं और न देने पर तोड़-फोड़ मृत और जान से मार तक देते हैं। सिंडिकेट अपराध का व्यावसायिक संघटन है इसमें व्यापारी बंग से जुड़ावनामे लघुपर और ध्वनिचार के घट्ट बसाए जाते हैं। एक लमाकर बार पाने की प्रवृत्ति अमेरिका में बड़ी प्रबल है। अमेरिका में लहना घमीर हा जाने की घटनाएँ इतनी अधिक हुई हैं कि सभी लाय सहृदय डॉब सगाने के क्षेत्र में रहते हैं। स्टाट मनीन साटरी, पुटवान समवान मुख्यबाजी आदि गैरों पर डॉब सगाने और पासिसी म या नगनों पर मट्टा बनने में करोड़ों का बारा-ग्यारा हो जाता है। रिजर्व बैंक की दैनिक रिपीटों और अगारों में हज़ारों सरकारी मुद्रियों के लम्बर निरसते

हैं पानिसी या नम्बर के सट्टे में इस पर दाँब लगाया जाता है कि साख कौन से नम्बर निकलेगा। चिकागो शहर के गरीब नीची मोहल्लों में इस प्रकार के सट्टों से 8 करोड़ डालरों की धामदनी होती है। स्टाट मधीनों से सासना धाय 2 धरय डालर है। जुए के हरू प्रकारों से कम बिलाकर सास में 16 धरय डालर से कम की धाय नहीं होती। इतनी अधिक धामदनी कबल रसायन व्यापार की छोड़कर और किसी व्यापार से नहीं हाती वानून की पकड़ से बचने के लिए धपराबों के ये संघठन और व्यवसाय राजनीतिक दलों के नेताभा पुमिस धमिकारियों मजदूर संगठनों आदि से सँट-मँठ रखते हैं और धपसर व्यापारी कम्पनियों की धाड़ में धपना पाप का धन्धा बजाते हैं। केफाबर और मेकन्नेसन जैसे सीनेट के मेम्बर और धग्य सार्वजनिक कार्यकर्ता आदि समय-समय पर इन धप्टाधारों का बड़ा-कोड भी करते रहते हैं। फलस्वरूप कुछ लोगों को कँड हो गई, कुछ पदाधिकारी और मजदूर नेता भिकासे पए और जुए का व्यापार करनेवासी कम्पनियाँ पर कस के टैक्स लगाये गए पर इन सब के बावजूद धपराब संगठन और व्यवसाय ज्यों-का-त्यों कायम रहा। ऐसा लगता है कि इस धपराब संगठन की बड़ें अमेरिका की जमीन में इतनी गहरी गई हैं कि कानून और रासन के धाय उसे उखाड़ने में असमर्थ हैं। यह भी एक विचम्बना है कि इतने सभ्य और कानून के पाबन्द देश का शासन और समाज धपराब संगठनों के धाने हार मान ले और जो संस्कृति प्रकृति की शक्तियों को जय में कर सके वह एक मानवी विकृति के सामने इतनी असहाय हो।

जुए के समाज धराब पीने की लय भी अमेरिका में बड़े जोरों पर है। धुक-धुक में जब इन्धन और यूरोप के लोग अमेरिका में आए तो उनका जीवन बड़ा कठोर और धर्मपंथ का। तब धराब पीना भी बड़ाबुढ़ी में सुधार किया जाता था। कासकर वालों में काम करने वाले, सराब पर बतने वाले और बड़-बड़े पधुधों का रैबड़ रखने वाले तो खूब डटकर पीते थे। यद्यपि यह सभ्यता का बहुत प्रसार हो गया है पर पीने की आवस्य कम नहीं हुई है। जीवन की ठेक धाय-मौड़ फिक और समाज से धराब दासु तर को छुटकारा दिला देती है। पर अधिकांश अमेरिका में सार्वजनिक स्थानों में धराब पीने पर रोक है और मोल धपने धरों में या फिर सुके छिपे ही पीते हैं। सभसे अधिक धराबधोरी धूर्वा भाग में पश्चिमी समुद्रीतट में (केसीकोनिया में देग में सबसे अधिक धराबधोरी है) और टैपसाम जैसे गई समृद्धि वाला राज्यों में है।

रास के ननबों सड़क की धरायों पमिक धराबधरों के धपाया धरों में भी बार बसते हैं। हाटकों में धराबधोरी के साथ कामुकता का भी नमन प्रदर्शन होता है। उतरेक संगीत और नर्मी या धयनम्य मुम्हारियों का नाच यहाँ की रास बीजे हैं। सन् 1920 के बाद सिधों पर से भी बपन हटे और उन्हें समा

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

मूलमंत्र है। अपराध के संगठन और सिंडिकेट भी गहरा दौब मारने और बस्ती से-बस्ती दरमा कमान की प्रवृत्ति के चोतब हैं। य अपराधी देखते हैं कि दोपरा बाजार में हेरा-फेरी से या चतुरता और बेईमानी से सोय रातों-रात करोड़पति होते हैं तो हम भी क्यों बूनें ? अमेरिका के समाज का आधार है ऐसा और ऐसा जोड़ने की स्वतंत्रता। अपराधी संगठन भी इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर बनते हैं।

अप्रीम के प्रवेश व्यापार को ही सीझिए। जारी से अफ्रीम बचने वालों को कच्ची उन्न के लहके-लड़कियों को यह सत्यानासी सत समते हिक नही होती। आखिर क भी तो सम्य व्यापारियों की नीति अपन ग्राहक तैयार कर रहे हैं। जिस तरह व्यापारी मफा कमान में उचित-अनुचित का बिचार नही करता उसी तरह अपराध के ये व्यापारी भी किसी प्रकार का बिचार नही करते। अधिकांश अपराध-व्यापारी और गुन्हा-संगठन के सरदार गहरी आपरिस प्रतिक्रिया भादि आयत्त तरीक तकसे से घाते हैं। अपराधों के ये संगठन भी अधिकतर उद्योग-व्यापार के मये केमों में बनते हैं। जहाँ जानून और व्यावसायिकता साथ पाई है। अपराधों की बाड़ भी यूरोप से मय बसन वालों की बाड़ के मय है कि यूरोप या अन्य देशों से उमड़कर जा लाग अमेरिका घाते हैं उन्हें यहाँ बिसकुन मये प्रकार का बाताबरन मिलता है। जारा और गहरी स्पर्धा और छीना भपटी मची मिलती है। फलत के भी गहरी संमा में हाथ घोन मयते हैं। नीचा समाज में अप्रीम कोकीन जरम आदि पीन की सत सबसे पयादा कैनी है। इसका कारण गरीबी पिछड़ापन सामाजिक बिगुनमता बताया जाता है परन्तु वास्तविक कारण यह है कि नीची का कल-बारखानों में मजदूरी से घबछी बमाई हा जाती है पर सामाजिक और नैतिक मापद और परम्परा उनक सामने है मही इसलिए के कुरी सत म पैसा नूँसत है।

असल म गतग अपराधों और घराबगारी म उवना नही है क्योंकि इनकी प्रतिक्रिया म समाज का असल कम्प भी जागत हुआ है। असल जतरा आत्मा और बिदबान के प्रभाव म है। अपराधी लाग ना फिर भी शक्ति और सम्पत्ति के बिदबान करत हैं पर जब मनुष्य मय बीजों में बिबबान या दता है तनी अविनश्य दूट जाना है और समाज का नी गतग होना है।

6 आचरण और नतिकता

प्रारम्भ से ही अमेरिकन समाज क्षीनता को बहुत महतर देता आमा है। सन् 1890 म नई पाड़ा के आचरण म जो शक्ति नई नियरट और घराब पीने और लड़की-लड़का के स्वतन्त्रतापूबक मितन और महबान करने की जो

बाद आई उस पर अमेरिका के पुराणपंथी लोग बहुत ही चिन्तित हो उठे । उन्हें ऐसा लगा कि समाज की नींव बह रही है । फलतः इस उष्ण खलता के बिड़ड़ भाषाई भी उठी और कानूनी कार्रवाई की मांग हुई । 19वीं सदी में लोगों में शैव और ईश्वर में शक्ति की और धर्मशक्ति का मुकाबला धर्म से किया जाता था । पर बाद में धर्म में घास्या घटने लगी फलतः नीति का आधार धार्मिक के बजाय लौकिक हो गया और समाचार को धिटाने के लिए कानून का सहारा लिया जाने लगा ।

उदाहरण के लिए गन्धी फ़िल्मों और फ़िशाओं पर सरकारी सेन्सर बिठाया गया । इसके अलावा कैबोलिक पाबरी और कुछ अन्य वैर-सरकारी संस्थाएँ भी गन्धी फ़िशाओं और बिनों पर मजूर रहती हैं और धान्दोलनों के द्वारा प्रकाशकों को गन्धी फ़िशाओं बापस लेने को बाध्य करती हैं । पर नैतिकतावादी समाचार की बाड़ रोकने में कभी सफल न हो सके । पिछली सदी में लिपस्टिक वाले सिगरेट पीने और थिएटर देखने का भी विरोध करते थे परन्तु अब हरे कोई बुरा नहीं समझते । पर सुधारकों या नैतिकवादियों की सबसे बड़ी हार घराबगरी के जमाने में हुई । बीसों साल के धान्दोलन के फलस्वरूप सुधारक लोग अमेरिका में गराब पर कानूनी रोक लगाने में सफल तो हुए, पर घराबगरी हान ही अपराधों की बाड़ का गई । बीसों से घराब बताने और बेचने का रोजगार जोरों से चल पड़ा । इसके कारण गुन्हे-बदमाशों की संख्या बड़ी पुनित और घराबत में अद्विष्टाचार बड़ा राजनीति में भी बदमाशों और अपराधियों का प्रवेश हुआ राजनीतिक नेताओं और अपराध-संगठनों में साँठ-गाँठ होने लगी । फलस्वरूप अमेरिका वालों की समझ में आ गया कि केवल कानून के द्वारा सुधार नहीं किया जा सकता ।

वास्तव में सदी के सौ में कानून का कुछ हद तक उत्थपन होता है । हमेशा में पुराने जमाने के बहुत-से कानून सही भी चल आ रहे हैं जिसका कोई फायदा नहीं करता और जिसकी किसी को याद भी नहीं रही । अमेरिका में भी बिनाह और स्त्री-मुक्त का सबैब सहजाम सम्बन्धी कानूनों और नियमों का व्यापक रूप से उत्थपन होता है । इसी प्रकार व्यापार के नाम पर अनेक प्रकार के रीकेट या बार-मी-बीत चलते हैं । केफ़रर कमेटी के सामने एक महादूर बदमाश बिनी मोरेलीन यहाँ तक कहा कि आप हमारे काम को तो अपराध कहते हैं पर मूढा-बाजार में बचा होता है ? किसी भी तरीके से बचा कमाने पर कोई कानूनी राह न हमारी चाहिए ।

दैन्य सम्बन्धी कानूनों के उत्थपन का नवम प्रचलित रूप एक्सप्रेस घाक उष्ण वाली ग्यारह-गर्भ की मद है । व्यापार-गर्भ के नाम पर घराब की पान्थि दी जाती है और मादट (राशि) बचनों में भीड़ की जाती है । कानूनन

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

इस प्रकार सरकारी टैक्स को दबाने पर क्रेब और जुमनि की सजा हो सकती है फिर भी यह अनुमति प्रदान करता है। इसी प्रकार व्यापार में मोनोपली या एकाधिकार के बिना कभी कानून है पर इसका भी उल्लंघन होता है। मजदूर और व्यवसाय संगठनों में भी बेइमानी और भ्रष्टाचार फैला हुआ है। धिमा संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार से बरी नहीं हैं। बास्केटबॉल के मिले हुए मैच किसी क्लब और इन्विजिबल में नकल और बेइमानी इसके उदाहरण हैं। फिर भी अपराध और बेइमानी में फर्क है। बेइमानी कानून की निगाह बचाकर की जाती है और अपराध कानून को तोड़कर। उल्लंघन होने पर भी नियम-कानून समाज के प्रत्यक्षकरण के प्रतीक हैं।

अमेरिकन समाज में जिस प्रकार नैतिकता और सुधार की प्रवृत्ति है उसी प्रकार व्यक्तिवाद की। और शुरू से ही अमेरिका में ऐसे अनेक स्त्री-मुख्य रहे हैं जिन्होंने समाज के नियमों को मनुष्य की सहज-प्रवृत्ति के विरुद्ध समझकर उन्हें मानने से इनकार किया है। प्रसिद्ध जेवक माक ट्वेन की उक्ति है—“हमारे सामाजिक नियम नकली हैं वे हमारी स्वाभाविक सहज स्वस्थ प्रवृत्तियों को दबाने के लिए बनाये गए हैं।” दूसरी ओर ईसाई नीतिवाधियों का ध्यान है कि मनुष्य प्रवृत्ति से पापी है इसलिए हम सहज पाप प्रवृत्ति को दबाना आवश्यक है। इस प्रकार अमेरिका में शुरू से ही सहज स्वच्छन्दतावादी और सुधारवाधियों में द्वन्द्व रहा है।

प्रसिद्ध फ्रीमीसी बिचारक डि टॉर्कविल ने सन् 1830 में ही कहा था कि अमेरिका में नैतिक बर्धन बहुत कठोर हैं पर एक बार ये टूटे तो फिर इनका पुनः स्थापित होना कठिन हो जाएगा क्योंकि समानता की लहर छोटे और बड़ों को एक कर देती थी और फिर छोटे प्राधियों का जो नैतिक स्तर है बड़ी पूरे समाज का स्तर बन जाएगा। बहुत ही ठीक डि टॉर्कविल की बात ठीक है। अमेरिका में नैतिकता का जो स्तर या धारणा प्रतिष्ठित हुआ वह उन साधारण मध्य वर्ग के गृहस्थों का था जो शुरू में अमेरिका में आकर बसे थे। वे लोग कट्टर कृत्रिमता से और घोर भ्रष्टाचार को हटाने समझते थे। जीवन की वे। भोग-विभोग धरातल-छोटी पुराचार को हटाने समझते थे। जीवन की कठोर तपस्या पेशानी धर्मियों, प्रसन्नानों के विरुद्ध धर्मियम समय मानते थे। कल-कारखानों के विकास से अमेरिका में एक नये लघुहान मध्यम वर्ग की सृष्टि हुई जो नीचे से उठा था और जो जीवन का मजा सूटना चाहता था। इसने पुराने कट्टरपन्थी नैतिक धारणा को घसीकार तो नहीं किया किन्तु व्यवहार में उसकी पूरी उपेक्षा की। निदान धार्मिक धरातल, जुमा और यौनाचार को बुरा समझते हुए भी व्यवहार में साधारण अमेरिकन लुप्त इन्का स्वाद लेते हैं। धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे भी पी सकते हैं क्योंकि वे होय-हवास न-नो

हैं। बुद्धिमान भी भुग्न नहीं हैं। हारने पर पैसा खर्च करना चाहिए। बिनाहू के पहले बहुतों किसी सबके से मिले-जुले धीरे सम्मोह में कर ले तो भुग्न नहीं यदि बदनामी में कौन या घण्ट में उस सबके से ब्याह हो जाए। पनि-पत्नी भी पर स्त्री या बर-पुरुष से प्रेम और सार्वजनिक सम्बन्ध तक भी कर सकते हैं। बसतें इनमें घर टूटने की सीबत न पाए या तमाक के बाद फिर ब्याह हो जाए। वास्तव में अमेरिका की पुरानी नैतिकता अब पुरानी (घाउट घाउट) पड़ गई है पर नई नैतिकता अभी स्थापित नहीं हो सकी। इसमिए इस समय अमेरिका नैतिकता के तत्त्वन्तिकाल में से गुजर रहा है।

जहाँ तब व्यापक भ्रष्टाचार का सबाब है यह बात याद रखनी चाहिए कि जब समाज के सबसे ऊँचे वर्ग में भ्रष्टाचार की प्रतिष्ठा है तब छोटे लोगों से कुछ रहने की याता नहीं की जा सकती। जब लोग देखते हैं कि छोटी माटी खोरी करके पर तो बल हो जाती है पर पैसों के जोर पर सोम छरकारी कर की करोड़ों की रकम हथप करके बैठ जाते हैं या व्यापार में लाखों का हेर-फेर कर देते हैं। शासन और विधान-समाजों की भी प्रभावित करके अपने प्रयत्न के काम करवा लेते हैं तो उनको सत्य धीरे ईमान पर कैसे भड़ा हो सकती है? बड़े व्यापारी मजदूर संगठनों और छरकारी धर्मियों में भ्रष्टाचार की सिकायत करत हैं पर ये भूल जाते हैं कि इस भ्रष्टाचार में वे भी शामिल हैं। अमेरिका में विद्यमान ही वर्ष में एक-से-एक बड़े-बड़े सार्वजनिक गोलमाल प्रकाश में आ चुके हैं। सन् 1860 के गृहयुद्ध में रही बन्धुकी की सम्पत्ति से लेकर स्तेनिय मुद्र में सब हुए मांस सन् 1920 में टीपाट बोल का मोलमास और सन् 1930-35 में प्राकृतिक गैस के भ्रष्टाचार इनके उदाहरण हैं। इस प्रकार के बानाकरण में नैतिकता कैसे पलप सकती है। वास्तव में अमेरिका का मूल मंत्र पैसा है। यहाँ सफलता यवित और पैसवर्ष की प्रतिष्ठा है। सुकृता और त्याग की यहाँ कौन पूजता है। बचपन से ही सड़का घर में देसीबिजन में स्कूल में धीरे समाज में येन-कैय प्रकारण सफलता पाने का ही पान पड़ता है। यहाँ शासन की पवित्रता पर कोई ध्यान नहीं देता। सारा जोर ताप्य पर है और साध्य है—पण और पक्ति। फिर भी नैतिकता यहाँ से एक बन नहीं मिल गई है। छोटी जगहों में यह सब भी बनी है। सड़क के किनारे से कीब एर-निहार्द मिठाही लेते व जिन्होंने पूरी छूट होने पर भी दुराचार नहीं किया। वह यह बात भी याद है कि छोटी जगहों से नियम हड़कों की छारार में लटने-लटकी बह राहों में काम-काज के लिए धाते हैं और वहाँ याकर नैतिकता के बगनों की सोड़ खेत है।

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

पत्र¹ अर्थात् मजदूरी इस समय अमेरिका में जीवन का सबसे बड़ा चरित्र है। बड़े लोग तो सदा से ही मजदूरी से घाए हैं पर अब अमेरिका में साधारण और मध्य वर्ग के बहुसंख्यक लोगों को भी मजदूरी उठाने की पुबिधा और साधन मिल गए हैं। मजदूरी के इस प्रवृत्ति के फोर पक्षों का एक कारण यह भी है कि वहाँ पहले लोग परलोक को धार्मिक महत्त्व देने से और इस जीवन को उसकी तैयारी का साधन मात्र मानते थे वहाँ धर्म का प्रादुर्भाव इतना ही सब कुछ मानता है परलोक में वह विश्वास नहीं करता। वह तो यह मानता है—मौखिक बुद्धि को वास्तविक शिक्षणकारी फिर कहाँ ?

मजदूरी में सब कुछ घा जाता है—प्रविष्टों की मुलाकात बुद्धिमान-मानि-गन मोटर की तीर भाग रात के कतारों की मौखिक सेने और पुष्पा-व्यभिचार-जैसे धार्मिक काम भी। वास्तव में मौखिक सेने की बाह्य इतनी प्रबल हो गई है कि बहुधा मौखिक का भी मजदूरी जाता रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका में प्रत्येक नई पीढ़ी मौखिक और मजदूरी के माध्यम द्वारा जीवन के धर्म को छोड़ती है। वह धार्मिकता की आवश्यकता को धर्मीकरण नहीं करती पर पुराने धार्मिक मानदण्ड उसे मंजूर नहीं दे पाते। वह नये धार्मिक और नई नैतिकता की ओर में है और यही बात घाला बचाती है। जो लोग अमेरिका में प्रचलित धार्मिकता या धर्माचार को अमेरिकन समाज और संस्कृति के भाग की निधानी समझते हैं वे गलती करत हैं। वास्तव में वह जीवन के लिए प्रयोग और नये नैतिक भाग की ओर है। धर्म अमेरिका में व्यक्ति को जितनी स्वतंत्रता है उतनी कमी नहीं थी। अभी वह इन स्वतंत्रता का सामाजिक नियमों और नैतिकता से बंध नहीं बिठा पाया है पर वह प्रयत्न इसी दिशा में कर रहा है।

7 अमेरिकन समाज में सेवक

सभी समाजों में सेवा या धर्म-सम्यग् के नियम हैं। अमेरिकन समाजों में दो बातों से तो बहुत स्वतंत्रता है पर सेवा के मामले में कानूनी कड़ाई बहुत जाती है। अमेरिकन मजदूरी या धर्म-फिरने मिलना धर्म-पाटे धर्म में तो बहुत स्वतंत्रता मिली हुई है पर धर्म-सम्यग् में उस पर कड़ी निगरानी और बंधन रहता है। पुण्य से भी काम धर्म और जीवन के धर्म विषयों में साहस से काम लेने और धर्म-धर्म का बिचार न करने की धार्मिक की बातों है परन्तु धर्म के मामले में उस भी सोचा के धर्म रहता रहता है। बिबाह के प्रतिवृत्ति यह धर्म सम्यग् की दृष्टि नहीं है।

समाने होने पर मजदूरी और लक्ष्मी में धर्म भावना जागृत होती है। पहली कड़ाई से नये धर्म भावना का धर्म करना पड़ता था पर सन् 1910 के बाद

संरम के बंधन हीमें पड़ गए। संरम के मामले में भी स्त्री को पुरुष के बराबर स्वतंत्रता मिल गई, फलतः इस विषय में काफ़ी स्वेच्छाचार फैला और उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है। परन्तु धार्मिक भी यह मान नहीं बिठा कि यौन स्वेच्छाचार पाप है या कुरा काम है।

संरम का व्यापार अमेरिका में धार्मिक सुने धार्मिक भी चलता है और मुके छिपे भी। धोखों की लंबी टीनों और छातियों का प्रदर्शन कमरेदारों विज्ञापनों छिपेपे के इच्छाहृत् में सर्वत्र खुलकर होता है। हजारों वर्ष बाद कोई इतिहासकार अमेरिका के किसी पुराने नगर के मन्दिरों को खोदकर निकाले तो उसे सर्वत्र धोखों की टीनों और छातियों के चित्रों की धरमार ही मिलेगी। इसी धोर अमेरिका की फिल्मों में धोरतों का नंगा चित्रण करने पर कड़ी रोक है। फिर भी फिल्मों में नायिका के बाप-टब में स्नान करने के दृश्य बिसाले धोर इसका विज्ञापन करने में साफ़ों बपए छूँक दिये जाते हैं। अमेरिका में संरम या यौन स्वेच्छाचार की निदा धोर भर्त्सना बामपंथी धोर पुरातन पंथी दोनों करते हैं। बामपंथी इस नगी शृंखारिक्ता को पूंजीवाद का अभिघाप बताते हैं तो बलिग पंथी कहते हैं कि यह साम्यात्मिकता की जेखा धोर भौतिक सम्पत्ति को प्रत्यक्षिक धोर देने का तरीका है।

अमेरिका में स्त्री-पुरुष के यौनाचार का अध्ययन करके बमर ड नी० बिसे ने दो पुस्तकें लिखी हैं— अमेरिकन पुरुष का यौन व्यवहार और अमेरिकन स्त्री का यौन व्यवहार।¹ इस पुस्तकोंने बहुत प्रसिद्धि पाई है। इनमें बिसे धोर उनके सहायक ने हजारों स्त्री पुरुषों से उनके यौन जीवन के बारे में प्रश्न करके उनके उत्तर धोर सांकड़ दिये हैं। इन पुस्तकों की बहुत खर्चा धोर बामोचना हुई है पर इनसे बहुत-से नई बातों का भी पता चला है। बिसे के अध्ययन से यह पता चलता है कि 17-18 बर की टब में अमेरिकन पुरुष में काम-शक्ति पूरी तरह बिबनित हो जाती है जब कि स्त्री का यौन बिकास धीमा होता है। स्त्री में काम की पूर्णता करीब 30 बर की आयु में पहुँचती है उसके बाद यह 50-55 तक उमी तरह बनी रहती है। पुरुष में काम भाव का बिबाध धोर तीव्रता से होता है पर पिराम भी जल्दी ही ठंडी से हाता है। किंग के अध्ययन से यह भी पता चला कि बिबाध से पहल संयोग धोर बिबाध के बाद पर-स्त्री या पुरुष से सम्बन्ध काफ़ी प्रचलित है। पुरुष का पुरुष से यौन सम्बन्ध—बहुक-मेक भी बाली चलता है। करीब 15,000 स्त्री-पुरुषों से बातचीत के बाद बिसे इन बतीजे पर पहुँचे कि संयोग या काम व्यापार की बातों या बर्जन से पुरुष का जितनी बालमिद उत्पन्न होती है उतनी स्त्री में नहीं।

1 (i) Sexual Behavior in the Human Male and (ii) Sexual Behavior in the Human Female

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

किसी की जाँच से यह भी पता चलता है कि पुरुष का यौन व्यवहार उसकी सामाजिक स्थिति और शिक्षा पर बहुत निर्भर है। सबसे अधिक यौन शक्ति या कामुकता निम्न मध्यम श्रेणी के उन पुरुषों में मिली जो हाई स्कूल से प्राप्ति नहीं करते। कालेज जाने वाले पुरुषों में कामाचार सबसे कम है। पर काम सम्बन्ध या संभोग की प्रवृत्ति से क्याया महत्व नाम व्यवहार के ढंग का है। वीटिंग्स पर्याप्त सांख्यिकीय और प्रायोगिक हाई स्कूल या कालेज कक्षा में शुरू होता है। संभोग हाई स्कूल कक्षाओं में अधिक और कालेज में कम पाया गया। नमता और बुद्धिमान कामज कक्षाओं में सबसे अधिक प्रचलित है स्कूलों की कक्षा के लड़के-लड़की इससे कुछ हिचकते पाये गए। छोटी धनियों में शुरू में तो स्वेच्छा चार की प्रवृत्ति अधिक होती है पर विवाह के बाद स्त्री-पुरुष बीने-बीने व्यवहार से विमुक्त हो जाते हैं जब कि ठीकी धनियों में विवाहित स्त्री-पुरुषों में व्यवहार की प्रवृत्ति अधिक है।

स्त्रियों के यौन व्यवहार पर उनकी सामाजिक स्थिति प्रतीति या प्रतीति का उतना प्रभाव नहीं दिखाई पड़ा जितना इसका कि वे किस पीढ़ी में पैदा हुईं। पहले विरचमुक्त के बाद जो स्त्रियों की पीढ़ी आई उनमें स्वच्छंदता प्रवृत्ति और विवाह के पहले पुरुषों से मिलना-जुलना बहुत अधिक बढ़ गया। इसके बाद प्रत्येक पीढ़ी में स्त्रियों की कामाचार की स्वतंत्रता बराबर बढ़ती ही गई है। एक परिवर्तन यह भी देखना म आया कि जहाँ पहले धर्म के बंधन से जाने के बाद यौन कामाचार और यौन सम्बन्ध कम करने लगते थे वहाँ अब इस पर और दिमा बाटा है कि यह उन्नत कामाचार के लिए अधिक भी उपयुक्त है।

पर कामाचार की स्वतंत्रता बढ़ने के साथ इस विषय के नियम—कानूनों में कोई दिशाई नहीं आई। ईसाई धर्म का एक संघ के मामलों में जैसा कट्टर जारी रहल या वैसा अब भी है। मसलन अपने ही नियम के व्यक्ति से यौन सम्बन्ध का मनोवैज्ञानिक कारण पहले से अधिक समझ जाने लगा है फिर भी इसके लिए कानून में जैसा कुछ ढंग निहित है उनमें कोई दिशाई नहीं की गई है। सन् 1930 के इरीक पासन और मार्बलिन बीबन के ऊँचे पदों पर स्थित कुछ व्यक्तियों पर प्राकृतिक यौनाचार धर्मात्मी लीडबाकी के आरोप किये गए। इनके पत्र-सम्बन्ध प्राकृतिक व्यवहार या इस प्रकार की यौन विवृति के बारे में काफ़ी चर्चा हुई। कुछ लोगों का क्याम है कि यह प्रवृत्ति पहले से बढ़ी है और इसका कारण पारिवारिक और सामाजिक जीवन का मुर्दा न होना है। कुछ लोगों का कहना है कि यदि वो पुरुष प्राप्त में इस प्रकार का सम्बन्ध रखते हैं तो उन्हें अपने देना चाहिए, जब तक के समाज को कोई हानि न पहुँचावे।

उन्हें सजा देने या उनको तंग करने की जरूरत नहीं। कुछ लोगों का कहना है कि हम प्रचार का समानिती सङ्घात सामाजिक विहृति का चोख है और हम लोगों का मनोविश्लेषण करना चाहिए और यह दावत सुनानी चाहिए, इसको समाज में बचापि फैलाने में देना चाहिए, पर ऐसे लोगों से सहानुभूति से पेश धाना चाहिए उन पर अत्याचार न करना चाहिए।

मनो-निरोध के उपकरणों का भी यौनाचार की स्वच्छता से काफ़ी सम्बन्ध है। मन् 1020 तक इनकी बिजली पर कानूनी रोक थी पर अब इनका लुप्त प्रचार है। मूलतः इनका उपयोग दम्पति कम बच्चे या बेर-बेर में बच्चे पैदा करने के लिए करते हैं पर अधिवाहित लोग भी अपनी काम-कासना तुष्ट करने के लिए इनका पुनःकरण करते हैं। युष् रोगों की घबहरी दवा निकल आने से भी कामाचार को बचाया गया है। यद्यपि अमेरिका में वेदवाचिता की प्रथा नहीं है दासमंडी या चाबडी-जैसे वेदवाचों के छोटे नहीं होते पर इनके स्वात पर होटलों में काल-वर्ग¹ होती है जिसको खेत से बुलाया जा सकता है या बी-गर्ल² होती है जो कोई नोकरी या काम बग्या करती है ऊपरी घामदनी के लिए, बाहर से आने वाले व्यापारियों और सैतानियों को भी लुप्त करने को तयार रहती है। इनके प्रसाधन लोग एतद भी करते हैं।

पर पैसा लेकर या लेकर खरीद बेचने और खरीदने से कहीं अधिक संस्कारों से व्यवहार करने वालों को है। मान में व्यवहार और पर-स्त्री घमन अधिवाच बह लोगों में प्रचलित था जबकि अमेरिका में समाज की सब अनिमों में यह व्यापक रूप से फैला है जो कि तन्त्रियासियों³ में कुछ अधिक है। हमारी बुद्ध का धर्म-अपत्ता ठस्मग कामचार के लिए बदनाम है ही पर व्यापारियों और लम्प पैसों में भी यह कम नहीं है। सभी गुण के सहवात और मिलने-जुलने की छुट इनकी अधिक है कि वेदवाचों और गान-वियों का सहारा लेने की जरूरत नहीं रही और हम स्वेच्छाचार में घबहरी निबन्धा रहा है। सामाजिक उपस्थानों में तो स्त्री गुण की बुनीठी बेटी दिखाई जाती है कि रतिविद्या में कोई उपहा पड़ता है।

टिगोर वय के लड़के-लड़कियों में काम-भूति का विभाग और उत्तेजनीय है। बचपन से ही अमेरिका में लड़क-लड़कियाँ भोग विलास और कामुकता के वातावरण में पढ़ती हैं। निम्नमा देखीविजन बह विविधा लाल-माला सब काम वागता की ही उत्तेजित करने हैं। गतीका यह होता है कि खाने होन-होते

1 Call-girl

2 B-girl

3 Upper-culture

सड़क-तड़की रति का स्वाद लेने को धातुर हो जाता है । 12 13 बय की उम्र से ही रीटिंग व्यस्तित्व धनस्पर्षा—धार्मिकमयुक्त हो जाता है । हाई स्कूल की मञ्चियों के व्यभिचार कनवों और रतिजीड़ा के क्रिस्ते घण्टाघरों में सममनीहार दीपकों में छनते हैं । बड़ा होहम्मा भी मचता है मुबार की कागिठा की जाती है । नाबासिग घण्टाघरों को मुबार-स्कूलों और मुबार घरों में भी भेजा जाता है । नाबासिग लड़कियों से व्यभिचार करने वालों को कामूनम बसावरार की सजा दी जा सकती है और बक्सर दी भी जाती है फिर भी स्थिति में कोई मुबार नहीं नजर आता । क्रिस्ते का अनुमान है कि क्रीब 80 प्रतिशत अमेरिकन मञ्चों को बुराचार के लिए सजा दी जा सकती है । फिर भी क्रिस्ते को इस व्यापक कामाचार से कोई परेशानी नहीं होती । उसका कहना है कि संयम-निग्रह के पुराने दकियामुनी बचनों का हटा दिया जाए और काम या रति की प्रकृति को बस और बखर न किया जाए तो यह मुट्ठा-छिपी खतम हो जाए और स्थिति सुधरे जाए ।

वास्तव में बदल ईसाई धर्म में स्त्री पुरुष के सहवास पर कड़ प्रतिक्रिया है । बाइबिल के अनुसार कल सतानोत्पत्ति के ही लिए संभोग किया जा सकता है मुक्त या कामवासना पूरी करने के लिए नहीं । अमेरिका के कानून और नैतिक नियम इनी विडान्त पर बन हैं । इस कठोरता की प्रतिक्रिया ही हमें मजब की वर्तमान स्वतन्त्रता में बीज पड़ती है । पर इस स्वेच्छाचार की बाड़ भी घब घम रही है । स्वस्थ योग और काम-व्यवहार पर तो रोक अब बल नहीं मचती न रतिजीड़ा और स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की पाप या बुरा काम माना जा सकता है । मुक्त के लिए स्त्री-पुरुष रतिजीड़ा करें तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है यह विचार अमेरिका में अब आम तौर पर प्रचलित है । इस प्रकार व्यक्ति के बिकाम या सफलता के लिए व्यवसाय और काम-बन्ध में सफलता आवश्यक है उसी प्रकार काम-सम्बन्ध में भी । इस प्रकार योगाचार या मैथुन के मायने में अनुभव की प्रकृति दिखाई पड़न लगी है ।

8 जीवन का ध्येय और आनन्द की खोज

अमेरिका में जीवन का ध्येय और प्रयोजन क्या समझा जाता है ? स्कूलों किताबों में लेकर समाज-शास्त्र के अध्याय में सब जगह स्वतन्त्रता समता स्वर्ण मितव्ययता ईमानदारी बख्शारी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और व्यावहारिकता को अमेरिका के नाम सुणों में गिनाया गया है । परन्तु वास्तव में अमेरिकन नर नारी की प्रेरणा इस विश्वास से मिलती है कि आदमी से पुण्यार्थ हो ता वह जो चाहे सो कर सकता है । इसलिए अमेरिकी अपने जीवन में बहुत अधिक आशा करता है और यदि उसकी आशा पूरी नहीं होती तो उसे बहुत महंगा घबरा

संग्रहा है।

अमेरिका में जीवन के पाँच मुख्य सारय हैं सफलता प्रतिष्ठा पैसा धर्मिकार या धार्मिक तथा प्राप्त बन् या अधिकार की रक्षा। एक तरह से एक ही शब्द में यानी सफलता में सब धा जाते हैं। सफलता को जीवन का अरम मध्य मानववासे समाज में अनुप्य का सम्मान इस बात के लिए नहीं किया जाता कि वह क्या है बल्कि इसलिए किया जाता है कि उसने क्या किया है। क्योंकि सफलता की माप हमसे नहीं होती कि प्रादमी क्या कर सकता है बल्कि हमसे होती है कि उसने क्या कर दिखाया है।

इसलिए अमेरिकी सफलता की पूजा करते हैं और कल्पना में समय नहीं देनाते। यहाँ उस सेलुक की इज्जत है जिसकी किताब सबसे ज्यादा बिके उस राजनीतिज्ञ की इज्जत है जो हुकारों बोटी के पीछे उस व्यापारी की पूछ है जिसका हाथ लगते मिट्टी सोना हो जाए उस स्टोरिये का मान है जो एक सोदे में लाखों कमा ले उस लिबाड़ी की बाइबाड़ी है जिसका घाट नील में जाए उस संवीतकार की लाठीक है जिसकी बीज हिट हो जाए या उस सिनेमा स्टार को बिबकी तबबोर हर पबिका के मुख-मुष्ठ पर छने। हारने वाले को यहाँ कोई पूछना नहीं जब तक कि वह फिर बहुत बड़ी सफलता न हासिल कर ले। जब कोई दीवानिया व्यापारी फिर से बड़ा शीब मारे पराजित पड़नवान फिर से रीजिनवत हो जाए या पुराना अजिमेता फिर से बचके तो उसकी प्रतिष्ठा पुन रबावित हो जाती है।

प्रतिष्ठा सफलता से मिलती है। अमेरिका में प्रतिष्ठा काति और बंध से नहीं मोटर-गाड़ी बपड़ा-सत्ता साब-संग घामदमी और मोकास से आंकी जाती है। प्रतिष्ठा का अर्थ है कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं। एक तरह से ऐसी प्रतिष्ठा खोगमी होती है क्योंकि यह दिखावे पर आभित होती है। और प्रादमी हर मजब दिगारे के ही फेर में पड़ा रहता है।

प्रतिष्ठा कोई ठोस चीज नहीं है जब कि पैसा ठोस चीज है। परन्तु अमेरिका में सफलता बढ़प्पन सबकी माप पैसे से की जाती है। पैसा कमाना ही जीवन का मुरय सारय होता है। परन्तु जब अमेरिकन लोगों के मन में यह भाव भी आने लगा है कि पैसा ही सब कुछ नहीं है। पैसे के घसाबा की कुछ बातें हैं जिनका जीवन में महत्व है। हाँ पैसा न होने से जीवन में बाध महत्वपूर्ण वस्तुओं को जीने गाम कसा घारि को पाने में कटिनाई अकर होती है। इसलिए पैसा बहुत घावरपक है।

पैसे ने मुजाबमे की भी गृह चीज है अधिकार और दानि। हमसे अनुप्य को दूसरों को प्रभावित करने उन पर शासन करने का मोता विमता है। नरनारी घटपर नारनानों और कमनियों में पैसेवर मंडूर-संगटनों के

अमेरिका का समाज और राष्ट्रीय चरित्र

प्रशासिकारी और कृषकसह सलवार और रेडियो के सञ्चालक—सब इसी प्रकार के पुबारी हैं। यदि दूसरों के पास धन-दीप्तता और जमीन-जायदाद है तो इनके पास शक्ति है। फिर भी इस प्रकार के अधिकार की शक्ति का अमेरिका में उतना महत्त्व नहीं है जितना कम्युनिस्ट या नौकरशाही शासन-व्यवस्था में होता है। सरकारी पदों के पीछे, जितना इन देशों में लोग सोचते हैं उतना अमेरिका में नहीं क्योंकि अमेरिका में महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लिए उद्योग व्यापार में ही बहुत बड़ा लक्ष सुना है।

'सफलता' शक्ति प्रतिष्ठा और वैसे के लिए अमेरिकन लोग जितने व्यग्र रहते हैं उतने ही व्यग्र वे इस बात के लिए भी रहते हैं कि उन्होंने जो कुछ हासिल कर लिया है, वह सुरक्षित रहे। इसी कारण प्रायः अमेरिकी नागरिक में जोखिम उठाने की प्रवृत्ति कम हो रही है। इसी कारण अमेरिका में बीमे का व्यापार बहुत बढ़ गया है। राज्य की नीति में भी सामाजिक सुरक्षा धर्मात् बेकारी बीमारी बुढ़ाई में मदद प्राविडेंट फंड और पेन्शन आदि जन हितकारी व्यवस्था करने पर ज़ोर दिया जाता है।

अमेरिकन नवयुवकों से बातचीत करने से पता चलता है कि अधिकांश युवक ऐसा काम चाहते हैं जिसमें आमदनी बंधी हुई हो भविष्य सुरक्षित हो। वे व्यापार-वन्ध्या बनने के बजाय व्यापारी-कम्पनी और कारखानों में नौकरी करना ज्यादा पसन्द करते हैं। मकान, मोटर, पत्नी का या तीन बच्चे और 10 हजार डॉलर वार्षिक बचत हा तो वे मन्सूफ़ हो जायेंगे। व्यापार से भले ही लाभों की कमाई हो सकती है पर निरन्तर जोखिम भी रहता है आदमी कभी अपने को सुरक्षित नहीं धनुमन करता। इसलिए प्रायः अमेरिकन युवक व्यापार व्यवसाय की सतत अनिश्चितता अस्थिरता, जोखिम और बेचैनी से बचना चाहता है।

व्यापार-उद्योग के नेताओं को धिक्कायत है कि अमेरिकन युवक में साहस और उद्यम कम हो रहा है। पर युवक ही नहीं पौरो के मन में भी भय का अविश्वस का और सरलता का भाव है। नीची अमी के लोग मीठा सबदूर, छोटे कर्मचारी धार्मिक दृष्टि से सबसे अधिक धरक्षित हैं। इनसे पूछने पर पता चला कि इनमें से अधिकांश भाग नम बेतन या नौकरी करने का ठेकार है बपतें वह पक्की हो।

एक लक्ष जोखिम उठाने से द्विषक और सुरक्षित स्थिति की चाह है दूसरी ओर यह कहा जाता है कि अमेरिका में सबसे लिए धागे बड़न का प्रचलन है। पर बिना छतरी उठाए, बिना साहस विय धागे कैसे बढ़ा जा सकता है? स्थिरता और गति दोनों एक साथ कैसे हो सकती हैं? बंधा हुआ समाज परि बतनधील कैसे हो सकता है? सुरक्षित स्थिति की हम चाह का एक अक्षोभित

कहते हैं कि यूरोप में व्यक्ति धन की दृष्टि से पीड़ित है और अमेरिका में धन के घनाब से। अमेरिका में व्यक्ति अपना स्थान नहीं जानता अपनी प्रकृति को नहीं पहचानता वह केवल दूसरों की धारणा के अनुसार चलन की बोटिंग करता है। और ये धारणाएँ भी निरन्तर बदलती रहती हैं फलतः वह शिकभ्रान्त है। अमेरिका में धार्मिक समृद्धि की प्रतिपत्ति है यह धारणा की जाती है कि व्यक्ति धार्मिक-सै-धार्मिक बटोर से। धार्मिकता की इसकी हार्ड है कि व्यक्ति अपने को असमय समझन लगता है। बाहर से भरा होने पर भी वह अन्दर से रिक्त होता है।

अमेरिका में फ्रायड के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। अमेरिका की नार्क युनिवर्सिटी का छात्रों के समय फ्रायड का जो व्याख्यान हुआ उसने अमेरिका के मनोविज्ञान पर उसका भिन्नता जमा दिया। अमेरिकन समाज में अस्थिरता विस्था और मानसिक समाज इतना अधिक था कि फ्रायड के विचारों का बड़ा तत्काल प्रभाव हुआ। हिटलर के दर्याचारी से पीड़ित जर्मन और आस्ट्रियन मनोवैज्ञानिकों की जा बाद अमेरिका में आई उसने फ्रायड के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप दिया और अमेरिका में मनो विस्लेषण की ऐसी सहर जमी कि यह अमेरिका की ही चीज मानी जाने लगी।

मनोविस्लेषण और मनोविकसिता के लिए अमेरिका बहुत ही उर्वर क्षेत्र भी था। कुछ बिदेसी वैज्ञानिकों ने तो पूरे अमेरिका का विधान मानसिक अस्पताल या पागलखाने का नाम दिया है। बिदेसी ही नहीं अमेरिकन लोग स्वयं भी अपने मन में मानसिक विकार की बात पर चिन्तित हैं। अनुमान है कि इस दशाब्दी के मध्य में अमेरिका में करीब 83 लाख बारनो वर्ग प्रति 15 में 1 फिटो-न-बिसी प्रकार के मानसिक विकार से ग्रस्त थे। और प्रायः प्रति 10 में 1 को मानसिक विकसिता की जरूरत थी। मानसिक अस्पतालों में भिन्न-भिन्न जितने अधिक रोगी थे उतने बाकी सब अस्पतालों में भिन्न-भिन्न रहे होंगे और जितने मानसिक रोगी अस्पतालों में थे उतने ही बाहर भी थे। प्योर में मर्तों के लिए जितने पुखंड बुलाये गए थे उनमें 10 लाख फिन्सी-न-दिना मनोविकृति से ग्रस्त थे।

मनोविकार के भी विविध प्रकार हैं—एक प्रकार का विकार बढ़ पड़ों की स्थितियों में बहुत पाया जाता है य स्थितियों घटने का बीमार समझती है और अपने घर वालों को भी अपनी रगता का निजाम करना देती है और इन प्रकार जनको हमेशा परेशान किया करता है। य य स्थितियों हैं जो जाहूरी हैं कि उनके पति उनसे पीछे बैठे ही मगे रहें जैसा वे बिबाह के पहले प्रथम या बोटिंग के समय मने रहते थे। दूसरे प्रकार का विकार उन मड़वा-मड़वों में पाया

जाता है जो माँ-बाप की आत्यधिक छाया में रहने के कारण पंगु और पराव
सम्बन्धी हो जाते हैं। एक टाइट या प्रकार है उन लड़कों का जो मातृमेघ और
प्रभाव की अधिकता के कारण लड़कियों के सम्पर्क में नहीं आने पाते और दूसरे
लड़कों से अप्राकृतिक रति और प्रेम करते लगते हैं। समाज के भेदभाव और
अपमान से पीड़ित यहूदी और नीचो मुसक भी अपने को बर्चित और बहिष्कृत
समझन मचते हैं और मानसिक समुत्थन को बैठते हैं। एक और प्रकार है गाँवों
या छोटे शहरों में इसाई धर्म के कट्टर बिबि-गिरेय में ऐसे युवकों का जो बड़े
बिचार नहीं काम देते। पर सबसे बड़ी समस्या है 'सिजोक्रिया' या बिमकत,
अर्थात् बिच्छिन्न ब्यक्तित्व की जब ब्यक्ति वास्तविक जगत् से अपनी आत्मा
रिक प्रकृति का मेल नहीं कर पाता और उससे बिमुख होकर अपनी दुनिया
में रहने की कोशिश करता है। फलतः वास्तविक और आन्तर-जगत् का संघर्ष
और ब्यवधान बराबर बढ़ता जाता है। इस प्रकार का आत्म संघर्ष अमेरिका
में बहुत अधिक पाया जाता है जिस प्रकार मानसिक तनाव से उत्पन्न
हृदय और पेट की बीमारियाँ भी यहाँ अधिक पाई जाती हैं। इन सब मानसिक
बीमारियों और बिकारों का मूल कारण यह है कि अमेरिका में ब्यक्ति को
अपने आन्तर को सबसे प्रबल प्रकृतियों को बरिठार्य करने का मौका नहीं मिल
पाता। अपने आन्तर की इसी क्षमता और लोचनेपन को ढकने या भरने के
लिए अमेरिका में लोग पैसा और प्रतिष्ठा कमाने और उन्हें बनाए रखने के
लिए पायसा की भाँति बीड-बूँट करते हैं।

मनोबिकार ग्रस्त लोगों की संख्या इतनी अधिक सीमातीत है कि मनो
बिरसेपकों और बिबिस्कों की कमी पड़ गई है। अतः मनोबिरिस्ता का प्रबन्ध
और बिबिस्कों की संख्या भी बढ़ रही है। पर जहाँ प्रत्येक ब्यक्ति रोयी हो,
वहाँ बिबिस्ता का प्रबन्ध भी कैसे हो इसलिए अब अमेरिका में आर्थिक
स्वास्थ्य की भाँति मानसिक स्वास्थ्य की बर्माति पर और आर्थिक रोयों की
आर्थिक मानसिक रोयों को रोकने पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। मानसिक
स्वास्थ्य ठीक रहने का सबसे अच्छा उपाय आन्तरिक प्रकृतियों को सामाजिक
या बाह्य परिस्थितियों के अनुकूल बनाना और उनमें मेल मिलाना माना जाता
है। फिर भी मनोबिरसेपण का अमेरिका में आत्यधिक प्रचार है। मनोबिरसे
पण कराने का जेनन या रिबाज चल पड़ा है और सबबारी में मनोबिरसेपण
के बारे में बड़ाफ और ब्यंगविन छपते हैं। इनके चलता मनोबिरसेपण और
आत्म-बिरसेपण पर भी बहुत जोर दिया जाता है। इस विषय पर बहुत-सी

कितने निकलती हैं और पत्र-पत्रिकाओं में लेख छपते हैं जिनमें हर खेती और व्यवसाय के लोगों को बताया जाता है कि वे किस प्रकार अपने को पहचान सकते हैं अपनी प्रवृत्तियों को कैसे विकसित कर सकते हैं, कैसे आत्मोन्नति कर सकते हैं।

आत्मविक्षेपण और यमोविक्षेपण के प्रचार से एक नाम भी हुआ है। इससे पता चलता है कि अमेरिका के लोगों में बाहरी या सामाजिक जीवन के बंधनों और बंधनों से मुक्त होने की इच्छा कितनी प्रबल है। यह प्रवृत्ति सूचित करती है कि अमेरिका का आदमी आत्मिक प्रवृत्ति की पहचानने और उसे विकसित करने की कोशिश कर रहा है। इससे अमेरिकन संस्कृति की अपनी दिशा ढूँढ़ने में मदद मिल रही है। इससे सबसे बड़ा नाम यह हुआ है कि लोग मुक्त या आत्मत्व की झूठी और खोखली परिभाषा को छोड़कर उसके सच्चे धर्म की समझने की कोशिश कर रहे हैं। जोड़ पीटना छोड़कर तत्त्व की ओर जा रहे हैं।

कलाएँ और पापुलर संस्कृति

१. अमेरिका में पापुलर संस्कृति

अमेरिका में जिस प्रकार की सम्यता का विकास किया है वह बला के क्षेत्र में रचनात्मकता के लिए प्रमुख है या प्रतिस्पर्ध ? बला के क्षेत्र में पापुलर कलाओं का अभिजात्य कलाओं—निम्न या मध्यम वर्ग का उच्च वर्ग—पर किसना प्रमुख है।

इन दोनों प्रश्नों के मूल में एक मान्यता है कि कोई संस्कृति जो कुछ कलाओं के क्षेत्र में करती है वह उसका सामाजिक गुणों का प्रकट करता है। कलाकार अपने को ऐसे राज्य में बैठता देख सकता है जो बाल और स्वान से परे है। फिर भी जो कुछ वह करता है और जिस प्रकार वह करता है उससे उसकी सम्यता के सम्बन्ध में उतना ही पता चलता है जितना उसके बारे में। स्वतंत्र न मूलानी प्रत्यक्ष की मूर्ति का और लौकिक जीवन को अपनी ओर खींचने की प्रक्रिया में जिस मांग से जात है और उनके आता या पाठक जिस रूप में अपना स्थापन करने या नहीं करते हैं उससे उस संस्कृति की सामाजिक सांस्कृतिक नीति की भव्य मिमटी है।

यदि किसी कलाकार का सांस्कृतिक जीवन से बरा सम्बन्ध है हमका ज्ञान प्राप्त करना हो तो हमके लिए बाल विद्वान की ओर देखना चाहिए। 'लीस एंड प्रॉप' की मुद्रिका (1850 ई.) में हमने एक बड़े स्रोतग्रन्थ में बलि के कर्तव्य पर प्रकाश डाला है। बलि का कलाकार का सतिष्ठ रूप मान्य हुए हमने अमेरिकी कलाकार और समता के सम्बन्ध की खोज की है। लगभग 15 वर्ष बाद जब अमेरिकी संस्कृति में गृह-युद्ध जैसा कुत्साम बीत चुका था अपनी 'डिप्लोमेटिक विन्ताज' (16-1) नामक पुस्तक में हमी प्रश्न पर फिर से विचार करने हुए हमने लिखा

'यूनाइटेड स्टेट्स में मात्र हमारी सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि हमें ऐंसे सत्य और माहिग्यवार हों जैसे पाठक नहीं हुए जो

1. Popular culture
2. Leaves of Grass.
3. Democratic Virtue

पश्चिम प्रापुनिक हमारी प्राचल्यकता के अनुकूल सारी अमेरिकी जनता के मन स्वार विस्वास पर छा जाने वाले उनमें नये जीवन का संसार करने वाले ऐसे निर्णय बलवान् नाम राजनीति पर व्यवह के मतदान के अधि कार से नहीं धार्मिक प्रभाव डालने वाले प्रेसिडेंट या कांग्रेस के चुनाव पर ही नहीं धर्मिणु उन पर भी प्रभाव डालने वाले प्रकाश विकीर्णित करने वाले, उपपुस्तक पध्यापक स्कूल पाचार-व्यवहार और सबसे बड़ी बात राष्ट्रों में राजनीतिक और बुद्धिजीवी आचार का धार्मिक अरिज देने के योग्य हों। यह कार्य अब तक न स्कूल कर सका है न चर्च और न उनके वादरी। किन्तु उनके बिना राष्ट्र उसी प्रकार स्वाधी नहीं हो सकता जैसे नीबू के बिना मकान।

ये 'वैबी साहित्यिक'¹ पैदा हुए कि नहीं यह दूसरी बात है। हाँ दूसरे दूत धर्मस्य पैदा हुए हैं—'गैवस्टस' और कमोजिवन धार्मिक पुस्तकों के नाटककार, 'क्रिस्ट थोक स्वात'² सिनेमा के 'वेबी और देवता' और उनके प्रसक्तों की पवि काएँ जिनमें छपे उनके विषय नाम सभारने के ईम और पुम्नम-प्रकार भाव अमेरिकी समाज के विधायक बन गए हैं।

इसकी परवाह किये बिना कि फ्लिटमैन उनका स्वागत करते कि नहीं वे पा गए हैं। इन्हें देखकर साहित्यिक नाक-भीड़ सिकोड़ते ही हैं। 1855 की मूमिका में फ्लिटमैन ने लिखा था कि "कवि का प्रमाण इस बात में है कि देश उसको उसी रूप में अपने में मिला लेता है कि नहीं जैसे वह देश को अपने में मिला लेता है। इस प्रकार का मेस हुआ है पर वह कवि और जनता में नहीं बरिफ वह जनता और लोक-संस्कृति के 'हीरो' बनो सं हुआ है। फेनीमोर कूपर के नाम बिबबुस तक अमेरिकी समाजोपकों न महान् राष्ट्रीय कला की प्रतीक्षा की है पर धात में कलाकार के प्रति संस्कृति के हार्दिक स्वागत की असफलता पर धाम्नी ही बहाये हैं। अब आलोचक कहते हैं कि स्वागत धार्मिक हार्दिक और दोटा धार्मिक उदार हैं—पर गलत डंग के कलाकारों के प्रति।

कलाओं और जनता के बीच आज अमेरिका में गूहरा सम्बन्ध स्थापित हो गया है। धार्मिकारम कलाकार और जनता के बीच बाधहेमबा या कहें तो धर्म-मान का भाव है किन्तु हास के कुछ वर्षों में हेमिमावे और फॉर्नर जैसे लेखकों की पुस्तकों के पेशर बिकने संस्करण करोड़ों की संख्या में बिके हैं। उनके चरित्र और धर्मिनय भी हुए हैं। इन प्रकार ये लो लोकप्रिय हो चुके हैं और यदि

1. Divine literature

2. Kites of Swat

3. Paper back.

258

ये चाहें ठा भी घपना घमसाव नहीं मिभा सकन । पर बिचकारों, मूर्खिकारों
घोर संगोष्ठिकारों के सम्बन्ध में ऐसा मही कहा जा सकता । यहाँ तो सब भी
कनाकार घोर जनता के बीच दबता है । लोक-संस्कृति के बीच घूसरी घोर
घनानोबनात्मक घोर पूजा का मास है ।

प्रत्यक्ष सम्प्रति में जो संस्कृति है—एक लिखित की बुझी सामान्य जनता की। एक कमा बच की होनी है और बुझी जनता की। मध्य धर्मन पक्ष की पश्चात्ताप में उसे किसी भी सम्प्रदाय में आ सर्वोत्तम धर्मन पक्ष बचन हुआ है उसका प्रतिनिधि बतलाया है। बुझी संस्कृति वह है जिस वहुजन मानव अनुभव करन और पश्य करन है। मानव पास्त्र में संस्कृति का आ मान्य है उसमें य शानो धाना है। (जिने भी प्रायः हमी धर्म में संस्कृति शान्य का प्रायः किया है।)

जान गनुष करन पो
 आनय है उमय य नानो धाना है । (निने भी प्रो
 बा "याग निया है ।)
 गान-मस्तुति वा हुने घय में (घर्वां बहु पुत्र जनों का नहीं बन्कि बहु
 जना की—पामिजात्य बग की नहीं—मस्तुति है का) प्रयाप करत हुए किमी
 नी मन्मता म उम हो बरुनबिक मर्य धीर मन्दर मासत है । युराप में
 इन साहसत क समय यक नमन न ही माक मस्तुति धीर मोर-मन को लोत्र की
 धी । इनम बाई नक नहीं कि रचनामरुता पर पावर बमाकारा की हजारे
 बदी नहीं है । निन्न बम मे भी नैगनिक रविता धीर मोर-विनकमा घा
 मस्तुति है । कना को जो नकि विमली है उनका घबिदास तो इन मोर-सार
 धीर घजान जना क अनुभव म ही प्राप्त होता है । किन्तु घमेरिका म जिसे
 'फारमी रमा' कहन है शिमका मन्मन् हृदिया धीर यों पहाडा समुदाया म
 है बर तो छम्प न्य मे साक-कना है । फेर बोधम न लिया है कि "मीनिक
 मानवीय समस्याया पर मुझे जना वा निलय बम व निषय मे घषिक स्वीकार्य
 होना है । जना को कामनाएँ बम वा कामनायो म घषिक मानवीय होती है ।
 पर इन बम म मूक जना क प्रति घममीसारमव भविन का भाव हो घषिक
 रीमता है । मैं तो यही समझता हूँ कि यह माधुशनायुने बिचारधारा की एक
 कदा है शिम पर जल-मस्तुति वा साधार जना है । यद्यपि 'जाड' जैसे मास्तुतिक
 नडियम के मन्मन् में इन प्रचार के बचन मे कुछ मर्य भी हो मरता है ।
 मर तो यह है कि पामिजात्य रमा (elite art) धीर पापुपर घान क काय
 शिममिन्न है । पाड़े हमरी जन्म हो या माधेट बाइम बाग्रमन या बास्ने
 प्रियम है नम स्वीडेन या फेर मापड गिट पामिजात्य कमा की प्रेरणा घनन
 घमन रचनाधारा वा घनन जावन क प्रति रमन की अधिप्यक्ति का एक घन

कसाएँ और पापुनर संस्कृति

ही होती है। लोक-संस्कृति की प्रेरणा (यहाँ मैं घासती साह-संस्कृति की बतपना करता हूँ किन्ती कृषि संस्कृति की नहीं) कसाकार और घांता दोनों की दक्षि हास्य और धारम-भुष्टि की घाबसा की घमिष्यमित म है। इससे प्रत्येक घमेरिकी रचनात्मकता का वैषम्य है। घाभिजात्य-कसा की मुख्य कमजोरी धारम की घबनति बुद्धि की हठो और जन-संस्कृति व प्रति घनादर की माबना म है। लोक-संस्कृति की (घमेरिका में मध्य वर्ग का भी) कमजोरी रबि के सस्तेपन घनुमानन (discipline) व नीतेपन घमपी समस्याघा से बतराने और गहराई क भय म है।

बड़ माध्यमो और रिप्रोडक्शन के ईबाव न घाभिजात्य बिनकारों मवीठकाग और मलकां की सफलताघों का करोड़ों घ्यस्निया क सम्मुख ना दिया है जो पहल सम्भव न वा। किन्तु घमेरिका की पापुनर-संस्कृति की सफलता इस बाव मे नहीं है कि उनम घाभिजात्य-कसा की सामपी को जनता लक्ष पहुँचा दिया है बल्कि बहु इसम है कि बहु नई पापुनर सामपी का निर्माण कर रही है। इसका घाभिजात्य कसा मे सम्बन्ध पाग नहीं बल्कि माभाज्यवादी है। साह-कसा में घूमने की एक लम्बी उबरदस्त घविन है कि बहु बड़-बड़ नाटककारों संगानकारों और उपन्यासकारा की रचनाघों को नी धारममाठ कर लेती है।

घमेरिकी कसा क बिछापी क लिए यह घाबदयक है कि पन्चिनी यूरोप की परम्पराघों पर उमने घपना वा भागलाएँ पना रती है उनम बहु मुक्ति प्राप्त केने। बप का युनानी नायक बहु नाटककार वा जिमकी कुगान्त-रचना पर उने पुरस्कार मिला वा। नेमेसी इटली बाभा न एक 'मूल्य मास्टरपीस' क रचिपत्रा वा र्नामन करन के लिए सहक भर दी। गोये क जमनी में कबि राजकुमारों के दरबारों की गोना बझावा वा। बीगनर व समय में मवीठकार को 'हीरो' माना जाता वा। किन्तु घाबुनिक घमेरिका में कबि मनीनकार बिनकार वा ट्रेजेडियन की जनता की बाहुबाही नहा मिलती। इसलिए पन्चिनी यूरोप के कसा के बाभावरण मे घमेरिका म म्यूयाक वा हापीबुड क अनुभव प्राप्त करने व मूम्यों और घारणाघों में पयाप्त परिवर्तन करना पड़ता है। कुछ उपन्यासकारों का छाहरर जिमकी पुस्तकें पढ्कन मे बिबती है घमय घाभि नही है। घपी व घमेरिकी लताज-म्यबस्या की बन्ध नहीं बन पाई है।

लेवी बाव नहीं कि घमेरिका जो कुछ यूरोपीय है उन मकाराने है। घाकि-देवद अकरमन मे युनानी बपों को माछिसेनो मूषदम में उगाव पर दूमरे

वैज्ञानिक ने कौंस क फिजियोलॉजिकल और दार्शनिक सिद्धान्तों को अमेरिकी क्षमता युद्ध के बीच प्रस्तुत किया। अमेरिका के सगतराशों ने यूनानी कवियों को अमेरिकी हृदय से प्रस्तुत किया। अमेरिका के मो-रचनाकारों ने अपने स्तर पर अमेरिकी युवाओं को अमेरिकी की भाँति रचना विधान की लक्ष्मणा दी पर उन्हें ऐसा बनाया कि वे उनसे भी अधिककारी और तीव्रगामी हुए। कपूर और वाशिंगटन हरमिन न पूराय के कवियों को तो मिया पर उनमें एक नहीं महाद्वीपीय धर्मबस्तु भर दी। जेटोनिस्ट एमनन ने यूनानी दार्शनिक के निरलेखन में योकी बुद्धि की अनुसार प्रभु समने पूर्वी क्षमियों के रहस्यवादी को अमेरिकी सामान्य बुद्धि के अनुसार प्रभु दित किया। सौमकेनो क्लिटियर तोबेन होम्स यादि न यूरोप के कवियों से विचार उधार लिए, पर उनकी विषय-वस्तु देशी थी। वा की कविता एक संघर्षित मन का उद्गार ही तो थी जिसका बीजिक निपात यूरोप के रोमा न्टिसिस्म में था।

किर भी अमेरिका को इस प्रकार यूरोपीय मानदंड से नापना बंद ही है बंदे जागृताय के कवियों को एक्स के नगर राश्यों के मानदंड से नापना। यद्यपि आधुनिक लेखकों में फाइनर और स्टीनबेक जैसे लेखक यूरोप में भी प्रसिद्ध रूप में पड़े जाते हैं पर अमेरिका में यूरोपीय सभ्यता नहीं है। सत्य या सही रूप से बहुत-से अमेरिकी ऐसा मानते हैं कि यूरोप की साम्राज्य कला मूल-संस्कृतियों की उपज है। उनकी स्थिति उन कवियों की-सी है जिन्होंने साम्राज्यों के पारम्परिक बण्ड तो जीत लिए और जो धारणा के साम्राज्य के सम्मुख भी झुकना नहीं चाहते। यद्यपि यह भी ठीक है कि आधुनिक अमेरिकी कवियों में बहुत-से विदेश के कवि भी कवि की तुलना में एक हो सकते हैं और अमेरिका के अमृत (Abstract) नवागारों ने अपनी रचनाधारा में संसार में सर्वत्र प्रचलित मन्त्रा की है। प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिकी साम्राज्य-कला कितनी अच्छी है। प्रश्न यह है कि संस्कृति का सर्वांगीण रूप में से तो उनकी कला का स्वाभाविक इच्छित क्या है?

पाण्डुराज कला के समर्थकों और विरोधियों ने इस सम्बन्ध में बहुत-सी बातें कही हैं। किन्तु इनका तात्पर्य है कि हममें एक पारम्परिक विरोध की परिधि नहीं है। 1850 के आगमन विनियम की शुरुआत में यूनानी कला के विरुद्ध किया था। उस समय उनकी आकाश उपस्था के खबरों सम्बन्ध के रूप में रही थी। उनमें जो गुण्य और कृत्रिम या उत्तम धार्मिक विचार बोधित बहु साम्राज्य बना का कमजोर बना रहा था। उनमें बार-बार नोटिंग

कलाएँ और पापुनर संस्कृति

स्टीफेन जेन, रॉक मण्डन एलन ग्लासबो और जिमोडोर ड्रेजर का बिरोहियों का वर्ग धारा जिन्होंने अमेरिकी उपन्यास के क्षेत्र में स्वाभाविकतावाद के युग का भीमजोश किया। निरपेक्ष ही अमेरिकी उपन्यास की रचनात्मकता अभिजात्य कला का ही धर्म है। बिबब उपन्यासकारों की पक्ति में अमेरिकी उपन्यासकारों ने किसी उपन्यासकारों का स्थान लिया। कसियों के धागे फासीसी थे। फासीसी उपन्यासकारों के भी धागे धंधेध थे। धधको न स्पेनिश उपन्यासकारों का स्थान लिया था। इस यही बात स्पष्ट होती है कि अभिजात्य कला के रूप भी अपने ऊपर छतरा मोल लेकर ही लोक-शक्ति की प्रवृत्तना कर सकते हैं। अमेरिकी उपन्यास के बिरोहियों के मन में वैसी विषय-वस्तु और लोक-शक्ति के प्रति जो भाव है वह वही है जो गिस्केटे लेस्कोव ने अमेरिकी लोक-संस्कृति के पक्ष में बि लेवेन सिबली आर्ट्स¹ में व्यक्त किया था। 1858 के आठपास संस्कृति में स्वीकारा कि बड़े माध्यमों के आचार्यों में भी लोक कलाओं की समावनाएँ बीजती हैं। किन्तु यह उसका मूल दृष्टि से दूर नहीं ले जाता।

हो सकता है कि भाव की पापुनर-संस्कृति में उसकी जनगणनाओं और पयावतियों के बावजूद भी कला की अभिजात्य कला के बीज हों। किन्तु भाव तो अमेरिकियों की दृष्टि है 'नो मण्ड न ठेरह उचार'। भाव तो उनका ध्यान ब्रह्मविन्यास के धडस्ये से बिकने वाली पवित्राओं जामुमा कलाओं रोमांचकारों हास्य पुस्तकों की ओर है। इसे पढ़ने वाले बालक हात हैं। य किसी भी उन्नत हो सकते हैं। उनका भाव किसी भी सग्रदाय से अधिक साम्प्रदाय वाली है। उनका ध्यान भाव पढ़ की कासे की धमर नृति का निर्माण करने की ओर कम है। भाव तो वे तिलाहियों के बिज धातुवारों में प्रकाशित करने या मि० धूम में धध उनका मन उतना नहीं रमता जितना रेडियो के 'ड टाइन सीरियल्स'² में।

इस प्रकार अमेरिकी संस्कृति का नसात्मक मुख्य बाहे जो हो हमें हम सीमांत विषयम³ की दृष्टि से नहीं देख सकते जिस ज्यों-ज्यों रंग की बधि मुबरेगी ओर बबरता मिटेयी दूर किया जा सकता है। यह अमेरिकी संस्कृति की मुख्य धारा ना एक धर्म है। यद्यपि अमेरिकी पापुनर कलाओं के सम्प्रदाय में धनेक बेहनी बेगुरी बातें नहीं गई हैं किन्तु इस बात का छतरा नहीं है कि बड़े माध्यम अभिजात्य कला की महान् परम्परा का स्थान ले सकते हैं। इसका धर्म यह नहीं

1 The Seven Lively Arts

2 Day to me a.

3 Marginal aberration.

कि साह-संस्कृति धार्मिकता कलाओं से अधिक शक्तिशाली है। दोनों कलाएँ धन-धन दोनों में स्वतंत्र रूप से उभरती हैं।

यही कारण है कि अमेरिकी कला के विद्यार्थी को केन्सास पर पिच बनाम बास्केटबॉल का ही नहीं देखना है बल्कि उन्हें उन लोकिय फोटोग्राफों का भी दृष्टि में रखना है जो अपने कैमरे लेकर बास्केट की रकबा में निकलते हैं। मदन-निर्माण और विज्ञान के इतिहास में मुस्लिमान व स्कॉट्समैन और फ्रेंच सायड रिट व बाट और पत्थर के बहिस्त्वपूर्ण निर्माणों का ही वर्णन न होया बल्कि अमेरिकी रसोईघर स्नानघर मोटर और हवाई जहाजों का भी वर्णन न स्वाभ होगा। आइबिड इत्र और मैकडोनाल्ड से लेकर धारों कोपरीय तक संघीयकारा न पच्छे विज्ञानी संघीय की रचना की है किन्तु अमेरिकी संगीत इतिहास का जितना प्रतिनिधि रूप प्रेसबिथन व 'बोर्गो एण्ड बस' में या धार्मिक के 'जाब' में निर्यात है उतना धर्म्य नहीं। इतिहासकार अमेरिकी बिपटर की महान् परम्परा को प्रोटीस सटेन्सि बिनिगमस तक न जाएगा। पर इत प्रक्रिया में वह संघीय कामनी रंगमंच की घबहेलना करने का साहस नहीं कर सकता क्योंकि संघीय नीति कामनी और मूर की कुछ शक्तिशाली शोबलाहोमा साजब पतिविर या साई फयर लैडी जैसे प्रयोगों में अपनी चरमावस्था में उभरी है। एमिस्टेरर बूक के शब्दों में अमेरिकी धीमी का एक उपबिमान भी है जिसे वहन 'बोरस' कहते हैं। अब यही कारण एक धार्मिक 'बन' के रूप में परिचित हो गया है जिसका सम्मान बिनेटो में उत्साह से हो रहा है। इसकी श्रेष्ठा बिगुल अमेरिकी है। अब यह रूप स्वीडन फ्राइ इमैण्ड में भी पहुँच चुका है। रूप का यह परिवर्तन अभी संभव न था यदि सीमास्त-बचामो और बैडमैन ईमान्द' के साजबखों का साक (पापुमर) मूर सभा के साथ स्वर साराँ और संघीयकारों ने संतुलित सम्बन्ध स्थापित न किया होता। इसी प्रकार बील्मन बाँया के बिगुल अपने में कोई बड़ मनोरंजन में थे पर उनकी ही परम्परा में प्राण बसरर बीपलीन की धीमी का बिवास हुआ। बीपलीन स्वांग उठावन की कला के इतिहास में एक बड़ी हस्ती माना जाएगा। अमेरिकी 'पीडर' और विन थप सङ्किया के नामों इतहास में यूनानी धीमय का

- 1 Glycerapera.
- 2 Porgy and Bess.
- 3 Musical-comedy
- 4 Chorus.
- 5 Ballman balladry
- 6 Cheesecake

कनाएँ और पापुनर संस्कृति

शान्त मौख्य नहीं है पर इसी बीजक कसा को ही देखकर अनातोस फ्रांस ने कहा था कि जिस सम्प्रदाय में ऐसी कसा के उत्पादन की शक्ति है वह अपने बुद्धिजीवियों के भय के बावजूद भी जिन्दा रहने की शक्ति रखती है।

पेरुवर पचा में कसाभिरुषि के वा संघे बनाए हैं उनका अमेरिकी कसा निर्यक्ति में सायर ही कभी अनुगमन हुआ हो। इन वर्षों में प्रायः अपने पास की बीजा की ही प्रवृत्तता की है। फ्लोड बीजर में अमेरिका की पापुनर-संस्कृति के सम्बन्ध में सबसे जोरदार शब्दों में लिखा है। अमेरिका में क्यों रहने पर उद्घात कहा अमेरिका की कृषि की कृपा से सब में अनाम में सुरक्षित के माने से घुना करता है। पर अभी चिन्ता की कोई बात नहीं। आपकी 'ग्राइव' पर बिस्नेसमानी हाथ से चिजित टाइटों का अध्ययन करना चाहिए बैयनी और काली जमीन पर साधोमोटिव और बार बबुतर या अमेरिका जमीन पर प्रकृतिकरणा प्रवृत्तता का। इन पित्रगा में एक बीज है। फर्निग स्ट्रीट फ्रिब स्ट्रीट की शक्ति से प्रकट हो चुकी है। पर एवेन्सु-बी अभी समुद्र है। इस बावजूद कि अब साग यह जान जाए कि उनकी शक्ति कुली की व सुरक्षि की ओर बौद्ध है फोर्टीग स्ट्रीट और एवेन्सु-बी का सब एक निर्माण हाता रहेगा जब तक अमेरिका में अनामी है। कृषि और बटरीस रग ता बसाकार की इच्छा और उसकी शक्ति के परिचायक है। पटकास बमबो पर स्वर परन मद्रकिया अन्वयमना कानिफाई मरुत में रस्कों पर लाकन बावियों से अधिक मिलती जुलती है अनाम तो पेरिस की सड़कों पर भी बम मिलेगा।"

इसमें यह प्रतीत होता है कि जिस सबकास-बर्ग के आलापक और अकादमियाँ कुर्बि समझन हैं और वा किसी भी मानदंड से छोटा और प्रकट समझा जायगा उसमें प्रकट है। दूसरी दृष्टि में व आलापक यह मूल जान है कि साक-संस्कृति की मारी शक्ति इन कारण नहीं मरू है। जाती कि कुछ अन्वी पापुनर बना कारण हैं या यह पापुनर-बना व्यावसायिक लोग के कारण सस्ती बना की जाती है। अमेरिका की पापुनर बना का जो आलापना हुई है उसमें मुख्य माध्यम की शक्ति ही अधिक प्रतीत होती है। इसमें वह माध्यमों के पापों और पापुनर की सामग्री—जिसका व प्रयोग करते हैं और जिस व दोहरे-आदन है—में प्रकट नहीं किया गया है। बबसू० एच० फोर्टेन में उस पापुनर मरुति में जो निकमनी और उमम शक्ति ग्रहण करता है और उस पापुनर मरुति में जो मात्र वह बना है जिस सामग्यत्रों में अधिकतर पर्यन्त करत है प्रकट दिया है। पहले रूप में यह लोग बना (फोब घाट) है। दूसरे पर्यन्त में यह तो बब' या पापुनर बना है। दोनों पर्यन्त में दृग्बारी या आनिजायों की बना का प्रवेस

उसमें न होगा। इसमें शास्त्रीय-गंभीर या शास्त्रीय-कला या गंभीर साहित्य या सकती हैं। मये बड़े माध्यमों से इन्हें जमता जाहू सकती है।

अपनी परिभाषा में मैं प्रौढत्व की परिभाषा से सहमत नहीं। भक्त कैंप 'सेन्सो' धार्मिक स्ट्रांग 'बेबी रोस' मार्टन घोर बेप्पीम की कसा उस धर्म में 'जमता से' नहीं निकलती जिस धर्म में लोक-कपारों या नीचो रहस्यवादी याद निकलते हैं। किन्तु ये पापुनर-कला से सम्मिलित हैं क्योंकि इसका रूप देसी है जिसका निर्माण जन-रक्षि घोर दैनंदिन जीवन से हुआ है। न तो सभी 'पापुनर' चीजें जो घटने से बिकती हैं पापुनर-संस्कृति से धार्मिक की जा सकती हैं। धक्कर की 'सर्टोरेम' जब वेपर वीक संस्करण में 23 लाख बिकती है तब भी वह उसी प्रकार धार्मिकत्व जन्मा घोर साहित्यिक परम्परा की उपज रहती है जब उसकी कुछ हजार प्रतियाँ बिकती थी। जब सेंट मोपेरा या सिम्प्लोनी संगीत रेडियो से प्रसारित होन पर लाखों व्यक्तियों द्वारा सुना जाता है तब भी वह दरबारी संगीत ही रहता है। जब कोई ऐतिहासिक रोमांच नायिका के दलीन बिज बाले धावरण से छपकर किसी बुकक्लब द्वारा 'एडाप्ट' होता है तब भी वह मध्यवर्गीय टुंड ही रहता है। वह कोई पापुनर-संस्कृति का धर्म नहीं बन जाता। इसलिये महत्त्व की बात यह है कि क्या कोई मध्य संगीत बिमेटर बिजकसा वास्तु या नृत्य की कुनि परम्परागत धार्मिकता घोर रूप के बीच को तोड़कर प्रतिष्ठित के अमेरिकी जीवन से रूप या इजियम प्राप्त करती है या नहीं?

यहाँ पापुनर-संस्कृति में थोछापी घोर पाठकों की बड़ी गंग्या के महत्त्व को पदान का प्रयत्न नहीं किया गया है किन्तु एक पेशावरी धक्कन दी गई है कि महत्त्व का बक्कन सब कुछ नहीं है। इसे हम पापुनर संस्कृति की कमीटी नहीं मान सकते। बड़े माध्यम खुदाना तो माध्यम के स्वामियों के हाथ में है। मरत महत्त्व की बात यह है कि सम्भाव्य थोछा तो सबके हैं। धार्मिक धक्काधक्के धक्कन से जालि होन से ऐसे थोछापी का उदय हो चुका है। घोर बड़े माध्यमों में उन तरफ पहुँचना भी सम्भव कर दिया है। बर्जीनिया उल्ट के 'लामाय पाठक' की भाँति सामान्य-थोछा भी हैं। वह पीसत धार्मिक भी नहीं है। वह करोड़पति भी हो सकता है घोर दैनिक मजदूर भी। ग्लाभा भी घोर पीन धरणी भी। बार्द उल्टी नहीं कि वह सिद्धि भी हो। बात यह है कि धर्मरिवा में सिद्धा की परिभाषा भी निर्दिष्ट नहीं। धक्का ही है कि उसे बहुमत मेजालिटी पुरप—मा—नारी या बिगार भी कहने हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि वह ताब प्रभावों को पहन करने के लिए तैयार रहता है। वह परम्परा से नहीं बीपा है। नय को सबसर देने के लिए प्रानुन है—यदि इनके प्रस्तोता

कसार्ण घोर पापुनर-संस्कृति

घोर 'बाक्स-साफिन' नामके छत्ते धबधब हैं।

ऐसा कोई सर्व-सामान्य नियम नहीं है जिससे यह बतसाया जा सके कि बिदन की कसार्णों की परम्परा में कोई संस्कृति घच्छा या मगघ्य कार्य करते करती है ? या किसी युग में क्या क्यों उत्पत्ति या प्रबलन की प्रवृत्ति में रहती है ? फ्रांसीसी राज्य प्राप्ति के बाद का युग फ्रांस में साहित्य की दृष्टि में कम उज्ज्वाळ था। इससे यह निष्कर्ष निकालने की सामता होती है कि सामाजिक उन्नत-पुनरुत्थन का युग कला की दृष्टि से उन्नत होता है पर इसी प्रकार धर्म में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तिपय सबसे बड़े दोषाचार पैदा हुए। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमें सामाजिक प्रवृत्ति घोर कलामगघ्य सर्वनाम कोई सम्बन्ध मिल ही नहीं सकता। हाँ यह बात प्रबल है कि कोई एक मूल-संज्ञन लागू न होगा।

अमेरिकी युक्त राज्-अवस्था में अमेरिकी पापुनर-संस्कृति की शक्ति घोर गड़बड़ी दोनों के दर्शन होते हैं। जिन समाजों में बल बिभाजन गहरी उड़ पड़ चुका है उनमें सामाजिक घोर पापुनर-कला में स्पष्ट देख मिल सकता है। पर अमेरिका जैसे देश में जहाँ बल-अवस्था अभी इस रूप में है जहाँ की सीमाएँ टूट जाती हैं। शास्त्रीय-कला प्रभावधियों से बाहर प्रबल बाजार में घा रही है। सैमर साहित्यसंघों से प्रारम्भ करके अपने जीवन काल में ही बिधान जनता में लोक प्रियता प्राप्त कर रहे हैं। प्रबल से बिदन वाली पुस्तकें सामान्य हो सकती हैं या एम्प्लिफिकेशन। प्रबल कामिक स्टिप-सम्प्रदाय बुद्धि-जीवियों में भी फैल रहा है। निफानियों के भी साधनों छोटा पैसा हो गए हैं। संगीत कामधियों रातोंरात कलाविनयन का पद प्राप्त कर सकती हैं। आज घोर प्रपूर्व बिनकला योरेमिया ही नहीं मध्य वर्ग में भी सम्प्रदाय पूजा का रूप धारण कर सकती हैं। 'निटिस बिप्टर युव सारे नरक पर उभर रहे हैं। साहित्य-मन्त्रम क छोटे-छोटे तितसे पूरक में कम्पित होने व बाबकूद पश्चिम दक्षिण घोर मध्य-पश्चिम व प्रप्रदाय गित शर्णों में भी बन रहे हैं। सारी जनता योकिनों (प्रमेयस) की एक राष्ट्र बन रही है।

इसे कई प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। किन्तु इसी में अमेरिकी जनता के रहन-सहन का ध्यान बलवय रखना होगा। जो जनता बल के ठप्पे को ठाढ़ सकती है वह कला के ठप्पे को भी ठाढ़ सकती है। इसीमूल मध्य वर्गीय समाज में किसी-न किसी प्रकार की गिज्ञा सबका प्राप्त होती है। प्रबल काय का बिन्धार हो चुका है। प्रविधान की गति मय सांस्कृतिक प्रभुत्वों की प्राप्ति में है। ऐसे समाज में सामाजिक घोर पापुनर-कला का प्रत्यक्ष प्रबलता हो जाता है। व शक्तिधर्मा जो कला के लिए बिधान प्रोत्साहन की दृष्टि काती हैं दोनों ग्यों का भयेट भेती है।

इसो नमूने को एक बुधरे डब से भी दफते हैं। वह यह कि जो संस्कृति प्रायः बहुत-से क्षेत्रों में यूरोपीय भूत से सम्बन्ध हो चुकी है वह अपनी समष्टि छोड़े बिना कैसे उसी भूत से जुड़ी रह सकती है। यूरोप-संस्कृति के प्रत्येक कलाकृत्य—चित्रकला, शिल्पकला, नाटक, धार्मिक और सामाजिक वास्तु जैसे मिफोनी, ग्रीक बापेरा, पीतिकाव्य आदि स्थिर वर्गों के समाज में पैदा हुए। उनका पोषण यही और वास्तविक वर्ग में हुआ। उन्हीं का या धार्मिक चरित्रों का सम्बन्ध उन्हींने किया। केवल उपन्यास ही एक-मात्र ऐसी कला है जो पीछेगिक पृथ्वीवासी से पैदा हुई। इसने मध्य वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति की। माहिम्य को छोड़कर अन्य सभी कला-रूप ऐसे थे जिनका प्रान्त एक स्थान पर बैठकर ही किया जा सकता था।

अमेरिकी समाज मुब गुदा नहीं बल्कि बिस्तृत और फैला हुआ है। उसका कोई एक केंद्र नहीं बल्कि प्रत्येक शहर में एक केंद्र है। उनमें एक मध्य वर्ग है जिसके पास नये मनोरंजनों के लिए पैसा और व्यक्तित्व है। इसीलिए रेशियो, सिनेमा और रेडियो-बिजनेस का इतना विकास हुआ। एबनिय दृष्टि से उनके भूत पर्याप्त स्थिति है। इसीलिए कोई एक परम्परा काही समय तक पर प्रभुता प्रभुत्व नहीं रख सकती। अमेरिकी सतत गतिमान है। धार्मिक और प्रतीकात्मक दोनों रूपों में। इसीलिए उनकी आवश्यकता ऐसी कलाएँ हैं जो क्षिप्र गति से चलें और गतिवत् हों। अमेरिकी धर्म-व्यवस्था पर बहुत उद्योग का प्रभाव है इसीलिए कलाका जो भी उसमें बड़े उद्योगों में बदल दिया है। कुछ कलाओं में नये सामाजिक और धार्मिक आधार भी प्राप्त कर लिए हैं किन्तु इसके लिए उन्हें मूल्य भी गहरा चुकाना पड़ा है। इस सम्बन्ध में बिस्तृत चर्चा अपनी पंक्तिओं में हीनी।

भौतिक गरुडि से भिन्न पापुनर-जन्म का सम्बन्ध इस बात से नहीं कि इतना बड़ा बसाती है बल्कि इस बात में है कि जनता कितनी पूर्ति (Make up) कर लेती है—बाकी सब और इष्टियम हीनी और कपावस्तु कहानी और गीत तथा नाट्य समकालीन धर्मियम पर पर परछाईयाँ। जो कुछ वे पैक धार करत हैं उनमें उनका अपनी रूप गायने जाता है। जीवन के अधिकांश निर्माण और बलगाणीय रूप में ही जनता की गतिवृत्ति होती सबसे उत्तम ढंग से प्रकट होती है। यही हम उसे पकड़ सकते हैं।

१. स्थिर और पाठक

(क) अमेरिकी उप-सात

अपनी एक विद्वान्नी पुस्तक 'एक हीनन ऐंड निर्विनिश्चय' में हेराल्ड साम्बी

1. Faith Reason and Civilization

ने अमेरिका की उपनिवेश की प्रवृत्ति में कहा था (अमेरिका में) एकाएक एक ऐसे साहित्य की सृष्टि की है जो बेकते-बेकते सम्य विचार परम्परा की मुख्य धारा का एक धंग बन गया। पर क्या अमेरिकी साहित्य इतनी जल्दी विश्व विचारधारा का धंग बन गया? इतना जो उत्तर पेरिग्टन और बॉन ब्रुस जैसे अमेरिकी विचारधारा और साहित्य के इतिहासकारों ने दिया है उसमें एक इतने घीरे घीर प्रांगिक विकास की बात कही गई है। शायद हंरास्ड सास्की को अमेरिकी उपन्यास के मुवाकफ़ हुआ होना क्योंकि इसकी सारी उप निवेशी मुद्रिका से एक घाती की है।

यह अमेरिकी भूमि में ही पुष्टि किये हुए? यूरोप में तो यह मध्य भाग को ही आकर्षित करता था जो धीरे-धीरे वृद्ध हो रहा था और एक नये संसार की ओर में उल्टा था। अमेरिका में भी वही प्रक्रिया हुई पर उससे कहीं अधिक तीव्र गति से। एक घात सचन समाज में जो अनुभवों का वैविध्य साधने काया उपन्यास को उससे बस्तु और पाठक मिल गए। कई घीर पुरानी विचार धारा में जो समर्थ हुआ उससे उपन्यास को कथामय विरोध प्रकट करने का मौक़ा मिला। कई विचारधाराएँ-जमी बाकि और मान्य कमी बाकि इतने घीर घीर घीर और कायक के प्रभाव—परिस्थितियों और मयों को नये मोड़ देती रही।

मुख्य कथा-वस्तुओं के अध्ययन से हम अमेरिकी उपन्यास का आन्तरिक व्यवसायिक परिवर्तन के इस रूप का अध्ययन कर सकते हैं। हाथों घीर मेसबिस अमेरिकी उपन्यास के पिता माने जाते हैं। इनके उपन्यासों की मुख्य कथावस्तु है व्यक्ति का अपने मूल स्वभाव के मोड़ से छुटकारे का प्रयत्न। वानों कथक के पाठ्य प। वानों कथक के माध्यम से भावी के अभिप्राय के बारे में अनिश्चित प्रकट करने की अभिप्राय का विमर्श करते हैं। हाथों एक प्रभाव की भावना से घातित है। यह प्रभाव उसकी रचनाओं में कलक की घातित घात के रूप में व्यक्त होता है। वह बार-बार प्रकट करता है कि क्या यह सम्पूर्ण जीवन किसी मूल की छाया से नहीं है जिससे मनुष्य बचि कर दिया गया है। सदेह होता है कि 'दि स्कारलेट लेटर' का हाथों कही इतिहास-मुक्त का मुक्त विरहासी तो नहीं है। मेसबिस तो था ही। मेसबिस की प्रारम्भिक रचनाओं में वही उसने अपनी यात्राओं के अनुभवों का भिन्न घीर दे समर्थ कर्म घीर साहस की बहाम-भावना के बचन होते हैं जो बाद में सम्पूर्ण अमेरिकी अनुभव का एक धंग बना। किन्तु उसके बाद के उपन्यासों में (जैसे पिगे¹ में) एक

1 The Scarlet letter

2, Pierre

कलाएँ और पापुसर संस्कृति

सर्वबुद्ध एण्डर्सन में परदेसीयता की भावना गहरी हो चुकी थी। इसके साथ ही पाश्चात्य-पापुसर मशीन और छोटे-छोटे पापुसरों से दबकर अपने मौलिक स्वरूप में वापस जाने का प्रयत्न करते हैं। फेरिस का 'स्टेड्स सोनियाल' उदार भावनाओं और धर्म के संघर्ष का चित्रण करता है। डॉस वैसोस का पू० एम० ए० सम्पादक प्रेरक शक्तियों के जाने-बाने बुलता है। इन शक्तियों में कोई धार्मिक एकता नहीं है। हममें प्रत्येक सामाजिक शक्तियों से सम्बन्धित है जिसका उसे कोई मान नहीं है और न उन पर उसका कोई नियंत्रण ही है।

इस रूप में धार्मिक काल से पूर्व के कुछ उन्मत्त सांस्कृतिक बृत्त से दोस्तों जिनमें सम्मति और उसकी फूलों से पार भावनाओं के दर्शन होते हैं। उनमें इस बात का इशारा है कि क्यों यूरोपीय और कुछ अमेरिकी सामाजिक अमेरिकी उन्मत्त को अमेरिकी जीवन के बीच और उन्मत्त कष्टों का प्रतिबिम्ब मानते हैं? क्या अपने युग के सामाजिक और जागतिक जीवन का एक पग होती है इसी आधार पर सामाजिक काव्यी ने घटाव की मोड़ से घबरा के उन्मत्तों की कथावस्तु की एक मनोरंजक परम्परा का पता लगाया है। इस प्रकार जैक प्रारम्भिक बयों में कथा-समुच्चय और प्रकृति को लेकर बसती है। किस प्रकार जैक लॉडन नीति का बारबिनियन नायक अपने को कमजोर मानकर अपना सामाजिक स्थान उत्तरी ध्रुव के बर्फों में या जंगल में घबरा समुद्र में पाता है? 1921-30 के बीच की पीढ़ी में कलाकार और फिनिश्टान के सचर्य की कथा मिलती है। डॉ सोल्डर्स द्वितीयक सेन हरीक का देखिए। इस कथावस्तु को हम घटाव की मोड़ पर हेनरी जम्स एडिथ हॉटन और एलेन ग्लान्को में भी पाते हैं किन्तु अब वह सामान्य वस्तु बन चुकी है। इस दशावधि की दूसरी कथावस्तु है पिट्टेरेल्स का अमेरिकी बाइबलिक नायक। 1930-40 के दशक में गर्बहारा उन्मत्त का हड़ताली गहरी नायक है। (यद्यपि यह गहरी छानबीन की जाए तो मान्य होगा कि उस काल में इनके उदाहरण उतने नहीं हैं जितने आज प्रतीत होते हैं।) प्रगा दशक के प्रारम्भ में कथाएँ बिदेसों में जाने जाने या सेना में या जहाजपत्तों में नये प्रकार के जीवन का अनुभव करने जाने सैनिकों की होती थी। 1940-60 में नाटकीय न कई प्रमुख कथावस्तुएँ प्राचीन हैं। जैसे प्रहंगीला माँ के कारण उन्मत्त बलाचार युवक या साहस बपारें जिनमें 'नायक आज न' नैतिक धरातलवातुन विश्व में प्रतीक प्रतीक और प्रतीकों की गौर करता है।

1 Studs Lonigan

2 Three Soldiers The Genius, Main Street

बनारों और पापुसर संस्कृति

कि तीसरे और चौथे दशक बीते यह बात स्पष्ट हो गई कि जेजर और सिकमेयर नुई भी स्वामाधिकतावादी होने के साथ-साथ एक निश्चित ढंग में काम कर रहे थे जो ब्रिटेन के डिसेंस और बेबरे और प्रीस में बाइबल और जोसा से मिलता था।

सामाजिक प्रतिहार और सुधार के माध्यम के रूप में अमेरिका उपन्यास की परम्परा काफ़ी अधिक लम्बी और घनी है। सामान्यतया हमकी और लोगों का ध्यान नहीं जाता। यह परम्परा एच० एच० बेकेनरिज से मूल्यम एन्सेम तक जाती गई है। किन्तु यह सब है कि अधिक बनवती परम्परा बही है जिसकी धारा में बतलाई है जो समाज से विलगाव और अन्वर्त में बिबाध की है। यह और भी ध्यान में हमलिए घानी है क्योंकि अमेरिकी उपन्यासकारों से यह भाषा की जाती है कि वे अमेरिकी-संस्कृति में टांग घड़ने वाले और सामाजिक आन्दोलनों का बनम करगे। वे पूर्व से पूर्व प्रतिगत होने और सामाजिक निर्माण में सीत होने का चिन्तन करेंगे। यह साहित्य को समाज का वर्ण मानने की दमीस के मुलाके का प्रकट करता है। अमेरिकी साहित्य का संस्कृति से सम्बन्ध वहीं अधिक अस्पष्ट और मूढ है। यद्यपि यह भी सब है कि साहित्य और समाज का सम्बन्ध है क्योंकि कोई भी नया सामाजिक दृश्य म वेदा नहीं होती।

अमेरिकी उपन्यासकारों में जिस अलगाव में लिखा है वह व्यक्तिगत असहमति (Dissonance) का रहा है जो धार्मिक और राजनीतिक परम्परा में मिसती है। इस असहमति का उपयोग उपन्यास को सामाजिक परिवर्तन के लिए इस्तेमाल होने वाले इन्धन के रूप में हो सकता था। फिर भी अमेरिकी उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य सुधार ही था। अमेरिकी समाज एक नया समाज है। यहाँ सामाजिक समस्याओं पर राजनीति और धर्म मध्यम के द्वारा और भी अधिक धारणा भी किया जा सकता है। इसलिए अब उपन्यासकार समाज की धार धार ता उनका उद्देश्य उन बनना नहीं बल्कि उन अस्वीकार करना और उनमें आग बड़ जाना था। इन प्रक्रिया में वह अन्तर्मुखी हो गया। अब वह अपनी ही नैतिक और सामाजिक द्विधाओं की ओर करन लगा।

हमारी अन्तः के समय तक यह स्पष्ट हो गया कि न्यू इंग्लैंड परिवारिक षण का संसार उनमें नियंत्रण में बाहर जा चुका है। और कि अब परम्परागत मूल्यों का कोई स्थान नहीं। एक मात्र-मात्र समाज में भी परिवर्तन हुए। दस्तकारी का स्थान मशीन ने ले लिया। रोज़ का रोज़ा काम उद्योग और उद्योग पर आधारित हो गया। मैनिसट डेवेंडरी के स्थान पर व्यक्तिवाद आ गया। धार्मिक रिपब्लिक और धर्म के जनतन्त्र के समाज के बीच एक अन्तर्धान आ गया जिसका चित्रण पायल सबसे अस्पष्ट ढंग में हावेल्स ने किया है। इन प्रक्रिया अमेरिका चित्रण पायल में व्यक्तिवाद के दो धार और समाज में ही अन्तर्धान

कताएँ और पापुनर संस्कृति

व्यक्तिगत नैतिक निर्णयों पर जोर देता है। कभी-कभी ये निर्णय बड़े आदर्शों
कारी होते हैं। वह भी ऐसी ही स्थिति की देन था। जेम्स का प्रभाव इस प्रकार
की स्थिति में रहने वाले बुद्धिजीवियों और मध्यम बग पर पर्याप्त रूप से पड़ा
है।

इस प्रकार अमेरिकी उपन्यास मुख्य रूप से असंतुष्ट (Discontents) विद्रोही
लैककों की देन है जो अपेक्षाकृत बुनी समाज व्यवस्था के घंग हैं जहाँ व्यक्तिगत
समस्याओं के हल का कोई अभिनायकवादी छोटा रास्ता नहीं है। सब बात तो
यह है कि सभी उपन्यासकार असंतुष्ट (dissenter) भी नहीं हैं। फिर भी प्रत्येक
हल अपने लिए स्वयं मसूमा तैयार करता है। अमेरिका में मुश्किलों को समस्या के
सीमांत पर रखा है अपने समकालिकों के जीवन के सदैव को घासीकार करता
है। वे समकालिक उसे अयोग्य (unfit) करार देते हैं और वह अभिनायक
का में वस्त्र की ओर झुकता है। बहुधा उसमें प्रतिभा तो कम पर स्थायी होती
है। संततोयत्ना वह अपने समाज में बुद्धि-मिश्र जाता है। किन्तु जीवन की एक
मंजिम पर वह विद्रोह का अभिनय करता है और विरोधी से अपनी साहित्यिक
खोज के माध्यम से संघर्ष करता है।

मैंने कहा है कि उपन्यास एक प्रबलमान समाज का एक प्रबलमान रूप है।
त्रम की मूल और मूल सम्बन्धी हैरानियाँ बिबाह में व्यक्तियों के संघर्ष पुराने
नैतिक विधि नियमों और नई मायताओं में संघर्ष निजी और सामाजिक
नैतिकता की खोज से कुछ एस प्रदन हैं जिनके सम्बन्ध में अमेरिकी समाज
मानक भी बनाए हैं अमेरिकी युवा उपन्यासकार उसे चुनौती देता है। वह
सफलताओं के सम्बन्ध में नहीं बल्कि असफलताओं के सम्बन्ध में लिखता है,
वह परिवर्तनावस्था की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में नहीं बल्कि विरोधवस्था
के सम्बन्ध में लिखता है। दानि और पन के सम्बन्ध में नहीं बल्कि घोल घावों
के सम्बन्ध में लिखता है।

कुछ मानोबकों की दिकायत है कि अमेरिकी उपन्यासकारों ने व्यापारियों
का बिचन करन में उनका साथ म्याय नहीं किया है। इस प्रकार की दिकायत
करने वाले यह मूल माने हैं कि उपन्यास में संतुलित मूल्यांकन नहीं होता।
उन्होंने उनका ऐसा बिचन इसलिए नहीं किया कि वे कोई अन्तिकारी या
मावनेवादी बिचारपारा से पूर्ण थे। सब यह है कि संस्कृति व्यावहारिकता

- 1 Fiction.
- 2 Fluid Society
3. Fluid form

हीनता के घटन होते हैं। अमेरिकी उपन्यास में हम दोनों बंधुओं के दर्शन हैं... हैं अमेरिकी उपन्यास उस समय फूपा जब सोचों ने देखा कि धार्मिक कल्प से मुक्त होकर वे समीप और सुलभ के स्वभाविक ढाँचे में बस रहे हैं।

प्राचीन या मध्यकालीन बन्धु समाज के युग में नामक अपने समय के वंश और सफलताओं का प्रतीक होता है। इस प्रकार महाकाव्यों का सामक्य जार्ज बिजयो (जैसे 'इसिडोर' में) और परिघजन (जैसे 'घोरेसी' में) या सामान्य जार्ज अनुभव (जिब्राइन कोमिडी में) का प्रतीक था। किन्तु धार्मिक मानव धर्म स्वयं नायक है। उसे अपना भार स्वयं होना है। यही सत्य है जिससे उपन्यास अपना आकार ग्रहण करता है। धर्म के अधिकारों उपन्यास प्रेम की मूठने सुन की प्रेम मन की बीड़ और धारणा की यात्रा को लेकर निर्मित होते हैं वे सफलता या असफलता में समाप्त होते हैं। उनका अंत विवाह की सहन में होता या फिर फाँकन की कहानियों की भाँति धराराय और बर्ज्य मधुन से किन्तु सदा प्रत्यक्ष यही रहता है कि मुख्य चरित्र ने क्या वाया और क्या खोया समझा क्या हुआ? उपन्यास के दो घटक होते हैं। एक सामाजिक अनुभव का बाहरी घरातन और दूसरा स्वयं उसके मनोव्यक्त का भीतरी घरातन इसलिए उपन्यास साम्यता के बहु-विषयों का विधान की शक्ति का परिचय मिला है। उसमें साम्यता के स्वीकृत मानकों से भिन्नताओं के चित्रण का प्रयत्न होता है। यह बहु-साहित्यिक रूप है जिसमें उपन्यासकार अपने स्वयं निराशा और प्रत्यक्ष-वाच्य को अभिव्यक्ति देता है।

मध्य-युग में जब धर्म की छानाछाही थी और सामान्य व्यक्तियों को भी और धर्म के बड़े-बड़े पंडितों में सोचने का कोई अधिकार न था उपन्यास व कोई मतलब ही न होता था। धर्म भी वहाँ छानाछाही है वहाँ उपन्यास कसने फलन नहीं दीसते। उपन्यास मुक्त और सतिशील समाज में फलन-फलता है। 18वीं सताब्दी का समाज ऐसा ही था जब उपन्यास का जन्म हुआ। इससे हम बात पर बहस करना बेकार है कि अमेरिकी उपन्यास की क्या-कसी निराशा वाली और उसका साम्य प्रतीकात्मक है। हाथों और मसबिल भी स धर्ममूर्ती और प्रतीकवादी थे। किन्तु उनका समाज परिवर्तनशील होते हुए न था। यैविकन और हुरान्द साक्षी न इनके बारे में कहा था कि इन्होंने धर्ममंडन व मरण ममत्त्व को वाश कर्षोंकि य धामे धर्मराज का राजि को दे चुके थे। किन्तु यह गलतमा पर्याप्त नहीं है। उन्होंने भविष्य को देखकर नहीं निराशा की व उन ह धर्म बन्ध के जगमग प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं निराश करना पड़ता है धर्म मनाजगत् के भार बाने पड़न हैं दुमगों में सहायुमूर्ति और एकात्मकता प्राप्त करनी पड़नी है। इसका साम्य मुखांगिण सम्बन्ध नहीं होता। बलि कट्टे स्वयं एक धर्म ईशानियन का निराशा गोजना पड़ता है। ईदरी जेम

घोर 'टैप्यों' में पर्याप्त विवेक मिलेगा। बड़े माध्यमों ने स्पष्ट ही क्रिसमस की कन्या पर प्रभाव डाला है। भाग कन्या तेजी से बढ़ती है। उसमें घ्योरे आधिकारिक और ऐसी साफ-सुथरी होती है। नया लिप आधिकारिक और सुस्पष्ट होने से साहित्यिक सफलता निश्चित होती है।

इस प्रकार बड़ी अमेरिकी उपन्यास में प्रकृति के कोई चिह्न नहीं नजर आते उसमें मुरत मशीनी सुविधाओं और कपटी साहित्यिक संस्थाओं से शत्रुता दृश्य पा गए हैं। बड़े माध्यमों के बचकर में प्रकृतिक महान् अमेरिकी उपन्यास का स्वप्न छोड़ रहे हैं। किन्तु सब मिलाकर उपन्यास 'महान्' है क्योंकि उसमें अमेरिकी आस्था का उल्लास और गहराई है।

मैंने अपने को उपन्यास तक सीमित इसलिए रखा है क्योंकि इसमें अमेरिकी सफलताएँ सबसे अधिक स्पष्ट हुई हैं। मैंने कहानी को इसलिए छोड़ दिया है कि सम्भवतः वह अल्पकाल का प्रतिनिधित्व करती है। गीति-साहित्य में अमेरिका का 'रेकॉर्ड' प्राथम्यपूर्ण है। गीति में जोर उपयोगिता और विषयशीलता पर होता है। जो और एमिली डिकेंसन लिटर्चर हार्टरन और इलियट (जिसे अमेरिकी माने) फ्रैन्सिस मैकमीछ पाउंड राबिन्सन जर्ज्स और बीलेस स्टीवेंस में अमेरिकी कविता में दूरी और गीति धर्मता का परिचय दिया है जो अमेरिकी मन के सम्मुख म पिछी-पटायी आस्थाओं को भूटा सिद्ध कराने है।

अन्तीसवीं शती में कविता कुछ हद तक पापुनर उभा थी। लोक मन पर उसका प्रभाव था। लॉगफैन्स लिटिगर, लॉरेन्स पो रिचर्ड यूजिन फोल्ड और पेन्स हार्ड कोर रिने इनके उदाहरण हैं। किन्तु इन कवियों का पापुनिक समालोचकों के लिए कोई विशेष महत्व नहीं है। बीसवीं शताब्दी में जब कविता में लोक-आस्था का पर्याप्त प्रवेश हो चुका था अमेरिकी कविता अभिजात कन्या ही थी। अमेरिका ने कोई बर्म्स बर्ड सवर्न या किपलिंग उत्पन्न नहीं किया जो जनमत और अभिजात वर्ग दोनों का प्रभावित कर सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि मुका अमेरिकी कवि जो जो अपने लिए 'इन्विजन' की घोष कर रहा है अपना व्यक्तिगत बनाने में सारे समाज से घलन करना पड़ेगा। जनता की कवि से घलन हो गई है। उसे जानो कवि के प्रति उपमान सीधा भाव है। विरल विद्यालयों में कवियों के निबान का प्रभाव है। पर बीना मार्सेन पियमन ने कहा है कि "विद्यालयी रचनात्मक शिक्षा के लिए उसके साथ बैठकों को ठो उत्प्रेरक रहते हैं। पर विरलविद्यालय छात्रों पर के कविता की कोई पुस्तक छरीरकर नहीं पड़ते।"

इन सरमयी चर्चों में मैं समालोचना का नहीं छोड़ सकता। 1900 से 1900 के वर्षों में इनका बड़ा विकास हुआ। यह अमेरिकी साहित्य की परिपक्वता का एक चिह्न है कि अमेरिकी समालोचक—जैसे एडवर्ड विल्सन थार० पी०

स्टैकमूर, बानबिक जगत, कान्टास जके मास्कम काठसी एसन टाटे मैबीसेन, सायानस ट्रिनिटी ग्रेक्सवेल बीजयर क्लैपबुर्क मिटसे मस्केड काजिम किसी भी स्कूल में स्थापित नहीं किए जा सकते। यद्यपि विभिन्न वर्गों को ध्यान में रखकर यह प्रयास व्यवस्थित किया गया पर इसमें सफलता नहीं मिली। मैथ्यू थार्नहिल ने कहा है कि समासोचना धीरे कृत्रिम के काल साहित्य में धरस-बधन कर भाते रहते हैं। यदि यह सत्य हो तो कहना पड़गा कि अमेरिका में समासोचना का यह युग भाते भाते वाले स्वनात्मक काल का अवशेष होना।

(ख) पाठ्य जगत की कान्ति

पिछली पीढ़ी में पढ़ने के क्षेत्र में अमेरिका में कान्ति-वैसी ही चीज हुई है। यह कान्ति काव्य की बंधी जिसमें बासी सस्ती पुस्तकों के कारण हुई है जिन्होंने सम्पूर्ण अमेरिका को ही पाठकों का राष्ट्र बना दिया है। इनके कारण प्रकाशन के क्षेत्र में कृत्रिम हो चुकी है जिससे अब उन पुस्तकों का प्रकाशन व्यय की कम पाठकों के लिए धरती है इतना बड़ गया है कि कुछ ही प्रकाशक इसके लिए तैयार होते हैं। इस प्रकार 'सीमित पाठकों' (small audience) की संख्या बढ़ी है और 'बड़े पाठकों' (big audience) की संख्या काफ़ी बढ़ी है।

'बेस्ट सलर्स' वर्षान्त सबसे अच्छी बिकने वाली पुस्तकों की कक्षा अमेरिकी प्रकाशन इतिहास में सदा से रही है। फ्रैंक एस. मोट ने इस प्रकार की पुस्तकों का बड़ा सूचक सम्पादन किया है। उसने इस प्रकार की पुस्तक की परिभाषा करते हुए लिखा है कि 'सबसे अच्छी बिकने वाली पुस्तक वह है जो अपने प्रकाशन के दस साल बाद आबादी की सीधी संख्या में बिके। इस प्रकार 17वीं शताब्दी में मारकेस बिबिस्तबर्ग की कविता-पुस्तक 'दि डायॉल दि डूम' की जिसकी 1600 में 1000 प्रतियाँ बिकी थीं। 18वीं शताब्दी में 'मदर बुज' और टॉम पेने की 'कामन सेंस' तथा 19वीं शताब्दी में 'वाशिंगटन बीम' की 'अ लाइव ऑन बायमिडन' हेरियट बीचर स्टो की 'फॉकल टॉल्स कैबिन' और थोमस साउथ वेल् के सम्पादन प्रारम्भिक बीसवीं शताब्दी में जैने स्ट्रैटन पोर्टर और हेरोल्ड बेस मिट सबसे अच्छे बिकते हैं। इनके वर्गों के 'गॉन विथ दि विंड फॉर-एवर एम्बर' और पैरी मैसन की रहस्यवादी जैसी पुस्तकें सबसे अच्छी बिकती हैं। इन पुस्तकों की अमेरिकी जनता का सूचक मानने का धम होता है कि हम यह भूल जाते हैं कि ये पुस्तकें शायद स्थायी होती हैं। उन्हें पाठक जैसी रूप में ग्रहण करता है जिन रूप में व्यवस्थापकों की बहुमति और रेडियो सोच धारता।

अच्छी बिकने वाली पुस्तकों के होने हुए भी 'पुस्तक पढ़ने के लिए

विशेष प्रयत्न की आवश्यकता रहती है। सभी जानते हैं कि राष्ट्रपति फाइनलहावर ने कम पुस्तकें पढ़ी हैं। इसका एक कारण तो उनका व्यस्त जीवन रहा है किन्तु इसका मुख्य कारण यह है कि अमेरिका के कर्मसील अनुषंगों की भाँति झुईनि भी बाँक धीर कान खुले रखकर शान प्राप्त किया है पढ़कर नहीं। अनुमान है कि चाये प्रीड अमेरिकी कोई पुस्तक नहीं खरीत। चाय चाय भी बहुत कम पुस्तकें खरीदते हैं। टेलीविजन के कारण बहुत बिकने वाली पत्रिकाओं को जी बचका गया है। टेलीविजन के दर्शक दूरों की घण्टा कम फिताईं पढ़ते हैं। कुछ परिवार ऐसे हैं जहाँ पढ़ने का सीक है पर ऐसे परिवारों के विद्याविधियों की संख्या अन्य परिवारों से विश्वविद्यालयों आदि में बड़ी कम है।

अमेरिकी समाज में कामज की बिस्व की पुस्तकों (पेपरबैक) और पुस्तक-कलकों के उद्यम से पढ़ने के क्षेत्र में पूरी अम्लि ही हो चुकी है। कलकों न पाठकों की संख्या में ही बढि नहीं हो है बल्कि वे पाठकों को परामर्श भी देते हैं। इनके माध्यम से लाखों अमेरिकीजनों ने अपनी पढ़ने की अभिरुचि बनाई है। अन्य उद्योगों की घण्टा पुस्तक उद्योग काफी पिछड़ा हुआ है। अमरिका में कुछ स्टोर्स की संख्या 1400 है जब कि साख स्टारों की संख्या 5 लाख और जन पानघरों की संख्या 3½ लाख है। इसी प्रकार गैस स्टेशनों की संख्या 2 लाख और प्रोपवि स्टारों की संख्या 50 हजार से अधिक है। पेपरबैक की ज्ञानि श्रुति संस्करण में पुस्तकों की संख्या न बूझि और सम्पादन व्यय में कमी पुस्तकों के आधायक नामों क ज्ञान और बिस्व की प्रक्रिया में अम्लि ने हुई है। अब प्रोपल स्टारों¹ अलवार क स्टेशों लाख-बाजारों में फिताओं की बिनी का प्रबन्ध किया गया है। इस प्रकार पढ़ने की वास्तव अब अमेरिकी दैनिक जीवन के अत्यन्त निकट आ गई है।

इन उद्योगों क समय में अमेरिका में प्रतिवर्ष बायी बिस्वियन 'पेपर बुक' की बिक्री होती थी। इनमें पुस्तकों की संख्या लगभग 1000 थी। प्रोपल मुई में अनुमान लगाया है कि धर्न स्नेजमी गार्डनर, धक्किन कार-वेण प्रोन स्पिन एलेरी बोन और मिनी स्पिनेन से बाँक सबसे अधिक कोकप्रिय लेखक हैं। इन पाँचों में 3 हत्या और बहुस्य की जहानियाँ मिलते हैं और सिनेर की रचनाओं में हिना और नाम का जोर है। एक-दूसरे प्रकार की पुस्तकें भी जिसमें सामाजिक बिज्ञान और साहित्य के भी कुछ अपायिक सामान हैं—सोक-प्रिय हुई है। पेपरबैक की सीकप्रियता को देखकर यह प्रतीत होता है कि साहित्य की अच्छी पुस्तकें भी चागे साकप्रिय होंगी। किन्तु क्या य धाननेटी साहित्य

को संतुलित कर सकेंगी यह प्रश्न अभी पूर्णरूप से अनुत्तरित ही है। ज्ञातम्य यह है कि बड़ी संख्या में बिकने पर भी ये पुस्तकें अमेरिकी जनसंख्या के 20 प्रतिशत से अधिक हाथ नहीं खरीदी जाती।

अमेरिकी पेपरबैक पुस्तकों के बाव जो खेती खाती है वह बड़ी निराशाजनक है। यही वह साहित्य है जो सड़कों के ग्यूस स्टैंडों पर पड़ा रहता है। इसके कई स्मूथ विभाग हैं जैसे बिस्मरण साहित्य (कॉमिक फिक्शन कूडनियों के पन्ने सम्प्रदायवादी पत्रिकाएँ) रहस्य और साहस का साहित्य (हूडनिट्स¹ घातक की कहानियाँ और वेस्टमैन² रोमांस (धैर्य की कथाएँ 'वास्तविक अनुभवों' के कान्फेस्रान्स और सिने-मैक्स-पत्रिकाएँ) दुष्ट पत्रिकाएँ (सिने-जगत् टेम्पेबिजन और अन्य समाज में यौन-व्युत्थियों की कथाओं से पूर्ण इनकी कुछ बिकी होती है) यौन घोषण इस केंद्र करें (कण कैसे दिखाएँ समुद्र तेल कैसे लें ?) यादि प्रादि। किसी भी ग्यूस स्टैंड को देखें और घाय पाएँ कि वहाँ ऐसे साहित्य की भरमार रहती है। इन्हें देखकर तो अमेरिका के मजिस्ट्रेट के सम्मुख में सिरहन का बबाना मुद्रित हो जाएगा।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अष्टाचार मशीनों के कारण मही (मशीनों तो जो हम बाहे बहों न छोड़ेंगी) न ही जगता की अनिरुधि से कोई बचप है। जगता की अनिरुधि बनाई जाती है। इसके पीछे जनता की मापरवाही ही है। कॉमिक पुस्तकों (10 कराड़ प्रतिवर्ष अमेरिकी बाजारों में घानी है) और स्तिक पत्रिकाओं में का¹ बड़ा संतर नहीं है। दामो के पीछे एक ही मूल है कि पाठक यह पसन्द करता है। पर कॉमिक पुस्तकों में हिमा और घातक का संघ अधिक रहता है और य अफगाहन युवा पाठकों द्वारा पनी जाती हैं।

यह प्रतिम बात ही ऐसी है जिससे माता पिता न रूप में अमेरिकी ब्रिथि है। अभी हाम में इनकी और उपलब्ध बड़ी है ज' और बिम्ता का विषय है। बतमान मशी के नामाये के मध्य कॉमिक पुस्तकों का समुपात कुछ पुस्तकों का 10 प्रतिशत है। एक द्वाड़ बाव जनता अनुमान निदाई से अधिक हो गया। कॉमिक पुस्तकों का मूल है नामुजता अफगाहन और भय (horror) का विषय। अतएव अमेरिकी मागिकों में कबची उग्र म हा ये दुर्गुण प्रकृष्ट हो जाते हैं। इनका संतर अमानाग्य बच्चों पर हा मही सामान्य बच्चों पर भी पड़ रहा है।

देवरदीनों की यह ज्ञानि अधिकार और 'मोगोम' पटन के भ' को टीढ़ दे सकती है। किन्तु इस पापुमरी कारण का फल क्या होगा पता नहीं? अभी

1. Whelanite

2. Black.

कई पीढ़ियों तक इसका पठा न चम सकेगा। किन्तु इसका फल तब तक साम-
सायक न होगा जब तक पुस्तक-उद्योग वाले पासलेटी साहित्य के साम-साय
पन्थी पुस्तकें भी पाठकों के हाथ में नहीं बैठें।

3. नायक पुराण-कच्चाई और भाषा

भाषा के अमेरिका में भी पुराण-कच्चाई (माइयोर्नॉबी) बन रही है। लोक
साहित्य में इसके अवशिष्ट धर्म भी हैं जिसकी अभिव्यक्ति होती रहती है।
पापुलर कच्चाई और नीतों के टाइप-व्यक्तियों के आसपास भाषा भी इनका
तानाबाना बुना जाता है। इन सब में मूल बात एक है और वह है जनता की
शक्ति जो कभी मूल नाम कभी सम्मिलित रूप से स्वतः कर्मशील रहती है।

जो कोई अमेरिका के लोक-साहित्य का अध्ययन करेगा उसे हम साहित्य
के छात्रता और विच्छेद से आश्चर्य प्रसन्न होना। छात्रता इस अर्थ में है कि
पुराण-कच्चाई के निर्माण की समता अब भी सक्रिय है। किन्तु विच्छेद भी है
अमेरिकी विचारों—बाह्य गहरी हो या देहती—आज कलियों के बारे में जो
विमर्शिता से कम हो जानता है। अमेरिकियों की सतत प्रवृत्तता और
उपनिषद् बलों के निरन्तर आगमन के कारण पौराणिक भूत और वर्तमान में
पर्याप्त विच्छेद है। यह अब परम्परा से प्राप्त ऐसे नायकों की प्राप्ति मुश्किल
नहीं है जो सभी वर्गों को एक सूत्र में समित रख सकें यह अब नायकों की जोड़
और आवश्यक हो जाती है।

जब मैं अमेरिकी नायकों की बात करता हूँ तो मेरे मन में उनके दो प्रकार
होते हैं। एक इतिहास-मुक्तकों का नायक जैसे यूनानी सम्प्रदाय का नायक होता है।
सबसे स्वीकृत सामूहिक लक्षण होते हैं और वह सामूहिक लक्ष्यता का प्रतीक
होता है। बाधितन मिशन कन्वेंस्ट प्रांट आइजमहावर इनके आसपास
परिभाषा का एक मर्म है जो अमेरिका को राष्ट्रीय पद देता है। किन्तु ये दूसरे
प्रकार के नायकों से आहत हैं। इन दूसरे प्रकार के नायक जो हम देनी
(vernacular) नायक कह सकते हैं। यह हम सब में क्योंकि ये अमेरिकी दैनिक
जीवन की देन हैं। इन्हें हम मूल आधारों की कह सकते हैं जिसके चारों ओर
अमेरिकी अपनी मनगढ़त कच्चाई रख सकते हैं।

यह नामक अमेरिकी इतिहास-मुक्तकों के नामक से कम प्रभावशाली हो सकता
है। सम्भवतः यह कोई सामान्य अमेरिकी की हो या कोई सामान्य गहरी लक्ष्यता
होगी जो जैन धर्म आर्क नहीं। हम नायक के यदा का समय भी अस्य ही होता
है। दिवानमाई की रोशनी की तरह यह चटान में प्रज्वलित होता है और फिर
बुझ जाता है। प्रत्येक युग की अपने नायक के माध्यम से विविध संस्कारना होती
है। किन्तु जिस समय वह जन-जन पर राज करता है उस समय उसका प्रभाव

सेना या राजनीतिक पुरवों से प्रसंग ही होता है। यह जीवित छोटा-सा नायक अमेरिका को समझने के लिए भूत के बड़े-से-बड़े नायकों से अधिक महत्व का है।

कभी-कभी यह नायक दोनों प्रकारों का सम्मिश्रित रूप भी होता है। यह राष्ट्र की सफलताओं का प्रतीक और व्यक्तिगत व्यक्तित्वों का प्रत्यक्ष भी होता है। व्यापारी नामक इसका एक उदाहरण है। पिछली पीढ़ियों में यह गेदस डिगू मैर्जीज बेडरविस्ट राफेल्सर मार्नन या पर सल्ट बर्जेनसील सिस्ती पर छान दिया हुआ। फिर भी युवकों द्वारा अनुकरणीय का सम्मान उसने प्राप्त किया। छुनामियों की भाँति यह युवकों का पूजन था। बल्कि यह तो एक नितांत अपूर्ण व्यक्ति था जिसने सामाजिक प्रयत्नों के एक सिखाव का प्रतिनिधित्व किया। जानते थे हड़तालें छोड़ी राफेल्सर ने अपनी विरोधी कम्पनियों को सहस्र-सहस्र कर दिया। किन्तु एक वर्ष के प्रतिनिधि नायक के रूप में उनका सम्मान नहीं पड़ा। बल्कि वे राष्ट्रीय नायक माने गए। चूँकि जनता उनके निजी व्यक्तित्व से अपने को नहीं मिलाती यह उनकी सम्पदा को देखती है जिसे वह भी पाना चाहती है इसलिए ऐसे नायक के लिए चाहने नायक या गुप्त बान बनने की आवश्यकता नहीं। सामरिक अमेरिका में इन अपूर्ण 'बाहरेटों' का स्थान नैमनों के मनेजरो ने ले लिया है। इनके नाम व्यापार के पनों के बाहर नहीं छूटते। नया व्यापारिक नायक संस्थागत ही जाता है। यह प्र. ए० टी० एण्ड टी० या जेनरल मोटर्स बन गया है।

इन व्यापारी नायकों में मानवीय धर्म नहीं होती जिसकी शोख अमेरिकी करते हैं। यह धर्म सिनेमा टेनीसियन आस्केटबाल के नायकों में मिलती है। सियो मोडेल्स के शर्यों में धर्म 'धर्म की प्रतिमाओं' का स्थान 'धारा की प्रतिमाओं' ने ले लिया है।

जब हम एक तीव्र प्रकार के नायकों के क्षेत्र में पहुँचते हैं जो न तो राजनीति या व्यापार का शोचप्रिय चरित्र है न बड़े माध्यमों का ही तो जब प्रक्रिया के दर्शन होते हैं जो पुराण-कथाओं का निर्माण करती है। यही हमें शोक-साहित्य के नायक के वर्णन होते हैं। यह वास्तविक या कथाओं का नायक दोनों हो सकता है।

इसका पहला प्रकार पौराणिक 'योधी' है जो अमेरिकी धार्मिक की देन है। संस्कार लीगे स्वर दासा अभिषेकित में पदु सायद धुमंठु केरी बाला सायद एक नाविक या विमान मज्जाक-यगन् और साधनों से पूर्ण। यह 'योधी' का सत्यतः शर-चित्र है। 'योधी के बा' 'बैक वुड्समैन' टाइप-व्यक्ति

क्याएँ और पापुलर संस्कृति

बना। कर्नल निम्नोद बाइस्फायर यही था जिसने 'मायन प्रौढ वि शेर' नाटक के नायक के रूप में देश-भर में भूमि मचा दी। यह प्रारम्भिक बैंक बुद्धिमत्त सरपट डोड़ता कौब कौब दृग्ता हिनहिनाता दम्भी नाचता और अपने से ही बात करता था। वह स्वयं डबी नवित भी हो सकता है जिसके आकार पर इस निम्नोद बाइस्फायर की मृष्टि का अनुमान है। इसी प्रकार धावे नायक धावे मसखरे मिक फिक साम-स्तिक सामयिक या धर्म चरित्र भी है जिसको लेकर धर्मरिक्ती कथाओं का ठाना-बाना हुआ गया।

बाद में जब जयस कट गए और उनके स्वान पर 'सावित्र कल्प' बन गए, तब तद्विषयों पर स्टीम-नावें चलने लगीं ऐसे बिछ गईं लोक-साहित्य में नायकों की खोजी में नये चरित्र धाये। अब इनके पास-पास बड़ी-बड़ी कथाएँ बनने लगीं जिनमें नये महावीर के गुणों की कल्पना-गाथा और सफलता भावों के चित्रण हुए हैं। बिगनाथ उड़का बनियन जो लकड़हारों का धारा दबता ही था निर्वासन बिना जिस गहरिये लकड़ों का सांस्कृतिक नेता कहा गया है और जॉन हेनरी जो धीस मुरंग टोनी का बड़ा नायक था बिली दि किड और जेम्स-जेम्स जैसे हत्यारे और जू-जैमरक मनी पापु का डालने वाला—ये सब नायक इसी युग की कृतियाँ हैं।

इन सभी व्यक्तियों के सम्बन्ध में क्याएँ सभी और उन पर बैलाड मित्रे गए। इनमें जो कुछ था वह सरय कम भूत ही धर्मिक था। बालात्तर में धर्मरिक्ता में महायज्ञ के बिस्तार के प्रत्येक चरण के सम्बन्ध में क्याएँ बन गईं। यह पुनःकहीन समाज का साहित्य था। इनमें अधिकांश दक्षिण और पश्चिम की बिरुदमान धर्मि की धर्मव्यक्ति थे। इस लोक-साहित्य में धर्मि बाजी धर्मिक थी। इनमें एक हास्य भी था। वह हास्य जिसका धर्म भूतता खेमी धर्मता में होता है। पहाड़ा धर्मता भी थी जिसका साहित्य दूसरे धर्मि भाषा था। इसमें धर्मकर धर्मता चरुता और नयोनिक मजाक भी मिलेगा। सभी कुछ एक बैलाड न था। 'योदी की चरित्र चर्चा में 'ग्रह ईगल' की धर्मता स्तम्भकता थी। बैंकबुद्धिमत्त में एक प्रकार का बुद्धिपूर्वक स्वीकरण का धर्मम्बन्ध भाव था। सोहपुत्र की कथाओं में कोरी धर्मता या और 'धर्म रापी हत्याओं पर उदारतापूर्वक भावनाओं की चर्चा की गई थी। पर जो भी हो धर्मरिक्ती लोक-साहित्य में बही योग्यता या जो किसी मसृष्टि के धर्मकर चलने और गव करने में होता है।

इन कथाओं की मायदी बैलाड जीवन से ही ली गई है। इसका रूप याने और बैलाड या भेंटिग व्यापार भी और मूढ 'माक-एनिक' का था।

1 Spread eagle

2 Mock-epic.

रहकों में से सब से जो घातपात मिल सकते थे। कलाकारों और दर्शकों में कोई विभाजक रेखा भी न थी। भूमिकाएँ भी प्रायः बदलती रहती थीं। कभी कभी दर्शक भी कलाकार बन जाते थे। कहानियाँ बीताहों और लोक-कथा वस्तु में भी पूरे परिवर्तन होते रहते थे। यहाँ तक कि मूस पाठ ही विमलमय बन जाता था।

अमेरिकी कथाओं का जीवन बड़ा छोटा होता है। उन्हें प्रायः लोग मूस ही मानते हैं। या फिर वे गम्भीर पुस्तकों या पत्र-पत्रिकाओं में सीमित रह जाती हैं। अमेरिकी इतिहास और पुराण-कथा में ऐसा प्रायः हुआ है कि कोई वास्तविक व्यक्ति अमेरिकी सामयिक लोक साहित्य का मायक बन जाता है। जब-जब ऐसा हुआ है 'बूम' भाषा को पार कर गया है और एक प्रकार का उन्माद बनकर सारे देश पर छा गया है। सारे अक्षरशास्त्र, सिनेमा, टेलीविजन सब पर एक ही चर्चा होती है। बम्ब उभरती रहता है। 1930 के बाद ऐसा ही एक बड़ी जानट घूम घाया था जब टोपियों कोट-पट्ट पायजामा गिम्नोसो सब पर 'डेबी-कावेट' छा गया था। जिसकी तेजी से बूम जाता है उसमें ठंडी से जाता भी है। य 'डेबी-कावेट' उन्माद के बाद युवकों में 'जेम्स डीन' का उन्माद आया। जेम्स डीन एक सिने कलाकार था जिसकी मृत्यु मोटर-अपघटन में हो गई थी। उसका मरने का कुछ महीने बाद ही युवकों ने उस अमर बना दिया। उन्होंने उस नाम पर 'जेम्स डीन क्लब' बनाया और यह मानने से इनकार कर दिया कि उनका मायक बन गया है। इन युवों का अमली स्वरूप क्या है इसका अध्ययन समाज-मनोवैज्ञानिकों को करना चाहिए। इसका शुरुआत इस बात में मिल सकता है कि 'ग' मशीन के युग में जब सब कुछ निर्देयविक्रम है अन्तः का कोई न कोई वास्तविक मायक बनाने को मूल प्रयत्न रहती है।

फिर भी इन अस्वाभाविक युगों के अन्तर्गत अमेरिकी कथा ने सामयिक अमेरिकी चरित्र का एक बहुत बड़ा आधार छोड़ा है। 'मये लिटल' की बातचीत में पार लोक-कथाओं की कुछ हास्यकर डीर्घ या छवते हैं। लेकिन अमली दुलब मृत्यु के बाद पुराण-कथा बन गया। माइक ट्वेन का पाठक जानता है कि उनकी सफलता कभी भी गम्भीर न थी यदि उनकी उन्हें साक-स्मृति में न होती। बम्बेस यहाँ से लोग बिया कि हैनरी जेम्स जैसे मृष्टियाने कल्पनाकार के भी अमेरिकी चरित्र का चित्रण पुराने ढाँच में ही किया है। माना वह कहता जाता है कि मोर-जीवन से एक बड़ा दूर कलाकार को भी लोक-कथा-वस्तु प्रभावित करनी है। स्टेनबक फॉर्नर वास्तविक और उच्च एन्टरटेन और रिम लाइनर में भी लोक-आवर्धक पराजय तक उभरने वाली अमली सतितता की जाँच मुगल रहती है।

कतारें धीरे धीरे सँकृति

यह कथा-निर्माण की प्रक्रिया अब भी चल रही है। पश्चिम के सामक धीरे धीरे (यात्री बसनियाँ) उपमाओं का स्थान अब 'कॉमिक स्ट्रिप्स' ने ले लिया है। पॉप कल्चर धीरे धीरे जहाँ जो स्वयं मोमान्ड हर्कलिस के साथे में हम से अब पुरस्कृत या दिक बन चुके हैं। ईक-बुध सामक भी निस एक्टर बन चुका है। टाइल बनी को आमकरी की कहानी अब पागो धीरे टमके मायो की हा चुकी है। 'मीमान्ड के बन्मायो' ने अब विभिन्न धीरे बिली सटन के कथामाओं की गन्ध बारण कर ली है।

मह कहना नि धाबुनिव सामको पहुँचे की सामधी से ओगी है या कम भङ्गीनी है या धाबिक मिनाबटी है इस बात का नजर-अन्दाज करना है कि कथा-निर्माण की आवश्यकता जलता म से ही उठती है। धीरे उन्हें जो कुछ भी सामधी मिलती है उसी पर क जिन्दा रहन है। प्रत्येक काल म ऐसे व्यक्ति प्रकट होते हैं जिन्हे धाम-धाम कथाएँ बनती रहती हैं। प्रत्येक पीढ़ी म प्रतीकारमक घटनाएँ भी होती हैं जिन ईबाधें युद्ध विपत्तियाँ परिबहन क मय साधन धाँ। जिन समाजों म धारणें काफी समय से स्थायी होती हैं उनमें मोन-साहित्य परम्परागत सामूहिक स्मृतियों के रूप में होता है। न्यू इंग्लैण्ड क 'डाउन ईस्ट' म अब भी कुछ एम दान है जहाँ ऐसा समाज है। बिल्कु एम समाज अमेरिका म कम ही है। धाब ता मार-स्मृति की प्रक्रिया उतनी प्रकट नहीं है जिन्ही नायन-निर्माण धाब रचना कथाओं धीरे मञ्जा की है जो रात्रोंरात जलता के मम पर छा जाती है। अमेरिका संस्कृति धाब पुगनी कथाओं में सम्मन्ध सोकक नई कथाओं का निर्माण कर रही है। मैन समय कहा है कि अमेरिका में इनने एपनिक धीरे राष्ट्रीय बन है कि उनक बारण प्रत्येक पीढ़ी में नये निरे स प्रारम्भ करना आवश्यक हो जाता है। किन भी अमेरिका में बिबेदी संस्कृतियों में जो कुछ लिया है उन केंद्र मही दिया है।

अमेरिकी कथा में रचना-शक्ति किन्तु है? क्या मोन-नापकीन अमेरिकी धरित की शक्ति धीरे पहुँची की अभिव्यक्त की है? क्या कहानियों धीरे बँमाओं में उनम अमेरिकी अनुभव की आवाजक महनता धाबो है या के बबल सतही रह गए हैं?

अमेरिका मन्मता यूनान धारि के मुवाबिस धमा 'तनी' मई है कि इस प्रश्न का उत्तर इन का समय मही धाया है। 'मन्म' धरित¹ यूनानी दुग्मन्ध कियों हमर या धाबुनिव कथाओं का मोनकल बाजा पुराना है। रसी प्रकार मृना आरमेक, धाम्म या मागमादह का भी कथाजल पर्वत प्राचीन है। अमेरिकी कथाओं में इन महान् कथाओं की महारत मही नहीं धा पाई

है। अपनी कमाकारों को हमसे इतनी प्रेरणा भी नहीं मिलती जितनी इन कमाओं से मिलती है। इसका कुछ कारण तो अमेरिकी चरित्र है जो बार-बार पटरी से उतरता रहा है और बार-बार जिसकी हवा निकलती रही है। कुछ इस कारण भी कि बहु कल्पना का पूर्ण स्वप्न समर्पण नहीं करता, जब कि उसे जाने का इतना उत्तरा भी है। किन्तु प्रचान्त यह सत्य है कि अमेरिकी चरित्र की बुद्ध्यान्त सीमाएँ उसकी धार्मिक तत्पनीयता और उसके उपन्यासों और साह-साहित्य में हैं। इनका विस्तार तो हुआ है पर उनमें भावनारमक समृद्धि नहीं पाई है।

यह सामूहिक कल्पना सबसे अधिक भाषा के क्षेत्र में समृद्ध रूप में प्रकट हुई है। निश्चय ही अमेरिकी भाषा अमेरिकी अनुभव की सबसे समृद्ध उपज है। ऊबड़-खाबड़ ईसादपूर्ण पुष्ट (मांसम) घनाकर से भरी यह अमेरिकी ध्वनि और उसकी लय को बड़ी सचाई से अभिव्यक्त करती है। बहु राष्ट्रीय अनुभव का निर्माण कर रही है। धाराएँ ही कोई दूसरी सम्प्रदाय ही जिसने अपनी भाषा की विरासत को इतने कम समय में इतनी ग्रीढ़ और अपनी धारक्यता नुसार अपने काम का बना लिया हो। अमेरिकी कवियों के हिन्स 18वीं सताब्दी के ध्वनि से चिट्ठा हिन्स से काड़ी भिन्न हैं। मोह बेष्टर के प्रयत्नों का कव्यरूप अमेरिका में अपने का सांस्कृतिक उपनिवेदवाद से मुक्त किया और अपनी स्वतन्त्र हिन्स और उच्चारण-पद्धति बनाई। यद्यपि ध्वनिकरण और वाक्य रचना-पद्धति धीरे-धीरे बदल रही है किन्तु सत्य-रचना तो इतनी तेजी से हो रही है कि उसे पाहसपूर्ण ही कहा जाएगा। महाद्वीप का समुद्र के साथ-साथ नये राज्य और नयी अभिव्यक्ति-पद्धति का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। भाषा-रचना के समानांतर उदाहरण के लिए एमिलीजियस युग में जाना पड़ता जब सामान्य जनता की भाषा और नाटकों की भाषा एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई तेजी से समृद्ध हुई।

अमेरिकी भाषा समृद्ध ही नहीं अपनी मातृ भाषा के मुकाबले इसमें एक रूपता भी अधिक है। इम्पिड न बोसियों का विनाश इतने विभिन्न रूपों में हुआ है कि एक जगह का आदमी दूसरे भाग की बोली कठिनाई से समझ सकता है। मिडवैन्ड की बोली जो पुरानी ब्रिटीश की बोली से अधिक प्रगतिशील थी 'परिनिष्ठित' या 'मामाग्य' इम्पिड मानी गई। अमेरिका में ऐसी कोई कठिनाई नहीं पाई। वहीं बोली बोली को 'परिनिष्ठित' मानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। कोई भी व्यक्ति आदमाटिक से प्रभावित तब तक अपना ज्ञान उसे समझने या समझाने की कोई कठिनाई नहीं पावेगी। इसका कारण है अमेरिका की गतिशीलता। वहीं जनता का अपना आवायमन है कि किसी बोली के स्थिर होने का अवसर ही नहीं है। बड़े माध्यमों के कारण नये शब्दों के शब्दों और

कनाएँ और पापुनर संस्कृति

उच्चारणों का प्रसार प्रचार भी तुरन्त हो जाता है। टेसीबिजम ने अमेरिकी भाषा को स्मर करने में बड़े मदद की है क्योंकि इसमें बाणी का संयोग बिग धे रहता है किन्तु भाषा की इस एकस्यता पर अत्यधिक खोर देने की प्राब स्यकता नहीं है। 'अमेरिकी जेन्जेज' के 'बुसरे गुरक' में जेन्जेज ने सम्प्रसार नये शब्दों का समाहार किया है। ये शब्द इतने स्थानीय हैं कि राष्ट्र के बुसरे भाषों में इनका कोई तात्पर्य ही नहीं जानता। किन्तु परिणाम धे इनकी तासिका बनी है उससे यही सिद्ध होता कि स्थानीय श्रेष्ठ ग्रन्थ ही है।

इसी प्रकार अमेरिकी भाषा' के पार्श्वक में भी अतिरंजना है। अमेरिका में जो भाषा बोली जाती है उसका गठन भी बीसा ही है जैसा इंग्लैण्ड की भाषा का। मौलिक शब्दावली भी एक ही है। साहित्यिक संगम भी है। उच्चारण में पर्याप्त भेद भी है। पर अमेरिकी और ब्रिटिश उच्चारण में उतना भेद नहीं है जितना मिसीसिपी और मुकलिन के अमेरिकियों के ही उच्चारण में है। फिर यह पर्याप्त भेद कहाँ है? भाषा का गठन साहित्य या बिचारों के रूप तो एक ही है। अमेरिकी जॉनडबी और ब्रिटिश बट्टेड रसल या अमेरिकी सिन्क्सेयर लुई और ब्रिटिश एच० जी० वेल्स में क्या अन्तर है? मुख्यश्रेष्ठ मुद्दाबतों में है जो बोसबाल के होते हैं। ये भेद लय और बिभक्तिमो में हैं। गहनता की शक्ति और शब्दों के रैनदिन के प्रयोग में धाने बाल साहचर्यों में है।

जनता की भाषा सम्प्रता का कमड़ा होती है। इसमें देसी शब्द-संपत्ति शब्दों के रूप लय के साक्षर भाव तथा शब्दों में सूक्ष्म अन्तर सम्मिलित हैं जो समाज क सदस्य को एक होने का भाव देते हैं और दूसरी भाषा क प्रयोग करने वालों से धन्य करते हैं। इसमें ही के लक्ष्य हैं जो हमें दूरों से बड़ा होने का भाव देते हैं। यह बह्व्यन सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का एक धंग है। अमेरिकी भाषा इंग्लैण्ड की भाषा से इतनी भिन्न नहीं है कि उसे एक पृथक भाषा की संज्ञा दी जा सके। किन्तु यह ब्रिटेन की धंरेबी से उतनी दूर भी अवरय है जितनी अमेरिकन-संस्कृति ब्रिटिश-संस्कृति से दूर है।

यह पाषण्य कैसे भाषा यह बताना मुश्किल नहीं है। अमेरिकियों ने संघेबी भाषा और साहित्य से प्रारम्भ किया। किन्तु यह बिबिधत उस संस्कृति की बी जितका जाति के पश्चात् कोई धाबिपत्य न रह गया था। अमेरिकी भाषा भी इसीलिए तुरन्त स्वतन्त्रता की ओर बढ़ गयी। उपबेनिधवाद धे राजनीतिक मुक्ति की मीम थी कि सांस्कृतिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त की जाए। सीमांत किसान और वीरबुद्धसमैग बधीन का रोजगार करने बाल उपदेशक और धर्म्यापक प्रोमाटर और बधीस केरीबाले और देहाती बनिने मजदूर और धराधों के मासिक गहरों के मधुमे और हटीम बोटी ने बालक रसैं बिघाने बाले मजदूर देहाती पशों के संवादक समाचार पशों के संवादवाता धराधों में उन्नति करने

बास चतुर युवक कहानियाँ कहने वाले इन सबमें मिसफर 19वीं सताब्दी तक एक ऐसी भाषा का निर्माण किया जिसका अपना इतिव्यस था सब मति रूप और शक्ति भी अपनी थी। इन विनियम और विषयों के इर्दगिर्द से इनमें एक विकास समुद्र की दूरी थी। अमेरिकियों ने जान लिया कि वे अपनी शक्ति से कुछ बना रहे हैं। उन्होंने इसे समासिक विरासत के रूप में नहीं बल्कि आकार निर्माण के यंत्र के रूप में ग्रहण किया।

भाषा का ऐसीपन पहले अक्षरों में आया। 18वीं सताब्दी के उत्तरार्ध में। बेहारी मंदारों और कीड़ों ऐंडी जीवन्त की बातचीत और तिकन के बुद्धिमानों में भी इस भाषा के दर्शन हुए। गवर्नर टीमर के माफ़ 'दि कॉन्ट्रास्ट' में विटेन और अमेरिका की बोलियों में एक पहली बार विचारणा पड़ा। टीमर के 40 साल बाद वायस्टस लॉय स्ट्रुट ने बोल्डाल की अमेरिकी भाषा को प्रथम बेसी की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आर्नेस 'विगतो पैरल' और एच० स्टर्न की आरम्भिक कहानियों में न्यू इंग्लैंड की बोली का प्रथम बार साहित्य में प्रवेश हुआ। मार्क ट्वेन ने अपनी 'हक्सबेरी फिन' एकदम बोली में लिखा किन्तु यह पाठकों का मनोरंजन तो कर रही थी पर स्वयं बोली वाले इनसे प्रसन्न न थे किन्तु सैरक का अपना काम होता है। जब उन्होंने अपना काम कर दिया तो निश्चित हो गया कि विजय हो चुकी है। और जब इस प्रश्न को हल करने के लिए निर्णायक युद्ध न होय। अब यह पटल न था कि माध्यम के प्रयोग का भाग अमेरिका को भी मीलना पड़ेगा। अब लिखने और बोलने का भाषा में पर्याप्त अंतर था।

किन्तु इनके बाद भी अमेरिकी साहित्य की कुछ बेजोड़ रचनाएँ समासिक संज्ञा की होती नहीं मिली हैं। हेनरी जेम्स ने इसी रीति में लिखा। चित्तों विचारों मेंपाइको राजनीतिक जगताओं साहित्यिक ब्राह्मणों में यही रीति चलती रही है। इनकी बीच वापुस कलाओं में नई बोली की शक्ति भर जाती। समुद्र का निनमा लकी सत्ताओं की अक्षरों के सत्त्व्य अपराध और ऐसकूद बोरिपाटों रीतों इस नई भाषा के साथ में आ गए। इन समुद्रिक बिना इन जगताओं का अमेरिकी मन पर अपना प्रभाव न पड़ता। उपन्यास में भी इसका प्रवेश हुआ जिसके उदाहरण एंडर्सन, मुई, माइनर हेमिन्ग्वे फ़ैरस थॉमस, स्टोनबेक आदि हैं। इन सबकी अपनी अपनी रीति थीर बना है पर ये सब एक नई बोली के आकार हैं। अमेरिकियों की दृष्टि में भाषा को छोड़कर उसे फिर से जोड़ना नहीं पड़ता जैसा कि जगत् में किया था। अमेरिकी बोली से एक इतनी ठोड़ी से निवृत्त हैं कि उन्हें पता मुश्किल है। किन्तु वो समझते हैं कि वह हैं वे अमेरिकी अनुभव के एक घंटा हैं।

यह समुद्रिक सबसे पहले सीमांत जीवन से आई। महाशय ॥ मुने से

बंगाली प्रतिस्पर्धित और संम की कहानियों की शुरुआत हुई। फिर मपर बने और बङ्गन मने जाने मिलीं। भाषा की यह समुद्रि मङ्गुरों संभमुरजकों मपरामों, मुठ और सेनाओं और व्यापारियों की मुताफे की नेत्रताहार्ड से भी आई। मय में विद्याल दर्शकों नामे सेमों रममम और सिनेमा रेडियो मुमम मंगीठ बाङ्ग और मूय सराफा बाजार और मङ्गुर संघों ने इस समुद्रि में योग दिया। मने मय (और पुराने मयों के मय मयों में प्रमोम) सामान्यत किसी पेते के मन्द से निकलते हैं मा फिर मम कुछ मयों के द्वारा निकलते हैं जो सेमों या कला का ममिपुमक ग्रहण करते हैं। मय में ये मन्द निरबक भी मग सकते हैं। किन्तु सतत प्रमोम से यह निरमकता छुट जाती है और ये मय जनता में पुन-मिल जाते हैं।

ममेरिकी भाषा की सफमता का रहस्य यह है कि ममेरिकी जीवन की मीठिक और सामाजिक तरमता ने भाषा की तरमता के लिए मार्ग खोल दिया है। जिस समाज में दर्जाबन्दी होती है वही भाषा कई सख्यों में बंट जाती है जैसे धार्मिक और मयेंतर भाषा साहित्यिक और जनभाषा। ममेरिका में धार्मिकान्य मयों का मभाव है, इसलिए भाषा की बंभने से बच रही है। यह एक ऐसा रमतामक मय है जिसमें मरीक-म-मरीक भी सम्ममिठ है। सभी पापुनर कलाओं में पापुनर कला भाषा के निर्माक की कला है।

ममेरिकी भाषा पर जो समुदार प्रभाव पडे हैं वे मसे इनकार नहीं करता। सबसे गहरा प्रभाव सो स्वामिकता का है। ममेरिकियों में पर्याप्त मीगोलिक मानिता है। फिर भी जिस मय या स्वाम में मावमी रहेगा उसका प्रभाव उसकी बोली पर पड़ेगा ही। म्यु इम्पैण्ड का परिवार अब दक्षिण में बसता है तो उस पर वही की बोली के मङ्ग का प्रभाव पड़ता ही है। मारमय की बात है कि इर्तण्ड की विभिन्न बोलियों का प्रभाव विभिन्न सेमों में मय की स्पष्ट है। मरी बोलियों बामों का इस मङ्गम में उन पर कोई बिरोप प्रभाव नहीं मीगता। ममेरिकी स्वातीय बोलियां इमिस से कम विमष्ट हैं। इम्पैण्ड में हजारों मय का इतिहास ऐसा है मय वही सङ्गों मादि का कोई मकता प्रभाव न मा। इसके विपरीत ममेरिका में संमार-मयस्था महुत ही मङ्गी रही है। फिर भी जसा मीमास्ड मायड ने महा है कि बोलियों के ऊर्फ का इस रेधारें सीबकर दिया सकते हैं।

सामय और माऊम ने 'ममेरिकन इमिया इन इडत कम्बरल सैटिय' नामक पुस्तक में 'बोलियों' के समुमायों (speech communities) की मर्मा की है। इस पुस्तक में ममेरिकी बामी में स्पानीय भेशों पर पर्याप्त मराय पड़ा है। इससे मयट होता है कि ममेरिकी मङ्गाडीय में बोलियों के मने ममुराय हैं मा एक-दुमरे से पर्याप्त विभिन्न हैं। हर एक के पास मपने मुछ मने मङ्ग और मंग

हैं मिलते बहू दूसरों को पकड़ सकता है। इसी प्रकार भाषास्यक्तानुसार साहित्य की भाषा और बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है। इन सबके प्रतिरिक्त स्कूलों का प्रभाव भी है। सभी जगह अध्ययनक सर्वसा नये प्रयोगों का प्रतिरोध करते हैं। 'सिब्रिट' अमेरिकी भाषा के सम्बन्ध में 'भुद्धता' का दृष्टिकोण रखता है। ज्यों ज्यों अमेरिकी सिता की सीढ़ी में ऊपर चढ़ते जाते हैं सामान्य जनता की बोली से उनका सम्पर्क शून्यता जाता है। फिर भी वह बोली उनके जीवन में पहुँच ही चुकी है। उन्हें जब इसका पता ही नहीं है कि जो लफ्द वे बोलते हैं उनमें कौन-से साहित्य में प्रयुक्त हुए हैं और कौन-से उनके बोलियों के समुदाय के हैं।

अमेरिकी भाषा की वृद्धि का एक कारण है कि यहाँ भाषा की वृद्धि के कोई स्थिर सिद्धान्त नहीं है। इसका उदाहरण मर्केन के अमेरिकन सेंटेज की तीन किस्मों में मिलेगा। मेर्केन के सम्मुख दो सिद्धान्त थे। एक यह कि वह अमेरिकी भाषा कैसे बोलनी चाहिए न कि वह कैसे बोलनी जाती है। दूसरा यह कि वह किसी परिनिष्ठित भाषा की बरतना नहीं करता। उसके प्रयोग पर अधिक बल देता है। बड़े आदर्श की बात है कि सैलफ़ जिसने अपने जीवन में जनबादी मोक्षार्थ और अर्थ-समस्या का जनवीर विरोध किया भाषा के क्षेत्र में अपना जनबादी कैसे हो गया? उसके बाद के सभी विचारक उसके दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। हाँ यह बात सच है कि इस सम्प्रदाय में भी वे (मेर्केन भी) यह विचारना नहीं चुकते कि कैसे बर्बर जनता में बिजय पाई है। अविचार अमेरिकियों ने अन्य स्वार्थों की भाँति इस क्षेत्र में अविनायकवाद का बिगड़ दिया है। वे इस क्षेत्र में भी स्वाभाविकता का अनुमन करते हैं। यदि हम प्रकार उन्होंने ठीक-ठोस भाषा वृद्धि नहीं प्राप्त की तो वे सिष्टाचार को भी बचाते हैं। वही सिष्टाचार धीमे चलकर सत्ताधियों बाद भाषा और संस्कृति की अस्थिरता का परिणाम देने हैं।

यदि सीडिओ (academio) मानकी का छोड़ भी दें तो नये शब्दों का मूल्यों बन करने का लिए मानकी का अवन बनाव ही रहता है। कोई कह सकता है कि व्याकरण बाधक रचना ऐसी या नये शब्दों के सम्बन्ध में कुछ परिवर्तन का नाम चल जाऊँ है। किन्तु अतिव्यवस्था तो जनक जिज्ञा रहने की है। अविनायक मये निमित्त शब्द या जाने हैं। या जिया रह जाते हैं उनमें अधिकांश ऊबट-नाबड़ कपट पूर्ण या मिताबदी होते हैं। मेर्केन ने कुछ ऐसे ही मन्त्रेश्वर शब्दों का उदाहरण दिये हैं जिन्हें वह अग्रिम (accented) शब्दों की समझ देता है। जैसे रिपस्टर रिमिंग इन्टेड गजेट के लिए, चारहेनर के लिए मॉर्निंगिंग या लॉवर के लिए मैनिटरी इजीनियर। इसा प्रकार सेल्मरमणिन में कांटेक शब्द का क्रिया के रूप में प्रयोग विज्ञान के क्षेत्र में बौद्धवाद और आध्यात्म बाइबल पर

है। इस प्रकार के सम्य धमेरिका में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते से कम रहे हैं। इन सम्यों को प्रायः के सोम अपमार्ते हैं जो समाज में शिष्ट माने-जाने के लिए सामायित रहते हैं। जिन्हें हम बसपर प्रयोग कहते हैं जैसे इदस भी या वो नकारात्मकों का प्रयोग ये जनता की प्रकृति का परिचय देते हैं। शिष्टित-वन इनका बाड़े कितना ही विरोध करें साहित्य में ये स्वीकृत होकर रहेंगे।

जाया में जो शब्द पा रहे हैं उनके तीन प्रकार कभी सम्बन्धी शब्द जैसे टेकनिकम पेशों के या वैज्ञानिक 2. समुद्रि सम्बन्धी शब्द जिनका निर्माण प्रायः कियोर करते हैं और 3. मिलावटी (synthetic) शब्द। ये शब्द स्वाशस्तर मये ईकाद होते हैं। सुमंजित (soetnad) शब्द सामान्यतया इसी वर्ग के होते हैं।

प्रस्तुत उल्ला है कि कब तक धमेरिटी बोली अपनी शक्ति और विकास के शिखरत की रक्षा कर सकेगी। यह तो सत्य ही है कि यह समस्त शक्ति इस बोली में है क्योंकि विश्व के कोने-कोने में इसका प्रभाव पड़ रहा है और मुबक इतका अनुकरण कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि धमेरिका के वन की कपा ने इसे विश्व-भाषा का पव है किया है। विश्व भर के शिष्टियों की यह दृष्टि भाषा बन गई है। जिन्होंने यह भाषा नहीं सीखी है उनकी कामना इसे सीखने की है।

किन्तु अब बड़े माध्यम (big media) साहित्यिक आविष्कारों का मुख्य बाहुन हो रहा है। इस आविष्कार में एक प्रकार की कृत्रिमता पा रही है। धमेरिकी सांस्कृतिक व्यापारबाध इस पर हावी हो रहा है। सर्वत्र आपको वैसा पैरा करने की धून दिसलाई पड़ेगी। साहित्यिक भाषा में शरीर कृत्रिमता तथा विषय और शक्ति का प्रभाव मिलेगा।

धमेरिकी बड़े माध्यम द्वारा भाषा पर प्रभाव की भी चतिरंजना नहीं कर रहा है। निश्चय ही इन बड़े माध्यमों में कार्य करने वाले लेखक धोपक नट धालोचक प्रादि परस्पर प्रभावित होते हैं। किन्तु भाषा के जो प्रयोग ये इनके मुँह से सुनते हैं उनका इनकी बोली पर ईवदिन की भाषा के प्रभाव से कम ही प्रभाव पड़ता है। टेलीविजन रेडियो सिनेमा प्रादि में शिष्टृत शब्दों पर अधिक बल दिया जाता है। किन्तु उच्चारण और शक्तिपम तो प्रयोग और वातपीत से कमते हैं। पर धाय टेलीविजन से वातपीत तो नहीं कर सकते हैं। सतरा यह है कि ये कृत्रिम शब्द नहीं धसमी प्रयोगों का स्थान न ले लें। सतरा यह है कि धमेरिकी लेखक कहीं यह न भूल जाएँ कि लाप स्ट्रीट की 'बाबिया सोम्स' या मार्क ट्वेन की 'हकसबेरी फिन' या जॉन एचो के 'फेब्रुस्त इन स्मैर' की भाषा में जो शक्ति है वह इसमें है कि इनमें प्रत्येक की भाषा ऐसी है जिसे साक्षी ध्यक्षित बोलत हैं। इस भाषा को ही कलाकार ने अपनी रचना में रखा पा। यह इनके द्वारा निर्मित कोई कृत्रिम भाषा नहीं। धावकस जिन प्रमुख

साहित्यिक पुस्तकों की नहीं है उनमें अधिकांश की भाषा इस प्रकार की ही क्रियम भाषा है। उसकी जड़ें किसी जनता में नहीं हैं।

पापुमर बगाने में कोई दोष नहीं है। भाषा की रंगीनी ध्वनि या अतिरंजन तो उसके गुण हैं। भाषा के अधिकांश अमेरिकी लेखकों की भाषा में दोष यह नहीं है कि वे जनता की बोली का अधिक प्रयोग करते हैं बल्कि दोष है कि वे उसका कम से कम प्रयोग करते हैं।

4. दशक और प्रौढ़ता लेखक

अमेरिकी संस्कृति में भाषा लेखकद्वारा की गयी स्थापना है जो रोम साम्राज्य के मध्यकाल में 'सर्कसों' का था। लेखक एक ऐसा यंत्र है जिसमें जनता और दशक दोनों समानरूप से भाग लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहें वह कितना सम्भव हो सके तब तक के लिए विस्मय का अवसर खोजता है। कुस्ती, वंश, बौद्ध पुनर्जात वास्तविक भाषा के क्षेत्रों के दर्शकों के रूप में अमेरिकी इसी वर्ग मानना का तो परिचय देते हैं।

दूसरे ऐतिहासिक सम्प्रदायों के मुकाबले अमेरिकी मनोरंजन में हिता का धन कम है। 'कार्टून' या 'एम्पेक' की भाँति यहाँ नर-मेघ नहीं होता। सैटिंग साँझों की नक़ाई नहीं होती पेरिस की तरह विमोहित नहीं सार्वजनिक फाँसी नहीं जैसा ब्रिटेन में हुआ था मुर्तियों की नक़ाई नहीं आदमियों से खेद-आर्तों की नक़ाई नहीं। अमेरिकी सभ्यता में झूठा हो सकती है पर वह समस्त सार्वजनिक ऐश्वर्य में नहीं प्रदर्शित की जाती। कुस्ती वाक्पितृ पुनर्जात और आदम-होकी में ही जो कुछ निरवस्था है वह है। कुस्ती तो अब टेलीविजन पर एक मजाक बन चुकी है। इनामी नक़ाइयों में भी अब जाने नहीं जाती। जैसे ही मनोरंजन में बड़े लघुधर्मों का रूप धारण किया उनमें से निरवस्था निपल जाती। उसका स्थान गुड गेम समाजों में से लिया।

किन्तु इन लघु-समाजों में अब प्रौढ़ता प्रदर्शन से काफ़ी मनुष्य का धन है। पहल के अमेरिका में जब काम ही जीवन का उद्देश्य था मनोरंजन नहीं के सामाजिक उल्लेखों और सीमान्त जीवन में धराबलोरी तक सीमित था। एक ऐसी संस्कृति में जिसमें धिती में जीवित पड़े सावधानी बग़तनी पड़ती थी और कारणों में काम के घटे सम्ये से उपटित सैलकूट के लिए समय व्यर्थ काम था। गेमकू में धारणी सम्ये तक होता है जब उसके पास करतब हा और पास में पैसा ही धारणी करती गुण से पैसा बपटा हो। प्रौढ़ाधिक उत्पन्न में बुद्धि में कामकू पा १ में कमी की हुई और पैसा भी

1. Carthaginian.

2. Aztec

हाथ मगा ।

किन्तु बड़ी संख्या में देशकों को व्यापित करने के लिए ऐसे खेल भी तो हों जिनमें किसी का सम्मान बाँध पर लगा हो जिससे देशकों को मानसिक प्रामाद मिल सकें । यह तब सम्भव हुआ जब कुर्वत के सम्बन्ध में अमेरिका के धनिकों ने 'अपराध' की भावना छाड़ी और उन्होंने पुइरीड पालो गीका बीड़ बोल्ड प्रावि ग्रामिणालय खेलों का विकास किया । धनिकों ने जिन खेलों को सबसे पहले अपनाया वह 'अपराध' था । किन्तु कुछ समय तक इसे वे अपना बनाकर न रख सके । 18वीं शती के मध्य में सबसे 'बेसबाल' की धुन सवार हो गई । 1880 के आसपास तो यह एक बड़ा व्यापार हो बन गया । यही बात फुटबाल के बारे में हुई । जिसका प्रारम्भ पूर्वी कालजों से हुआ था । मछली मारना शिकार, लॉन टेनिस गोल्फ सबकी गुरघात कैप्टनेबुम धनिकों ने की पर ये सब बाद में मध्य वर्ग व खस वर्ग गए ।

बेस्बल में अपनी 'व्योरी थोड्डि केडर बलास' में खेलकूद की ऊपरी वर्ग की वस्तु बतलाना है । मजदूर वर्ग का इससे कोई मतलब नहीं । उसकी स्थापना है कि खेलकूद निरुद्ध मनोभावनात्मक विकास का एक रूप है । यह बर्बर धर्म का पुनर्जीवन है । किन्तु यह सत्य है कि खेलकूद की आवश्यकता मध्य और निम्न वर्गों को जितनी है उतनी बुराओं को नहीं । धनिक तो धाव भी अपना मनो रंजन सीमड़ी के शिकार नीका-बीड़ पोमो आदि से कर लेता है किन्तु कम जो ग्रामिणालय वर्ग के खेलकूद के धाव के सामान्य जनता के खेल हो रहे हैं । गोल्फ खेलने वाले म्युनिसिपल लिंक पर छाये रहते हैं । टेनिस अब सर्वत्र सेला जाता है । पुइरीड और कुत्तों की बीड़ अब बाजी मगान के लिए प्रसिद्ध हो चुकी है । अब तो मध्य वर्ग वाल इन सब मनोरंजनों में जाग्रि संख्या में सम्मिलित होने लग गए हैं क्योंकि मध्य और निम्न वर्ग के लोगों के हाथ में पैसा आता है वे मनोरंजनों की ओर बीड़ते जाते हैं । वे इन खेलों में साहसिक किया उत्तेजना गति और एक्ति देखना चाहते हैं । इन दृष्टि से बीड़ बालेडबाल आइस हॉकी का प्रभाव बड़ रहा है । तुलना की दृष्टि से तो अब 'राष्ट्रीय खेल' बालेड-बाल प्रभाव होता जा रहा है ।

बड़ी संख्या में देशकों के खेलकूद के मानदंड के परिवर्तन होने के साथ उसकी स्थिति में भी परिवर्तन आ रहा है । जो बात बड़े माध्यमों के सम्बन्ध में हुई वही बात खेलकूद के सम्बन्ध में भी हुई । ये भी बड़ी बड़ी संस्थाओं और बड़े पृथीपतियों के हाथों में पड़ गए हैं । अब तो फुटबाल बालेडबाल या टेनिस के खेलों में बाहरी रूप में भी सीढ़िया रहता मुश्किल हो गया है । राष्ट्रीय गिलाड़ियों के आसपास तो एक घुघ मेरा बन गया है । कालेजों का फुटबाल खेल कभी एक्ति और स्कूटि का रंगम

मा। पर अब तो यह भी विशुद्ध कलाबाजी रह गया है। फुटबाल के सम्पादन पहले से ही सारी कमाएँ बचा देते हैं। खिलाड़ी के लिए तो बस उस पर धमक करना रह जाता है। पण्ड-पण्डे खिलाड़ियों को जुटाने के लिए पीसे बहाये जाते हैं। स्पुटाक याकिवों की बिस्मयिबद्ध के पीछे अब वा 'बड़े व्यापारियों' की ही विजय है।

'फुट' के उद्योगों में (बाजी लगाने को छोड़कर) अमेरिका में प्रतिवर्ष 10 बिलियन डॉलर खर्च होता है। गोलक घोर मोटर बोटिंग जैसे छोटे खेलों पर सिनेमा के 'बाल्ल' बाक्स से अधिक ही पैसा खर्च होता है। 'बाउलिंग' पर ही अकेले बीवाई से तीन बीवाई बिलियन डॉलर के खर्च का अनुमान है। फुटबाल के फाँफुओं में महत्वपूर्ण 'बाजी' की रहन है। अनुमान है कि प्रतिवर्ष अमेरिका में फुटबाल की बाजी पर 8 बिलियन डॉलर खर्च होता है। इतनी ही बड़ी रकम बेसबाल पर खर्चे होती है, बिघपकर बम्बेसीरीज में। निश्चय ही अमेरिका में पिछले समय के मुकाबले यह रकम बहुत बड़ी है।

मजदूर बात यह है कि रॉबर्टों के इस चलचक्र में व्यापारिक भावना के प्रवेश का विरोध अमेरिकी जनता में नहीं देखा जाता उन लोगों ने मान लिया है कि बेसबाल फुटबाल बास्केटबाल या बाक्सिंग अब बड़े व्यापार बन गए हैं। सब तो यह है कि वे अब इसे अधिक महत्व भी देने लगे हैं। जब वे यह सुनते हैं कि डिमेगिओ जैसे खिलाड़ी को 8 सप्ताहों में बेतन मिलता है तो उन्हें धारणपूर्ण प्रसन्नता होती है।

ध्यान देने की बात है कि 'बेसबाल' के इतरतरंगामे में 8 दिवस काष्ठ की निकाल देने के लिए बार-बार असफल प्रयत्न होते हैं। कहा जाता है कि यह बारा प्राक-प्रीतिपिक काम की अपराधी-व्यवस्था का अवशेष है। नाइंसा के मुकदमें (1910) में फैसला देते हुए अब से लिखा है कि "जब खिलाड़ियों को घरे-बगरानी माना जाता है तो इससे क्या फल पैदा होता है कि उन्हें अच्छा बेतन मिलता है। केवल अधिनायकबाजी ही मान लेंगे कि प्यारा बेतन बाने बासा बाग दास नहीं रह जाता।" ऐसा प्रतीत होता है कि बेसबाल खेल के प्रेमियों की हम बात से कोई धक्का नहीं लगता कि उनका प्रिय खेल एक ऐसी व्यवस्था पर आधारित है जिसमें खिलाड़ी को बीवाई के रूप में ग्रहण किया जाता है। उसे अपने अधिकारों के लिए सीढ़ा करने का अधिकार नहीं। कभी-कभी खिलाड़ियों के प्रेमी इन व्यवस्था के कारण शराब भी होते हैं। 1900 में जब जैरी राबिन्सन की 'स्पुटाक ऑफ द' ने खरीद लिया तो उसके दुर्भाग्य शरार अनुपातियों ने या तो उनको धाड़ देने या अपना प्रम एक पणित शत्रु का समर्पण करने की सोची।

अमेरिकी खेलकूद का मानविक व्यापार कबीलायी गर सामंती है। बेसबाल

कलाएँ और पापुमर संस्कृति

इसका प्रथम उदाहरण है। इसने सभी प्रतीक टोटम के हैं जैसे कम टारगर्स इंडियन्स पाइरेट्स बाबर्स, और ब्रेव्स। इनमें कभीनों की भाँति दुश्मनी भी रहती है। बर्बक टीमों का खेल देखने नहीं बल्कि किसी न किसी टीम को सिद्ध जाता है। वह अपने को एक टीम से मिला लेता है। कभी-कभी तो वह एक खिलाड़ी से ही अपना एकात्म्य कर लेता है। जो सम्मान प्रीस में प्रचारमी के मयाजियों के लिए मुरजित है वह यही टीमों के कप्तानों को मिलता है। नै प्रमर बना विजे जाते हैं।

जनता और खिलाड़ी के बीच एक टीमी का सम्बन्ध बन जाता है। विशेष कर बास्केटबाल में। प्रत्येक खिलाड़ी को अपनी एक टीमी होती है। बर्बकों की भी टीमी होती है। वह अपनी टीमी का नाम भी विशेषज्ञ होती है उत्पन्न करती है अपनी टीम की प्रशंसा में बीजें मारती है। दूसरी टीम को नीचा दिखाने की कोशिश करती है। 'हाट डॉप' लेती है। सोडावाटर पीती है।

प्रत्येक खेल की अपनी कलाएँ (legends) होती हैं जो उनके सर्वोत्तम खिलाड़ियों के आसपास बन जाती हैं। बसबाल के मशहूर खिलाड़ियों की कलाएँ घन्टायों में बार-बार निरुन्मयी रहती हैं। कभी कभी खेलकूद के बालकों के खेलकूद राजनीतिक कामों के भी लजक बन जाते हैं। घायब य सोचते हैं कि राजनीति भी तो एक खेल ही है। हाँ इसमें बोड़ी बनाबट स्यादा हावी है। खेलकूद के माध्यम राष्ट्रीय व्यक्ति बन जाते हैं। सड़कपथ में जिसे लसकूद का चौक लय गया उसे फिर यह चौक घाये भी बना रहता है।

प्रत्येक खेल अपने प्रमर एक उप-संस्कृति ही होता है। मानवजातिजनों को इसका अध्ययन करना चाहिए। यही बस्त्रियों के क्षम में बाबिसय और बास्केटबाल आदिता यहूदी इटालियन पासिष और ह्यूजी लड़कों को घाये के लिए अपनी महायता देते हैं। ये खेल बन कमने और समाज में कम सम्मान वाले लोगों के भावनात्मक जिजाबों को सही दिशाओं में ल जाने का भी वाय करते हैं। जिसपर ह्यूजी बच्चों के सम्बन्ध में तो यह बात और भी सत्य है। ये 'बिगलीग' बसबास और बाठसिग प्रतियोगिता में तो सम्मि नित बन निय गए हैं पर गोष्क और टेमिस की प्रतियोगिताओं में हर्दू प्रब भी घामिस नहीं बिजा जाता। जू सुई और वीकी राबिसन राष्ट्रीय मायक ही नहीं अपनी जानि के बसबीर्य क भी प्रतीक बन गए हैं।

एक प्रमर त्रिष पर बिगाल खेलकूद ने जनता का धैर्य तोड़ दिया है वह है घूम। बुस्त्रियों के यष्टियों की आसबाजियों से घमरिबी पहले से ही परि बिष य और इनलिए इने यम्भीर खेलकूद भी मानना उन्होंने छाड़ दिया था।

इस घटावटी के हमारे सप्ताह में बेसवास में कई बार टीमें में बूझ लेकर खेल चौपट कर दिया था। बाद में इस खेल में नीतिबद्धता की रक्षा के लिए जज के एम० सीडिस के अध्यक्षता में नियम बनाकर उपाय किए गए। इस प्रकार के प्रान्तरिक अनुशासन से बिगनींग बेसबास तो फसाफूसा। 1940 के बाद कासेन बास्केटबाल में ऐसी ही बटमाएँ हुईं। सच तो यह है कि इस प्रकार का कुछ झप्टाचार ऐसे खेलों में हाथा रहता है जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इबारती बार मुड़-नीतिबद्धता' धीरे 'धोरप के मुषों' की जर्बा मुनने पर कोई सपारबारी लसबद का सेखक सीचता है कि कासेनों में भी बड़े दर्पकों के दबाव में धब धीनिया पिलाड़ी समाप्त हो गई। प्रसिद्ध ह्विस ने कहा है कि उनका 21 वर्षों का काम जब वे सिकायो भिद्वबिधामय के प्रमान के इस रूप में याद किया जाएगा कि मैंने इस काम में फुटबाल बन्ध करा दिया।

बहुत-से कासेनों में गुप्त रूप से फुटबाल के खिलाड़ियों की भर्तों के लिए धन खर्च किया जाता है। उनकी विरा के लिए भी इसी प्रकार गुप्त रूप से धन खर्च होता है। एक बार एक मूठपूब कासेन प्रसिद्ध टीड के डेनसर कीडर ने ध्यंगपूबक घोषणा की गुप्त रूप से रुपये खर्च करने से बचछा है कि यही रपया धुमेधाम धधधे-धे-धधध खिलाड़ियों को रुकन में भर्तों कर उन पर खर्च किया जाग तो धादधय है कि उनके पास इन सम्पत्त में बहुत-से धावेदन आए। इस प्रकार की बटमाओं में वररपर सम्पत्त है। जब धापको धधछा धेसने के लिए पूछ मिलती है तो कृप धेसने के लिए पूछ भी मिल सकती है। धादधय की बात यही है कि ऐसा करने वालों की संख्या अमेरिका में इतनी कम बना है ?

नीतिबादियों और मनोबलानिबों ने अमेरिकी खेलों में दर्पकों की निष्क्रियता पर बहुत-कुछ मिगा है। रोम ससृति का जब बिनास हुआ तो सबसे भी धानन्द के लिए धानन्द की प्राप्ति का सोमबाला था धीरे बनारजनों में दर्पकों का भाग निरिय ही था। यह सच है कि अमेरिकी खेलकूद में केवल बाहरी मनोरंजन होता है। दर्पकों को प्रान्तरिक ललित धर्ष नहीं करनी पड़ती। यह भी सच है कि अमेरिकी खेलकूद से मानसिक परिपक्वता केर में धाती है किनु बिग में बोर्न धूमरी सम्पत्ता ऐसी नहीं है जिनमें अमेरिका की मांति राठी राठ करमन की प्राप्ति हुई हो धीरे यह भी किसी एक बय की नहीं बल्कि सभी बयों का प्राप्ति हुई है। प्राचीन माधृतियों में धमकूद विध्वंसालमक था। अमेरिका में रोमकूद के प्रति बप्रागरी है। अमेरिकियों में प्राकृतिक बाठावरण से हटने की जो बनी धाई है उसे रोमकूदों में पूरा किया है।

जोरा में बहा था रोमकूद के माध्यम से युवक अपने नागरिक जीवन को

कसाएँ और पापुसर संस्कृति

बनाता है।" इस दृष्टि से खेलकूद की भाँति अमेरिकियों ने राजनीति और युद्ध को भी एक खेल ही समझा है। खेलकूद में टीम कप्तान की कल्पना अब सामान्य मन में घुस गई है। अस्तु की भाँति कोई यह भी कह सकता है कि खेलकूद का काम प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि रचनात्मक है। यह भी कहा जाता है कि खेलकूद ने अमेरिकी जनतंत्र को मजबूत करने में गुरुता वाला काम किया है। अन्यथा समस्त तनाव भावनाएँ फूटकर हिंसा का रूप धारण करतीं।

इन सब सिद्धान्तों के बारे में सत्य यह है कि अमेरिकी खेलकूद समग्र संस्कृति की शक्ति और बल बन रहने की इच्छा की अभिव्यक्ति करते हैं। कभी-कभी यह उम्माद यह अभिव्यक्ति बदचक्रण रूप भी धारण करती है। कभी-कभी यह उम्माद का भी रूप ले लेती है। कभी-कभी 'बाक्स पाश्चिम' और प्रस को सुमाने की छोटी भावना प्रधान हो सकती है। कभी इसमें जुभाड़ी रैकेटिंगर पासबाज पाकि का भी सम्मिलन हो जाता है। फिर भी इन खेलकूदों में इतना प्रवरण है कि इनके माध्यम से अमेरिकी दर्शकों और खिलाड़ियों की जीवनी शक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

अमेरिकी खेलकूद की सबसे आसानीय बात यह है कि अब उनमें निष्क्रियता अपनी सीमा पर पहुँच गई है। अब तो अब बहुत निष्क्रिय न रहकर स्वयं शीक से खेल के मैदान में उतरने लगा है। लेकन-कला बिजकला फोटोग्राफी रंगमंच बड़ईमिरी कारीगरी भोजन कला बदनकला की भाँति स्पोर्ट्स में भी अब शीकियापन बढ़ रहा है और अमेरिका मध्यम शीकियों का देश हो रहा है। अब बसबाज फुटबाल और बियसीय बसबाज के खिलाड़ियों की मर्ती साधारण बच्चों कासब के विद्यालयों और शहर की सड़कों से होने लगी है। युवा अमेरिकी को अब कुस्ती शीक की शीक का शोक लग गया है। बहुत स लेनों में तो हार्ड-स्कूल बास्केट बाल बढ़ा प्रिय मनोरंजन बन गया है। इनके प्रतिरिक्तर संपटित खेलकूद और हँसी मजाक पर भी जोर दिया गया है जिसमें बासिय अमेरिकी धार्मिक हास है। गरीब फुसत में समुत्पन्न पर सीरने बालों और मय-मूखों की भीड़ लगी है। पत्रक के मौसम में धापको मध्यमर्ग के शीक भारी मक्या में खेलकूद में धार्मिक होने के लिए जाते दिखाई पड़ेंगे। गोरक के खेल का प्रबन्ध अब म्युनिसिपलिटियों को लेना पड़ा है क्योंकि उनके शीकियों की संख्या काफ़ी बढ़ गई है। मोटोरो की भाँति से दूर-दूर के म्पानों में मछपी मारना भी संभव हो गया है। मक्या की दृष्टि से बासिय अमेरिका का सबसे बड़ा राष्ट्रीय खेल बन गया है।

अब शीकियापन का भी धर्म-विस्तार हो गया है। पहले शीकिया खिलाड़ी कह रहा था जो खेलकूद के अपने हुनर का बखता न या हार्मिक प्रति योगिताओं में वह भी भाग लेता था। इन धर्म में शीकियापन तो अब घट रहा

क्योंकि यह व्यापारबाह के विस्तार के कारण ऐसे प्रतिस्पर्धी निताइयों की संख्या में काफी कमी हो रही है। सबसे अधिकतर निताइयों को अपनी कुरसत का समय घसकू में बिताते हैं काफ़ी संख्या में बढ़ रहे हैं। इस प्रकार घसकू यह पनाथों और मनोभावनाओं के सुरक्षा बास्त्र से भी बढ़कर अमेरिकियों को मानसिक तृप्ति दे रहा है। जिन्हें कारखानों में कुरसत नहीं मिलती और जो अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कुरसत के समय घसकू के माध्यम से करते हैं वे जनता की भावनाओं को महार में नहीं बह सकते। इस प्रकार घसकू में टीकियापन का अर्थ अन्तर्जनों और वर्गों के लिए होने वाले विरोधों के कारण उत्पन्न और पूजा की भावनाओं को भी रोकता है।

वास्तविकता यह है कि अमेरिकी अपने देशों में ऐसी धार्मिक भावनाएँ कभी न आने देंगे जैसे स्पेन में साँचों की सफ़ाई के खेल को जीवन का प्रतीक बनाया जाता है। अमेरिकी घसकू की घरनी टीसी है। यह प्रसन्नता की शक्ति की अभिव्यक्ति करता है न कि बाँटकर भावना और मृत्यु की जहाँ काम काज अपनी क्षमता और साधन प्रति पर निर्भर हो ऐसे समाज के लिए वे खेल-कूद ही उपयुक्त हैं। इसमें यदि कोई देश के रूप में घसकू को ग्रहण करना चाहे तो ऐसा भी कर सकता है और नहीं तो उसे टीकिया निताइय खेले का संशोधन तो मिलता ही है।

5. निम्नता का स्वप्न और अस्तित्व

इतिहास में कभी जनता के स्वप्नों को आधार बनाकर इतने बड़े स्वप्न का निर्माण नहीं हुआ। पाप दिन या रात के किसी समय एक अन्धेरे विद्येटर में बसे जाइए और जैसे ही बही बीड़े पर तस्वीरें गुजरने लगती हैं पाप काम प्रति हिता अपराध और मृत्यु के समुद्र की लहरों पर तैरने लगते हैं। सुन्दर-ने-सुन्दर लड़कियाँ रोमांटिक पुरुष अस्पर्श नहीं टीसी के अस्थ सुन्दर और उमरे उरोज सब कुछ आपके लिए ही मायूम पड़ते हैं। आप घर आकर सोते हैं वी बही सपने आते हैं जिन सपनों के आधार पर हम बिर्भों का निर्माण हुआ है।

जीवन और अर्थ के मध्य मानवधर्मों में पाप जनता को अपना ऊपर उठा दिया है और आभिजात्य वर्ग का इतना नीचे कर दिया है कि यह सब निम्नता पाते हैं। यह दृष्टि बन भावनाओं की दृष्टि से बाँटने दुःख है। उचित नहीं धार्मिक जिज्ञासा कि निम्न-निम्नता अन्धेरे करण है। यह इतना एकात्मक है कि उसे पाप जीवन धार्मिकी की संज्ञा दे सकते हैं। इन वर्गों की कवि ऐसी है कि निम्न पाप नके अमेरिकी मध्यम की कवि की संज्ञा दे सकते हैं। वे निम्नता समिति नहीं जाते कि भावनात्मक दृष्टि में उन्होंने जो गी दिया है

उसकी इति पुरि नहीं होगी। बल्कि वे हमसिए जाते हैं कि वह उसका प्रति बिम्ब है जो उम्होंने धरती जीवन में नहीं पाया है। हाँ इतना अवश्य है कि इसे पाया जा सकता है। इस प्रकार सिनेमा एक स्वप्न है पर पलायनवाणी स्वप्न नहीं। वह महत्वाकांक्षा और मिथि का भी स्वप्न हो सकता है। प्रसन्न है कि भस्मनात्मक धनुमणों को छोड़ता हुआ कोई नय जीवन-स्तर को प्राप्त कर सके।

कठिनाई यह है कि भावनात्मक समुद्रि और महत्ता यथार्थ नहीं पाई जा सकती। घासकर एक ऐसी सम्पत्ता में जो व्यवहारवादी और अन्ध-प्रमान है। अल्प इसका विवरण जैसे ही नहीं कर सकते जैसे कि बाप पैपनीकोला बिजनी बली रेडियो कॉमिक पुस्तकों या सांख्यिक मताधिकार का करते हैं। उसकी व्यास है जब सैरुडों सिनेमाघर उस लुप्टा की पुरि का उपाय करते हैं तो जनता नहीं जाएगी ही। किन्तु वे किसी बात में पलायन नहीं कर रहे हैं। वे बाहर जा रहे हैं। अपनी टेक्नीक से सिनेमा इसे ही समझ करता है। कैमरा दृश्यों का चुनाव करता है कहानी धारण करती है वह मूल और वर्तमान का वाना-वाना चुनती है काल और वेध छ पर विभिन्न उपायों से वह तमामों का निर्माण करती है। दर्शक का मन आकर्षित रखती है वेध और संस्कृति की सीमाओं को पारकर वह मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों को छूती है। सिनेमा ने हमारी कल्पनाशीलता और भाव-जगत् को जितना अपनी किया है उतना अन्य किसी पापुनर कला ने नहीं किया।

इसी ने सिनेमा ने महत्त्वपूर्ण बन-कला बना दिया है। गंध के निर्माण में पत्तों का अधिक हाथ है। रेडियो जनता तक अधिक ठेकी से पहुँचता है। टेलीविजन और अधिक विस्तृत सत्ता को घर में ला रहा है। किन्तु बूँक सिनेमा ही अधिक स्वादी रूप में जनता के स्वप्न और उसकी कहानियों से सम्बन्ध रखता है इसलिए उसका अपना अर्थ बना हुआ है। यदि टेलीविजन को यह स्वाद लेना है तो उसे स्वप्नों काका यह काम अवश्य करना पड़ेगा।

अत्यन्त दृष्ट-दृष्ट स्वप्न में इतिवन की मापीशर दर्शकों से सिनेमा का प्रारम्भ हुआ। फिर चित्रों से सम्बन्धित जाने जाने व्याख्यानों में सेंटर्न स्टाइलों के साथ यह विद्याया जान गया। इसका अपने स्वतंत्र दर्शन में थे। पर दीप्ति ही इसे अपने स्वतंत्र दर्शक भी मिलने लगे फिर तो सारे देश में इसका प्रचार ठेकी में हो गया। संशोध की बात है कि इसके प्रारम्भकर्ता पूर्वी नगरों के बपुर्गों के उद्योगों से संबंध व्यक्ति थे। इनमें मध्यम वर्ग के यही ही अधिक थे। वे सफलता और धन पाने के लिए सामाविष्ट थे। प्रारम्भ में ही इस प्रिन्टिब-जैसे विरवात निर्देशकों और कैमरा तथा साउन्ड क सर्जों में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले व्यक्तियों का सहयोग मिल गया।

प्रारम्भ में ही हमने मनीषता का तेजी से संचार होता रहा। प्रारम्भ के

माधुरतापूर्ण नाटकों के स्थान पर पूरी सम्बाई की 'फीचर' बनने लगी। सिनेमा एक रीत के 'प्रिन्स' के स्थान पर दुहरे फीचर का धाम का मनोरंजन बन गया। नितारों की प्रकाश बन पड़ी। ये नायक-नायिकाएँ जनता की धाराध्य बन गईं। मूक-चित्रों के स्थान पर बोमते सिनेमा का आधिपत्य हो गया। नितारों और प्रदर्शकों की पूरी पीढ़ी ही पड़ी हो गई। फिर ये चित्र रंजीत भी बनने लगे। टैमोविजन की प्रतिद्वन्द्विता में तीम आयामों (three-dimensional) की तस्वीरें बनने लगी। पहले भी थोड़े कर दिये गए। इस विकास के प्रत्यक्ष स्तर पर इस उद्योगमें 'सफ्ट' घाव। जनता सफसतापूर्ण सामना किया गया। पर हार सफसता गई निराशाओं को जग्य देती गई। इस प्रकार सिनेमा का इतिहास माधुरियों की स्थिति से भरा पड़ा है। पर तकनीकी परिवर्तन इसे सदा बचाते रहे हैं। इसे दूगरे बड़े माध्यमों से कड़ी प्रतिद्वन्द्विताएँ करनी पड़ी हैं पर यह उन सबको सदा पीछे छोड़ता आया है। इसल सदा दर्शकों की माड़ी पहचानी है। इसने सदा विरोधी जनता का तापमान लिया है जो हामीबुड को संताम का बर समझनी रही है।

'बड हाने का समिन्धाय' धम्य माध्यमों की भांति इसे भी मोपना पड़ा है। सिनेमा उद्योग की समस्या मुख्य रूप से वितरण की समस्या रही है। इसलिए इसका बड़ापन सिनेमाघरों के नियंत्रण में रहा है। प्रथम बड़ा 'फिस्म-एक्सचेंज' 1915 में सचीव न्यायामय द्वारा बंद कर दिया गया। इस घटी के बीते में सिनेमा उत्पादकों ने सिनेमाघरों की मृगबजा पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। वे ध्वनि-उपकरणों के निर्माताओं और बड़ महाजनों के साथ मिल गए। संघीय न्यायामय ने फिर हस्तक्षेप करके फिस्म उत्पादकों और सिनेमा-मृगबजाओं को एक ह" तक समान कर दिया। उन्होंने 'बनाव-मुक्ति' पर राक लवा दी। फिर भी पत्रों और रेडियो के उद्योग से सिनेमा उद्योग में झर्क है। इस उद्योग में इजारेदारी की समस्या नहीं है। यद्यपि बड़े उत्पादक इस उद्योग पर छाये हुए हैं किन्तु प्रतिद्वन्द्विता की भड़ाई वास्तविक है। इस उद्योग में 'स्वतंत्र' उत्पादकों के लिए सबसर है। इस ही में विदेशों में बनी फिस्मों से भी मुद्राविषा पड़ गया है।

सिनेमा की समस्त उत्पादकों की धावि या मुद्राविषे में घाने वाले की धावाइ रवाने की नहीं है। समस्या बन्तु और भावनात्मक स्तर की है। बूतरे धामों में यह मुनाकायायी और दर्शकों की रक्ति और जनकी भाँप के मृस्पादन की है। बिच बनाने वाले चित्रों को बना वा एक रूप मान सकते हैं। किन्तु फिर भी वे इसे ए" लेमी बना ही समझते हैं जिसकी मध्यस्थता उस उद्योग से करना चाहते हैं जो इसे बनाता और बेचता है। इसकी पैशास्य चाहे जैसे हुई हो तो यह उद्योग मात्र अमेरिका के बड़-बड़े उद्योगों में एक है। उत्पादकों,

निर्देशकों कलाकारों को जैसी जनसुझावें मिलती हैं। उत्पादन प्रोड्यूसिंग बितरण, विपणन विज्ञापन के विषयों इस उद्योग में सब हैं। इसका जाल छोटे-बड़े शहरों से लेकर गाँवों तक फैला हुआ है। संसार के प्रत्येक कोने में इसे भेजने के लिए पूरा संरचना है।

धन्य उद्योगों की तरह इस उद्योग में भी जो पैसा समाले हैं उनका उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना ही है। जब धनाढ्यो पुरस्कार जीतने वाली तस्वीर 'वि द्रुवर मोर वि सराई मंत्र' एक बेटी ब्रह्म विभ से धाया भी भन न ला सकी तो उसके उत्पादक ने निरुपमपुत्रक कहा कि 'भाज से कला निर्वासित हो गई।' जब भी ऐसे कुछ उत्पादक धीरे निर्देशक हैं जो कला के उच्च मानक से विपदाग्रस्त हैं किन्तु इस सम्बन्ध में उनका तर्क है कि अच्छी कला से भी लाभ होता है। इसलिए जब अच्छे चित्र बनते हैं—धीरे ऐसे चित्र काफ़ी संख्या में बनते हैं—तो नास्तिक को यही विचार दिखाना पड़ता है कि इससे पैसा मिलना। काफ़ी सफलता मिलने पर ही निर्देशकों को ऐसे चित्र बनाने का सबर मिलता है। हाजीबुद्दीन की सबसे बड़ी समस्या रचना कमाने धीरे रचनात्मकता के बीच सम्बन्ध की है। जब नास्तिक इस सबकुछ समझता है धामसी मुस्लिम या धरमनात्मक इसे अपने से परे समझता है तो सिनेमा उद्योग में रचना कमाना एकमात्र उद्देश्य के रूप में नंगा होकर सामने आ जाता है।

कलाकारों के चारों धीरे काफ़ी धूमधाम है। पर यह भी सत्य है कि हाजीबुद्दीन में काफ़ी सुदृढ़ है। हाजीबुद्दीन में उद्योग के जो गुण हैं वे सभी उद्योगों में हैं—मशीन-निर्माण मशीनों का बंटवारा बड़े पैमाने पर निर्माण उपकरणों की बनावट सब सबी तरह की है। कामों का प्रत्येक स्तर पर बंटवारा है। सब कुछ मशीनी विधि से चलता है। हाँ यहाँ लोहा नहीं बसा जाता मानव की भावनाएँ वाली वाली धीरे बनाई जाती हैं। स्विच सेटिंग भी मशीनी है। हमने लेखक काफ़ी परेशान होया। उदाहरण के लिए मूस उपस्थान या नाटक को 'नाटका' (सिक्किम) पड़ता है अर्थात् उसे सिनेमा लायक बनाने के लिए इस पर धारा-छाँटा जाता है चाहे इसमें मूस कृति की आत्मा ही क्यों न मर जाए। इस प्रक्रिया में उसे कई हाथों से होकर गुजरना पड़ता है। सब उसमें सिनेमा के सब तरह आ पाते हैं। धामसी को समझने लायक छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना पड़ता है। उनका सब तक बार बार अभिप्रेत करना पड़ता है जब तक कि निर्देशक को सतोष न हो जाए। फिर उसे काट छाँटकर प्रथम रूप दिया जाता है। फिर सज्जकर बड़ा बाजार में धारा है। यही वह प्रक्रिया है जिसके लिए हाजीबुद्दीन की कथा है। इसमें यथार्थता बारीकियों का ध्यान होना ही बिनाई, गति एक कल्पित निर्देशक का अनुभव कमक धीरे वापस—धीरे सबमें एकपन शामिल है।

है। उत्पादक सदा जमठा के नये भूख का नाम उठाकर पैसा बनाने की फिज में रहते हैं। इस प्रकार एक समय हाजीबुद्ध में 'बदमाशों' का चक्र धापा फिर बायी-बायी से अनेक चक्र जैसे माफी विरोधी चक्र बी० येन चक्र, मीथो धीर बहुरी नस्ल विरोधी चक्र, सुप्रिमाने पश्चिम वालों का चक्र मुठ विवध-चक्र, कम्युनिस्ट विरोधी चक्र, बाइबिल कथा-चक्र और अपराधी वालकों की समस्या के चक्र धाये। किसी ने प्रचलित भूख का अध्ययन कर एक बीघा मिकामी। फिर नक़्क़शी बोज़ पक़ते हैं। धीर उस समस्या पर सब तक विश्व बनते रहते हैं जब तक बहु समस्या बायी नहीं पड़ जाती। हाल में संगीत धीर चमत्कार का घोर बहा है। दोनों सुरक्षित सैर-राजनीतिक माध्यम हैं। ये दोनों जवान दर्शकों को बचते हैं धीर से ही अधिक संख्या में सिनेमा देखते हैं। सचकियों के पैर, बुद्ध के बुद्ध दिल बाधने वाली कुर्से स्वप्नों के नृत्य संस्वन और उमिमा रोम बा मिक के साक्षात्कारों के पलम के दिन कुछ ऐसी बरतुरे हैं जिनके सन्दर्भ में बसती की संभावना ही नहीं है।

हाल में सिनेमा पर अधिक कर लगा है फ़मस्वरूप विश्व-निर्माण पर एका सदा कम हुई है। सिने-बुने कसाकारों और किसी बड़े डायरेक्टरों को बेर कर बहुत-सी नई उत्पादन की इकाइयाँ बनी हैं। सिनेमा उद्योग के वर्मघातन में अब कम किन्तु 'बड़ी' फिल्में बनाने का समय है। विश्व को अब छोटे-बड़े सभी सहरों में पहुँचना बढ़ता है। जिसका अर्थ है कि वित्तापन पर खर्च हब से अधिक बढ़ गया है। मध्यम खर्च की तस्वीरों का समय अब नहीं रहा। अब स्टूडियों 'बैकपाट' के डिडान्त पर चलने हैं। यदि अपनी 'बैकपाट' पर बच्चा नहीं किया तो फिर लागत भी बुरी समझिये। कम खर्च वाली धीर स्वतन्त्र प्रयोधों की तस्वीरों के लिए अब भी गुनाहवा है। इससे बहु सिद्ध होता है कि यदि तस्वीर ने ऐसे गुन हों जो परिपक्व मन पर असर डाल सकें तो भी साम हो सकता है।

सिनेमा बच्चों में सबसे अधिक प्रगति तकनीकी क्षेत्र में हुई है। प्रकाश धीर ध्वनि विम्यास, कटिंग धीर संपादन छिटों के निर्माण के क्षेत्र में जो सफ़-मठा मिली है उसकी प्रशंसा करनी पड़ेगी। किसी काम के लिए जबसर मिले वो हाजीबुद्ध जसमें सफल हो सकता है। अनेक साम-बो साम के अन्तर पर युवकों की कोई न कोई टोसी हाजीबुद्ध में भा ही जाती है जो यह बता जाती है कि कैसे कम खर्च में अच्छी तस्वीर बनाई जा सकती है। किन्तु पेट में धारा लेकर पाने वाला नहीं युवक धाये व्यवहारवादी जनों के फेर में पड़कर ठंभी-ठंभी बरों खोजने लगता है धीर भारामतलब हो जाता है। अपनी मीनिक ध्वनि के मोठ से बहु दूर जा पड़ता है धीर उसका धस्त उसी रूप में होता है जैना दूसरे सफल सीधों का।

इस वातावरण में कोई आश्चर्य नहीं कि मुख्य रचनात्मकता निर्देशक (कमी-कमी निर्माता-निर्देशक) की ही है। वही प्रत्येक वस्तु का बुननेवासा, वस्तुकार और समन्वयकर्ता है। निर्देशकों में मेरा तात्पर्य केवल ह्यूस्टन जिनेमान, स्टीबेन मकिनिन बायसर आदि से और उत्पादकों में वासन्धर्य पोल्डविन घारी, और जगूष जैसे व्यक्तियों से है। निर्देशक यद्यपि किसी भी कला का विशेषज्ञ नहीं किन्तु वह इस सारी प्रक्रिया का केन्द्र-बिन्दु है। वह दूसरों द्वारा किये गए कामों से चाहे एकत्र करके एक ध्वनिसिद्ध 'मूड' और प्रसर का निर्माण करता है। कलावस्तु और कहानी उसकी सीमाएँ, छर्च कलाकार निर्वाह पति मूड भावनात्मक गुणों आदि सबका निर्णय वह करता है। उनका स्वभाव का उनके प्रिय सम्बन्धों का उसे प्रभाव लगाता पड़ता है। उनका स्वर है। उनका स्वर से उठे निपटना पड़ता है। छिन्न को धाये बढ़ाने उसका प्रचार आदि की जिम्मेदारी उसकी है। उत्पादक-निर्देशक वह सेनापति है जिसे विश्वास है कि युद्ध का निर्णय उसके हाथ में है। स्काट फिज़ेरफ़्ड यह जानता था जब उसने हासीबुड पर उपन्यास लिखा। उसने 'द लास्ट डाइकून' नामक अपने उपन्यास में इसलिये केन्द्रीय चरित्र के रूप में एक निर्देशक मनरो स्टार को चुना।

हासीबुड में कर्मचारियों की दजबिम्बी की एकमात्र पिरामिड-जैसी है जिसके शीर्ष स्पष्ट है। इसमें कल्पनाशीलता के लिए गुंजाइश कम-से-कम है। फिट् डेरफ़्ड ने स्टार का जो अध्ययन प्रस्तुत किया है वह यथार्थ है। स्टार जिनेमा का गुण है जिसमें नेपोलिमन की कल्पनाशीलता है। उसका जीवन धावा जीवन और धावा बिगुटी प्रेममय है। फिज़ेरफ़्ड के मन में उसके प्रति इतना प्रेम था कि वह उसे ही साथ ही यंत्रियों के पदचक्रों का भी धारणा उन करना पड़ता है। फिज़ेरफ़्ड ने उनके चरित्र में एक प्रकार का धाविजाय तथा उच्च व्यावहारिता मरी है। किन्तु हासीबुड जीवन की जो विविधता है उसके चित्रण में फिट् डेरफ़्ड असफल रहा है। इस जीवन में बड़े बड़ तनीका हैं जिनके चारों ओर बरबारी भड़क दूसरों के सहारे जिव्यवी बरत करने वाले और उनके चढ़ने हैं। इन बरबारी में धाये न बढ़ते हैं जिनमें दूसरों का विचार करने की क्षमता हो। ये सब प्रकार के मन के वातावरण में रहते हैं। यह गारा जीवन धावा हरम और धावा जंगल है। हासीबुड का इस रूप में चित्रण यद्यपि सफलतापूर्वक बड़ गुनवर्ग के 'ग्राउ मैस लैमी रन ? में और में बनेम केस्ट क दि डे ओक दि लोवरेट' में हुआ है।

ये जो तनीरों बनाने हैं उनमें एक प्रकार का 'चक्र' है क्योंकि हासीबुड में घटपटा और घमकपटा में कम धारणा है। हासीबुड टांगों के मूड भी उनी प्रकार बरबता है जैसे चीनैबुन अमेरिकी औरत नय जीवन बरबती रहती

दुसर संस्कृति

सम्बन्ध है। हानीबुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को खोजने। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यद्यपि इन चित्रों में अमेरिकी का प्रतिबिम्ब दिखता है किन्तु यह सफ़ाई सत्य ही है। पेटे-पेटाये मार्ग पर ही चलते हैं। ये केवल अपरिपक्व मन करत हैं। संस्कृति की सभी विरोधताएँ चित्रों में हैं किन्तु वे संक्षिप्त रूप में सुसायम करके धीरे-धीरे प्रकार प्रस्तुत की गयी निरिच्छत विद्या की छोटक नहीं।

तो बात यह है कि सिनेमा में 'रफ' की प्रधानता है। स्काट सिखा था कि 'उसके स्वर में रफ' या 'मात्र भी हानीबुड के रफ' बोसता है। हानीबुड की बोली में रफ है। कैमरा जिस र मेंता है उसमें रफ है। कर्चलि 'सेट' बनाने में रफ है। ज़ा ही 'सेट' क्या न हो। हाँ हर तस्वीर में इस बात पर जोर है कि सत्कार में रफ ही सब कुछ नहीं है। प्रेम धारम-सम्मान। रफ से बढ़कर है। किन्तु हानीबुड की हर तस्वीर यही सिद्ध

पये के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

काम (सेक्स) का प्रथम है सिनेमा में काम या प्रेम की अभिव्यक्ति। मुकता की अभिव्यक्ति होती है। सिनेमा ने सेन्सर की अपनी भी है। जिसके अनुसार नारी के बघ का प्रतिप्रदर्शन या

का हारिजेंटल मुद्रा में आलिंगन प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। कुछ प्रदर्शित होता है वह काम की उत्तमता के लिए पर्याप्त

तरल में छिपी कामुकता या पुनरुत्पन्न प्रदर्शित होती है। सेन्सर कभी-कभी उत्पादक ऐसी प्रतिमा का परिचय देता है कि

तान कह दी जाती है कि जो चित्र भी नहीं कह सकता। जनों के नाके भावार्थ का चित्र घायद ही कभी दिसाया

जु विदेशी चित्रों में देखा जाता है। यह हानीबुड में कठिन

मन्त्रियों के प्रदर्शनों पर यही प्रतिबन्ध है। चूँकि सिनेमा

प्रस्तुत नहीं किये जा सकते बच्चों का उपयोग हास्य

11 है चूँकि पत्र पर तमाक के दूध नहीं दिखसाये जा

नों के प्रदर्शन पर रोष है विवाह की बान्धविक कठि

गती इसलिए पति-पत्नी के जा भगदू दिनाये जा

2 धीरे-धीरे उसका दान्त करने का जा मुम

ताबदी धीरे-धीरे होता है।

पन्नाय में चित्रों में गहरा भावनात्मक चित्रण

गहरा मिया जाता है। चित्र ठीक में

हासीबुड की अपनी एक घसग संस्कृति है जिसे अमेरिकी संस्कृति की सप संस्कृति कह सकते हैं। इसमें भी प्रतिष्ठा थीर क्षति की सतहें हैं जिनकी सनन पिरामिड की भांति है। इस पिरामिड के शीर्ष पर थोड़े-से वे लोग हैं जो स्टुडियो प्रबन्धक हैं जिनके भीष जल्पाव का काम होता है। इन प्रबन्धकों में प्रत्येक के साथ क्वाएँ चलती हैं। हासीबुड में इनके सम्बन्ध में कूटकस, प्रवाद धोर इषों की खूब क्वाँ रहती है। इनकी बाहरी स्थिति से हासीबुड पर निराशा के बादल छाये रहते हैं क्योंकि कर्मचारी भी जब दरबारी है तो स्वतन्त्र समीक्षा हो ही कैसे सकती है? ये सब अपने बी-हुजूरों से धिरे रहते हैं जिनका काम है उनकी ही म ही मिलाव। स्वतन्त्र चुनावों को यहाँ पुनरावृत्ति ही कहाँ है? जब तक उनका काम-काम रहता है कोई अपने को सुरक्षित नहीं समझता तो प्रबन्ध के ऊँचे अधिकारी भी क्याकि उन्हें भी उनके प्रतिद्वन्द्वियों और वेडों का पतल बना रहता है।

जिसके हाथ लोई उसके हाथ सब कोई। इस प्रकार सिनेमा में रचनात्मकता का अन्तिम र्जमा के साथ करत है जो धाने की पंक्ति में है। इनका ध्यान सदा टिन्म के बजट पर रहता है जो मापों कासर का होता है। जो लोग चित्र से सम्बद्ध हैं—निर्देशक और कथा-लेखक के भी सभी यह जानते हैं कि साप्यों कासर दीव पर लगे हैं। इसलिये कोई भी कल्पना कथावस्तु या उसके निर्बाह के सम्बन्ध में उत्तरा मोल लेने को तैयार नहीं। लुठने की पूर्वी का प्रयोग जिसका हासीबुड में कार्यक है उतना सम्यक् नहीं नहीं। क्योंकि दीव पर बहुत बड़ा घन जितना शमाया जा सकता है सब कुछ गया रहता है। यह हासीबुड की बीबता की गौठ है। दस्तरदाही अपने का मानक और बीबता में हासीबुड के निर्देशक है।

सिनेमा बालोनी में सदा यतिवयता रहती है। यहाँ मापी सफ़लता की बमनार्थ माया करती है। किन्तु इन यतिवयता के बावजूद यहाँ सदा स्थिरता का पतल बना रहता है। यह मेट्रोपोलिस तो नहीं है पर हासीबुड को अपने महार का मान है। पर फिर भी यह छोटा शहर है जो नगर के सामान्य जीवन में पड़े है। हासीबुड जंगल की सबसे गुनसान जगहों में है। इस पताली के तीले और चालीने में बम्पुनिस्टा में हम गुनमानपन का साथ उठाया था। जगहने मुक नराकों और बमाचारों पर अपना आस बिछाया था।

हासीबुड को अपने सदैव की प्राप्ति के लिए मक-मुबतियों को अपनी पार धारपित करना पड़ता है। इनके स्वभाव में प्रायः स्थिरता का प्रभाव रहता है। हासीबुड में धाने पर जगहें जी-ठाढ़ परिधम करना पड़ता है। इनके चारों ओर बामुनना का परा रहता है। जगहें जीबी लनलाहें मिलती हैं अपने से जीवों को बाटुबारी करनी पड़ती है या फिर अपने बाटुबारों से ही उनका मता

कमार्थ और पापुमर संस्कृति

बुढ़े लगता है। इस प्रकार जो मुक-मुकियाँ सारे अमेरिका के लिए स्वप्न लेकर जाती हैं उन्हें कुछ नहीं पता कि वे किसे फँसायें? हासीबुड में विल बो वल्ड से टूटते हैं एक तो वह सब कुछ जो आप चाहते हैं न मिले दूसरा वह सब कुछ पाना जो आप पाना नहीं चाहते। गिस्मट सेल्डीज ने इसीलिए ठीक ही कहा कि 'हासीबुड में बिपल को संभलना बहुत अधिक है'।

स्टार यानी कलाकार यहाँ सबसे अधिक जिज्ञासित और जादूपूर्ण व्यक्ति होता है। कम ही कलाकार व्यक्ति ऐसे होते जिनमें मामूली से अधिक प्रतिभय की क्षमता हो। नायक और नायिकाएँ जिनकी सफलता मुख्य रूप से उनकी शक्ति-शूरत बाल-बाल या बहुधा साज शृंगार पर ही आधारित होती है सिने-वक्क बनता व हृदय पर बैठ जाती है। हासीबुड के कुछ देवी-देवताओं के नाम हैं पोला नेत्री मेरी पिकफोर्ड क्लास्क हीमिटेनो कालस फेयरवैस बीनहानों कैरोल लुंबार्ड क्लाक गेबल हम्फी बोगार्ट रीता हर्ब मासोन बेरो, मेरीलिन मनरो और हाँ इन सब में उच्च हैं बेपसिन और गाबो। इनके नीचे छोटे-मोटे सिंगारे हैं जो कभी चमक उठते हैं। सिंगारों के बारे में और जो तक-भङ्क है उसी में करोड़ों के लिए हासीबुड का स्वर्ग बना दिया है।

कमी-कमी सिंगारों की व्यवस्था के समर्थन में कहा जाता है कि सिनेमा बियेटर नहीं है। सिनेमा नामे प्रतिभय जान भी सकते हैं पर उन्हें यह जानने की जरूरत नहीं है क्योंकि जिस चरित्र का वह निर्माण करता है वह स्क्रिप्ट के सहारे नहीं विकसित होता उसका निर्माण उसे अपने भीतर से करना पड़ता है वह चरित्र स्वयं उसका अपना चरित्र होता है। वक्क इसे इसी रूप में देखता है। इस तर्क में सत्य है। यह रेडियो और टेलीविजन के विपक्षों पर भी लागू होती है। सिनेमा काम देख के व्यवधान हो हटाकर स्वयं का निर्माण करता है। इस निर्माण में वह स्वयं और सिंगारों के बीच एक भावनारमक एकता ग स्थापित करता है। इसी से सिंगारों की व्यवस्था का दर्शकों और सिंगारों र असर होता है। इसमें एक बात और जोड़नी है। वह यह है कि हासीबुड नौमवान कलाकार केवल प्रतीक बनकर ही समुष्ट नहीं होते। उनमें बहुतों ने कला की वृत्ति के लिए रंगमंच का सहारा लिया है। इनमें उन्हें धार्मिक हानि भी सठानी पड़ती है। उनमें बहुतों ने ऐक्टर्स स्टूडियो में ट्रेनिंग भी ली है। उन्होंने प्रतिभय के बारे में काफी सोचा भी है। वे अपने धार्मिकों की धामोचनाओं का भी ध्यान रखते हैं। महान् सिंगारे जैसे चरमिन और गाबो या मुनी फेडरिक मार्क या एडवर्ड जा० राबिसन अच्छे प्रतिभेता भी थे। यद्यपि गाबो को प्रायः सफलता ही हाथ लगती थी। वह जो कुछ सफलता पाती थी उससे अधिक की ही सम्मानना रहती थी। जनता हासीबुड के देवता

की पूजा करने को कितनी उत्सुक रहती है इसका एक उदाहरण बेन्स डीन की मृत्यु के बाद उसके चारों ओर अस्ति के घेरे से मिलता है। मजबूर भाव यह है कि डीन केवल कुछ तस्वीरों में काम कर पाया था कि मोटर दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई थी। उससे मरण की प्रतिभा छिपी हुई थी। उसकी सफ़लता से उस हीरान में। पर वह भुली न था। भूमकेतु की भाँति उसका ज़बन और उसकी मृत्यु जीवन की एक शतीक बन गई।

किन्तु यहाँ पुरस्कार बहुत कम हैं। वे सब जो यहाँ काम करने आते हैं यहाँ से लौटकर घर वापस नहीं आते। वे यहाँ फिल्मों में एक्टर का काम करते हैं। या यहाँ किसी दुकान में छोटी माटी मोकरी कर लेते हैं। धाया बनी रहती है कि कभी-न-कभी किस्मत का सितारा बमकेना ही। उनके स्वप्न बेबकूबी से भरे लग सकते हैं। पर वे बेबकूब नहीं क्योंकि फिल्म ही एक ऐसा उद्योग है जिसमें बिना अपना पैसा लगाए प्रतिभा बमक सकती है। किन्तु इसी एक बात के कारण यहाँ प्रतिस्पर्धा इतनी गहरी हो जाती है। किसी सितारे की निरास से कबल और कोई बात हो ही नहीं सकती। जब जब कोई नया सितारा बमकता है समझिये कोई दूसरा सितारा कुम्भने लगा होगा।

इस स्पष्ट हो जाएगा कि हामीबुड की इतनी कम आबारी होने पर भी उसे इतने मनो-विरलेपनों को अपनी छात्र के लिए मसाला मिलाया होगा ? सांख्यिक बफ़रता के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में निरास की भावना के छिदार प्रायः धमिलेता और लेकक होने हैं। तारे बातावरण पर 'वेबन' जवा रहता है। अपने को बमकाने के लिए जरूरी है कि धुबधुब अच्छी हो। इस लिए अपने कपडों का उपयोग किया जाता है। जो लोग अस्ति के सोते हैं वे धक्कर देने को तैयार रहते हैं मछलें कि उन्हें भी बस्ते में कुछ मिले। जो अमेरिकी गिनेमा जामोनी को अमेरिका का 'वेडवेम' मानते हैं। वे भी हामीबुड के समान भारमहरवा पाण्डियों मछपान प्राकबिवाह के बीच सम्मग्य घाटि के समाचार बड़ मनोयोग से बढ़ने हैं। हामीबुड के सामाजिक जीवन के सर्वेक्षण में मिचो रास्टेन ने दिखनाया है कि यद्यपि हामीबुड में समाज की हर अमेरिकी सोनग में रपाया है पर वह बहुत पपावा नहीं है। सांख्यिक सम्बर्ध नाम धनने मातिवा के जीवन को पैसा बसाते हैं मानो के सनक स्कूल के विद्यार्थी हैं। और उनमें सभी प्रकार से नागरिकों के गुण कूट-कट कर भरे हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि गिनेरर्क उन्हें हाइ-मार्ग के बीच क रूप में ही देमना पसन्द करना है जैसे वे गिनेमा के कैं पर विरान हैं।

अमेरिकी गिनेमा की बपावरतु और अमेरिकी जीवन के मनोवैज्ञानिक

बसाएँ और पापुनर संस्कृति

प्रेरकों में गहरा सम्बन्ध है। हासीबुड ने अमेरिकी चरित्र के प्रकारों को जोड़ने की कोशिश की है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यद्यपि इन चित्रों में अमेरिकी संस्कृति के मूल्यों का प्रतिबिम्ब दिखता है किन्तु यह सबबाई सत्य ही है। प्रायः य विचित्र पिटे-पिटारा मार्ग पर ही चलते हैं। ये नबल अपरिपक्व मन को ही प्रभावित करते हैं। संस्कृति की सभी विशेषताएँ चित्रों में हैं किन्तु वे बना-सँवार कर, संक्षिप्त रूप में मुसायम करके और इस प्रकार प्रस्तुत की जाती हैं जो किसी निश्चित विद्या की छोटक नहीं।

सबसे पहली बात यह है कि सिनेमा में रुपये की प्रधानता है। स्काट फ़िज्जेरल्ड ने लिखा था कि 'उसके स्वर में रुपया था' याद भी हासीबुड के अन्धाधनों में रुपया बोलता है। हासीबुड की बोली में रुपया है। कैमरा जिस रूप में तस्वीर लेता है उसमें रुपया है। सबसि 'सेट' बनाने में रुपया है। चाहे छोपड़ी का ही 'सेट' क्या न हो। हाँ हर तस्वीर में इस बात पर धोर दिया जाता है कि सत्कार में रुपया ही सब कुछ नहीं है। प्रेम भाव-सम्मान, प्रसन्नता ये सब रुपये से बढकर हैं। किन्तु हासीबुड की हर तस्वीर यही सिद्ध करती है कि रुपये के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

जहाँ तक काम (सेक्स) का प्रश्न है सिनेमा में काम या प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि कामुकता की अभिव्यक्ति होती है। सिनेमा ने सेक्स की अपनी एक संहिता बना ली है। जिसके अनुसार नारी क बला का प्रतिप्रवर्धन या पुरुष और नारी का हारिजेंटस मुद्रा में आतिगन प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। किन्तु फिर भी जो कुछ प्रदर्शित होता है वह काम की उत्तेजना के लिए पर्याप्त है। सिने के आचरण में छिपी कामुकता तो घुसकर प्रदर्शित होती है। सेक्स की इन सड़ाई में कभी-कभी उम्पादक ऐसी प्रतिमा का परिचय देता है कि इसारे से इनकी बात कह दी जाती है कि जो चित्र भी नहीं कह सकता। सिनेमा में परिपक्वजनों के गाँव भावपन का बिज घायब ही नहीं दिखाया जाता हो जैसा कि कुछ विदेशी चित्रों में देखा जाता है। यह हासीबुड में कठिन होया क्योंकि विवाहेतर सम्बन्धों के प्रदर्शनों पर यहाँ प्रतिबन्ध है। चूँकि सिनेमा के चरित्र गाँव बोध में प्रसन्न नहीं किया जा सकते बच्चों का उपयोग हास्य के लिए ही किया जाता है। चूँकि परे पर समाज के दृश्य नहीं दिखाये जाते समाज के लिए बेध कारणों के प्रदर्शन पर रोक है विवाह की वास्तविक कठिनाइयाँ भी नहीं दिखाई जाती इसलिये पति-पत्नी के आ मयङ्ग दिखाये जाते हैं वे सब बनावटा होते हैं और इनीलिये उनका पाठ करने का जो मुमकिन किया जाता है वह भी बनावटी और वैयक्त होता है।

साम सामाजी चित्रों के अभाव में चित्रों में सहर भावनात्मक चित्रण के लिए 'पति (एक्शन)' का सहारा लिया जाता है। चित्र तभी से चल

बतते हैं। कटिंग के बेगने माने इस बात का ध्यान रखते हैं कि एक दृश्य के बाद बिना कोई व्यवधान के दूसरा दृश्य तुरन्त आ जाए। सोचने के लिए रहने की सुझाव नहीं है। परे पर कुछ-न-कुछ होता रहना चाहिए, धमकियाँ भ्रम के छतरे फरे बाध-बाध बचना भागना समझीते भ्रम में पड़ जाना शसत्र-सूत्रियों कोन्ड्रम के दृश्य बम्बूक से सड़ाई भीड़ का दृश्य बसती माड़ी से कूद कर भागना जहाज टूटना आसमान में गुरु मोटरों से पीछा करना अप्रत्याशित ढंग से साधों का घिसना पड़गन बेहरे बहसना पहचाना जाना सत्य की विजय धर्मात् कोई-न-कोई धुप पर्व पर बसता ही रहता है। अमेरिका ऐकनत मानो कर्म के बस पर ही विजयें प्राप्त करता है। कर्म में उसका विश्वास है और इनीलिए सिनेमा से भी कर्म की धारा करता है।

इन सब वस्तुओं में हिंसा भी जोड़ बीजिए। हो सकता है कि सिनेमा संस्कृति की सामाजिक हिंसा और लिखाय का ही प्रतिबिम्ब हो। जब वास्तविक प्रेम और कामुकता सेक्सर द्वारा काट दी जाती है या अन्य किसी कारण से हटा दी जाती है तो उसका स्थान हिंसा ले लेती है। जब पुरुष और स्त्री के परिपक्व सम्बन्ध से किनारा काटा जाता है तो इनका स्थान 'सेक्स' की खोजगानी ही लेती है जिसमें पुरुष का प्राबल्य होगा। पहले की फ़िल्मों में नारी को पुरस्कार और हैवी के रूप में दिखलाया जाता था। इस परम्परा में पुरुष व्यक्तिगत तब धावा जब जेम्स कामनी ने 'पब्लिक एमैमो' में सड़की के मंड़ पर धगुर बा मुण्डा फेंका। नारी के मूर्त्यों से बड़े समाज में पुरुष के अधिकार के रूप में इनका स्वागत हुआ। हिंसा की कपावस्तु दूसरे रूप में दिगमाई जाती है जैसे कठोर माँ-बाप का व्यवहार, जेस का बार्बर या बहाज का बन्तान या मुण्डों का मरणाद जिसे दूसरे को कष्ट देने में आनन्द प्राता है।

हिंसा को और मजबूत बनाने हैं जागूमी कहानियों के मायक। इसमें सड़की शुरू में तो विरोध करती है पर अंत में उनकी सक्ति का ताहा मान लेती है। मृत्यु-रोमांच की फ़िल्मों में मुख्य वस्तुएँ हैं—चतुरता गति तेज चार्ताभाव और मगानार हिंसा। फ़िल्मी जागूम के लिए ये धार्मार्थ होना जरूरी नहीं। जगमी कहानी टॉम जोग्स जैसे अस भुने जागूम की है जो कोई बड़ी जासूसी तो नहीं करता पर वह दिगमाना धचदर है कि जो भी सजा उसे दिते वह भुगतने के लिए तैयार है। उसे आ धमिनारीता लेमी होती है वह भी पारिरीक ही है माननिक नहीं। उसे तावड़ताड़ माहमों का मायना करना पड़ता है। उसे बनावनी मियनी है पर वह उमकी परबाह नहो करता। वह बिर जाता है देर तक एक जगह बाध दिया जाता है तावत नुबक सहता है धव्याचार धोर

यादगएँ सहता है मर गया है तमसकर उसके बुधमन से छोड़ जाते हैं इन सबको यह बर्चपूर्वक सहता है। घट में यह अपने आशमी को घोर एक धर्म में अपनी प्रेयसी को वा ही लेता है। अपनी इस साहस-यात्रा में यह भापी बर्जम मासे पाता है या बनाता है। प्रत्येक मृत्यु एक दुखव घटना नहीं मिश्रती मर है। उसकी न तो कोई मनोवैज्ञानिक जड़ है न कोई परिणाम। यह सब कुछ सयाज पर एक धर्म पैदा करने के प्रतिरिक्त घोर किसी काम का नहीं होता।

उल्फेन्स्टीन और बीटीउ ने 'मूवीज एंड साइकोसाइकल स्टडी' में अमेरिकी फ़िल्मों में कस्तु का विश्लेषण किया है। उन्होंने इन फ़िल्मों में जो ऊपर बिलता है उसका नहीं जो सिमा है उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बड़ी बारीकी से किया है। यद्यपि यह बात परित्यास ठक की सीमा के लिए सीधी जा सकती है पर इसमें इस ठोस भाव्यता के आधार का सम्बन्ध स्थापित किया गया है कि उत्पादक इन विवादात्मकता के धन्याज में समीचीन कर सकता है। उस पर चेंसर का बर्जन भी है घोर उसका स्वयं का दम्भपन भी। इसलिए जो कुछ बन पाता है वह उसके मुनिचारित नियम का प्रतीक नहीं हो पाता। उसका इसमें भ्रमण भी हो सकता है उसकी भ्रम भी हो सकती है। उसको बहुत-सी फ़िल्में बनानी हैं घोर पैदा भी। आलोचक फ़िल्म को कला मानकर उसकी आलोचना भी करत है। इसलिए उसका कष्ट अपार है। ऐतजानिक ने कहा कि उत्पत्तता पाने के लिए फ़िल्म-उत्पादक को 'सामान्य जनता' नहीं बल्कि उसमें भी छोटे से-छोटे लोगों का स्वागत करना चाहिए।

इनका यह भ्रम नहीं कि फ़िल्म-उद्योग ने बहुत अच्छे चित्र नहीं बनाए हैं। सब तो यह है कि यही एक ऐसी पापुनर-कला है जिसने अभी पीढ़ी के लिए अच्छी कृतियों की बरम्पण बनाई है। ऐसी फ़िल्मों में डिफ़िज की 'बर्ब ऑफ़ ए मैसन' बंपलिन की 'गैली लाइव्स', 'मास्टर बरकोव्स', घोर 'दि गोल्ड रज', वेस्टर्न जैसे 'हाई नून', 'बैड डे ऐट ब्लैक राक' कॉमेडियाँ जैसे 'बोर्न पस्टरडे', 'इट हूँस बन नाइट' और 'अविग जेजेज' धादि की बर्बों की जा सकती है। डामूसी फ़िल्मों में 'दि घिल जैन' घोर 'मास्टर फ़ास्फ़न', मृत्युकथाओं में 'डबल इन्डमिटी' बरपाओं की उत्पीड़ों में 'पब्लिक एनेमी' घोर 'दि घल ऑफ़ जिफ़ानो' अथवाक बिजों में 'ग्राइट मस्ट जाल' कृत बिजों में 'दि बरफ़ास्ट जंपल', कुछ बिजों में 'हेरत एंजेल्स', घोर 'दि रैड बीज ऑफ़ करेज', सामाजिक कृतियों में 'होम ऑफ़ दि डब दि यन', घोर 'दि बाइबल बन' बरिज और साहम के बिजों में 'दि ट्रेजर ऑफ़ सिटी मैज', घोर 'दि फ़ाओकन रबीन धादि बिजों ने इतिहास की रचना की है। यह मूवी घोर भी बड़ी हो

सबती है। किन्तु कोई भी ऐसी सूची पूरी नहीं होगी जिसमें बाल्ड विजनी के काटूम बिज सम्मिलित न हों। उसकी कसा मुख बनता की कसा है। उसने अपने एक सप्ताह का ही निर्माण कर दिया है।

घातघर्ष है कि ऐसे सप्ताह को जिसने इतना कुछ किया है दर्शकों की कमी के छठरे का सामना करना पड़ रहा है। हजारों सिनेमाघर हाल में ही बन्द हो गए। दर्शकों में 35 के आसपास के या किशोरवयव वाले ही अधिक हैं। बहुत-से घामोचक इसके लिए फिल्म-उत्पादकों को ही दोष देते हैं। उनका कहना है कि फिल्मों का स्तर ऊँचा करने से उसे और परिपक्व मस्तिष्क के वे दर्शक भी मिलेंगे जो आज सिनेमा नहीं देखते। उविड रीजर्मेन का कथन है कि इस प्रकार के सोम फिल्में नहीं देखेंगे क्योंकि उन्हें इसका चस्का नहीं सया है। वे उसे समझ भी नहीं हैं। तर्क यह है कि अमेरिकी समाज में हाल में जो परिवर्तन हुए हैं उन्होंने रहन-सहन के स्तर में काफ़ी हेर-फेर कर दिया है। सिनेमा बिजों में इसी परिवर्तनों को दिखाया जाता है। इस युवक तो पकड़ लेते हैं पर अधिक उम्र वाले नहीं समझ पाते क्योंकि उनका मन तो भूत की घोर है।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि जबान अमेरिकी कैबल मनोरंजन के लिए सिनेमा देखने नहीं जाते बल्कि वे 'अंतर्बैयक्तिक सम्बन्धों' के सम्बन्ध में निर्देश भी ग्रहण करते हैं। इसलिए यह और सामयिक हो जाता है कि हम देखें कि कैसा निर्देश उन्हें मिलता है। इसमें कोई शक नहीं की भावना और बिचारों का जो जपन वहाँ मिलता है वह काल्पनिक है। वहाँ काल्पनिक सम्बन्ध का प्रयोग सन्निष्ठ अर्थ में ही किया जा रहा है। अगले उपपन्थाओं में व्यक्तित्व की भावना के सम्बन्ध में उन्हें जितना अनुभव होता है उतना चलचित्रों से नहीं। उपपन्थाओं से वे अपनी दुविधा के लिए भी सुरास प्राप्त करते हैं। मुझ सम्येह है कि फिल्मों में निर्धार्य ही नहीं बल्कि समस्याएँ भी पिछी-पिटी होती हैं। युवकों को उनसे दुविधाएँ ही प्राप्त होती हैं। उस प्रथिया के द्वारा समयोत्तर से फिल्मों और दर्शकों में भावनात्मक बराबरी हो सकती है पर वह ऐसी होगी जब दर्शक भ्रष्ट होकर ऐसी बराबरी के अनुभव हो पायेंगे।

समुच्च के रचनाय और भाष्य के सम्बन्ध में हमीबुद्ध का जो दृष्टिकोण है उसकी रचना विजनी है हमका अधिक महत्त्व न भी होता यदि फिल्मों का बनना पर हमका व्यापक समर न होता। हमीबुद्ध बना और कैसे करता है, हमका संसार के करोड़ों व्यक्तियों के लिए महत्त्व है। हमीबुद्ध बिजों का उत्पादन विवरण निर्धार्य ही नहीं करता है और भी कुछ करता है। सोच

इससे अपने जीवन का दर्शन प्राप्त करते हैं। कम्पों की ऐसी सङ्गीत वास्तवीय का ढंग सांसारिक बुद्धिमत्ता का निर्माण इन विषयों को देखकर और हानीबुद के सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं का पढ़कर और उनमें छपी तस्वीरों का सहारा करते हैं। सिने-प्रतियों के लिए 'मनोरंजन' में जादू, नैतिकता आदि भी सम्मिलित है। उन्हें बलवत् करने के लिए बाँध पए तुम्हारे उनका निर्देश करते हैं। गति और स्थिति को उसे रोमांचित करने के लिए होती है वे उसके टेम्पो का निरूपण करते हैं। काम की लड़क-लड़क को उसको जुमाने के लिए होती है वही उसके स्वप्नों को प्रसर करती है। हिंसा को उसको 'ओष निमाने' के लिए प्रवर्धित की जाती है वही उसे निर्भीक बनाती है।

मैंने निश्चा है कि यहान् विषय बने हैं और महान् निर्देशक भी हुए हैं जिन्होंने लीक टोइन की कोषिका की है। मेरा दृढ़ मत है कि सिनेमा ने कला के रूप में अग्रे किसी बड़ माध्यम से ऊँचा स्तर बना लिया है। मेरी धारणा वास्तविकता और संभाव्यता के बीच की दूरी को लेकर है। किन्तु यह भी सच है कि यह दूरी रेडियो टेलीविजन में इससे कहीं अधिक है।

६ रेडियो और टेलीविजन घर में ही संसार

यदि निश्चा सङ्कट-अङ्क और स्वप्न की कला है तो रेडियो और टेलीविजन घर की कसार्ने हैं। इन्होंने प्रायः अमेरिकी के लिए संसार प्राप्य बना दिया है। किन्तु खेद है कि एक होपल समझ देने पर अमेरिकी भी सारे संसार के लिए इन रेडियो और टेलीविजन के माणिकों की कृपा से प्राप्त हो जाता है। अमेरिकी परिवार घर के कमरे में बन्द है। रेडियो और टेलीविजन की कृपा से सब उस घर दूट पड़ते हैं। सोन घाँस हास घाँस झूठ, कमिडियन ह्मति के जलपान के छोटे विषमनी विषय अने छोटे दर्शकों के सम्मेलन विविध समिनय पृष्ठिणी की वास्तवीय समाचार समालोचक फोनम समन राजनीतिक धामोचन हाट जीव एव हिस्क जोकीज (Hot Jazz and Disk Jockeys) और इन सबके ऊपर कर्मणिपल कोर्ड-न-कोर्ड उसे घर बबोचता है। कैंडे-कैंडे वृष और कैंडे-कैंडे स्वर उनमें बरसते हैं? इतिहास में इसकी विमलपता प्राप्य हो कमा भिन्नो हो।

इन विस्तरता का भी एक वास्तवीय और सामाजिक अर्थ है। रेडियो और टेलीविजन मनोरंजक के ही साधन नहीं हैं वे अमेरिकी संस्कृति को एक मूत्र में बाँधने के बड़ ठग भी हैं। इनसे राष्ट्र का प्रत्येक भाग एक दूसरे से नजदीक माना है। ये प्रसारण के महत्पूर्ण साधन हैं। इनमें एक साथ करोड़ों व्यक्ति ध्यान एक ओर धारणित करते हैं। अमेरिकी एकाकी जीवन है। कम-से-कम दन माध्यमों से 'पञ्चम दर्शकों' तक धार पहुँच तो सचते हैं। ये माध्यम भी

सकती है। किन्तु कोई भी ऐसी सूची पूरी नहीं होयी जिसमें बाइबिल डिबेनी के काटून बिना सम्मिलित न हों। उसकी कसा धुंध जनता की कसा है। उसने अपने एक संसार का ही निर्माण कर दिया है।

घासपास है कि ऐसे उद्योग को जिसने इसका कुछ किया है दर्शकों को कमी के खतर का सामना करना पड़ रहा है। हजारों सिनेमाघर हास में ही बन्द हो गए। दर्शकों में 35 के घासपास के या निघोरबय वाले ही अधिक हैं। बहुत-से आभोचक इसके लिए फिल्म-उत्पादकों को ही बोध देते हैं। उनका कहना है कि फिल्मों का स्तर ढँबा करने से उसे और परिपक्व मस्तिष्क के वे दर्शक भी मिलेंगे जो आज सिनेमा नहीं देखते। डेविड रीनार्डन का कथन है कि इस प्रकार के लोग फिल्मों नहीं देखेंगे क्योंकि उन्हें इसका चस्का नहीं मया है। वे उसे समझते भी नहीं हैं। तर्क यह है कि अमेरिकी समाज में हास में जो परिवर्तन हुए हैं उन्होंने रहस्य-सहन के स्तर में काफ़ी हेर-फेर कर दिया है। सिनेमा बिशों से इन्हीं परिवर्तनों को दिखाया जाता है। इसे युवक तो पकड़ लेते हैं पर अधिक उम्र वाले नहीं समझ पाते क्योंकि उनका मन तो मृत की ओर है।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि जबान अमेरिकी केवल मनोरंजन के लिए सिनेमा देखने नहीं जाते बल्कि वे 'अंतर्ब्यक्तिक सम्बन्धों' के सम्बन्ध में निर्देश भी प्रवृत्त करते हैं। इनलिए यह और आवश्यक हो जाता है कि हम देखें कि कैसा निर्देश उन्हें मिलता है। इनमें कोई धन नहीं की भावना और बिचार्तों का जो जगत् वहाँ मिलता है वह नास्तिक है। यहाँ काल्पनिक शब्द का प्रयोग सरिलिष्ट दर्शकों में ही किया जा रहा है। प्रथम उपपार्श्वों में व्यक्तित्व की भावना के सम्बन्ध में उन्हें जितना अनुभव होता है उतना जलधिनों से नहीं। उपपार्श्वों से वे अपनी दुविधा के लिए भी मुराग प्राप्त करते हैं। मुझे सम्झे है कि डिप्लों में निष्कर्ष ही नहीं बल्कि समस्याएँ भी बिछी-पिटी होती हैं। युवक की उनसे दुविधाएँ ही प्राप्त होती हैं। उस प्रक्रिया के द्वारा समयांतर से फिल्मों और दर्शकों के भावनात्मक बराबरी हो सकती है पर वह ऐनी होगी जब दर्शक भ्रष्ट होकर ऐसी बराबरी के अनुभूत हो जाएँगे।

मनुष्य के स्वभाव और भाव्य के सम्बन्ध में हासीबुड का जो दृष्टिकोण है उसकी वैधता बिबेनी है इसका अधिक महत्त्व न भी होता यदि फिल्मों का जनता पर इतना व्यापक असर न होता। हासीबुड क्या और कैसे करता है, इसका संसार के करोड़ों व्यक्तियों के लिए महत्त्व है। हासीबुड बिशों का उत्थान बिचरस निर्माण ही नहीं करता है और भी कुछ करता है। जोव

बहाँ इतिहास न बदल सका। जब यह माध्यम मुस्थापित जालों के हाथ में आ गया। किन्तु प्रायः दो विकसित रूप—टेलीविजन और रय सबमुच जालिकारी सिद्ध हुए।

रेडियो के विपरीत टेलीविजन जब अमेरिका में आया तो निजी स्वामित्वक विज्ञापन-प्रतिभूति और सरकारी नियन्त्रण पक्ष से ही स्वीकृत क्रिय आ चुके थे। इसे पहला धक्का रेडियो जालों से लगा। व जानते थे कि टेलीविजन रेडियो योताओं की संख्या में कमो कर देगा। हो सकता है कि टेलीविजन रेडियो का स्थान भी ले ले। फिर रेडियो वाले टेलीविजन के क्षेत्र में पर्याप्त पैसा लगाने के लिए बाध्य थे। प्रत्यक्ष कड़ी न इस बुझदोड़ में हिस्सा लिया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनके प्रतिद्वन्द्वी इस क्षेत्र में उनसे घामे न बढ़ जाएं। दो बड़ी कड़ियों में रंगीन टेलीविजन में इतनी कड़ी प्रतियोगिता हुई कि इतिहास ही बन गया। टेलीविजन के आगमन के पश्चात् रेडियो सिनेमा और हमारे बड़े माध्यमों के बराकों-योताओं में काफ़ी कमी हुई किन्तु बार में यह कमी दूर हो गई। पणस्वरूप आज कुछ विभाकर बसंकों-भाताओं की संख्या में वृद्धि हो हुई है और यह संख्या प्रायः टेलीविजन की बराह से ही बढ़ी है।

रेडियो में विविध स्थिति है। प्रश्न है कि प्रोपामों का नियन्त्रण किस के हाथ में रहे? बहुत है रेडियो से 4 बहों का बास्ता है। व है प्रसारण के स्टेशन और उनकी गुंलसाएँ, रेडियो बेचने वाली कम्पनियाँ विज्ञापन प्रतिभूति और योता। व हो सारे सर्वाय और कला का प्रभावित करते हैं इनमें भी प्रापनी सम्बन्ध की एक गुंलजा है जो इन प्रकार चलती है। जब अधिक रेडियो और टेलीविजन बिकने हैं तो बेचने वाली कम्पनियों की अधिक मुनाफ़ा होता है और भाताओं की सख्या भी बढ़ती है। भाताओं की संख्या बढ़ने पर रेडियो कम्पनी को विज्ञापन से अधिक घाय होती है। इसलिये दोनों को माम होता है। अधिक पैसा बिलने पर प्रोपामों के स्तर पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। अच्छे प्रोपाम होने से—जैसे राष्ट्रपति के चुनाव के कम्पेगनों और वापस की कार्यवाहियों के प्रकार से—भाताओं की संख्या और बढ़ती है। इस प्रकार यह क्रिया-वक्र चलता रहता है।

इससे योताओं और विज्ञापकों के बीच के सहरे सम्बन्ध पर प्रभाव पड़ता है। रेडियो और टेलीविजन पर को कमार्ग हैं इसलिए उनमें कोई प्रवेश मुस्क नहीं लगता। 1933-56 के आगमन पक्ष में रेडियो की व्यवस्था और फोन टेलीविजन की व्यवस्था को सम्पादना पर भी विचार हुआ था। इसलिये इस

परिनिष्ठित हैं। सभी एक स्तर मुक्त हैं। एक मञ्चांक का आनन्द लेते हैं। बिज्ञापन का एक मारा मुक्त हैं। वही तर्क बार-बार पर एक साथ करोड़ों भावों में बढ़ता है। यह परिनिष्ठितता बुद्धिजीवियों और सच के स्तर को नीचे ढकेल रही है।

रेडियो और टेलीविजन एक ही प्रसारण कला के धर्म हैं। दोनों में एक स्वान से बात प्रसारित की जाती है और लोग करोड़ों की संख्या में अपने घरों में वही बात देखते-सुनते हैं। प्रारण के लिए दोनों एलेक्ट्रॉनिक वैकुषम मशी का सहारा लेते हैं। टेलीविजन सेट भी पा गया। दोनों ही क्षेत्रों में मध्य का कोई 'घो' नहीं जैसा सिनेमा या रसकों के चल-चित्र में होता है। चूंकि इसमें लिखित शब्द का प्रयोग नहीं होता। इसलिए पत्र-पत्रिकाओं आदि की भांति साक्षरता की भी इन्हें कोई आवश्यकता नहीं। इनका प्रवेश सब अवस्था हो सकता है जहाँ चापकी चापा समझी जाए और बिना देखे जा सकें। इस प्रकार वे दृष्टि और श्रवण की कलाएँ हैं। इस दृष्टि से सिनेमा से इनकी समानता है।

किन्तु इस एलेक्ट्रॉनिक दूरव में जो बोझ-सी बस्तु में जोड़ देते हैं। इससे घर के आपका मनोरंजन हो सकता है। इसके लिए मनोरंजन के सम्बन्ध में इनमें काफी व्यापकता और चुनाव के लिए स्थान भी है। कोई प्रोग्राम पसन्द नहीं आया तो रेडियो या टेलीविजन बंद करने की जरूरत नहीं। दूसरा स्टेमन गोल सीजिए, नहीं सीसरा या बीया कोई भी और अपनी पसन्द का सिनेमा या विपेटर या मगीन मृत्यु जाँच या रोमकर जो भी चाहें देखिए, सुनिए। इस प्रकार एक तरह से रेडियो और टेलीविजन सारी पापुलर कलाओं के समन्वय हैं। वे मार सत्ता को घर में ला देने हैं।

रेडियो का प्रारम्भिक विकास 1870-30 के बीच हुआ। 1920 में हाडिप चुनाव का पत्र प्रसारित करके रेडियो प्रसारित कर पाया। पहले के सभी कार्यक्रम जनमेवा के रूप में प्रसारित हो रहे। मन् 1930 के आसपास रेडियो की मुख्य धारा बिज्ञापन से भी जो अन्य माध्यमों को फिट करने की क्षमता भी बढ़ी रेडियो की भी बड़ी श्रृंखलाएँ बन गईं। रेडियो के लिए प्राप्त आकृतिता और टेलीविजन के लिए प्राण जीवन की संख्या सीमित थी। दूसरा कारण कुछ तो पीछे कुछ आगे भी था। 1934 में जब केवल कमनिश्चयन बंधन बन तो प्रसारण के तीन स्तर स्वीकृत हुए—1. निजी उपयोग 2. बिज्ञापन प्रतिमूर्ति और 3. व्यापक नीमा में जन नियंत्रण। इसके बाद फ्रीक्वेंसी माड्युलेशन (Frequency Modulation) का आविष्कारी विकास हुआ जिसने कार्यक्रम के चरम में काफी गुणवत्ता और आकृतियों और स्टेमों की गन्ता भी बढ़ी। इनका बड़ा स्तर हुआ। किन्तु यह ऐसा जोड़ मित्र हुआ।

कर विज्ञापन कर जाती है। थोटा लीक उठता है। इस प्रकार प्रोग्राम के प्रवेश घुसक के कम में जो बंद उसे सहना पड़ता है वह उसे घसड़ा हो उठता है। इस कमसिमल का सबसे खतरनाक प्रोग्राम तब होता है जब कोई कसाकार किसी चीज के उपयोग उसकी नुबियों आदि पर एक 'घोमो' ही उपस्थित कर जाता है। विषय वार्ताओं के कार्टून भी टेसीविजन पर दिखाए जाते हैं। डिजनी ने सिनेमा में जो प्रयोग किये उसका समस्त टेसीविजन विज्ञापन में हुआ है। मृतपुर्ण प्रेसिडेंट हुबर 'कमसिमल' के विरोधी न थे। पर उन्हें भी ये प्रोग्राम घसड़ा लगे थे। घोर के भी कह उठे थे कि 'काश! कोई ऐसा इन्तजाम होता कि किसी बदन के द्वारा थोटा की प्रतिमिया भी बाइकास्ट कराने वालों को तत्काम सूचित कर दी जाती।'।

यद्यपि कुछ लोगों की इस सम्बन्ध में ऐसी प्रतिक्रिया है। पर यह भी सच है कि टेसीविजन ने अमेरिका में चीजों के विषय के क्षेत्र में अम्लि ही पैदा कर दी है। पहली बार आप किसी चीज के बारे में सुनते ही नहीं देखते और उसकी गंध भी लेते हैं। मुसई की मचीम हा या रसोई घर का कोई सामान बीयर हो या मोटरगाड़ी या बेकिंग पाउडर, विज्ञापक अपने करने साकार पाता है कि कम-स-कम इस टेकनिक से वह करोड़ों सम्भाव्य खरीदारों को अपनी चीज इतनी बखरी बिका ली सजता है।

रेडियो वाले व्यापारिकता का एक आवश्यक बुराई मानते हैं। 'कमसिमल' को मनोरंजन में ऊपर बंसने वाला माना जाता है पर सच यह है कि यह वास्तविकता का इस्तलेप है कमसिमल का नहीं। मोन इनीमिद इसका विरोध करते हैं। जब कोई किमी मन-कल्पना के जम्न न बिना पूछे घुसता है तो उसका बुरा मानते ही हैं। कमसिमल थोड़ा को यह बजाता है कि सारे मनोरंजक के साथ उसक साथ में नहीं हैं उसको इसलिए कुछ पास से भी बेना नहेपा।

विज्ञापक के लिए 'कमसिमल' कार्यक्रम का तितिम्या नहीं बल्कि कामजम कमसिमल का तितिम्या है। इनीमिए वह 'कमसिमल' के चुनाव पर खर्च करता है और उसके मजाने-सँवारने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है। वह इस कार्य के लिए मेधावी यशकों को किराय पर लेता है जिन्होंने पैसा खर्च करते दिखा पाई है। ये सम्पूर्ण साहित्य दर्शन मनोविज्ञान और कमा का मयम विज्ञापन-एजेंसी के लिए करते हैं। प्रोग्राम के बीच ये अपनी सारी योग्यता से उसकी धारणा भी रखा करते हैं।

थोटा भेठ घोर परिचलनीय भी होता है। सभी कायजमों के लिए टेसीविजन-वर्गन बंशी नहीं है। हमेशा यह गहरा रहता है कि कहीं कोई दूसरा कार्यक्रम उन्हें भुसता न ले जाए। अमेरिकी संस्कृति में समय का बड़ा मूल्य है

व्यापार को कर किसी रूप में लेना पड़ेगा। वह विज्ञापन के द्वारा लेता है। डॉक्टरों को धीरे-धीरे वह सब विज्ञापक अपनी छत पर ही लेता है। उनको विज्ञापन-समय और 'कमिशन' पर ही नहीं प्रोपाम की वस्तु पर भी नियन्त्रण मिल जाता है। इस प्रकार डॉक्टरों वाले समय ही नहीं बेचते, मोशनों को भी बेच देते हैं।

इस प्रकार और देने की मुरी हो बहल जाती है। सिनेमा और प्रेस के सम्बन्ध में तस्वीरों और छवियों की वस्तु के बारे में विचार्य के करते हैं जो स्वयं कमाकार होने हैं यद्यपि व्यापार के उद्देश्य से ही तस्वीरें और छवियाँ भी तैयार किये जाते हैं। किन्तु रेडियो और टेलीविजन की वस्तु का चुनाव विज्ञापन देने वाले करते हैं। उनके अपने धरे में प्रोपाम की सफलता का साधारण कमा को नहीं माना जाता। उनको इस बात की फिक्र रहती है कि अधिक से-अधिक मोशनों का ध्यान उनके प्रोपामों में लगा रहे। वे दूसरों के विज्ञापन न मुन मकें। उनके प्रोपाम से कोई पीछे नहीं। स्पष्ट तो कोई हो ही नहीं। यहाँ प्रयोग की गुंजाइश बहुत कम होती है। छतरा कोई लेता ही नहीं। यहाँ फैनमा कार्यक्रम के साधारण पर नहीं बल्कि 'रेडियो' के साधारण पर किया जाता है। 'रेडियो' का कार्य है महसूस की दर निश्चित करना। यह महसूस की दर ही यहाँ प्रमुख है। सिनेमा वाले ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं जो दर्शक का मनोरंजन कर सके। यदि वह ऐसा नहीं है तो कौन वैसा देकर उसे बेचने जायगा। रेडियो और टेलीविजन को ऐसे मोशनों की आवश्यकता है जो मुक्त में देरना पसन्द करें। ताकि स्टेशन उन्हें विज्ञापकों के हाथ बेच सके। विज्ञापक तो सारा प्रोपाम ही खरीद लेता है क्योंकि उसे उसके माध्यम से साबुन, रेफ्रिजरेटर और कारें बेचनी हैं।

धोना इन सामानों का सम्बन्ध लेता है वह 'घो' का खरीदार नहीं। तब वह है कि 'वही' इन प्रक्रिया में विक्रय की मालू है। जब तक कि वह विज्ञापकों के हाथ बिना सकलता है इनका कोई असर नहीं कि प्रोपाम उनकी गति या मूर्तों से क्या सम्बन्ध रखता है। यह बाजार की कसा है जो घर में ला गई है। यह कसा के रूप में नहीं बल्कि विज्ञापन के रूप में मनोरंजन है।

न्नी से घाय विज्ञापकर्ता विज्ञापन प्रतिउत्पीन्ति का घय सम्बन्ध लपते हैं जिससे सारा प्रोपाम भरा रहता है। बड़े प्रभावशाली बन के बाउ कड़ी जाती है और घन्त में एक मारा होता है।

साबुन गरीबिए।' इन डप से विज्ञापक धोना के उपचयन में घरने सामान को बीठा देता है। रेडियो बार्ता कम रही है। किसी विज्ञाप की खर्चा है या बिबल की राजनीति लभभाई का रही है या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के 'इन्टरव्यू' कम रहा है बीच में बाउर देने वाली महिला किसी पेंसेट सामान या घरेलू चीज की निप्रतिध

कर विज्ञापन कर जाती है। थोड़ा लीक उठता है। इस प्रकार प्रोग्राम के प्रवेश चक्र के रूप में जो दंड उसे सहना पड़ता है वह उसे धसड़ा हो उठता है। इस कमसिघल का सबसे खतरनाक प्रोग्राम सब होता है जब कोई कलाकार किसी चीज के उपयोग उसकी कृतियों प्राप्ति पर एक 'छोटी हो उपस्थित' कर जाता है। बिस्म कार्ताओं के कार्टून भी टेलीविजन पर दिखाए जाने हैं। डिजनी ने सिनेमा में जो प्रयोग किये उसका धन्य टेलीविजन विज्ञापन में हुआ है। मृतपुनः प्रेसिडेंट हुवर 'कमसिघल' के विरोधी न थे। पर उन्हें भी ये प्रोग्राम धसड़ा लगे थे। और वे भी कह उठे थे कि "कास ! कोई ऐसा-कमसिघल होता कि किसी बदन के द्वारा थोड़ा की प्रतिबिम्बा भी आइकास्ट कराने वालों को ठसकास मूर्खित कर भी जाती।

यद्यपि कुछ लोगों की इस सम्भाव्य में ऐसी प्रतिक्रिया है। पर यह भी सब है कि टेलीविजन न अमेरिका में बीजों के बिस्म के क्षम में शक्ति हो पैदा कर भी है। पहली बार भाषा किसी चीज के बारे में सुनत हो नहीं देखते और उसकी बंध भी लेते हैं। धुलाई की मछीन हो या रमोई कर का कोई सामान बीयर हो या मोटरगाड़ी या बैकिंग पाउडर, बिज्ञापन अपने अपने साकार पाता है कि कम-स-कम इस टेक्निक से वह करोड़ों सम्भाव्य खरीदारों को अपनी चीज पहनी बस्ती दिखा तो सकता है।

रेडियो वाले व्यापारिकता का एक आवश्यक गुण है माना है। कमसिघल' को मनोरंजन के ऊपर बसने वाला माना जाता है पर सब यह है कि यह वास्तविकता का हस्तक्षेप है कमसिघल का नहीं। जोप इमीलिए इसका विरोध करते हैं। जब कोई किसी मन-कल्पना के जगत् में बिना पूछे घुसता है तो उसका बुरा मानते हो हैं। कमसिघल थोड़ा का यह बनाता है कि सारे मनोरंजन के क्षेत्र उसके तब में नहीं हैं उसको इनलिए कुछ पास से भी बना पड़ेगा।

बिज्ञापन के लिए 'कमसिघल' कार्यक्रम का विविधता नहीं बल्कि कार्यक्रम कमसिघल का विविधता है। इमीलिए वह 'कमसिघल' के चुनाव पर खर्च करता है और उनके मजान-संबारने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है। वह इन कार्य के लिए मेकअपि युवकों को किराये पर लेता है जिन्होंने पैसा खर्च करके दिखा पाई है। ये सम्पूर्ण माहिग्य दर्शन मनोरंजित और कला का संयन विज्ञापन एजेंसी के लिए करते हैं। प्रोग्राम के बीच य अपनी मापि योग्यता से उनकी धारणा की रखा करते हैं।

थोड़ा भेद और पश्चिर्तमनीय भी होता है। सभी कार्यक्रमों के लिए टेलीविजन-दर्शन बंदी नहीं है। हमारा यह खतरा रहता है कि कभी कोई दूसरा कार्यक्रम उन्हें घुमसा न ले जाए। अमेरिकी संस्कृति में समय का बड़ा मूल्य है

पर टेसीबिजन में तो यह और भी महत्वपूर्ण है। अनुसंधानकों ने पता लगाया है कि यदि कोई अत्यन्त आकर्षक प्रोग्राम सम्प्रदाय में हो तो 60 प्रतिशत देखक टेसीबिजन पर एक एक कोई प्रोग्राम देखते हैं। यदि उसके बाद कोई बड़ा प्रोग्राम होने वाला हो तो यह संख्या 80 प्रतिशत तक होती है। दूसरे चैनलों से दर्शकों को जीत लाने का भी प्रयत्न होता है। इसके लिए मनोमैत्राणिक सहाईयाँ सही जाती हैं। सबसे महत्वपूर्ण के कुछ मिनट होते हैं जब टेसीबिजन-रेडियो कार्यक्रम का नया समय चुक होता है।

महमूल की प्रथा में बार-बार (यद्यपि अत्यन्त अविश्वस्त रूप में) श्रोताओं की संख्या के घटने-बढ़ने का चार्ट बनाया जाता है। 'अनुसंधान-सर्वेक्षण' इसी से सम्बन्ध रखता है। इस सर्वेक्षण में श्रोताओं की रुचि का बही बारीकी से अध्ययन किया जाता है। इसी के आधार पर बाकी की रुचि की भविष्यवाणी की जाती है। इस व्यवस्था का अमेरिकी माध्यमों में बही स्थान है जो रोम साम्राज्य में मोरेक्स के सहारे भविष्यवाणियों करने वाले पुजारियों का था। उनकी भविष्यवाणियों भी उसी माना में सब निकलती हैं। फिर भी किसी प्रोग्राम के जीवन-मरण का फैसला यही विशेषज्ञ करते हैं।

जहाँ तक टेसीबिजन प्रोग्रामों का सम्बन्ध है उनकी भी बही स्थिति है जो प्रायः बड़े माध्यमों की है। सिनेमा की भाँति यहाँ भी रुचि का बक बसता है। हनी के अनुसार प्रोग्रामों की डिम्बी और भीत का निर्णय किया जाता है। कभी समय का कि बाद विवाह औरम का रेडियो के प्रोग्रामों में अत्यन्त प्रमुख स्थान था। किन्तु बाद में वैसी स्थिति नहीं रही जब यह प्रोग्राम टेसीबिजन का घग बन गया। वहाँ उसने पक्कार सम्मेलन का माटकीय रूप ले लिया। समाचार समीक्षा का टेसीबिजन से अधिक रेडियो पर मुग बढ़ता है। टेसीबिजन पर उनके बहरे पर श्रोता की निगाह जमी रहती। जिससे न उसे अच्छा लगता है न श्रोता को। यहाँ उसे अपनी समीक्षा की चित्रों से सहारा देना पड़ता है। जब इसे देगाएँ प्रोग्राम टेसीबिजन के समाचार समीक्षाओं में सबसे उत्तम है। इनमें किसी विषय पर चर्चों के सम्पादन से लूबी लाई जाती है। इसी कार्यक्रम में लड़क मरी ने मैकार्थीवादी फैसल करती है। का दिग्दर्शन कराया जा जो टेसीबिजन के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण प्रोग्राम हो गया है।

विषय प्रोग्रामों के रूप में विशेषज्ञों का जो महत्त्व रेडियो पर बिकसित हुआ था वह बाद में टेसीबिजन पर लोगों में घाया। यहाँ ये विश्वास न पहुँचियाँ बुझा है किने हल र्थांग बढ़ने में ही जानते हैं। कुछ समय तक इस विचार की भी रूप रही कि पात्राओं को भी कार्यक्रमों में शामिल किया जाए। दोनों

माध्यमों में जो सबसे सफल प्रोग्राम था वह 'पुरस्कार' नामा जिसमें तथ्य के (factual) प्रश्नों पर पुरस्कार दिया जाता था। एक बार मुई काबा ने इसी प्रोग्राम के घटवर्ध 04,000 बालर का प्रश्न रखा। यह रकम तो सचमुच बड़ी थी। कुछ समय तक इसी की चर्चा रही। पर बाद में इससे भी बड़ी-बड़ी रकमों बत्ते प्रश्न रख गए। इत्या की जामूनी और धपराओं की खोज नाम प्रोग्राम टेसीविजन से अधिक रेडियो पर सफल रहे। ऐसे प्रोग्रामों में कानों पर ही एकाग्रता रहती है इसलिये इसमें धनिकय की भावना अधिक गंभीर रहती है। बाद में विनेमा की जामूनी कहानियों का स्वाम टेसीविजन जामूनी कहानियों को मिल गया। सोव धरिरा माटक दोनों माध्यमों पर धक्के होते हैं। बैरापटी दो का प्रोग्राम टेसीविजन पर अधिक सफल हुआ। बच्चों के लिए टेसीविजन प्रोग्राम का एक भाग ही भुरचित हो गया है। इनमें प्रायः कल्पनालोक की सैर और आकर्षण के प्रोग्राम अधिक होते हैं। बचकों के प्रोग्रामों में इनका प्रायः प्रभाव ही है। इन्हीं प्रोग्रामों की गुरुता में वैज्ञानिक कहानियाँ भी जाती हैं। इनमें काल्पनिक लोक का बड़ी सावधानी से और धृष्टत वैज्ञानिक डम से चित्रण होता है। 'जूनर का क प्रोग्राम दोनों माध्यमों पर सफलता प्राप्त करते हैं। इस प्रोग्राम में टेसीविजन में सबसे अधिक कलाकार बिये हैं जिनका वास्तविक सम्मान होता है। बलाधिकम और सिम्बलिक लकीत धाज भी रेडियो के सफल कार्यक्रमों में है। टेसीविजन में सबसे अधिक सफलता बृत्त-चित्रों के क्षेत्र में पाई है। राजनीतिक बत्तों या लेसक बृत्त-चित्रों में ही नहीं बल्कि चित्रित विज्ञान और मानसिक बत्तों की चित्रित पर भी टेसीविजन में बड़े धक्के धक्के बृत्त-चित्र उपस्थित बिये हैं।

कार्यक्रमों में परिवर्तन की आवश्यकता रहती है क्योंकि यह बदलती रहती है, रेडियो और कैमरा बदलते हैं और नित नये चालन लुमते रहते हैं। मैंने विस्तार से बतनाया है कि किन प्रकार रेडियो और टेसीविजन धम-मंस्कृति में सम्मेलन करते हैं। विज्ञान राजनीति मिनमा चियेटर नृत्य मवीत कोब सी बस्तु ऐसी है जो टेसीविजन के पर्दे पर नहीं दिखलाई जा सकती। प्रमाण की नला का धन धाधर्म्यजनक रूप में विस्तृत है।

दोनों ही माध्यमों में जीवद (viability) पति (pace) नाम-ज्ञान और टेक्नीक सम्बन्ध में बहुराशीलता है। य स्वयं में कोई बिगिट कलाएँ नहीं हैं पर बिभिन्न कलाओं का पाप धारण उपस्थित करती हैं। चियेटर, नृत्य, रोमकूद और समाचार-बृत्त बेरापटी ता जामूनी का जो भी हो नये माध्यम में माने पर नई गवस्थाएँ धानी ही हैं और नये लभाव पया ही होते हैं। इनमें बिधपकर टेसीविजन में तात्कालिकता की भी धाधर्म्यता हाती है। टेसीविजन की बिरोपता है कि समर्थ दर्शक यह धपुनक करता है कि उम धप में बमवी

बाँवों के सामने कुछ हो रहा है। हम दोनों माध्यमों में सिनेमा की भाँति यह ध्वनि नहीं कि दृश्य या थोड़ा समय के व्यवधान को नीरकर पीछे पहुँच सकें। न तो यह चरित्र के मन का हास ही जान पाता है। फिर भी टेलीविजन को यह सुविधा तो है ही कि वह सभी कलाओं को एक स्थान पर ला देता है। यह सुविधा अन्य किसी माध्यम को नहीं है।

इसका धर्म यह हुआ कि दोनों माध्यमों के स्वामियों को बिछपकर टेलीविजन बाँवों को अपने थोतालों को सदा नई सामग्री प्रदान कर संतुष्ट रखना ही पड़या। टेलीविजन की भुल बड़ी गहरी है। प्रतिभा कम्पना ध्वनि प्रविष्ट ध्वनियों सबको अपने क्षेत्र में बन्धन रखना ही पड़ेगा। किन्तु इससे कलात्मक सर्जन नहीं हो सकता। प्रसारण कलाओं में पुनरुत्पादन (re-production) की प्रबल क्षमता है। यदि इसका सदुपयोग हो तो ये संस्कृति की रचनात्मकता का विस्तार प्रशस्त कर सकती हैं। ये थोता के उपचयन तक पहुँच सकती हैं और उसे प्रसारित कर सकती हैं। इसी सुविधा अन्य माध्यमों में किसी को नहीं।

1955 के आसपास लगभग सभी बड़े सिने स्टूडियो अपनी पुरानी फिल्मों के प्रिंट टेलीविजन बाँवों को नहीं देते थे। पर बाद में वे अपने के लोभ में फिमा हो पड़े। अब टेलीविजन पर पब्लिक की सभी पसंदी फिल्मों देखी जा सकती हैं। उनका यह भय कि टेलीविजन पर फिल्मों के प्रदर्शन होने पर लोभ फिल्में खपना छोड़ देंगे उसत सिद्ध हुआ है। टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली फिल्मों के स्तर में भी सुधार हुआ है। अबिय में टेलीविजन सिनेमा की हज़म कर आया ऐसा अभी नहीं कहा जा सकता। ऐसा भी हो सकता है कि सिनेमा को अपने व्यापार में टेलीविजन से नया साम्राज्य मिले। अब वह सिनेमा-घर से सामान्य घर तक पहुँच गया है। हो सकता है कि दोनों सम्भावनाओं में कुछ-कुछ सचाई हो। ऐसा हो सकता है कि टेलीविजन सभी माध्यमों के समन्वय के रूप में अबिय में सबसे अधिकवासी माध्यम सिद्ध हो और सिनेमा सर्वकाल में अपना स्थान बनाए रखे।

मित्रता की भाँति टेलीविजन पर भी बहूनाओं का विस्तार की वृत्ति है। इन्हें काँटी लम्बे और ऊँची समराहों के ठक विस्तार है। टेलीविजन के लिए विस्तार के व्यापार का मुख्य है। सच ही यह है कि इन्हें 'टेलीविजन पर्सनैलिटी' बढो हो है। हम का में सिनेमा के किसी विस्तार को 'गिने पर्सनैलिटी' नहीं बढने। कारण सरल है। टेलीविजन के विस्तार पर पर में घुम चुक है। इनके का में एक नये प्रकार का व्यापार का निर्माण हो रहा है।

A creature not too strange or good
For human nature's daily food

कमाएँ और पापुसर संस्कृति

यह कत्ताकार और उसका दर्शक क बीच एक नय प्रकार के सम्बन्ध का प्रतीक है बाबबूर इसके बि य धमिनता बहुत कुछ कूड़ा-कचरा ही पेश करते हैं यह सम्बन्ध है, यह उनका छुतहे व्यक्तिता का प्रमाव है। इस प्रकार बड़े नाम माल बेचने में बिज्ञापक की सहायता ही नहीं करते बरिष्ठ टेसीबिजन पर व्यापारिता के प्राक्रमण से ओताओं को जो मानसिक कष्ट मुपतना पड़ता है उसे भी कुछ हर तक कम कर देते हैं।

इससे कत्ताकार और ओताओं के बीच सम्बन्ध में हास्य की महत्ता पर प्रकाश पड़ता है। यद्यपि सिममा में मुद्यान्तकियाँ (नैपनिम सिरीस को छोड़ कर) कम ही हुई हैं टेसीबिजन तो कमिडियनों के बिना प्रायः गर ही जाएगा। इनमें कुछ बरिबिने स्लेज से कुछ पानि-बलकों से कुछ रेडियो से टेसीबिजन में माये हैं। जब वे टेसीबिजन में पहुँच जाते हैं वे महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति बन जाते हैं। उन्हें अपने अनुकूल मसाला तैयार कराने के रिफ्ट सेलकों का प्रायः इस ही मिस जाता है। इससे 'ओ' में ओता न बसा जाए इसलिये उनके चारों ओर मुन्दरियों का बमाबदा मगा रहता है। जब माता ऊबने लगते हैं तो एव प्रकार से कमिडियनों की सड़ाई ही करा दी जाती है बिनामें उन्हें अपने मजाक को बमकाने का अवसर मिलता है। कमिडियन की सफसता इस बात में है कि ओता सदा हँसता रहे। यह हँसी अमेरिकी नैतिवता का एक घंग बन चुकी है। कमिडी की माय के लिए कई मुलासे दिय जाते हैं। एक मुलासा यह दिया गया है कि प्रसारण में घटतीस कहानियों को स्थान नहीं मिसता इसलिये हँसी माबनात्मक मुक्ति का एक रूप बन जाती है। किन्तु इसके जो दूसरे मुलासे दिये गए हैं उनमें कुछ सार प्रतीत हावा है। माबनात्मक स्तर पर एनाकी अमेरिकी यह सोचता है कि अपनी दुश्चिन्ताओं से मुक्ति के लिए टेसीबिजन का हास्य एक मच्छी बसा है। सामाजिक स्तर पर बात यह है कि यहाँ दर्शक भीड़ का एक घंग नहीं। वह अपने परिवार के साथ बैठे हैं। इस परिवार या मित्र बर्ग की एकगुनता में बीचने के लिए हँसी एक मच्छी तरीका है। इससे उनके सम्बन्धों में मुलाव घाता है। घंठ में व्यावहारिक स्तर पर बेलें तो बिज्ञापक की बृष्टि यह है कि जो माल वह बेचना चाहता है उसे मानम्बदायक बातावरण में अपने भावी ग्राहक के सामने रते। इसलिये टेसीबिजन कमिडी की बसा है क्योंकि यह सामाजिक और बिज्ञापन की कसा है।

इसी बृष्टि से दक्षि प्रसिमा साहस और नैतिकता के मानदंड भी बनाएँ तो सामदायक हीमा। संभाव्यता और वास्तविकता में किठनी दूरी है इसे सीरी कारेस्ट ने नेदानन एलोपिएयम घौक बाबबास्टर्स को लिये एक पत्र में प्रकट

किया था। सबसे अधिकतर दुग्ध का आधिकारिक है। आधिकारिक की 40वीं बरगोठ पर उसने लिखा था 'संज्ञकों में आपसे पूर्ण कि आपने मेरे बच्चे का क्या किया? मैंने कल्पना की थी कि वह संस्कृति और सुश्रुति का वाहक होगा। वह अमेरिकी सामूहिक बुद्धि को जँचा उठायेगा। आप लोगों ने इस बच्चे को धरातल पर दिया। आपने उसे लड़कों पर भज दिया पैसा कमाने के लिए। उसे धातु देकर बुद्धिमान हैंसते हैं।' जॉन बॉयडी प्रसारण के बड़ शोधों के सम्बन्ध में लिखता है कि 'रेडियो ने अपनी आत्मा विज्ञापकों के हाथ बेच दी है। इसे धातु भटिया रबि की विन्ता अधिक है। जँबी रबि की तो बर्तन नहीं। वह मोमी और कायर है। 'वह अमेरिका की अपमानजनक तस्वीर प्रस्तुत करता है।' बहुत-से मतलब ऐसे हैं जिससे यही मान्य पड़ता है कि टेमीबिजन भी उसी रास्ते पर चल रहा है।

प्रसारण ने 'हिमा का किछ रूप में उपयोग होता है वह इन धारों को स्पष्ट कर देता। प्रति सप्ताह लगभग 80 कार्यक्रम रोमांच और जामूसी के प्रसारित होते हैं। एक ही रात में 2 करोड़ घरों में एक दर्जन घुसघुसों का नाटक हुआ। 'साइक' के घरों में 'ये मृत्युएं घुरेबाजी जहर मोमी मारने जड़ा देने या पिछड़ियों से बाहर बँक देने और धारवहत्या से हुई।'

बच्चों पर टेमीबिजन का क्या प्रभाव पड़ता है पुराने की धारवहता नहीं। 1940 के सप्ताह में 2^{वाँ} बटे वह टेमीबिजन को देना या बर्तान् उतना ही समय था वह अपनी कथा में लक्ष्य करता है। यह चौकड़ा जूनिवर हाई स्कूल के विद्यार्थी का है। 7 से 17 वर्ष के बच्चे सोसलन 3 घंटा समय प्रतिदिन टेमीबिजन को देखे हैं। 5 से 8 वर्ष की उम्र के बच्चों में 6 में 1 ही ऐसा था जो नियमित रूप से टेमीबिजन नहीं देखता था। ये बच्चे कठपुतली या लकड़ के लबाटे या घण्टेरिया प्रोशम हो नहीं देखते बल्कि रात में बयस्कों के प्रोशम—हाना डकैती भाँस-पट्टी कुल्पावरी और अपहरण के काण्ड भी देखते हैं। इससे सम्भारकों और बच्चों के भाँस-पट्टों की विन्ता स्वाभाविक है। ये रबिया न पड़ पाए हैं। बच्चों की संस्कृति के इस मंदिरगुरुं माध्यम से दूर रहना भी ठीक नहीं फिर उन्हें इनकी गृहिणी देने से उनके मन पर स्वाधी धर पड़ने का भी खतरा है। धातु के क्या करें?

बाहे घण्ट के लिए हो या बुरे के लिए टेमीबिजन अमेरिकी बच्चों के मन का विषादक बन चुका है। उनके मन में 'बयस्क दो के सभी तरह—वेकस हरीमारन प्रमानवता बेबकियाँ सब भर रही हैं। यह लड़कों का इन्होंने बरत भी बनाया है। इनका सबसे बड़ा साम यह है कि शायद के बागुब और

कत्ताएँ और पापुलर संस्कृति

कठनात्मक धनुमन्त्र का विकास तेजी से होता है। इसी तेजी से इतिहास में कमी नहीं हुआ। टेसीबिजन म सबसे बड़ा दोष यह है कि इससे बच्चों का मन कुचिन्ता के गहरे मार से दब जाता और अंत में वह बेतनाहीन होने लगता है। किन्तु जो लोग यह सोचते हैं कि टेसीबिजन तो बच्चों को छोटा-मोटा राजा ही बना देता है भी अपनी कुचिन्ताओं के साथ बुद्धि की पराजय हो स्वीकार कर लेते हैं। सचिषो से बच्चे कुछ नैतिक परिणों की गहानियाँ ही पढ़ते आ रहे थे। टेसीबिजन ने जिसका संसार भी कपाएँ उनमें जोड़ दी है। अमेरिकी पीढ़ी जो कॉमिकी पुस्तकों को पढ़ती आ रही है इस भी पार कर जाएगी। बच्चे भी बयस्कों की भाँति इनके माध्यम से बाहरी संसार का कतरन और उसकी गड़बड़ियों का बखान पाते हैं। बच्चे घरों के माध्यम से ही नहीं बल्कि के द्वारा इसे ही देखते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि अमेरिकी अल्प बच्चों पर बड़ा बड़ा नियंत्रण रहते हैं। टेसीबिजन बेसी परिस्थिति में हठाया और आनमण के बिना गुराटा-बास का काम करेगा। कुछ ऐसे बालकों के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया जिनके माँ बापों ने उनके टेसीबिजन देखने पर रोक लगा दी पाया गया कि एव बालक इन प्रतिबंध से और भी बित्त मिले।

बच्चों या बड़ों को प्रसारण कमा से बरा सांस्कृतिक प्राप्ति हो रही है? इस सम्बन्ध में बहुत आसानी से समाप्त न होयी। टेसीबिजन के एक स्तम्भ लेख हेरियेटमान हार्न ने रागा दिया है कि 'जगत की साक्षरता घट रही है' यों यों पढ़न और सोचने की पुरानी आदतें कम होती जा रही हैं टेसीबिजन रखने में लाभ समय अधिक देने लगे हैं। 21वीं सदी तक हमारे लोग निरक्षर रहे। कुछ हीने और के अक्षर प्रधिक पसंद करने लगे। बातचीत की कला समाप्त हो आयी। लोग केवल हँसी-ठूठ की ही बातें करेंगे। यह भी सम्भव है कि टेसीबिजन-युग का पोता इसे पढ़ना भी न जान सकेगा।" बात अच्छे कम से कही गई है पर निराशाजनक है। प्रत्येक माध्यम का इतिहास है कि प्रारम्भ में उनका आकर्षण पैदा करने वाले माध्यम के रूप में स्थापित किया गया है साथ ही उसे प्राचीन मूर्तों को मेट करने वाला भी कहा गया है। पर उनमें न तो मुक्ति ही मिली है न प्रलय हो आया है। इसलिए हैतना यह चाहिए कि नये माध्यमों का उपयोग उनके स्वामी और पोता किम रूप में करत है। समाज के स्वयं और सांस्कृतिक आतावरण का भी महत्त्व है। हिराण्ड इतिम ने दिसमाया है कि प्रत्येक प्रमाण की टेक्नीक में ज्ञानि ने समाज और संस्कृति में ज्ञानि पैदा की है। इसलिए यह आधिकार भी समाज में ज्ञानि पैदा करेगा।

सामाजिक अधिकार के क्षेत्र में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। जो लोग इन चीजों का स्वामी हैं, वे समाज के मन और बरों में बस कर रहे हैं वे उनके मनो पर प्रत्यक्ष रूप में नियंत्रण कर रहे हैं। इसलिए प्रश्न यह है कि इस घनिष्ठ का संघटन कैसे किया जाए ?

रेडियो के निजी या सरकारी नियंत्रण का प्रश्न नहीं है। बड़े माध्यमों पर निजी स्वामित्व तो अमेरिका में स्थापित हो चुका है। जब उसके विघटन की सम्भावना नहीं है। घण्टा बॉइकास्टिंग का नियंत्रण एक सरकारी कारपोरेशन से करत है। वही स्तर और बचि की दृष्टि से इसका फल अच्छा हुआ है। किन्तु हम प्रश्न के ध्वस्त सभी वृष्टिकोणों के प्रचार का पूरा ध्यान नहीं मिलता इस बात का धन्यवाद किया गया है। इसमें सन्देह है कि अमेरिकी सरकार इतनी परिपक्व है कि ऐसे नियंत्रण का दुरुपयोग होने से रोक सके। 1954-55 के वातपास बिल में भी टेलीविजन पर 'कमिशन' प्रभाव पड़ा। तक यह बिना गया है कि इस प्रकार की व्यवस्था में खाताओं की धन्य और बुरे कार्यवाहों में चुनाव के लिए काफ़ी ध्यान रहता है। फिर भी आज बिल में जो इन्तजाम है वह कम-से-कम एक दृष्टि से अमेरिकी इन्तजाम से अच्छा है। बिल में बड़े पृथिवियों या विज्ञापकों के बीच मुकाबला नहीं है वही सरकार और कमिशन सबिसे के बीच मुकाबला है।

हम व्यवस्था की सबसे बड़ी बुराई है कि इसमें लोग ने इतना बरकर रखा है कि जनता की बचि के स्तर का कोई विचार ही नहीं करता। रैड क्लिकम ने बड़े परिघम से इनकी सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन किया है। घापका मत है कि 'रेडियो जनता की हिट-सेवा में असफल है क्योंकि रेडियो पर विज्ञापकों का प्रभाव है। इस प्रभाव का फल यह है कि रेडियो या टेलीविजन पर प्रोग्राम के चुनाव में जनता का हाथ एक सिद्धान्त पर रह जाता है। वास्तविकता कुछ और है।' हम प्रकार उन सिद्धान्त को चुनौती मिलती है जिसमें कहा जाता है कि विज्ञापन नियमन छोटा-जगवार का ही प्रतिनिधि है। हम बचाव की दलील में बमोजोरी यह है कि छोटा की जो उपस्थिति है उसी में चुनाव का अधिकार मिलता है और इन उपस्थिति का फैसला विज्ञापन करता है। सिनेटर बेटन ने सुझाव दिया था कि नागरिकों की एक समिति प्रतिषेध यह देना करे कि रेडियो और टेलीविजन में हम काम में जनता की क्या सेवा की ? किन्तु यह सुझाव अभी भी प्रथम में नहीं माना जा सकता। रैड स्टाइन ने सुझाव दिया था कि टेलीविजन ने बुरे या अमेरिकियों के प्रश्न उनके उत्तर और उनकी मानसिक विज्ञापों का अध्ययन करने का प्रयत्न किया जाए। एक तीसरा सुझाव भी था कि टेलीविजन का एक ऐन बिल का विधान किया जाए जिसमें विज्ञापन ही ही नहीं। पर हम पर भी कुछ न किया जा सके। कोई पाठ्यक्रम की सहामता

से 'प्रायश्चित्त'¹ जैसे प्रोचाम बसाये गए थे। इससे यह प्रकट हुआ कि व्यापारिक प्रोचाम और बिनापकों के प्रोचामों में सांस्कृतिक भेदभाव तो कम नहीं पर कल्पना का प्रभाव अवश्य है। ऐसा कुछ किया जाना चाहिए जिससे नये प्रोचामों के लोकप्रिय होने तक उन्हें मदद दी जाए, व्यापारिक जीवन भी बनाये जाएँ, 'जन-सेवा के प्रोचामों' की नीति का कड़ाई से पालन कराया जाए, टेक्निशियनों और धाम लोगों की सलाहकार परिषदें बनाई जाएँ जो समय-समय पर प्रोचामों के सुझावों का द्वारा सलाह दिया करें तो कुछ हो सकता है।

यह एक बुरा तरीका है यह कहने का कि यह मुख्य समस्या तो परिपक्वता की है। टेक्नीशियन का पेशेवरिकी समाज के लिए जो महत्त्व है वही महत्त्व पेशेवरिकी समाज का टेक्नीशियन के लिए है। बच्चों के लिए टेक्नीशियन क्या करता है वह उसका ही सम्पूर्ण प्रश्न है जितना कि बच्चे टेक्नीशियन के लिए क्या करते हैं। ऐसी बात नहीं कि प्रोचाम उन्हें पकड़ने के लिए ही बनाये जाते हैं। बल्कि उनका निर्माण इस रूप में किया जाता है कि वे उन्हें पकें। बूकि रेडियो या टेक्नीशियन का सामान्य मूल में अपनी जगह में बिना हिंसे लिया जाता है इसलिए आत्माओं की सहायता बढ़ी होती है। पर वह प्रवाहमान भी है। इसलिए टेक्नीशियन बानों के लिए बिम्बा की बात भी है। मोटा को बच्चे की तरह धूमना पड़ता है। बच्चों की तरह उनकी सम्पत्ति भी तो क्षणिक होती है। उसकी रक्ति बरसती रहनी है और वह धूमना-छिन्ना रहना है। सम्भवतः रेडियो और टेक्नीशियन के प्रतिष्ठित मस्तिष्क और उनकी शक्ति इस बात की सोच में लगे रहते हैं कि कौन-सी वस्तु उपस्थित की जाए जो लोगों को मोह से। वे लोग इसीलिए लगे जाँचने और तनाव की स्थिति में रहने हैं। फिर ठोसपन या भावनात्मक गहराई के लिए क्या गुंजाइश हो सकती है ?

इस प्रकार माना जाता है कि इस प्रश्न का बचाव करना एक नये और अपूर्ण बैकग्राउंड बनाने की मूर्ति करना है। अधिन-ने-अधिन लोगों को अधिन-ने-अधिन सामान्य की जापयोग करने में बैकग्राउंड के बचन में कम से कम बचत और सामान्य की ओर ध्यान दिया था। टेक्नीशियन के कर्मन सिद्धान्त में बचत और सामान्य को समान-समान जापने का कोई सामान्य ही नहीं है। ही एकाग्र बचत का और सामान्य है कि सामान्य की बचत बचत में अधिक होती। नहीं तो कोई रेडियो या टेक्नीशियन क्यों गरीबता और फिर उसे मुक्तता। इन सामान्यतात्मक सामान्य को स्वीकार करने का अर्थ है अर्थ सभी सामान्यों को समानता दे देना। यह तो ऐसा ही है जैसे बिम्बाओं के निपट में

1. Omnibus.

2. Benthamite calculus.

बहुमत की संख्या का कदापि मान लिया जाए अर्थात् पटिया किसम की पर अधिक दिक्के वाली और कामिक पुस्तकों के सिर पर बिजय का सेहरा बांध दिया जाय। किताबों के संसार में कई प्रकार की कविता आती है। जब तक रेडियो और टेलीविजन में भी इस प्रकार के जुनालों का हस्तकाम नहीं हो जाता जिसमें मोतालों के विभिन्न स्तरों के लिए अपनी कवि की सामग्री भिन्न-भिन्न कोई महत्वपूर्ण स्तर एकत्र न छुट जाए, जब तक वो मोतालों के जुनाब के बल टान का कोई प्रयत्न नहीं है।

इसलिए प्रश्न यह नहीं कि टेलीविजन का सांस्कृतिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है बल्कि प्रश्न बाकी रहता है कि टेलीविजन का सामाजिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययनों से सात हुआ है कि टेलीविजन गरीबों की 'सबसे बड़ी' है क्योंकि यह उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता बन गया है। यद्यपि मध्य आय वालों में टेलीविजन गढ़ बना गया है पर अल्प आय वालों में उनकी संख्या और जल शक्ती को स्थान में रखकर ऐसे ही अनुपात हैं। कई अधिक टेलीविजन मिलेंगे। यदि आप घरों का एक भी बकर लयाई हो पाएँगे कि ऐसी बस्तियाँ में जहाँ के लोगों का आर्थिक और मानसिक स्तर नीचा है वहाँ टेलीविजन का अधिक प्रचार है। यही बात आप की हासिल और किनाइस्फिया की नीचो बस्तियों में मिलेगी। डेटाबेस और विज्ञापन में भी तथा उन सब जगहों में जहाँ लोग नये 'मोटी' में रहते हैं। मध्य आय के गृह निर्माण की व्यवस्था में बकान के साथ-साथ टेलीविजन का भी प्रभाव होता है। वहाँ बहुत ज़रों में टेलीफोन और रेडिओरेटर के साथ ही आता है। जो लोग दिनों के समय बारिशों या दस्तों में बन्द रहते हैं या जो धीरे-धीरे दिन में घर में रह जाते हैं उनकी कुशलता का समय टेलीविजन देखने में ही बीताता है।

जो लोग किसी भेदभाव की नीति के कारण अनेक प्रकार के अनुभवों से वंचित रह जाते हैं उनके लिए टेलीविजन एक प्रकार का नया अनुभव होता है। एक हप्ता के लिए तो टेलीविजन का गढ़ने बड़ा महत्त्व यही है कि जिस को जब टेलीविजन देखा है तो उसे पुलिस भी तरह कोई ध्यान से नहीं देखा न पूछा ही है। जो कुछ उसे बाहरी संसार में नहीं मिलाता वह टेलीविजन पर उसे पा जाता है। यहाँ तो वह किसी से छोटा होने की भावना का अनुभव नहीं करता। दूसरी बात और है विज्ञापन की दृष्टि में जो सही मोटा बराबर है क्योंकि वे सभी उनके संभाव्य ग्राहक हैं।

परि कोई यह बदे कि टेलीविजन का इसका निम्नत्व रहता है तो वह बात तो मित्रता का रेडियो पर भी लागू है। टेलीविजन निम्नत्व को मन्त्रित तो नहीं बना करता पर वह सभी बलाओं को एक स्थान पर जुटा देता है। वह कार्य -- वह अपनी शक्ति से करने लगा है कि गमना के मन्त्रिक सब वह सोचने

सबे हैं कि रसिक टेसीबिजन पर घोरे बितनी घण्टी तरह देख सकता है उतना बहु बेम के मैदान से नहीं। इसलिये इनके रेडियो घोर टेसीबिजन पर प्रसारण के अधिकार सब अधिक महत्त्व की वस्तु बन गए हैं।

जगतग्न के भावभासमय ऐक्य पर इसका बड़ा घण्टा प्रभाव पड़ेगा। अपनी घातुरिक समस्वारे होते हुए भी सामाजिक विशेषाधिकार के लक्ष्य में टेसीबिजन महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। यह धार्मिक दुरिमा तो नम न कर सकेगा या पार्श्वप की दीवार भी रातोंरात न सोड़ पाएगा पर यह 'होने' का एक सामान्य भाव तो सब में सघन रूप से भर ही सकता है।

7 अमेरिकी इंडियन के रूप में जाँच

किसी जाति के समीत मुख्य घोर बीत से उसकी सांस्कृतिक सीसी का ज्ञान घण्टी प्रकार से हो जाता है। अमेरिकी राष्ट्रीय समीत की सीसी का सम्बन्ध 'मार्गन' से अधिक टाम-टाम (नगाड़ा) से रहता है। यह वर्ष संगीत या सिम्फोनी या सोनेटा या मंत्रियस या मॉरिस गुरर की सीसी नहीं है। न घपेरा या बेसे ही है। प्रभावशाली अमेरिकी संगीत सीनियाँ हैं 'ब्लूज' 'स्विप' और 'जॉज'।

संगीत की समिव्यक्ति के लिए प्रत्येक सम्मता का घपना बाबा होता है। अमेरिकी बाजे हैं—'ब्रास' और 'परकमान' 'ट्रम्पेट' और 'सेक्सोफोन' को कदना और बिजय दोनों की समान रूप से समिव्यक्ति कर सकते हैं, 'ड्रम' और पिपामो। इन चारों बाजों में एक युवा-नारी का स्वर घोर बाड़ दीविए फिर आपकी अमेरिकी संगीत की मौलिक इकाई मिल जाएगी। इसी इकाई के घास पास सब पाते हैं जो अमेरिकी संगीत जीवन से सम्बद्ध है जैसे 'मेम डैड' माइट बनब 'ब्लूज' डिपर, डोल रैकडे, बिस्क बोकी 'टिप्पेन ऐसी डॉप हास कामडेशन म्युसिकल कमिटी कूनर, जूकबासन युवक संगीत श्रमियों के बाँधी सोम्व बिगड भादि-भादि।

अमेरिकी पापुमर-कमार्णों में ही संगीत में सबसे अधिक उदासी घोर बायो निसीता और का घाघात व्यक्त होता है। एक ऐसी संस्कृति में जो समुद्रीनी घोर निराशा को मगतेत्र के बिच्छ घपराघ-जेता देरती हो उनके गीतों में पातय घोर प्रबंधता दोनों की साथ-साथ समिव्यक्ति घादघपपुष लपेती। गीत घोर बेमाड घाघुविक 'जॉज' के सोड हैं। किन्तु अमेरिकी लोक के इतिहास में लोक-घनुमर की समिव्यक्ति के लिए इनका बड़ा महत्त्व है। इनमें राष्ट्र के निर्माण का प्रत्येक चरण व्यक्त हुआ है। प्रयासपीत मजदूरों घोर सड़क बनाने वालों के गीत, कई घुमने के गीत (Oh, de boll woeril am a little brown bog) पड़रियों के गीत बरमाण सीमान्तों के गीत

विशेषकर नीचो काइए बचनों में—इसमें एक प्रकार की निष्क्रियता का भाव है। जोड़ में इसकी रचनात्मक तथ्य से भी छोड़ इसका स्थान भी।

रूज से ही सबसे 'स्त्रिचुपल' (थ्रिप्पलिक गीत) है। अमेरिकी नीचो के बार्मिक लीव का यही सबसे सामान्य नाम है। इसका जन्म 19वीं सदी में हुआ किन्तु नीचो को प्रमुख तक इसका पता न था। कभी यह गार्सेल गीत का रूप लेता है कभी 'जुबिली' का और कभी घाबर पुल बीच थ्रिप्पल का जैसे (Go Down Moses और Singing Low Sweet's Chariot) कुछ हद तक स्त्रिचुपल का उदय 'बर्च हाइम' से होता है जिसका संदर्भ ठा यूरोपीय होता है पर बलावर्ण नीचो बर्च का। कुछ सखी तक इसका उदय घाटीकी संवीत परम्परा में भी है। जब घाटीकी दाम घाए तो यहाँ 'फोक हाइम' का प्रबलन था। यह 'फोक हाइम' बर्चिप से न्यू इंग्लैण्ड और न्यू इंग्लैण्ड से यहाँ आया था। नीचो बार्मिक जीवन में इसमें 'ग्रेड मीटिंग' और 'गिवाइल मीटिंग' मिलायीं। दोनों में 'साग मचल' और 'रिंग घाउट' का भी उल्लेख किया गया। मार्शल स्ट्रीम ने 'जुबिली' में इसका विकास खोज निकाला है (When the Saints Go Marching In)। हम इसके विकास के बाहे बिना परम खोज निकालें पर यह न भूलना होगा कि 'स्त्रिचुपल' का 'जोड़' से घनिष्ठ सम्बन्ध है। पात्र भी जोड़ बार्मिक स्त्रिचुपलों में सम्बन्धित प्रेरणा ग्रहण करता है।

'जूनर' और 'टाचमिगर' के गीत भी इसी बर्च के हैं पर इनका मूल कुछ इनसे भिन्न है। इनमें आ माव होने हैं के कुछ निम्न धेवी के होने हैं। बिनगी प्रतीक प्रेम में पालनों पर बर्चिप होती है। ये प्रेम किगोरो को बर्चिप प्रिय हैं। इनमें बर्चमयन की छक्काहट है (All alone on the telephone) और अपनी असीमता की स्वीकृति है ('And when I tell them how wonderful you are They'll never believe me') और है अपनी पर बदा का माव ("I'm nobody's baby "I'm always chasing rainbows") ऐसे ही गीतों की मनी नीचो केहने गीतों ("I've we have no Bananas."

Barney Google Mairzy Doats") बर्चमयता के नीचो मोड़ प्रेम नीचो प्रतीक गीतों कायम्बनों के नीचो को निकर तो गीतों के रेबनों का एक पूरा उल्लेख ही गरा हो गया है। नीचो जन्मजातों या मन्त्र के बानी यों से इन रेबनों को घूम मचो रहती है। इन गीतों की मय मयूर मुचरों का हृदय हलने बाधा होती है। ये गीत उनके लिए बहो महत्व रखते हैं या महतर बर्चों की टेनिमन के बानी के बीच मध्यमबर्चों के लिए निम्न पोत्रम का था। मच का यह है कि बर्चिप नीचो बर्चिपों का बर्चिप में आ परिपय है

बहु इन्हीं गीतों का द्वारा है। इनसे अमेरिकी रुचि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अमेरिकियों के लिए बीसे में 'रपटाइम' और 'हाट जॉन्स' तीस में 'ट्रिप' वालीस में 'कूल जॉन्स' और पचासे में 'रॉक एन रोल' का अधिक महत्त्व था। इनमें सय और पचास पचीसे प्रतिष्ठित रचना और टीम के भाव की भाव स्पष्ट होती है। इनमें एक सुनियमित आयोजन व्यवस्था और कठोर शोषित आयोजनानाम होता है। स्थानीय संगीतकारों की छोटी टुकड़ियों के उत्पन्न होकर यह इतिवृत्त नाइट क्लबों संगीत गोष्ठियों टेलीविजन रेडियो और नृत्य के रैकडों के माध्यम से जनता में फैला और अमेरिकी संगीत की लोक-भाषा बन गया। यद्यपि इसका रचयिताओं को पुरस्कार तो कम ही मिले और इनमें बहुत-से धार्मिक दखि ही रहे यह परन्तु उनकी रचना साहित्य की भाषा से भी अधिक जन प्रिय हो गई।

जॉन्स की उत्पत्ति न्यू यॉर्क में सेंट सुई चिकागो के बीच के उनके के संगीतकारों से हुई है जहाँ हल्की पुष्क रहने का तो बाध्य वे पर वे बाहरी प्रभावों से पुष्क रहे भी न सके न। उन पर संसार भर की संगीत परम्पराओं का प्रभाव पड़ चुका था। 'जॉन्स' की उत्पत्ति अफ्रीकी ही नहीं है। इसमें अमेरिका यूरोप की लैटिन-संस्कृति और कैरिबियन संस्कृतियों का भी प्रभाव है। ऐतन लोनीनन ने कहा है कि न्यू यॉर्क में लैटिन अफ्रीकी संगीत के प्रतिष्ठित नृत्य के रूप में कहा है। "यह संस्कृति यहाँ संगीत का एक अजीब नवदमन कह बना है। यद्यपि यह बात सत्य है पर यह भी सत्य है कि इस अनिष्ठित संगीत में प्रमाण स्वर बड़ गहरों विशेषकर न्यू यॉर्क के हलियाओं का ही रहा है। सेंटसुई और सेंटनिया के सीनो में लाइकोनेट (कछ अक्षर निवासकर उग्र छाटा करना) रैपटाइम का विकास हुआ था। दमक मुख्य तब रैपटाइम को इन हलियाओं ने जो 'बीटो' के लाइकी सीड जॉन्स में बदल दिया। फिर उसमें न्यू यॉर्क की छड़ों पर जाने वाले बाल जनाडा के बीट की धुन शामिल कर दी। इन छटाओं के गहरे दो दस्तों में रैपटाइम नियामा पर बनता रहा। जब बात और बिट के बात समय शामिल हो गए तो वही बीट में जॉन्स हो गया।

बिज डकार कुछ जगह जनों में विमोचिनी इन्स्टा के जकसापों और जनाओं जैसे अनाजित जगह में संगीत की दमनी बच्छी जगस उग आई यह एन सांस्कृतिक रहस्य ही है जिसका पता अभी तक नहीं लग पाया है। बुड़ी बोस्टन जेनरीन मार्टन सुई धाम्म्य जैमे संगीतकारों के हाथों एक ऐसे संगीत का निर्माण हुआ था जिसकी मूलना में सब कुछ भी नहीं बन पाया

॥ यह संगीत अमेरिकी जीवन का एक भाग बन गया है। मोल्क कोस्ट से यह संगीत उत्तर की ओर सेंटमुई और दिकार्गों और पूरब की ओर म्यूपाक और दूसरे बड़े नगरों में फैल गया। यहाँ इसके चरण में परिवर्तन भी हुआ। ये गीत गायक अब बड़े नाम बन गए। इनके रेकॉर्ड धड़ल्ले से बिकने लगे। एक नई प्राथमिक शक्ति पैदा हो गई जिसने संगीत को राष्ट्र-भर में प्रिय की वस्तु बना दिया। अब यह अग्रगण्य संगीत मुक्तिरागा बन गया। 'हाट जोड' 'नून जोड' बन गया।

संरचना में यह अमेरिका में जोड की घापी सदी का इतिहास है। किन्तु इसमें यह नहीं बतलाया जा सका है कि अमेरिका में कितनी गहरी प्रतिबन्धिता संगीत की रीतिमें में पड़ी है। संगीत के पशुद स्थानीय भागकाट के कारण ही नहीं बल्कि 'जोड' के स्वाभाविक स्वरूप के कारण भी। प्रारम्भिक 'जोड' में संगीतकार से अधिक महत्व गायक का था। गायक किसी भी रूप में गा सकता था और जो कुछ बाजे से निकलता वह क्मान्तरण का एक आश्चर्यजनक कार्य ही था—जादू की एक नयी शोभा-शान्ति जो इन्धियों का बतलाता बना है और जो की तरफ आए। वह सब कुछ परवन्त स्वाभाविक या जो वाद्ययंत्रों और वाद्य के स्वर से आश्रय प्राप्त करने पर अनायास हो जाता था। 'जोड' जोड धीमे सुल हो जाने वाला संगीत है इसलिए उसे एकद्वार स्मृति में सुरक्षित रखा गया है। इसलिए रेकॉर्डों का इतना महत्व है जिसमें स्पष्ट जोड बाँधकर सुरक्षित रखा जाता है। फिर जैसा कि सम्प्रदायों में होता है कि जब किसीने किसी साथ कैसे गाया वह बहुत छिड़ जाती है। अत्यन्त अत्यन्त में ही जोड का एक इतिहास और उसकी एक परम्परा बन गई है। जिसमें कुछ महान्-तिथियाँ और अनेक बड़े नाम हैं।

अमेरिकी युवकों का प्रीराकनाडूट आईकारा जितना हाट और नून जोड में मिलेगा उतना कविता चित्रकला या सांग्राम में नहीं। इस जालीसे में अधिकतर अमेरिकियों का वास्तव हैरी जेम्स से अधिक हैनरी जेम्स या विविथ जेम्स से कम था। युवक अमेरिकी जिनकी सब वास्तव और गार दुम्पवाइकों सेकमाफेजिस्टों या विपानोवाइकों में सेने ये उतनी बहिता या दान में नहीं। वह सारा बोधा प्राचीन ईसाई चर्चों की याद दिलाता था। पहला बाइबिल इतना बात की लेकर हाता था कि कोन-सी रीति प्राथमिक है और कोन प्राथमिक। पर सभी एकमत थे कि मुक्ति जोड का सब में ही मिलेगी। सेंटमुई और म्यू जोडों के बतलायावियों में गहरी प्रतिबन्धिता इन बातों की लेकर की कि सम्प्रदाय का अर्थ वही हुआ है? जोडों परवन्त की लेकर

कपाई भी बमबे सगी थीं। प्रत्येक कलाकार के अपने-अपने मंत्र थे जो उसे सबसे बड़ा मानते थे। इनमें इस मंत्र पर कलकों और समाज चोटियों में बहरी बहस भी होती थी। इन कलाकारों की मकदमसे हो बर्बाद करते थे जैसी कभी संतों को लेकर होती थी।

जॉर्ज के इन संतों की पंक्ति में एक कन्द्रीय व्यक्ति है जिसे भक्त-जगत् विश्व के नाम से पुकारते हैं। मध्य-पश्चिम के इस युग का पूरा नाम या तिथान विश्व बीडरलैक। इसमें मिसिसिपी में एक नाम पर अपने सङ्कल्पन में जॉर्ज सुना था। इसको चैट मूर्द धार्मिकता से हुई। इसने धीरे धीरे अपने को 'ह्लाइट' जॉर्ज का समुदाय बना लिया। 28 वर्ष की आयु में ही इस युग की मृत्यु हो गई। इसके संघीत से लोग इसने प्रभावित थे कि बीसे में इसके भक्तों का एक सम्प्रदाय हो बन गया था। थिकागे के दक्षिण में ह्यूम्बोल्ट के पर्वों में विश्व जाता जहाँ उसने जू क्रिस्चोफ़र के ट्रम्पट बादन और बेस्तीस्मिथ के ड्रु सिमिथ को छात्रमत्ता किया। यह 'जाप-सेसनों' और 'कटिंग प्रतिमो-मिताओं' में भी शामिल होता था। न्यूयार्क में यह पाम 'ह्लाइटमैन' के बैड में भी रहा। हार्मोन में भी उसने काफी समय गुजारा। यहाँ वाद्यों की सीमाओं को तोड़ने वालों में यह समुदाय था। किन्तु अधिकतर रूप में यह संगीतज्ञों का ही गायक रहा। उसकी सन्धि और उसका पद्य वाद एक मानदण्ड बना गया है। उसकी मन्त्रवादा तान के कैलाश में या धीत के धावे में नहीं बहिक स्वर की लज्जा में थी। यह बाइबलर हाइमन के धर्मों में बहना जो कुछ बात-यंत्रों को देती है उसका पक्ष था। फास्टर ने कहा है कि संगीत के धातुचक्र का नाम साहिरा के धातुचक्र से भिन्न है। यह गायक को यह मही बता सकता कि क्या करो न मही यह मकता है कि यह कहाँ जा रहा है। इससे जॉर्ज के धातुचक्रों की निर्णय की गहराई का पता चलता है। जब कैट्स बानर से जॉर्ज की बरिमाया के बारे में प्रश्न किया गया तो उसने कहा 'मेरे धातुचक्र, अगर तुम यह नहीं जानते कि यह क्या है तो टोप न अड़ाओ।

संस्कृत नाम के लिए यह धार्मिक धारणा है जो पापुमर संस्कृति का ही धर्म मही है बहिक मोन्दय के धारणियों और बीडिक का भी शत्रु है। पहले सामान्यजन और गुरुक बनावार की भाषा में बूरी थी। किन्तु सब तो इनके बीच दूरी प अधिकांशताम बन गया है। किन्तु जॉर्ज और त्रिप के शत्रु में यह बान उनकी सांगू मही है। यही बान्धविक पापुमर बम का धारण है। बाध के घुम में बाध और धर्म पुनराग नवीकरणों का धारण लक्ष्य भी। धारण को भी मकदम जिसका नाम धर्म है और यह धर्म गतिमान बनावार रह—तो यह भी उन्नी वर्ष का है और उन्नी बाना का प्रयोग करता है जो बर्बाद मना गायक

कमाल और पापुसर संस्कृति

इस संगीत के साथ जिस गीतिकाओं का सम्बन्ध है वे नागवार और बेहूरी होती हैं। पर प्रायः उनमें एक भयंकर हास्य और उगास तथा कष्ट आभाष भी होता है। अमेरिकी 'हाट' संगीत मुख्य के लिए नहीं होता इसके विपरीत पापुसर राम नाचने के लिए होते हैं। सब तो यह है कि जो बंधन प्रतिष्ठत कलाओं में नाचने के लिए फँसे होता ही नहीं। अब प्रायः जो बंधन होंगे वे गायी जाता है। यही मुख्य होता ही नहीं।

फिर भी जो बंधन में एक आन्तरिक प्रसाप है जो मुख्य से इसका सम्बन्ध जोड़ता है। वहाँ पछ्यों से धार्मिक धर्म शासन से आलाप अधिक स्पष्ट होता है। मुख्य वास्तविक रूप से दूर जा पड़ता है। मुख्यतः मुख्य प्रबलमान और स्वाभाविक होता है। पुराने अमेरिकी नृत्य सामूहिक होते थे। आधुनिक आत्मिक मुख्य तो युग्म-मुख्य है। किसी लड़की के साथ नाचना कोई छिप का आवाश्यक धर्म है। इसमें दूसरों को पहचानने की भी जरूरत नहीं। किन्तु जब संघीत धपनी सीमा पर पहुँचता है तो फिर रूप टूटता है और सब साथ मिल जाते हैं। संगीत कार भी कुछ नया सामयिक उत्पन्न करना करने की होड़ में पड़ते हैं। जब आम सैद्धांत धपन बारन पर पहुँचता है तो नर्तक कार्यक्रमों को धर्मवाद होते हैं कि उन्होंने उनको बड़ा उन्माहित किया। अमेरिकी जन पापुसर मुख्य और संगीत में सामूहिक प्रसंगा और धर्म के बेसी इच्छा के बितने वाम होते हैं उतने जीवन के किसी रूप में नहीं।

अमेरिका में मुख्य का इतिहास भी इनो आनिजाय और जन-जना के मत को स्पष्ट करता है। एशिया और अफ्रीका के धर्म धर्मों के विपरीत ईसाई धर्म में आत्मिक प्रसंगों पर मुख्य पर प्रतिबन्ध है। अमेरिका बट्टर ईसाई है इसलिए यहाँ धर्मों की गति पर उतना ध्यान नहीं दिया गया। सीमान्त नृत्यों में काफ़ी समय पूर्व यह जगहन तोड़ा किन्तु जब अमेरिकी शिक्षाधियों ने कलात्मक और प्राच्य आत्मिक नृत्यों को फिर से लाज दिया तो अमेरिका में भी नृत्य आनिजाय कला मान ली गई। इसके पुनर्गम में इनाडोरा बंधन रूप में डेविड और मार्वा प्राहम का बड़ा हाथ था। इन्होंने मुख्य को एक इष्टप्रतिष्ठ आधुनिक कला का रूप दे दिया। किन्तु जब तक वेने और सोननृत्य में मुसलमान कर यह काइब 'म्यूजिकल' में सम्मिलित नहीं हो गया मुख्य का सामान्य जनता में कोई प्रचार न था। इस दृष्टि से 'आत्मसाहाय्य सबसे आन्तरिकी म्यूजिकल था।

बिहारे और देखने में बसेम तस्वीरों को लेकर मंगलति की प्रतिभा के एक नये तस्वीर को लेकर संस्कृति-सम्बन्ध का निर्माण करती है इसका एक उदाहरण

अमेरिकी म्यूजिकल है। इसमें एक हल्का घायेरा जिसमें एक हलकी धीर छोटी सी कहानी रहती है प्रचलित थीतों का एक सारसम्य धीर स्वानीय लोक या प्राणिक तब पर घापरित एक गन्नीय बीने होता है। रंगमंच के संगीत पर भी जोर फिटनी गहराई से प्रभाव डाल चुका है इसका उदाहरण मृत्यु धीर संगीत 'योर्मा एंड बस' जैसे हल्के घायेरा में मिलता है। लयता है कि अमेरिकी भाषी संघीत पापुसर रंगमंच धीर उसके मृत्यु घापरत धीर जोर के कर्णों की धीर बाएगा न कि सिम्फोनी¹ मिलाने वाला गभीर संगीतकारों की धीर।

ऐसी बात नहीं कि अमेरिका में संगीत संगीत का मुख्य नहीं है। रेडियो टेलीविजन धीर डि डि रेकडों के माध्यम से कलाविक्रम परम्परा की कविपय घट्ट इतिया कापी प्रसिद्ध हुई है। इस पचासे में बाधवृद्ध की दृष्टि से अमेरिका में स्वर्णकाल था। प्रायः बड़ नगर में एक सिम्फोनी ऑर्केस्ट्रा था। जहाँ नहीं अगले ऑर्केस्ट्रा प्रायः उनका मुम्ने के लिए पचास सौ इकठ्ठे हुए। इसके बाद नगर है। इस समय अमेरिका में लोगों के पास बाजो पैसा है। फिर फाविल्टों के घाघचारों से वीरित होकर बहुत-से कलाकार यूरोप से आकर अमेरिका आये हैं। किन्तु मुख्य कारण यह था कि अमेरिका में मध्यम वर्ग म मसार की संघीत परम्परा के प्रति आकर्षण पैदा हो गई है। जिससे सब संगीत संगीत के दर्जा लेने लगे हैं। संगीत क्षेत्र में पहले जो स्थान मिलान म्यूनिग क्रमिक विनया बनिन एमटइन धीर ग्रॉग का था अब वहीं अमेरिका का है। इस सबका परिणाम यह हुआ कि अब अमेरिका के संगीत-नार धपन की बीना लमझने लगे हैं। कुछ समय तक यह भी कोमिच रही कि ऐसी वस्तु की लेकर ऐसी संगतकारों का एक स्कूल बनाया जाए। पर यह कोमिच की बेजार रही क्योंकि ऐसी संगीत बनाया नहीं जा सकता। अमेरिका के संगीतकारों की विधा स्थाविरही हिडमिच धीर स्कोनबर्ग के जीव हुई है। धीर के तीसरे बगल से बहुत-से मुकदों ने नाटिका बाउसगर के वीरिच सेमूनों में भी घाविरी की है। उन्हें बगल में कोमिच धीर बार्बर सेलध धीर घूमों विस्मय धीर वीपेरो घादि के नामों की बर्चा रही। इनकी कला महान् अमेरिकी परम्परा में है। प्रायः जन-कलाओं की भाँति जोर की भी मजस की गई। कई 'अमी' लेलाक हुए जिन्होंने एटीवीन फॉन्टर की लजस करने की कोशिश की। पर ये प्रान्त प्रायः हास्यास्पद ही गिने हुए क्योंकि उनमें अनुभूति की गहराई का निगम्य प्रभाव था।

जो अमेरिकी संगीत की धमनी दृष्टियम है। तब तो यह है कि सभी पापुसर कलाओं में जोर मजस अधिक देसी है। म्यू धार्मीय के अगड़ मायकों

कमार्पे घोर पापुनर संस्कृति

से निकलकर यह उन युवकों के पास पहुँचा जिनकी चिन्ता-बीता अपने समय के तानसेनों से हुई थी। अमेरिकी संस्कृति सदा इस संगीत में मुरार थी। इसकी सय अमेरिका की अपनी सय है। उसका सारा पय हृदयों को देना भी ठीक नहीं है। यद्यपि उसमें उनका प्राभास्य प्रबल है। यह बहुबान्तीय संस्कृति की कृति है। भाव तो यह अमेरिका ही नहीं पश्चिमी यूरोप एशिया और कम्युनिस्ट देशों में भी पहुँच चुका है।

जॉन्स घोर स्विग 'राक एन रोल' की (यह एक तात्कालिक मनोरंजन है जिसके अपने पुकारी हैं पर जॉन्स के प्रती इस पसन्द नहीं करते) अमेरिकी जीवन के तनावों की अभिव्यक्ति से कुछ अधिक है। ये परमाधिक संस्कृति के अकेलेपन और मन हटने की प्रक्रिया व्यक्त करते हैं। भाव अनुपम अनुपम के बीच जो अलगाव पैदा हो गया है वे उसे ही भरते हैं।

पारम्परिक आभिजात्य संगीत (traditional elite music) अपने योत्ताओं को निष्क्रिय बनाता है। किन्तु पापुनर संस्कृति का संगीत उसे अपने में सम्मिलित कर लेता है। उसे यतिशील और सामुदायिक क्रिया के नजदीक से लाता है। जन्म के समय पारम्परिक संगीत भी ऐसा ही था—या कहें कम-से-कम। वहीं सटी एक सली संगीत सामुदायिक और सामयिक था। भा तो वह धार्मिक था या घरेलू। इसमें संगीतकार गायक और श्रोता सभी भाग लेते थे। कठारों में बैठकर संगीत सुनना बेहूदी बरपना भी। अमेरिकी पापुनर नाटक और संगीत ने इस स्वतः प्रभूत और भविष्य के भाव को ग्रहण कर लिया है।

3 मकान, डिजाइन और कला

अमेरिकी संस्कृति औद्योगिक संस्कृति है। औद्योगिक संस्कृति से आता यह भी जाता है कि वह मूल की आभिजात्य कलाओं जैसे चित्रकला और मूर्तिकला रंगमंच वास्तुशिल्प और डिजाइन आदि को ऐसा रूप देनी जो मशीन जिन्ही वस्तु को है समझती है। औद्योगिक रूप में अमेरिका में यही हुआ भी है।

विश्वकला एक ऐसी कला है जो कि उपयोग में नहीं आती। क्योंकि भाव के जीवन में हमका कोई मूल्य नहीं। भीमघाटी की सम्पत्ता में मुकटीक में या भूमध्यसागरीय देशों की सम्पत्ता में यह बड़ी महत्वपूर्ण कला थी। मूर्तियों का प्रयोग के लिए सांस्कृतिक स्थान सांस्कृतिक मकान और घरघर तथा ऐसे सांस्कृतिक की आवश्यकता होती है जिन इन लोगों से प्रेम हो। अमेरिकियों ने कभी ऐसा ही सांस्कृतिक स्थानों के बारे में चिन्ता नहीं बनाए।

सम्प्रदाय में इसे प्रमुख बाधक-कला बनना ही था। कैमरा साथ में लिए मात्र अमेरिकी अपने देश में ही नहीं सारे संसार में जाते हैं। घसक्य छोटी वस्तु है फोटो-मनिकार्पें हैं वादिकियाँ हैं और इसकी प्रभुत्व प्रतियोगिताएँ हाथी हैं। बाड़ी जैसे व्यक्ति इस कला के प्रयुक्त थे। स्टीमालिज जैसे इसके पैगम्बर हो गए हैं। आज फोटोग्राफी से लोगों को चतनी ही रुचि है और लोग इस पर चटना ही धन खर्च करते हैं जो कभी चित्रकला या मूर्तिकला पर करते थे। फोटोग्राफर म्यूयाकें व। और वन और पुरस्कार के लिए देखते हैं। उनके हाथों फोटोग्राफी चित्रकला बन गई है। उन में कला के रूप में आज भी संस्कृति के मुख्य ध्येय—मानवीयता नाटकीय क्रिया (dramatic action) गतिशीलता (dynamism) परावर्तन (surface) और गति (movement) की प्रथि व्यक्ति होती है।

सुप्त होन जाने बिग्रेटर पर काफी खोज की गई है। कहा गया है कि यूरोपीय बिग्रेटर में पेरिनिमन या एमिवावेय काल या इम्पेन बेखोब स्ट्रुक्चर और वा के काल की तुलना में अमेरिका में इतनी रचनात्मक प्रतिभा के दर्शन नहीं हुए हैं। अन्तर पारम्परिक शासोचना तो है ही कि अमेरिकी बिग्रेटर का आधार बड़ा मनुष्य है। यह 'बाइने' से कल्पित है, जो एक सहर का एक क्षेत्र है। इसकी अर्थव्यवस्था बड़ी तुल्य है। इसमें बाड़ी पूर्वी सगाने की धाव दयनता होती है दृढ़ युनियनों से उत्पत्ति ठेके करने पड़ते हैं। वेस 'हिट' बने यह सदा आवश्यक रहता है। समामाजिकी का एक छोटा-सा दल सारे रचनात्मक बन हावी है। यह धारिचितों के प्रति क्रुद्ध रहता है। रपर्यच अमेरिका में मध्यवर्गीय कला है। इसमें प्रयोग को बहुधा स्वागत नहीं मिलता। कुछ निरिचत मूल है और निगारे हैं जिनको लेकर नाटक रोला जाता है। अन्त में यह भी बाने है कि रचनात्मक की सामग्री के लिए उपयुक्तों की ओर जाना पड़ता है और दूसरी ओर यह निवेदा का भी करव है।

इन सब बातों में सत्य बाहु जो भी हो इतना तो है कि ये सब बाधें वस्तु को ठह मक नहीं पहुँचती। मेरी राय में बिग्रेटर को सुप्त होने वाली कला होना चाहिए वह यह है नहीं। बीच में हम मूर्खीन ओ० नीम तीछे में ओदेव् मरोन निमियन ईनर्जन और निहमी नियमे बाभीसे और पचाते में सेनेस्त्री बिनिम्स और धाकर निधर वीती तुलनात्मक प्रतिभाएँ हुईं। इसके अतिरिक्त मूर्खीन ओ० नीम तीछे में ओदेव् मरोन निमियन ईनर्जन और निहमी नियमे बाभीसे और पचाते में सेनेस्त्री बिनिम्स और धाकर निधर वीती तुलनात्मक प्रतिभाएँ हुईं। इसके अतिरिक्त

द्वारा और पापुसर संस्कृति

प्रश्न है ये फोटोग्राफी का मुकाबला नहीं कर सकते थे। ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से अपने को प्रथम करने के लिए चित्रकारों ने प्रतीकवाद (symbolism) और अभिव्यक्तिवाद (expressionism) का सहारा लिया। पॉल गोर जर्मनी में इस शैली के प्रतिपक्ष प्रवृत्ति चित्रकार हुए। यह शैली अमेरिका में कुछ दूर से पहुँची जो काफ़ी अभिप्रायवादी (purposeful) और आशावादी (optimistic) है। स्टीवन गोर हार्वर्ड का महाविद्यालय फूला और यह स्वाभाविक भी था कि ऐसी समृद्ध अवस्था में जनमानस और उनकी मारियों का चित्रकार अमेरिकी शक्ति और उनकी आस्थाओं के कमजोर परातल परड़ता। जब आलोचकों ने स्थानीय शैली के प्रभाव का रोना रोया तो कुछ कटी, बेंटन जैसे चित्रकारों ने अमेरिकी 'लोक वस्तु' को लेकर उसकी रचना भी की। किन्तु इनकी प्रतिभाएँ भी अमेरिकी चित्रकला परातल तक नहीं पहुँच पाई।

आवश्यकता इस बात की थी कि चित्रकार अपने अन्तर के माध्यम से अमेरिकी सम्यता के अन्तर का टटोलता। इनके पहले की पीढ़ी में हार्ट्स सीरिंग और गोर जैसे चित्रकारों ने यह किया था। चित्रकला में ऐसा हुआ कि प्राचीन आत्मवेतना का भार हल्का हुआ। यूरोप में मूढता का पक्षी लौट था। आज जब अमेरिकी फुल्ल स्कूली बच्चों की तरह नहीं है जब शक्ति चिन्ता और प्रलय की कल्पना पश्चिम में समुद्र पार का देश है और चित्रकार जीवनवास को निरहस्य भावितियों और मजबूत रंग से जीने में अंतरात्मा का अनुभव नहीं करता। अमेरिकी चित्रकला अपने का पा सती है। अमेरिकी चित्रकार ने अब जान और दया से परे प्रतीक रूप में अमेरिकी शक्ति की अभिव्यक्ति का 'इन्डियम' पा लिया है। जिनकी प्रतिद्वन्द्विता भी माटी संस्था में बन सकती है। इसलिए चित्रकारों की संस्था भी काफ़ी है। नये शक्ति अब अपने घर समान के लिए उनकी कृतियाँ छीटते भी हैं। नये मध्यम ने अब शक्ति और प्रसन्नता के नये स्तर स्त्रोत्र निकाले हैं। यद्यपि अविश्वस प्रतिद्वन्द्विता प्राचीन कलाकारों की ही हुई है पर अमेरिका आज अपने चित्रकारों की कृतियों को भी काफ़ी जानता है। अब बड़े डिपार्टमेंट स्टोर्स में चित्र भी प्रदर्शित होने लगे हैं। अमेरिकी चित्रकला को आर्थिक आधार भी मिला हुआ है।

फोटोग्राफी के सामाग्यवाद ने चित्रकला और मूर्तिकला दोनों को बहुत क्षति पहुँचाई है। लोकिया और सिनेमा और टेलीविजन के लिए भी फोटोग्राफी की जाड़ी है। 'घटर' हटाएँ और सेंट्रल प्लेट पर मुख्य तस्वीर बन गई। कला के रूप में कैमरा एक तब ईमानदार, प्रबलमान यथिपाल पुनरुत्थान की प्रत्यक्ष समता वाला पारंपरिक, काल और देश का चित्रता है। एक टेक्निकल

किन्तु घब सार्वजनिक जीवन कम होता जा रहा है। बगीचे और घोंघस तो घब भी होते हैं। इनमें एक सं सैनिकों की घोर दूसरे में न्यायाधीशों की मूर्तियाँ भी लगाते हैं किन्तु यह घब एक घातकता या धक्कमप्यता है किसी विश्वास के कारण नहीं।

सिक्म मेमोरियल में सिक्म की एक मूर्ति है। ऐसी ही छिटपुट मूर्तियाँ घोर भी मिल जाएँगी जो विप्लव के घपबाद स्वल्प प्रतीत होती हैं। घात्र के मूर्तिकार की घाय फुपायों घोर लस के मदानों की मूर्तियों या ममूर्त के विषम बानी मूर्तियों के निर्माण से ही है। मूर्ति का निर्माण बड़ी सख्या में नहीं होता न उसका बड़ भाष्यमों के द्वारा प्रसार ही होता है। इसलिये यह उतनी पागुमर (मोक-प्रिय) कसा नहीं है जितनी घम्य कसाएँ। अमेरिका में घात्र घच्छ घच्छ पहसबान हैं घोर सुन्दर से सुन्दर नारियाँ भी जिनकी मूर्तियों की प्रससा होती। किन्तु मूर्तिकता जनकता के रूप में घाटोपाक्री का मुकाबला नहीं कर सक्ती। वष-वषिकाओं में पहसबानों के मतिपुर्न चित्रों की भरमार रहती है जिन्हें बेचकर अधिकार अमेरिकी मूर्तिकता का गतिहीन कहत हैं। इती प्रचार टेमोविजल किम्य वष-वषिकाओं में मुन्दरिया के विभिन्न मुनाओं से चित्र दितते हैं। इसलिये सवेदनशील मूर्तिकार, चित्रकार की भाँति मानव-शरीर के प्रतीकारमक घोर ममूर्तन की घोर मुद गया है। इसका जो फल हुआ है उसकी पुष्टि में तर्क देने की आवश्यकता नहीं। किन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि घात्र के मूर्तिकार के सांस्कृतिक अनुभवों घोर मूर्त के मूर्तिकार के सांस्कृतिक अनुभवों में बहुत बड़ी दूरी है।

अमेरिका में ऐसे चित्रकार काफ़ी बड़ी संख्या में हुए हैं जिनके पास पर्याप्त प्रतिभा थी। इनकी शानिबी भी कई प्रकार की थी। किन्तु इन्हें अच्छे दर्पक घोर अच्छा वातावरण न मिला आ उन्हें प्रोत्साहन देता। मध्ययुग घोर पुनर्जागरण काल के इटासिपन घोर कश्मिन चित्रकारों के पास चित्रण के लिए ईसा की कथा थी। ऐसी कोई कथा भी तो इन चित्रकारों के पास नहीं है न उनकी भाँति मिस्त्राहम बेरस' जेमा कोई भवन ही इनके पास है जिसकी बीबारें ये अपने चित्रों में रंग देने। आधुनिक वष में कोम कश्मियम स्प्रिनियार्ड इटली में चित्र बना के महाम् सम्प्रसाय हुए हैं। वष इन सम्प्रसायों के चित्रकार घात्र की पैशाचारी प्रोटेस्टेंट शक्ति से बनरा गए थे। इन्होंने उम धार्मिक परम्परा का बचा-गुवा भाग घात्रमान कर लिया। दमपिण चित्रकला में प्रकृति-चित्रण घोर दर्पण की घोर भरान हुआ। किन्तु जहाँ तक विषय के प्रति ईमानदारी का

हू। 40 वर्षों का यह इतिहास बतसाता है कि जब प्रामाण्य मगर से विप्रेटर पाव नहीं पहुँच चुका है वह केवल एक घटना ही नहीं है बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि रंगमंच में इस शताब्दी में पर्याप्त अमेरिकी व्यक्ति की व्यक्तित्व हुई है। उतनी ही जितनी उपस्थास में। कोई भी रंगमंच का तटस्थ इतिहासकार नहीं कहेंगा कि इसन स्ट्रिडबर्ग और वा के बाद नाटकीय रचनात्मकता का केन्द्र समुद्र पार जाहने में जाता गया है। जाहने अभी यूरोप के निर्वातों पर ही जाता था। जब वह संदल और पेरिस का मुकाबला करता है। कह सकते हैं कि इनके लिए भी वह ईर्ष्या की वस्तु बन गया है।

यदि रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन से जुड़ गया है तो यह उसकी कमजोरी नहीं है। सच है कि हासीबुड और मेडिसन एक्स्प्ले उसके नाटक करीबकर उसका धोषण कर रहे हैं प्रतिभाशाली नाटककारों का पैस ही किराये पर ल सेते हैं जैसे विनेता रोम जाने यूनानी बुद्धिवाधियों को दखेन और कमा सिलसाने के लिए खरीद सेते थे। किन्तु हासीबुड के रुपये के बावजूब कोई पूछ सकता है कि मुख्य बाप कीम-सी है और कीम-सी उसकी सहायक। नाटक में एक सम्पूर्णता है जो सिनेमा या टेलीविजन में नहीं। नाटक नटक व्यक्तित्व और दर्शक की सम्पूर्णता यहाँ मिलती है।

जब कई कमार् मिलती हैं जैसे नाटक सिनेमा और टेलीविजन तो वे परस्पर प्रभाव डालेंगे ही और इससे एक-दूसरे को लाभ भी पहुँचगा। भावमय की बात है कि जब अमेरिका में सिनेमा और टेलीविजन का प्रचार हुआ तभी नाटकीय रचनात्मकता भी रही। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि केवल वे ही व्यक्तित्व काम कर रही थीं। किन्तु यह सत्य है कि इनसे इस रचनात्मकता में मदद मिली। जब नलक को यह पता है कि उसकी इति जाहने के एक सीमिति धेन से करोड़ों दर्शकों तक पहुँच सकती है तो उसे प्रेरणा और उत्साह मिलता है। एक बात और है—सेलक के लिए बड़ माध्यामों से अधिक महत्व रंगमंच का है। जब तक नाटक को जनता महान् कता नहीं समझती महान् रंगमंच कमजब नहीं है।

सूपार्क विप्रेटर के अधिकांश प्रयास 'मॉड्र जाहने' में होते हैं। यहाँ के विप्रेटर छोटे और कम शिष्टाचारी होते हैं। इनमें भीड़ माड़ कम और निर्माण लभ भी कम धाता है किन्तु 'जाहने' में केजीयता से कोई हानि नहीं है, जैसा बतसाया जाता है। एलिजाबेथियन तुजडी के समय में संदल में भी ऐसा ही छोटे के ब्यास में जमाव था। एक्सेस में भी ऐसा ही हुआ। जाहने में देरा न मभी बावों से नाटकों के दर्शक धाते हैं। दली के छोटे प्रतिरूप 'सिटिस विप्रेटर' रनों में मिलेंगे। ऐसे वस पुरुष जगहों में भी मिल जाएँगे। जाहने का धारणा बूक धवों में हासीबुड से भी पहला है। विप्रेटर उन लारों का धाधय है जो

सम्पत्ता में इस प्रमुख बाधक-कसा¹ बनना ही था। बीमरा राश में लिए मात्र अमेरिकी अपने देश में ही नहीं सारे संसार में जाते हैं। असंख्य फोटों बनने हैं फोटो-मजिक्² हैं वायिकियां हैं और इसकी सम्पत्त प्रतियोगिताएँ जाती हैं। बाकी जैसे व्यक्ति इस कसा के अग्रदूत थे। स्टीगालिज जैसे इसके पैगम्बर हो गए हैं। मात्र फोटोग्राफी से लोगों को उतनी ही रसि है और लोग इस पर उतना ही धन खर्च करते हैं जो कभी चित्रकला या मूर्तिकला पर करते थे। 'साइक' और 'लुक' जैसे पत्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संसार भर के फोटोग्राफर 'लूक' की ओर धन और पुरस्कार के लिए देखते हैं। उनके हाथों फोटोग्राफी चित्रकला बन गई है। उन में कसा के रूप में मात्र नौ संस्कृति के मुख्य ध्य—मानवीयता नाटकीय क्रिया (dramatic action) पथिमीयता (dynamism) धरातल (surface) और गति (movement) की धमि व्यक्ति होती है।

मुक्त होने वाले बिन्दु पर बाकी लोग की गई है। कहा गया है कि यूरोपीय बिन्दु में पेरिक्सियन या एलिजाबेथ काल या इसन केजोब स्ट्रुडबर्ग और वा के काल की तुलना में अमेरिका में इतनी रचनात्मक प्रतिया के बदन नहीं हुए हैं। छिद्र पारम्परिक धामोचना तो है ही कि अमेरिकी बिन्दु का धारा बड़ा संकुचित है। यह 'जाहने' में केन्द्रित है जो एक पहर का एक शेष है। इसकी धर्म्यवस्था बड़ी दुस्तह है। इसमें काफ़ी पूँजी लगाने की धार बयवता होती है दुर्ध प्रतियोगिता से एजिनि ठके करने पड़ते हैं। धन 'हिट' बने यह सदा धार-पक रहता है। समालोचकों का एक छोटा-सा दल सारे रंगमंच पर हावी है। यह धरपट्टियों का प्रति मुख्य रहता है। रंगमंच अमेरिका में मध्यवर्तीय कला है। इसमें प्रयोग को बहुधा स्थान नहीं मिलता। कुछ निश्चित मूल है और निगारे हैं जिनको लेकर नाटक ऐसा जाता है। धन में यह भी कहने है कि रंगमंच की सामग्री के लिए उपग्यासों की धार जाना पड़ता है और इन सब बातों में गाय जाहे जो भी हा बनता तो है कि में सब बातें बस्तु को सह तक नहीं पहुँचती। मरी राय में बिन्दु को मुक्त होने वाली कला होना चाहिए पर वह है नहीं। बीछे में इसमें मूर्तीन धोनीस तीछे में छोडेय मरीयान निमियन हैमचैन और सिडनी बिम्स आसीछे और पचाने में छेनेसी निमियन और धार मिसर र्सी मृजनात्मक प्रतिभाएँ हुई। इनके अनिरिक्त मनीन बमिदियों और नाटकीय धारेरा में भी पर्याप्त धरपट्टी प्रतिभाओं के दगन

हूए। 40 वर्षों का यह इतिहास बतलाता है कि जब प्रामाण्य नगर से मियेटर काबू पड़ चुका है वह केवल एक घटना ही नहीं है बल्कि यह भी मित्र करता है कि रंगमंच में इस घटना में पर्याप्त अमेरिकी शक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। उतनी ही जितनी उपन्यास में। कोई भी रंगमंच का तन्त्र इतिहास का नहीं कहेंगे कि इसमें स्ट्रुडवर्ग और सा क बाद नाटकीय रचनात्मकता का केन्द्र समुद्र पार बाइबे में बना गया है। बाइबे कभी यूरोप के निर्वातों पर हो जाता था। जब वह संवत् और पेरिस का मुकाबला करता है। कह सकते हैं कि इनके लिए भी वह ईर्ष्या की वस्तु बन गया है।

जब रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन से जुड़ गया है तो यह उसकी बमबारी नहीं है। सच है कि हालीवुड और मेडिसन एवेन्यू उनके नाटक खरीदकर उनका प्रोपम कर रहे हैं प्रतिभावाली नाटककारों का बैसे ही किराये पर न लेते हैं जैसे बिजता रोम वाले युवाजी कुठिवाड़ियों को दान और काम सिखाने के लिए खरीद लेते थे। किन्तु हालीवुड के रुपये के बाबजूद कोई पूछ सकता है कि मुख्य धारा कौन-सी है और कौन-सी उसकी सहायक। नाटक में एक सम्पूर्णता है जो सिनेमा या टेलीविजन में नहीं। नाटक ललक अभिनय और दर्शक की सम्मुखता यही मिलती है।

जब कई कसाएँ मिलती हैं जैसे नाटक सिनेमा और टेलीविजन ता वे परस्पर प्रभाव डालेंगे ही और इससे एक-दूसरे को लाभ भी पहुंचता। धारण्य की बात है कि जब अमेरिका में सिनेमा और टेलीविजन का प्रचार हुआ तभी नाटकीय रचनात्मकता भी रही। मेरे कहने का धर्म यह नहीं कि केवल ये ही एकदम काम कर रही थीं। किन्तु यह सत्य है कि इनसे इस रचनात्मकता में मदद मिली। जब लेखक को यह पता है कि उसकी कृति बाइबे के एक नीमिति से करोड़ों दर्शकों तक पहुंच सकती है तो उसे प्रेरणा और उत्साह मिलता है। एक बात और है—लेखक के लिए वह माध्यमों से अधिक महत्व रंगमंच का है। जब तक नाटक की जनता महान् बना नहीं समझती महान् रंगमंच सम्भव नहीं है।

ग्युआर्क मियेटर के अधिकतर प्रयोग 'घोड़ बाइबे' में हुये हैं। यहाँ के मियेटर छोटे और कम छिप्टाकारी होते हैं। इनमें भीड़ साइ कम और निर्माण वर्ष भी कम आता है किन्तु 'बाइबे' में केन्द्रीयता से कोई हानि नहीं है जैसा बतलाया जाता है। एलिजाबेथियन टुबरी के समय में संवत् में भी ऐसा ही छाने में व्याप्त में आता था। एवेंस में भी ऐसा ही हुआ। बाइबे में देश के सभी वर्गों के नाटकों के बराबर आते हैं। इसी के छोटे प्रतिरूप 'निटिल मियेटर' वर्गों में मिलेंगे, ऐसे बल कुछ जगहों में भी मिल जायेंगे। बाइबे का धारण्य पूछ यहाँ में हालीवुड से भी गहरा है। मियेटर उन लोगों का धारण्य है जो

बढ़ माध्यमों से तंग है। माटकरार इसमें गहराई की चाह भिता है। इसमें जरूरी नहीं है कि वह अमेरिकी जीवन के आशावाद या सतही मूल्यों की ही प्रतिबिम्बित करे। यही उसे बड़े निर्माताओं या चोताओं का मूह जोहने की भी जरूरत नहीं। वह कम इसकी की संख्या के लिए निपटा है इसलिए वह प्रति पुरातना शक्ति का एक संग बन जाता है। वह पुरानी प्रवृत्तियों को उलटकर नई प्रवृत्ति की रचना करता है। वह अचूक बन सकता है जिसका अनुमयन बढ़ माध्यमों नाम करे।

अमेरिका में रंगबिरंग कला-कला है और फलता फूलता रहेगा क्योंकि बड़े माध्यमों को यही से सामग्री मिलती है। उपन्यास की शक्ति प्रेरणा शक्ति और व्यक्तिगत के विवेचन का यह सर्वोत्तम माध्यम है। इसमें शक्ति और तनावों का चित्रण और भी गहराई से होता है।

अमेरिकी गृह-वास्तुकला के क्षेत्र में आज से अस्सी साल पहले के संघर्ष है एक ओर है उपन्यास और सीढ़ियों के समन्वय का भाव तो दूसरी ओर है निर्माण-सहृदय, अमीन सामान और मजदूरों के ऊपर ऊँचे ध्येय तथा परिश्रम को मल्टीकरने के उपाय। ऊँची आवाज बानों के वर्ग में पिछली शताब्दी के संघर्ष में ग्लोब्स और मीराटोया सिग्नल से बने भवन ग्लोब्स और डिजायों के औद्योगिक सम्राटों के महान शक्ति की दृष्टि में अतिरिक्त बन गए हैं। आधुनिक मानवता में इनमें कुछ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव है किन्तु शताब्दी के संघर्ष में ईंट, ईक्रेम स्टैंडोड फ्लाइट प्लैट और ईक्रेम कुछ से जा काय किये हैं वे वास्तुकला में इतिहास में बढ़ अनोखे हैं। ठीक है कि प्रवृत्ति के लिए भी प्रवृत्ति हुआ है। औद्योगिक सम्राटों से जब बन गया तो उन्हें इसका प्रवृत्ति भी करना था कि उनके पास था। किन्तु इनमें मूर्खता को उतना स्थान नहीं मिला। क्योंकि इन महानों में उपयोगिता और सीढ़ियों के बीच कोई समन्वय ही नहीं हो पाया है। इन के बनों में आश्चर्य से कुछ कमी हुई है और अब सम्पूर्ण जीवन की शक्ति वास्तु क्षेत्र में अत्यंत गति करी की अभिवृद्धि है। अमेरिका के टाइम्स या एनीवर्क के सिनेमा बजारों के बजारों में अभी भी दिग्गज मिलती है। किन्तु अब गृह-वास्तुकला को मुख्य रूप से प्रभावित करने वाले माध्यमों के परिवार ही है जो यह चाह है कि अन्तर्गत ऐसे बनों की आराधना हो और उनकी गुणवत्ता के प्रतीक हो। अन्तर्गत यह है कि अमेरिकी मजिनों, ओहारा मोन्टी गुनी शक्ति के इन विचारों हैं पर वास्तुकला के क्षेत्र में विभिन्न शक्तियों की आवाज भुक्त रहे हैं। दृश्य जीवन और अपने बारे में उनके जो भाव हैं उनकी अभिव्यक्ति होगी है।

प्ररणा के लिए बहुत-सी पुनर्नी दीवियाँ हैं जो अपने समय घोर दान की दृष्टि में महत्त्व रखती थीं। न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशधर की डिजाइन बड़ी सारी थी। यह उनके निवासी मर-नारियों के ईश्वरीय नियमों से जानित जीवन का प्रतीक थी। बाहेर फागसर हा या नगर का नर चर्च या स्मून् न्यू इंग्लैण्ड बासी के मङ्करी के काम में एक प्रगल्भा थी। उसक घर क फर्नीचर में भी यही बात थी। यह घोर सुन्दर बिगपर जहाजों जैसे इविड बेंकके में यह बिगपता घासकर दिखती है। य जहाज डिजाइन-लेख में अमरिकी सफलता के अच्छे उदाहरण हैं।

ब्रिगन बासों का भी महान निर्माण का अपना दान था। इनका सबसे प्रख्यात वास्तु ब्राजियल दीसी का था जो घटाखूबी गली के बर्जिनिया मेरीलैण्ड और कैरोलिनान ब्रिजियम्सबय के पुनर्निर्माण घोर ब्राजिनिया के ब्राजियल मकानों में जिनमें ब्राजिगटन का माउंट बार्नोन् का मकान भी शामिल है इन दीसी का देसा का सफटा है। चीनी घोर कई बागान के मानिकों ने पुनर्नी पुनर्जन्म की दीसी के बर्जों वाले बागानों क मकान बनबाये थे। वे मकान सफ्टी घोर स्टनरों की इटों क बने हैं। दक्षिण में प्रबामियों ने स्पेन की दीसी में घोर अटलांटिक किनारे पर लोगों ने इनिमो जोम्न घोर ब्राइस्टोफर रेल की तन्म पर मकान बनबाये थे। इनमें इविगन और स्पेनिश टत्व स्पल्ट हैं जो स्पानीय बातावरण ने अनुकूल ग्रहण किम गए थे। यह लेबीय दीसी दो प्राय तक बनी भा रहो है। पश्चिमी दीसी ने अमेरिका की बीगासा जैसे मकानों की दीसी दी है। इनमें एक देहाती वास्तु और बाहरी सारणी के साथ-साथ घाघम का सम्मिश्रण किमा गया है।

मिने गृह निर्माण के शत्रु में अमरिका का एक मनोरंजक देने का बनन छोड़ दिया है। यह है 'मास्ट बाकन'। इनका प्रारम्भ मध्य-पश्चिम में 1830 के घामघाम हुआ था। इनका मन्वग्य 'बैलून-जम से था। मकान के भौतिक इति क निर्माण का यह नया तरीका था जो तेज इस्का कम उच्च पापियों का सामना करन वाला और बढ़ाकर था। इनका संगारण घोर उपायोदिता बीगधी गली तक भी बनी घाई है। छोटे नगरों क मध्यबयों क मकानों में इस दीसी के दर्शन सब भी होने हैं। इन दीसी के मकानों क रहने वाले बीटियों से यह जानन ही मही कि उन्हें वहाँ बगना है। इनके मरान ऐसे नहीं होते या कई पीटियों बमने के ब्राजिम हों या जिन्हें मर्याति माना जा सके। जो कुछ सामान घामघाम मिला उसी से ये बना लिए जाते हैं। अमेरिकियों ने अपने मकानों में उपायोदिता का बड़ा प्पाप रगा है। जब वे घनो हो गए

ये कम शुर्ब के मरान ही प्राधुनिक नगर विवेक को सविश्रुत बत है । अमेरिका के बड़े शहरों में यात्रागता सभी प्राती है जब एधनिक दृष्टि से धर्माधितों के बन धीरे कम धाय बाल रिहायणी धर्मों की भाग करते हैं धीरे इस प्रकार सारी निवास-व्यवस्था ही बदलनी पड़ती है । सकारियों की भीड़माड़ क कारण भी शहरों के बसने की योजना बनानी पड़ती है । जब पर पुराने धीरे धेकार हो जाता हैं तो शहर क सस पूरे भाग को ही गिराकर वहाँ योजनानुसार बस्ती बनाने की धायधयकता धा पड़ती है । वहाँ शहर पुरानी केंबुल छोड़कर नई केंबुल धारण कर लेता है ।

महान् वास्तुकला का धायार विदवास है । धमरिधियों ने धभी ऐते किसी धरेनू जीवन की विधि का निर्माण नहीं किया कि जिस पर विदवाओं की अड़ धम सके धीरे एक नई वास्तुकला का निर्माण हो सके । धनवा धपनी टेकनो सौत्री में विदवास है । इसे धरा दुधरे धंग से कहें ठा कह सधते हैं कि अमेरिकी धन ने उपमोग धीरे सुसमय जीवन की कलाधों में धधिक सधमता पाई है । इतनी सधमता अहैं जीवन का उध्धय विधर करने में नहीं मिनी है । धध उन्होंने उतवादन से सम्बन्ध रखने वाले धवन जैसे कारखान, दफ्तर, जल विधत् बाँध बिजलीघर धा सड़कें बनाई हैं तो इसम धधिक सधाई रही है वनिस्वत उनके रहने के मकानों क ।

जैसे सड़की के मवानों के 'बैलून केम' होते हैं वैसे ही कारखानों धीरे दफ्तरों के निर्माण में अमेरिकियों ने स्टील केमों का बाड़ दिया है । इसका भी धारम्भ सिकानो म हुआ । सिकानो का धारी धाग लाने के बाध पुनर्निर्माण हुआ बा । वहाँ नये विधारों के धप्रोध का धध्धा धधधर मिता । जिसे अमेरिकी वास्तु का ऐनेसा कह सधते हैं, उसका धारम्भ सिकानी में ही हुआ । वहाँ व्यापारिक 'स्काई स्केर' के धधि को रोड की सई धीरे तोहे के ठठरों की पत्थर धीरे सीमेंट से भरा धया ।

जान रम्किन ने धपनी 'सेमेन सेन्स ऑफ़ धार्किटेचर' में धधधार के बड़ बीच की बधा की है । अमेरिकी स्काई स्केर उमका धध्धा धराधरण है । स्काई स्केर में जस बधुतर की धानता है जो प्रत्येक अमेरिकी शहर में शहर मर क मकानों से ऊपर अमेरिकी धीधोधिक बतिमा ने स्मारक के रूप में सड़ा रहता है । यह सिकानो का 'ड्रिगुन' टॉवर भी हो सकता है धा राइफेनर सेंटर धा इन्वायर स्टेट धा न्यूयाक में विसमर बिहिडग धा सान धाविन्को में 'म्यूज' बिहिडग भी । यह धिया धधधित, पध्रिधार धा मध्धर की धधिन का धरण होता है । मिजान्त धन में धनवा उध्धय न्यूयार्क सिकानो कनीबर्नर द्धुधपट जैसे बड़े नगरों में बहुमूल्ध जमीन बा किराधपत में उपमोग काना होता है । किन्तु जिन्होंने टेवमाध धा धोधनाहोमा जैसी जगहा में जहाँ जगह की उधनी

संविधान नहीं बीच मंजूरि मकान देते हैं वे मतमाएँ कि सीमेंट मोह के इतने
 संघ स्थान में ऐसे उपयोग से तबिय घटी नहीं बड़ी ही है। स्काई स्क्वेयर में
 गोबिक रीसी का एक टावर होता है जो 'स्टेचर' की भाँसा का प्रतीक होता
 है। यह 'स्टेचर' की भाँसा का श्रृंखला में भी हो सकती है जहाँ जगह की
 तबिय है और किसी सेन के मगर में भी जहाँ जगह की इजारात है।

यने नगरों के सभासरो में भी जहाँ प्रत्येक फुट जमीन का महत्त्व है, प्रकाश
 की समस्या होती है। नगर की गई प्रवृत्ति को अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से प्रभावित
 है साध-नाश की लुत्ती जमीन का महत्त्व स्वीकार करती है। इस लुत्ती जमीन
 के कारण ही वो ज्यामितिक डिजाइन सीमेंटी। ऐसा प्रतीत होता है कि यह
 अमेरिकी अपने बारे में इतने आसक्त हैं कि यह अपनी सक्रिय प्रदर्शन के
 लिए 'सेटिंग' की आवश्यकता है। यही बात उनके पुर्णों के ऊपर भी लागू
 है। बिरोधकर हस्तन के ऊपर जोर बाधितन द्वि में। पुर्ण के दोनों किनारों
 पर दो मीनारों की योजना भी जो असकरण के रूप में रखे गए थे। किन्तु
 पुर्ण की रचना की डिजाइन ही इतनी आकर्षक थी कि जनता के विरोध के
 कारण य मीनारें अयूर्ण ही छोड़ दी गईं।

स्काई-स्क्वेयर में ऊँचाई से अधिक कुछ और है। इनमें संवरना (abrupture) की द्विपक्षीय और देवाओं की साक्षी है जो अमेरिकी सक्रिय के वास्तु
 की विचारणाएँ हैं। आधुनिक कारखानों पुर्णों पार्क-के मोटर सड़कों मछली
 घरों (aggregates) नदियों के नीचे गुरनों रेल-स्टेशनों हवाई अड्डों
 अस्तवालों के सम्मिश्रण में भी यही बात लागू है। चाहे सरकारी हों या निजी
 इन सबका में के सभी कार्य होते हैं जिसका अमेरिकी दृष्टि में महत्त्व है।
 किन्तु वास्तवों और लुत्ती के सम्मिश्रण में इन उसी रूप में यह बात नहीं कह
 सकते। न कबों और कबलुनों के बारे में ही। प्राचीन गुरु दर्शन के देहाती
 कबों में तादसी टोपनन धर्म और जाति में सम्भव का भाव था। उनके
 भुवाविन धात्र के विरिधपर लोगन सीमने हैं जिनसे प्रतीत होता है कि
 अमेरिका के समस्त देवता इनमें नहीं बरिध नहीं और रहते हैं।
 रस्किन की भाँति मेरी मायता है कि वास्तुजगत्ता में भूत नहीं छिप
 सरता। निर्वाचक मकान के हैं जिनके पीछे कोई विचार है। सबड़ी बारबर
 और मोह से कोई जाति जिन सीमी का निर्माण करती है वह लुत्ती संकीर्ण
 रोगाओं या रवों के द्वारा की गई अभिव्यक्ति की भाँति एक आधुनिक
 अभिव्यक्ति का मायम है।

घोटीविक मकान से ही संबद्ध घोटीविक डिजाइन है। प्रारम्भिक प्रवासी
 जिन सारसी के माध्य अपने दैनिक उपयोग की वस्तुएँ बनाते थे,
 धात्र के अमेरिकियों हैं। बीच में यह मादसी

हो चुकी थी। 'उपाश्रित' के मुकाबिले 'देसी' परम्परा का गुणगान करते हुए जॉन ए० क्वेन हाबेन ने रिबोन्सूयनरी राइफल उस काल के हत रेत के इंसान सीने की मशीन भाइस टी फोर्ड प्रादि के बीच गाये हैं। निरक्षर ही जब अमेरिकी धार्मिकतन्त्रा के प्रति आपत्त न हों और बसा की चिन्ता न करें तो उनकी औद्योगिक डिजाइनें सर्वोत्तम होती हैं। इसी प्रकार मशीन-संस्कृति में चलकर वे मशीन निर्मित वस्तुओं की दृष्टि से देखें तो मानना पड़ेगा कि उनमें आर्थिक सामियाँ हैं। उनकी प्रतिभा ऐसी दस्तकारी में रचि नहीं लेती जो पीढ़ियों-दूर-पीढ़ियों बसती है। अमेरिकी मशीनें बनाने में सफलता प्राप्त करत हैं। इन मशीनों से परिमितृष्ट सटीक और साफ़ डिजाइनों की चीज़ें निकलती हैं। जिसका अपने उद्देश्य के मुताबिक उपयोग होता है। जब इसक लिए तक देने की आवश्यकता नहीं है कि मशीन से जो कुछ निकलता है वह उपयोग और सीमन्त की दृष्टि से बटिया नहीं होता है। और कि वह बड़े पैमाने पर चीज़ें बनती हैं तो उनका वैश्विक नहीं जाता रहता।

इसे निब्ड करने के लिए प्रमाण सबब मिलेंगे जीवन क हर क्षेत्र में। अमेरिकी वास्तुकला की स्थायी देन है रसोईघर और स्नानघर। दोनों में स्वास्थ्य के लिए सफ़ाई और उपयोगिता का ध्यान रखा गया है। इसी प्रकार औद्योगिक डिजाइनकार का एक नया पैसा बन गया है जिसका काम बड़े पैमाने पर निर्मित वस्तुओं और उनके बग़नों (packaging) की आकर्षक रूप देना है। परिणामस्वरूप मिश्रित के पैकेज माबुन और लुप सपेटने के कामकाज आरू फार्क मोटरों मोशनघर की कुसियाँ बोधी मशीन टाइप राइटर, रेडियो टेसीविजन घराब की बोतलें रिफ़ीजिरेटर, बेरट बास्बट पैराम्बुलर प्रादि किन आकर्षक बिसलाई पड़ते हैं।

अमेरिकी मोटर उद्योग भाइन्-टी फोर्ड के समय से घात्र काउडी घाये पट्टन चुका है। घात्र कोई भी मोटर-उद्योगपति इस कल्पना से ही पबड़ा उठेगा कि काइ डिजाइन का या तीन मास से अधिक चल सकती है। हर सास का भाइस पहले से अधिक घानदार और मङ्कीसा होना ही चाहिए। यह स्थिति ऐसी है जैसी घोरतों के जेयन की। बपड़ों की ही भांति मात्र घने घालिक के व्यक्तित्व के अनुकूल हुनी चाहिए। मोटर या ऐसी हो जो काउडी दिन न पन। उसे भी बपड़ों की भांति बरमना चाहिए। अमेरिकी कार की सग्राई बोड़ाई और अतिरिक्त घात्रयक इन्नों की मनश बङ्गान वा टोनक है न कि सामान्य उपयोग की। यह उम सम्पना वा एक बरत है या टाय को बर्गित कर सकती है और सचदरी की आवश्यकता समझती है।

मोटरों से अधिक भुन्टर हवाई जहाज की डिजाइनें होती हैं। हमने

अमेरिकी सम्प्र

अमेरिकी सम्प्रदाय का निर्माण इस दृष्टि से होता है कि जहाज की गति बड़े धीरे-धीरे बढ़ाकर सुरंगित और निरवस्त हो सके। इसमें भ्रमों या भावपूर्णता नहीं होने। फिर भी सायब इसी कारण हवाई जहाज इतना सुस्वर बनवा है जैसा डिजाइनों के इतिहास में कभी न बना हो। मोटर और हवाई जहाज से एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि मोटर सार्वजनिक उपयोग के लिए बनायी जा रही है। जहाज सबके लिए नहीं बनाया जाता। उत्पादन से ही मोटर के लिए बिजली की गति का पैमाना होता है। हवाई जहाज में भी गति के अन्त्य की समस्या होती है न कि माँग बनाने की। इसलिए जो कुछ देनी है वह सफा है। यहाँ देखी शक्ति का प्रयोग ध्वनि-तरंगों में ऊर्जा के रूप में होता है।

यहाँ देखी राज्य का प्रयोग स्वतंत्रता के धर्म में हुआ है जिसका तात्पर्य चीनी के शर्मों में जनता की और एकनामिकी के कारणात्मक समर्थ से होता है। डिजाइन चीन में जब रक्त के तत्व पुकते हैं तो तावा तादगी में ही जनका प्रत्य नहीं होता जब देखी चीनी धाभिजात्य चीनी व मान धाधिकरण तत्वों के बिन्दु जेहाव देखी है तो प्रपनी धनित और प्रत्यधता के कारण वह सफल भी हो सकती है। किन्तु चीन में होता है तो वह अपने सिद्धांतों से ही प्युत हो जाती है। प्रगत में देखी चीनी तक और विपति में पड़ती है जब वह देखीपन के भटे मानदण्ड देखी है। प्रगत में देखी चीनी के अपने पुष और दोष भी है। किन्तु वह कहने से कि यह प्रगत में प्रपार भी गई है इसका महत्व को कम नहीं किया जा सकता। अर्हें भी कहने में कुछ दिया है। बिदेसी कलाकारों और प्रेरणा ग्रहण की प्रमेरिका में स्वागत होता है। इनसे उनके अपने कलाकार निरारते हैं। यद्यपि कुछ लोक बिदेसी प्रमाण को देखकर नाचबोह गिबोहत है किन्तु यह स्थानी नहीं है। यद्यपि मनीनी कलामों की डिजाइनों व शोध में अमेरिकी में जो कुछ हुआ उन पर नई किया जा सकता है पर अभी तक यह धरणी बात रही है कि सांस्कृतिक दृष्टि में अमेरिका ने अपने को लक्ष्य प्रमाण नहीं कर लिया है।

ममेरिका में प्रायः नये माध्यमों पर बोधोद्योग कर देने हैं। विष्णु कोई
हिन्दी की समुह है यह कहना भिन्न के बुरी है। इन्दीबुद्ध की छाया में
बल रहा है। अभी अभी भी समझने की छाया प्रतीत
इन्दीबुद्ध की छाया प्रतीत
रामा की छाया प्रतीत

...जाता प्रतीक
...जाता ।

में नाइट बेसबाल और कन्सर्ट्‌हाउस या बामूमी और उपन्यास में कोई शान्ति नहीं है। टेसीविजन की छाया सिनेमा रेडियो और पुस्तक प्रकाशन पर पड़ती प्रतीत होती है किन्तु ये एक-दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। ये कलाएँ किसी एक ही शक्ति के ओत से नहीं बहती। यदि जनता एक को पसन्द करती है तो उसका यह अर्थ नहीं कि और दोष कलाएँ खूब आएँगी। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ नई पापुनर कलाएँ पड़ोसियों की कुछ नीचा डकर दिखाती हैं पर सभी साम्रिज्य कलाएँ भी अपनी जगहानी में ऐसी ही थी। सब ता यह है कि जॉर्ज रेडियो और टेसीविजन तथा वेपर बैंक और दृक्कलाओं ने परस्पर एक दूसरे को प्रभावित शक्ति ही थी है।

यहाँ प्रश्न यह नहीं है कि कौन-से माध्यम के जोता अधिक है। आज जोषों के पास फुरसत सीमित है। इसलिए सम्भव है कि टेसीविजन के दर्शकों में अप्रामाण्य बड़ी संख्या में बृद्धि होने से सिने-दर्शकों की संख्या पर घुरा प्रभाव पड़े। किन्तु इस प्रतिद्विष्टता और माध्यम के बीजिक और शोभ्य बोधो मानवकों में होने वाली प्रतिद्विष्टता में शक है। यह भी संभव है कि यदि अमेरिकी रेडियो प्रचलित संगीत समाचार समीक्षा राजनीतिक विचार प्रादि तक ही अपने को सीमित रखे तो उसे अधिक सफलता मिल सकती है। सिनेमा जाने यह जान लें कि वे ऐक्स और हिप्पा के प्रबलन वा उत्थान कृतचिन्तों के निर्माण में टेसीविजन का मुकाबिला नहीं कर सकते और फिर वे मनोभावों और चरित्र के विमल तक अपने को सीमित रख लें तो वे टेसीविजन के लिए उद्यो प्रकार प्रेरणात्मक शक्ति देने लगे जैसा बहुत बिदेहर सिनेमा का होता था। अमेरिका में जोताओं और दर्शकों की संख्या इसकी अधिक है कि ये बड़े माध्यम अधिक बृद्धि से भी अच्छी तरह कतपूज सकते हैं।

इस प्रकार बड़े जोता (Big audience) की आवश्यकता में नहीं जानता। पर मैं यह भी नहीं स्वीकार कर सकता कि ये कलाएँ मरती हैं जिनके जोताओं की संख्या बड़ी है। इसकी स्वीकार करने का अर्थ यह मानना होगा कि अधिक प्रचार बला का शत्रु है। कोई यह विचार कर सकता है कि सामान्य जनता में दूर तक प्रवेश करने पर बला के मानवकों में दीविस्य व्यवस्था का जाता है। जितना ही दूर तक प्रचार होगा कला उतनी ही पतनी होती जाएगी। किन्तु मरीम की भाँति इस दृष्टिवाप को अपना लेने पर सिनेमा-जैसी कला की रचनात्मकता के विस्मरण कर देने का अर्थ है। यह दृष्टिकोण आश्चर्यजनक रूप से जनता-विरोधी है। इसमें एक भय है कि किसी नया के प्रचार से जगता पुण बट हा जाता है। यह भय अपनी-ही मार्ग्य और बला की आत्मिकता के क्षेत्र में मिलता है। इसकी तुलना जग अपनाय के भाव सही की जा सकती है जो बड़े भाता-पकी जाने साम्रिज्य बलाओं के प्रति अपने मन

में रहते हैं। यह अपमान और भय का भाव समाज को दो भागों में बाँट देता है—(1) बड़ी संख्या में छोटा-बड़ा और (2) छोटी संख्या में बड़ा-बड़ा। इस प्रकार सर्वोच्च और उनके जीवन के पानकों के बीच एक खाई बन जाती है।

यदि कल्पना महान् हो तो पापुनर बसाएँ भारी जनता के आधार से पवित्र ग्रहण कर सकते हैं। ये केवल मानवता के मोटे तत्व लेकर ही नहीं तो बड़ी संख्या में छोटा या बड़ा प्राप्त कर सकती हैं। बिनकसा का उदाहरण से तो पार्ये कि अमेरिका में इस कला के माहक कभी भी अधिक न रहे। इसे दो रोगों के कारण यह कष्ट भोगना पड़ा—ये से इसका सर्वाधिक और दूसरा इसकी गुरुता। रपया हल्ला कर देने पर अमेरिकी उद्योगों के कल्याण पुरोत पहुँचे बड़ी उन्होंने यूरोपीय कलाबीबियाँ को छान डाला और पुनः कलाचार्यों के बिना मुहमवि दाम देकर छोड़ दिए। तब से मरुभूमि उस्ताद प्रायिक बीमब की कस्तु बन गए। य बिना संघासयों या यनिकों के मकानों को घामा बड़ा रहे हैं। किन्तु ये बिना जीवन से दूर पड़ गए हैं इसलिए इनको और कोई ध्यान नहीं देता। बिनाकार जी सामन और गुरुम बोम के एक बूत को छाड़कर अपने दरकों से समय हो गया है। वह उन्हें पृष्ठा की दृष्टि से देता है जहाँ उनकी पहुँच नहीं है।

कलाकार और बोम के बीच की इस दूरी का कारण मशीन की बलमात्रा बाधा है जिसने बाजार की नास्ति दीदा कर दी है जो कला को भी एक सामान समझती है। जहाँ कलाएँ ऐसी हैं जिसका एक से अधिक उत्पादन नहीं हो सता जैन बिना और प्रतिफला बड़ी से बस्तुपारी के मुग र्थ ही हैं। बिनाकसा के क्षेत्र में पुनस्त्यादन की टेक्नीक न बिना बीबाम के स्पुबियम की स्थिति सार्यक कर दी है। सविता और उच्चरित सार्य तो प्रायः प्रेम क्रियम और एनकगानिक की बदोयन समस्त प्रतियो से प्राप्य क्रिय आ सस्ये हैं। मद्योन ने संपीठ के प्रचार लाक्षितिक कवागिर्णों के सस्त मंस्तरणों क वितरण और पिनमा के रूप से एक मास हजारा स्वाना पर एक ही नाटक के अभिनय को सम्भव कर दिया है।

कला क बिनरण की समस्या अब मुनक गई है। समस्या केवल रचना रचना की समस्या की है। मेरी राय में अमेरिका में समस्या कला के प्रचार की नहीं बल्कि कलाकार के अयगाव की है। पाये दूने बाग मकन अमेरिकी कलाकार को बाहरी मानन है। वे उने नाउर नहीं मानने। अधिक-अधिक वे उने एक सज्जन माना है जिसे मरुति बर्तान कर सकती है। कभी अमेरिकी कलाकार को आत्मनिर्भरता और प्राप्तीयता में मुक्ति क मिलनमर्थमी संभन करना पड़ा था। प्रायः उने कला ही मर्दाने उने मरुति में अपने को स्वीकार करने क निग करना है आ वीमे का मुख्य अधिक मममती है। हमने

कलाएँ और पापुनर संस्कृति

कभी-कभी वह बिदेसों में भाग जाता है बिनापकर फ्राँस या इटली में जहाँ के सामाजिक वातावरण में स्वीकृत होकर वह फल-फूल सकता है। यूरोप की यागिरेनी अमेरिकी कलाकार के काम की साबित हुई है किन्तु उसके प्रति समर्पण खतरनाक भी सिद्ध हुआ है। किन्तु अमेरिकी कलाकार पक रहा है। कुछ ने तो समझ्य की साबित भी पा ली है। अब के अपने वातावरण से कट कर नहीं बहिक उसी में अपनी टोह ले रहे हैं।

अमेरिका में अनुकूलता (Conformity) का दबाव गहरा है। यही कारण है कि कलाकार एक कठिन परिस्थिति में गुजर रहा है। अब वह अपने संपर्क करता है तो खतरा यह रहता है कि उसे किसी सच यादि का सदस्य होना पड़ता है और वहाँ पर वह एक सीमित संसार में जिसकी वह भाषा भी नहीं जानता फँस जाता है। सांस्कृतिक परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहे हैं कि कलाकार उनसे पग मिलाकर नहीं चल पाता। इसी प्रकार वह अपनी ही संस्कृति व विद्यालय आधार को भी नहीं पचा पाता। फलस्वरूप वह जीवन के एक घंटा के विभाग से ही संतुष्ट हो जाता है। किन्तु इस विभाग और उन सांस्कृतिक मूल्यों में वह समझ्य नहीं कर पाता। जिनका निर्माण अपने क्रिया या। कवि या चित्रकार जिन्नी घटना को संपूर्ण का प्रतीक मानकर विभाग कर सकता है पर सीमा ही वह यह पाता है कि प्रतीकवाद का मंथनने में प्रकृतिवाद से भी अधिक कठिनाई हाजी है। वह किन्नी स्थान विशेष पर अपने को केन्द्रित करता है जिसके बारे में वह सोचता है कि वह उसे सम्मान सकता है पर स्वतन्त्र विशेष तक सीमित रखने से रचनात्मकता की समस्याएँ सीमित नहीं हो जाती। यहाँ भी असफल होने पर वह पापुनर कलाओं की ओर मुड़ता है। कभी कभी तो कलाकार इन सब प्रक्रियाओं से होकर गुजर जाता है।

आकर्षण की सबसे प्रबल गतिन बड़े पुरस्कार हैं। जितना ही बड़ा प्रोत्साहन का वग होगा उतना ही बड़ा पुरस्कार भी होगा। यात्र 'हार्नब्लो' के लिए जितनी पूजा अमेरिका में है उतनी अन्य किसी के लिए नहीं। उनके प्रति सबसे बड़ा आरोप यह है कि वह अपने का जनता वाली वास्तविकता में दूर रहना है। यह पुरस्कार पाने का आसान तरीका यह है कि सभी वर्गों का सम्बन्ध में संपत्ति का महापता देने कास तरह उमाड़ जाएँ। इसमें बिनी भा गूब होती है।

यदि कलाकार अपने-संस्कृति को साँझर-बह पुरस्कारों का माह छाड़कर पीना चाहता है तो उसे दूरी कठिनाई का सामना करना पड़ता है जो है कला के दफ्तरवादी (bureaucracy) की। उस अपने अनुभवों के द्वारा अपने जाने

कसाएँ और पापुनर संस्कृति

साथ ही प्रशंसक मिल जाएँगे। इसी प्रकार फ्रैंक मायडरिट के प्रशंसक सस्ते जामुसा के पत्त खाटते हुए मिल जाएँगे। बग-बग-बग की तरह, सामान्य धनुमन् की बाह्य और बड़े माध्यमों के प्रसार से रचियाँ स्थिर नहीं हो पाती। ऊँची रचिबासों में हाथ बटोरे जाते हैं जैसे एक पुरानी रचिबास और दूसरे नई रचिबास। पुरानी ऊँची रचिबास पापुनर संस्कृति से जुड़ा करती है। हो सकता है कि ऊँचे ध्यानवान से जन्म होने के कारण वह इसे देहाती समझने हों या फिर ज्वलित होने के कारण वह इसे पूर्वोन्नीयता सम्पत्ता ध्येय रचना मानता हो। मया ऊँची रचिबास सुधील परम्परा और मानसवादी दोनों

तक पहुँच पापुनर संस्कृति को धन्यता है। उसे इसमें बड़ी मिसता है जो 'सही के बौद्धिकों को 'नोबुस सैबज' से मिलता था। ऐसे लक्षण दिखते हैं कि सच्चे देशी को बनाबटी भीड़ की भाषा में प्रभाव या भा सकेगा और सर्वोत्तम देशी का प्राभिजात्य कसाओं के सर्वोत्तम से त होमा। किन्तु ऐसी परिस्थिति में धामाचकों को उस वास्तविकता से मिला करना पड़ेगा जिसमें बड़े माध्यम को कुछ सरपट बेमजा और मुनाफ़ का जतनी घोर झुंझें। प्रेसों के मासिक धपने मास में मिलावट करेंगे। रेडियो के मासिक कल्पना का धपने घरे तक ही सीमित कर देंगे। किन्तु प्रासोचक हवाय होकर चुप नहीं बैठेगा। वह पापुनर संस्कृति का कसात्मक-विकाश करते देखेगा।

बिना प्राद्विध संघर्षों के वैमान पर योगाया में पुरानी ऊँची रचिबास बाप और नई ऊँची रचिबास गुप्त देखता है। धामाचक तक वह देनेगा कि कि वह वैमानों पर आताओं में सही महान् धोता भी निजस सक्ते हैं। यह सम्भावना तक तक पूरी नहीं होगी जब तक कि ऐसे बौद्धिक जनबाधु का निर्माण नहीं हो जाता जिसमें उनकी धामाचना होने पर भी सम्भावनाओं में बिस्वात प्रकट किया जाता है। बौद्धि बुद्ध-बुद्धियाँ निनेमा और टेमीनिज की धार धारकित होती हैं वेबल इसलिए वह हमें धूमा नहीं करेगा। किन्तु धपने में या सजीवता के दर्पक के रूप में वह हमें धप्य का भी धपिक महत्त्व न देगा। वह यह मानेगा कि प्रत्येक प्रकार की पापुनर संस्कृति के धपने धाना होने हैं। वह उनको धारकित तो करेगी पर उसरी हाकर न रहेगी। वह धमेरिवा भावा की धारीधियों और उसरी समृद्धि का सम्मान करेगा। उनका बिस्वात हागा कि प्रत्येक सामान्य भाषा में धमरिधियों के सर्व सामान्य धनुमन् की धमिधियों की सामर्थ्य है। वह बन्ना के धम में धमाधनबाधियों से धूमा न करेगा धमाधन धरुना की एव नीम की धामरिधिता हागी है जिसमें वह सम्मान का धनुमन् कर सके। पुरानी धिधियाओं के धामान हल 'पापुनर कवाया में धिधिये धा

बहु। —नेमा।

अपना तिर तपाये जैसे किस बय से बहु अपनी सामग्री से या कौन बर्ग उसको स्वीकार करता है ? जैसे उदाहरण कीड़ों-मकौड़ों की भाषा लेकर एक ऐसी बुरह कला का निर्माण करता था जिसे कम लोग ही समझ सकते थे जैसे ही अमेरिकी भाषा में शिष्टता दिया है कि बहु धित्तिन बग की सीमित बाक्य रचना लेकर भी मूर्ख धीरे अपने प्रकार से उसे प्रस्तुत कर सकती है। अमेरिकी जैसे में सेंट पीटर्सबर्ग धीरे बियना के समिजात समाज के पारस्परिक मूल्य-वर्णों को प्रहणकर धारमसात किया धीरे उसे ऐसा रूप दिया जो अमेरिका को जन संस्कृति का विधिष्ण रूप बन गया। चूंकि इन रूपों में अमेरिकी अनुभव का पचीना लगा है इसलिए सामाज्यबग इन्हें सामिजात्यों की देन समझकर इनका परिवर्तन नहीं करते। न तो समिजातवर्गों को इसे देहती समझकर इसके घुमा ही करता है। बेगी रचना में इसलिए सभी बग बात धारम्य का अनुभव करते हैं। य कथारूप बिदेष्टों में भी स्वीकृत होते हैं क्योंकि इनमें उस क्षमीन की सुव्यं होनी है जहाँ से वे आते हैं। ये सांस्कृतिक बगनों धीरे बिसगावों को तोड़ते हैं। इस सार्वजनिक के बाँके में अमेरिकी देवी कला (vernacular) की मदार्प विभिन्न कलाओं में प्रकट होती है। इन प्रकार लोकतरणों धीरे बाणी के बीच एक कलाता धीरे प्रत्युक्ति के वसंत होते हैं। अमेरिका में समूच पापुमर कलाओं में देहातीयन धीरे साहरीपन का मेस मिलता। ऐसा कम संस्कृतियों में ही मिलता है। इनका उगाहरण ध्यु पीठों धीरे जॉड में मिलता है जिसकी सारी बस्तु धीरे रंगीनी तो प्राक प्रीलोपिक समाज की बनता की है किन्तु इसमें जो तान है वह वह साहूतों के तनाव की समिभ्यवित्त का है।

मायनवादी समाजवादी यथाय से विभिन्न धारम्यजनक रंग से अमेरिकी पापुमर गन्धुति बगनात्मक प्राकृतवाद (naturalism) से दूर रहती है। सचह पर तो यह भी समाजवादी प्रथायी अपनाती है किन्तु यह समाज से सारांस लेने में सचन हागी है। हापीबुड म कीस्टीन काप्ल धीरे जार्नी शैपलिन से मार्श बर्गों तक धीरे रंगमंच में भी प्रारम्भिक समू मिनरस प्रदर्शनों से लेकर टैनेस्सी बिनियम को काव्यात्मक समिभ्यवित्तों तक यहाँ हुआ है। जीवन से सारांस चुनने की यही जिदा छिन्नी मुजिरगो जॉड स्काई स्कारो (बागुम्मा के वे बाँड ही है) तथा बिजराता में भी मिलनी।

अमेरिका में रवि को लेकर विभिन्न बर्गों में बाद बिबाड होते हैं किन्तु यह उ न टकड़-टुकड़ कर देनी है। मय तो यह है कि अमेरिका में बर्गों की माँत रवि भी मिली जली है। कहते हैं कि एन जार्नी बागम जस्टिन होम्स एक बार एक माँड (barley) देग रहे य बीच ही में मुन्नों पर अपनी मारकर पड़ोनों में बोने 'मदवान हूँ तेमो निम्नरवि में बचाएँ।' अमेरिका में धारम्यो जीवन पोतक धीरे एबनर के माया-वर्णों के एक

जनवादी सोवियतकोष की यह धाखिरी कसौटी है। इसका सामानांतर जनतन्त्र की राजनीति और अर्थशास्त्र में भी मिलेगा। कोई भी नहीं कहता कि धामबनी या अधिकांश या कोई सामान्य स्तर होया किन्तु जनतन्त्र का ठकाड़ा है कि प्रत्येक मनुष्य के समय व्यक्तित्व का मुस्वाकन करने के लिए उसे सामान्य राजनीतिक और धार्मिक अवसर तो देना ही चाहिए। इसी प्रकार जनतन्त्री सोवियतकोष बौद्धिक और कृषिके मानवशोषों का समतलीकरण न होया। किन्तु कला के क्षेत्र में किन्नी स्वर अभिजातवर्ग के सिद्धांत की भी न माना जायगा। जन मनी अनुसूतियों का स्वागत किया जाएगा जिनमें कला की सावदेष्टिक भाषा का प्रयोग हुआ है। किसी भी स्थानीय वस्तु का इसलिए मूल्य नहीं होया कि वह धर्मरिची है बल्कि उनका इसलिए मूल्य होया कि वह सामान्य अनुसूति का रंग है। वह भावना की सामान्य भाषा में प्रकट की गई है। उसमें भीता और पाठक रचनात्मक पद्धति का मूल और उसका ग्राहक दोनों हैं। इस धर्म में जनवादी सोवियत कोष जनवादी एथनिक की भांति व्यक्तित्व को सम्मान देता है। बिदेष्टियों के मन में अमेरिकी वापुसर संस्कृति का जो चित्र होता है वह बयाप स वाफ़ी पूर होता है। कम्युनिस्ट 'पतिन' अमेरिकी जॉड भ्रष्टाचारी प्रेस 'जनतन्त्री सिनेमा और कोका कोला के साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रचार करते हैं। उनका जन पर प्रभाव भी पड़ता है जो अमेरिका और उसकी जनवादी अनुसूति के प्रति सहानुसूति नहीं रखते। किन्तु अमेरिकी धर्म ही इस धार्मिक और के बारे में चिन्तित होने हैं। बिदेष्टी संस्कृति में अमेरिकी सिनेमा को स्वीकार और धारमसात भी किया है। उन्होंने मैनिकों धार्मिकों और पुस्तकों से अमेरिकी रंगोन भाषा भी सीखी है। वे जॉड और हैमरिन जीवन की विज्ञानों से तहरे रूप में प्रभावित भी हुए हैं। अमेरिकी उपन्यासकारों और नाटककारों का भी प्रभाव उन पर कम नहीं। अमेरिकी संस्कृति में जो कुछ सावदेष्टिक है उसका बिदेष्टों पर प्रभाव पड़े बिना रह ही नहीं सकता।

मिलेमा जॉड या साहित्य का अन्तराष्ट्रीय युद्ध में 'हथियार के रूप में जो महत्त्व है उन पर उमम रहा। धार्मिक और और धार्मिक अमेरिका में दिया जा रहा है। इसके लिए नेमर का धायप सिना या कमाधों का नेतृत्व करने का बिपार करना युगतानुसं होया। मिलेमा का महत्त्व इसमें नहीं पट जाता कि इसमें कम्युनिस्टों की अमेरिका पर छोटाकमी करने का मनावा मिलता है। जॉड का जम रदोरीबिन क बेस्पासकों में हुआ—यदि कोई इसे मकर अमेरिका की निम्न करता है तो इन ऐतिहासिक तथ्यों को कम मिटाया जा सकता है। जमा के धर्म में ईमानदारी पर चीनयुद्ध का प्रभाव न पड़ना चाहिए। यदि वापुसर जमाधों में अमेरिकी अनुसूति की उन्मत्तिशील प्रकृतियों की अभिव्यक्ति महरी और मारबनीन हाथी तो इसमें निश्चय ही अमेरिका का नाम पड़ना।

